CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage ...

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

11·3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

लीला ई श्री राम-श्याम के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीला ई श्री राम-श्याम के

[गीत रूपक]

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीला ई श्री राम-श्याम के

प्रकाशक : अतुल बन्धु,
शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१

रचयिता : श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

संस्करण : पहिल, सन् १९८६ ई०

सर्वाधिकार : प्रकाशक

दाम : सात रुपया

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-४

LEELA EE SHREE RAM SHYAM KE

Bhojpuri Lyrics

by

Shree Avinash Chandra Vidyarthi

Price : Rs. 7/- (Seven) only

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तर्पण

(बाबूजी के)

लाग-भाग बिनु पोथी पढ़निहार बाबूजी
पवले कतो ना अड़ान बेसहार बाबूजी
कइले माथ टेकि 'त्राहि' के गोहार बाबूजी
सरधा 'सीव' जी में राखि के अपार बाबूजी

मोह-छोह भरल भाव के भँड़ार बाबूजी
करिहें भोरे-भोरे भैरवी-उचार बाबूजी
गइहें रामायेन रोजे लयदार बाबूजी
सून साँझि के बनइहें गुलजार बाबूजी

नीके हाथ ध-धऽ के लिखवनिहार बाबूजी
क-ख-ग-घ, ए-बी-सी सिखवनिहार बाबूजी
कइले कहियो ना डाँट-फटकार बाबूजी
परले 'बबुआ' के कबो ना 'रे'-कार बाबूजी

रहले बहुते अबर-अलचार बाबूजी
सहले सीति-घाम-बरखा उघार बाबूजी
अगरइते आजु पाइ रसधार बाबूजी
अगनइते 'लीला'-गान ई हमार बाबूजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

ई गीत-पुस्तक गावे से सवख रखनिहार लोगन का भा भगतीभाव से राम-श्याम के भजनिहार लोगन का मनोहर आ मनगर लागी। एकर बिसयो ओइसने बा जेकरा पर रामायन आ भागवत लिखाइल बा आ जेकरा के लेके तुलसी आ सूर नियर कवि लोग संसार में अपना किरती के धाजा फहरवले बा। एह गीतन में राम-कृष्ण के प्रेमी आ भगत लोगन के भरमार बा। एकरा 'राम-लीला' में मरजादा ढोवेवाला अवतारी राम, आदर्श भाई भरत, निषाद, सेवरी, हनुमान, विभीषण अस लोग बा। एह में तुलसी के 'मानस' रामायन का अलावे कुछ अउरियो प्रसंग जोड़ल गइल बा जइसे उर्मिला के जँतसारि, सीता के पताल-पइसार आ राम के हनुमान से बिदाई, जे पढ़ला-सुनला पर करेज काढ़ि लेता। एह में राम-बिवाह के भूमिका बा जेह में जनकपुर का मेहरारुन के मधुर भाव उजागर भइल बा। निषाद केवट के, भरत का संगे अजोध्या से आवत लोगन के दूरि से भारी पलटन बूझि के, लड़े के उछलकूद बहुते नाटकीय आ मन लगावेवाला बा। एही तरे 'श्याम-सनेस' में जसोदा, राधा, कृष्ण, ऊधो आ गोप-गोपी का प्रेम के बहुते मर्मस्पर्शी झाँकी देखावल गइल बा।

हिन्दी के छपल ग्रंथन में कई गीत विधन के चर्चा बा। ओह में एगो प्रगीत (लिरिक) कहाला जेकर यूनान देस में प्रचार रहे। ई लायर भा तंत्री का संगे-संगे गावे के बिधा रहे। ई समवेत (कोरस में) भा अकेलहूँ (मोनोडिक रूप में) गवात रहे। एकरा संगे नाचो होत रहे आ एकरा जरिया से कवि लोग अपना मन के भाव परगट करत रहले। दोसर गीत के रूप संगीत रूपक होला, जेकर ढेर लोग जिकिर करेला, बाकिर संगीत रूपक में गीत कुल एगो कथा के डोरा में बन्हा जाला भा कवनो कथे का आधार पर गीत रचाला। तीसर रूप एगो कथात्मक प्रगीत के होला। एह में कवनो लमहर प्रबंध काव्य का आधार पर पहिले प्रगीतात्मक कथा लिखात रहे। एकर नाँव 'प्रोविक' में 'वर्स', इंग्लैण्ड में 'ले' भा 'बैलेड' रहे। बाइजन्टाइन युग में ई 'वर्सस पोलितिका' कहात रहे। उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस के लोग एकर 'लेरिस्मे', 'गाउचो' भा 'पायादा' नाँव धइले रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकरा अलावे एगो कथात्मक लोक गीतो होत रहे। ओइसन गीत हमनियों का देस में रामायन, महाभारत आ भर्त्तृहरि के कथा पर बना के गावल जाला।

एह गीत पुस्तक में त पहिलहीं से तीन गो, विषय का अनुसार फरका-फरका, भाग बा। एह गीतन के कोटि 'गीत कथा' हो सकेला। गीत कथा गेय पदन का रूप में लिखाले। एकर रूप मुक्तक के होला। बाकिर ई एगो जानल कथा के कड़ी जोरत चलेले। सूर के पदन आ भजन के रचना कुल एही प्रकार में मनाले। एह गीतन के विलक्षणता ई बा कि एकर कथा सरदर नइखे। एह में कुछ मरम छूए वाला प्रसंगन के चुनाव कइल गइल बा आ ओही पर गीतन के रचना भइल बा। एह में रसो एके होखे ईहो ना। कहीं करुना बा जे आँखि में लोर छलछला देता, कहीं बीरता बा जे मन उछला देता त कहीं आह्लाद बा जे उत्साह से भरि देता। एह गीतन का रचना के उद्देश्य पाठक-श्रोता लोगन में धरम आ भगती के चेतना जगावत प्रेम के व्यापक आ उदार दृष्टिकोण के मान्यता आ प्रतिष्ठा कइल बुझाता।

एह पुस्तक के चार किसिम के गीतन में बाँटल जा सकेला—

(क) देव-पूजा आ भक्ति-भावना के गीत
(ख) ललित आ आह्लाद-प्रेरणा के गीत
(ग) विरह-विषाद-वेदना के गीत
(घ) गहिर चोट करेवाला आ छाती फारेवाला गीत

(क) वर्ग में मंगलाचरन, सरस्वती, राम, श्याम, अहिल्या के अरज, भोलानाथ, सुमिरन, गनपति, दीनानाथ, अरज, संत-चरनवाँ आदि गीत आ सकेला।

(ख) गीत कथा के सही चिन्हार वाला उदाहरन का रूप में एह तरह के ललित आ आह्लाद-प्रेरणा का गीतन में 'मुनि सङे बालक ई धनु-धारी,' 'सीता जोगे ईहे बरवा बा', 'हए देखऽ लोगे जुटान पलटन के,' 'अइलन हो रघुबीर अवध में' बा।

(ग) विरह-विषाद-वेदना के गीतन मधे 'अब ना अवध में हम रहि पाइबि हो राम', 'करऽ होस भइया लखन', सँघतिया सुदामा से, 'द्रौपदी-पुकार' बा।

(घ) गहिर चोट करेवाला, करेजा फारेवाला गीतन में रामलीला में के 'ए मयना, बन कइ द नइयाँ के धइलका', 'फाटऽ तनी गते से सरन में समाये द',

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ 'श्याम-सनेस' के बाकी सभे गीत एगो कथे के रूप ले लेहले बा। ज्ञान-विराग का आग। प्रेमा भक्ति के श्रेष्ठता उजागर करेवाला प्रसंगन के आठो गीत बहुते मोहक आ मर्मस्पर्शी बाड़ेसन।

पुस्तक के सभे गीत भिन्न-भिन्न ताल-लय में गावे जुगुत बाड़े सन। कहावत ह कि रसोई के सवाद चखले से बुझाला। हमरा बिसवास बा कि जेकरा भोजपुरी गवनई से तनिको चीन्हा-परिचे होई ऊ 'लीला ई श्री राम-श्याम के' भरपेट सवादी। कवि के बहुते बधाई देतानीं जे ऊ आपन सताइस बरिस पहिले के लिखल एह गीत-रूपक के प्रकाशित करके भोजपुरी रुचि में संस्कार-सँवार के कोसिस कइले हा। पुस्तक के भाव-भाषा, बरनन-शैली, उक्ति-वैचित्र्य, करुणा, भगती के भाव पढ़निहार-सुननिहार का मन-प्राण पर आपन अमिट छाप छोड़ी।

जब राम के लीला ओराइल त ऊ अपना नेही-नगीची का संगे साकेत-लोक जाये के तेयार भइले बाकिर अनन्य भक्त हनुमान सरजू का तीर पर खड़ा होके टुकुर-टुकुर मुँह निहारे लगले। ऊ हाथ जोरि के बहुते कातर मुद्रा में लउकले। पवन-सुत के ई दसा देखि के रामो जी के हृदय भरि आइल। रामजी के मोहा के ई पुछला पर कि 'कुछुओ त माँगऽ तनी करि के बिचारवा; जोहेला तोहार मुँह रघु-परिवारवा' हनुमान कहतारे कि हमरा खाली अपने के सरन आ चरन चाहीं। 'लालसा बा राम गुन-गान-रसधारवा, जोहीं हम अँजुरी में ओड़ले लिलारवा'। हनुमान का एह उचार से लोग जानो आ सीखो कि भक्ति के क्रियात्मक रूप कइसन होखे के चाहीं।

'राम' के इयाद करावत 'अबकी बने राम जो अइते' वाला पद में भी कम ओजन नइखे। कवि के बिसवास बा जे ऊ अबकी 'सरग छोड़ि इहवें रहिते,' आ सभका के समता के पाठ पढ़इते'।

ओही तरे पुस्तक का अंत में धराइल 'गनपति से' में कवि के निहोरा आज के जुग-जबाना से उबार खातिर बा। "गनपति, गनपति, गनपति, गनपति; आजु होई आगा ठाढ़ ना त बाँची ना ईजति" काहे कि "बा बढ़ल बे-बिचार, पसरल जाला अति; इहे अन्हारा का पाछा अँखिगर दुरगति"।

विद्यार्थी जी के एह सिरिजना के सराहना भोजपुरी भाषिये ना बलुक समस्त हिन्दी समुझनिहार क्षेत्र में होखे, इहे हमार शुभकामना बा।

—सीतारामचन्द्र शरण 'राम'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना ओर से

'कौशिकायन' आ 'सेवकायन' अस प्रबंध काव्य आ 'सुदिन' (प्रगतिशील गीत-संग्रह) आ 'पँखुरी भइल हजार' (बरवै संग्रह) लेखा आस्था-अनुभूति परक मुक्तक-काव्य के प्रकाशन का बाद हमरा 'लीला ई श्री राम-श्याम के' छपवावे के का दरकार भइल हा ई बता दीहल जरूरी जनाता। ५ अप्रील, १९५९ ई० के 'भोजपुरी परिवार, पटना' के संयोजक बनला का बाद कवनो सांस्कृतिक प्रदर्शन करे-करावे का फिकिरी धावत संगीत-नृत्य के जानकार भाई-बहिन लोग से कुछ कहे-सुने के मोका मिलल। 'गँइया के ओर' आ 'राम-स्याम के लीला' नांव से दूगो गीति-रूपकन के रचना ओही घरी करे के परल रहे। तेकरा बाद से 'परिवार' के मुखपत्र 'अँजोर' के सम्हारे में लगला से कलम दोसरा ओर घूमल। प्रबोध आ प्रगति के राह धराइल। भोजपुरी पत्र-पत्रिकन के पाठक चाहे कवि-गोष्ठी-सम्मेलनन के श्रोता लोगन पर हमार जइसन पहचान बनल होखे ओकरा से एगो अलगे चिन्हार हमार सताइस साल पहिले के रचल एह 'गीति रूपकन' आ 'फुटकर' गेय रचनन में भेंटाई। भोजपुरी क्षेत्र में पचास बरिस पहिले के लोक कंठ-कान में रसल-बसल सुर-तान का भाव-भूंइ पर एह कृति के निरेखे-परखे के चाहीं। एह में एकतालिस तरज के चीज बा जेकरा के एकतारा आ खँजड़ी पर गावे-बजावे के आ सुने के जो सुजोग जूटे त का पूछे के!

हम नाच-गाना का निअरा के रहनिहार हईं। लइकाइयें से भजन आ लोक गीत के सवादत आइल बानीं। अपना 'बाबूजी' का मुँह से रोज सूति उटते भजन-पराती आ साँझ खा 'रामायन' सुनत आ उनुका जवरे राग में राग मेरावत रहलीं। एही से आजु से एकतिस बरिस अगते सरग सिधारल उहें से एह 'लीला'-गान के अपनावे के अरज 'तर्पण' में कइलीं हाँ।

कहे के ना होई जे अपना जनमवला के उजागर जो ना कइल गइल त एह धरती पर उतरल अनेर हो गइल। अब हजारन बरिस पहिले अस 'श्रुति' आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'स्मृति' के जुग ना रहल। बिना मुद्रण-तंत्र के कवनो 'मंत्र' जी नइखे सकत। कागज आ छपाई के खरच-बरच जे होखो, सावँग अछइतो कतने 'महाजन' अइसनो बाड़े जे प्रकाशन का दिसाईं आपन कुछुओ, कर्त्तव्य ना बूझि के अनके लेवे-खरचे पार उतरल चाहत बाड़े। देर-सबेर अपना टेढ़-सोझ सजी कृतियनि के प्रकाशित करे के हमार संकल्प बा। जो ई कार हमरा से ना सँपरल त हमरा जायेल-पोअल से काहें उमेदि कइल जाय? सेवा-वृत्ति से अपना आय में पहिले से दू-तिहाई के कमी भइलो पर इहे सोचि-समुझि के ई किताब छपवा रहल बानीं। एह कहनाम के अपने हाथे पीठि ठोकल भी जो केहू समुझे तबहूँ कवनो हरज ना।

हमरा साहित्यिक भाई-बंधुन में आदरणीय सीतारामचंद्रशरण 'राम' जी काफी जेठ हईं। परम पूज्य 'रूपकला जी' महाराज के सँघतिया इहाँ के श्री अयोध्याधाम-वासी स्वर्गीय पिता जी का पुण्य-प्रताप से एह श्री सीता-राम-भक्त परिवार के स्नेह हमरा सात्त्विकता के संबल रहत आइल बा। अयोध्या जी का पावन धरती का प्रसाद से गुन-गरोह से भरपूर सीताराम बाबू हमरा एह प्रारंभिक कृति के अपना 'भूमिका' से धन्य कइलींहाँ। एह अहैतुकी कृपा खातिर हम उहाँ के आकंठ आभारी बानीं।

ओही तरे हमरा रचनन के रोंआ-रेसा के परखनिहार, मुद्रण आ प्रकाशन-कला के मर्मज्ञ प्रियवर श्री नगेन्द्र प्रसाद सिन्हा (लछुमन जी) आ उनुकरा 'जयदुर्गा प्रेस' के आभार हम कहि के नइखीं प्रगट करि सकत। अतना जल्दी किताब के रुचिगर ढंग से निकालि देवे के जइसन महारत प्रेस देखवलसिहा ओह से हमरा अगिला कृतियनि के प्रकाशन-प्रयास में मकई का खेत के 'बिदाह' लेखा तत्परता जागि सकेला।

भोजपुरी में भक्ति रस जोहनिहार भाई-बंधु लोगन के जो 'लीला ई श्रीराम-श्याम के' तनिको तृप्त करि सकी त हम आपन अहो भाग मानबि।

विद्याधाम
शाहपुर पट्टी (पो०)
भोजपुर

अविनाशचन्द्र विद्यार्थी
हनुमज्जयंती २०४३ वि०
(शनिवार, १ नवंबर, १९८६ ई०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो मनभावन धरा-धाम के
'लीला ई श्री राम-श्याम के'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंगलाचरन

सुरसति ! राखीं लाज हमार।
सरधा-सवख-साध पर थपरी पीटत बा सँवसार ॥

निरमल मानस-जल-विहारिनी देबि ! हुंस असबार।
सुर-धुन सिरिजनहार हाथ में पोथी अउर सितार ॥
सुरसति ! राखीं लाज हमार।

जबदल कंठ खुले मइया ! गूँङो का मिले सुतार।
रसगर सरगम में सरिआ दीं अटपट-उकठ उचार ॥
सुरसति ! ... ...

जोहल चहलसि ना अनते ई अजसी कतो उबार।
तोपल नइखे कुछ रउआ से नीक-जबून उघार ॥
सुरसति ! ... ...

चरन-सरन का आस-अलम के छोड़ी ना अलचार।
जनम-मरन सुकलान करे भर दीं निभरम अतिबार ॥
सुरसति ! ... ...

जरित बिखाह विकार सारदे ! बरिसित अमरित-धार।
भरित हुलास निरास नयन में मनरूचा भिनुसार ॥
सुरसति ! ... — ... ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम-लीला

राम

मनु-सतरूपा के मतारी-बाप मानि के जे
छोड़ि के सरग धरती प' चलि आवेले
रिसि-मुनि लोगवा के सोगवा हरत
हाथे लेइ के धनुस-बान बने-बने धावेले
हीत-मीत बनेले अछूतवा-जंगलिया के
चीखल बइरि में सवाद बड़ पावेले
जिनिकर नइयाँ धरत हुलसत मन
सचहूँ अभगवे का 'राम' नाहिं भावेले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[महामुनि कौशिक विश्वामित्र का साथे तीर-धनुषधारी राम-लछुमन के झाँकी मंच पर सजावल बा। पाछा से संगीत सुनाई देता।]

मुनि सङ्‌‍ बालक ई धनुधारी।

रहलन दूबि पथल पर जामल राजकुँवर सुखकारी,
विश्वामित्र पधरले जग कारन अवधेस-दुआरी।
मुनि सङ्‍...........

सुनलन महाराज दसरथ रिसि कौशिक के दुख भारी,
दिहलन मुँह-माङल मुनिबर के धरमी बाप-मतारी।
मुनि सङ्‍...........

अइलन राम-लखन बधसर, कइलन जगि के रखवारी,
मारि'सुबाहु'-'ताड़िका' के तरलन गौतम के नारी।
मुनि सङ्‍...........

फुलवारी में रूप देखि सकतइली जनक-दुलारी,
छन में शंकर-चाप चढ़वले रामचन्द्र अवतारी।
मुनि सङ्‍...........

पवलन चारो कुँवर अवध के मिथिला अस ससुरारी,
आइल बेन में मुनिबर सङ्‍ कहाइल मंगलकारी।
मुनि सङ्‍,...... ......

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[बघसर से जनकपुर जात राह में एगो उझंख फुलवारी का बीचे बनल आश्रम लउकता। कतो से मेंहीं मेहररुई आवाज में निहोरा अस सुनाता —]

तनीएसा बिलमीं ए प्रभुजी ! छूवे दीं चरनवाँ
पतित उधारन कहावेला रउरे सरनवाँ

कब ई के रहल खखनवाँ, भइलीं परसनवाँ
धनि-धनि आजु जनमवाँ, पवलीं दरसनवाँ

ढोवतानीं माथे ए दीनानाथ ! अस अछरंगवाँ
कहले कहा ना, सपन में बनलीं बेलंगवाँ

भइल कुकाठ बा मनवाँ, पथल आजु तनवाँ
बिआ पहाड़ जिनिगिया, जुग होखल छनवाँ

दिने-राते रहीला बनि के हम बहिर-गूङवाँ
आवेला निअरा-पँजरवा ना चिरियो-चुरुङवाँ

उचरल हा कइसे दो, भोरे कागावा अङनवाँ
लेले पधरलीं सुदिन के मुनिजी ! लगनवाँ

पाप-तापहारी बनल हा अब तपोवनवाँ
लेबे दीहीं तनी ए रामजी ! चरन के धोवनवाँ
......

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[जनकपुर में नगर निहारे राम-लछुमन निकसल बाड़न। खिरिकी से ताकत-झाँकत मेहरारुन का एगो गोल में के केहू के विचार—]

साँच पूछु सखिया ! त सभ के ई मतिया
कि सीता जोगे ईहे वरवा बा। कि सीता.........

करे कुछे बतिया चलत खा रहतिया में
गोर सङे जें साँवरवा बा।
देखि के सुरतिया जुड़ात बिआ छतिया
सरूप सभ ले सुघरवा बा। कि सीता.........

खिलल गुलाब अस विहँसत ओठवा बा
चाकर ऊँच लिलारवा बा।
आमावाँ का फँकिया निअन भँहूँ-अँखिया बा
नाक-मुँह का सुनरवा बा। कि सीता.. ...

झलकेला कान के कुंडलवा जुलुफिया का तरे,
गरे मोती-लरवा बा।
लामी-लामी बँहियाँ में तीरवा-धनुहिया बा
काँखासोती पीतांवरवा बा। कि सीता.........

जाये जनि पावे सुभ लगन सोहाग-भाग के
पहुँचल दुआरवा बा।
हठ छोड़ि इनिके से सिया के बिआह हो
कहत सँउसे नगरवा बा। कि सीता.........

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[बिआह का बाद रामजी के राजगद्दी ना मिलि के मिलल बनवास। राम का बियोगे महाराज दसरथ के सरगबास हो गइल। भरतजी ननिअउरा से बोलावल गइले। अवध-पुरी के हाल-समाचार सुनिके बेचारू कपार पीटे लगले। कुँहुँकि-कुँहुँकि के करेज कंठ से बाहर आवे लागल—]

अब ना अवध में हम रहि पाइबि हो राम !
ए किया हो रामऽ ! घर छोड़ि हमहूँ बनवाँ जाइबि हो राम !

घइलसि करमवाँ बाँव, कुल के कलंकी नाँव
ए किया हो रामऽ, कइसे के मुँहवाँ ई देखाइबि हो राम !

अमरित-घरिलवा फोरि, देइ घललीं माहुर घोरि
ए किया हो रामऽ, गाइ हतेयारवा हम कहाइबि हो राम !

अइसन कुघरिया जूटल, सँगके सनेहिया छूटल
ए किया हो रामऽ, हीरावा हेराइल कँहवाँ पाइबि हो राम !

कळपेले सँउसे गँइयाँ, कुँहुँकेली बड़की मइया
ए किया हो रामऽ, केकरा के का कहि के समुझाइबि हो राम !

लउके अन्हरिया घोर, दूलम भइल बा भोर
ए किया हो रामऽ, कहिया सुदिनवाँ लवटाइबि हो राम !

गाँवें-गाँईं पूछबि घर-घर, घइले कवनी रहिया रघुवर
ए किया हो रामऽ, जोहत चरनियाँ बने-बने धाइबि हो राम !

तबे बड़ भाग मानबि, जब जाके गोड़ छानबि
ए किया हो राम, धूरि धाङल आँजन हम बनाइबि हो रामऽ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[अवधपुरी बेहाल हो गइल। भरतजी का पाछा लागि जाये के ललकल लोग सुनावे लागल—]

सीता-राम-लखन जब वन में
ए मन, के अब रही भवन में !

'का सुनाइ बिधि काह। सुनावा'
इहे सोच जन-जन में। ए मन......

सून हो गइल अवधपुरी अब
भइल अन्हार नयन में। ए मन...

सुदिन मनावत कुदिन हो गइल
पहुँचल विघिन लगन में। ए मन......

होखल साध सँचल बरिसन के
तहस-नहस पल-छन में। ए मन......

बेरथ बा राखल परान के
राम-बिमुख एह तन में। ए मन......

माया-मोह उतारि चलि मिलऽ
पछलगुअन का गन में। ए मन... ...

सोरह]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[भरतजी का पाछा लागल लोगन के अपार भीर अवधपुरी से बन का ओर जा रहल बा। गंगा के किनारे ठाढ़ केवटराज का बुझाता जे कवनो राजा के पलटन आवत होखे। अपना भाई-बंधु के गोहरावत ऊ सुना रहल बाड़े—]

हउ देखऽ लोगे ! जुटान पलटन के ! हउ ......

अगते से इचिको ना सुनगुन सुनाइल,
अचके में लउकल समाहा ई रन के। हउ ......

कहँवाँ का राजा के खरची ओराइल,
लूटे चलल अनकर अन-धन के। हउ ....

पूरब ना पच्छिम, दखिन ई आवे,
पार करी गंगा, धरी राह बन के। हउ ......

अबगे बुझाइल हा हमरा ई बतिया
हँकले हा राजा भरथ अपना गन के। हउ......

जाले बहेलिया निअन पिठिआवत
अकसरुआ जानि सिया-राम-लछुमन के। हउ... ..

पाछे लला रघुबर लगे जइहें
पहिले हियाव देखि लेसु इहाँ जन के। हउ......

जा लोगे झटके-से घटहा डुबावऽ
पार जनि उतरे फउज दुसमन के। हउ......

आगा भइल हम अकेले सम्हारबि,
जिनिगी सवारथ करबि पल-छन के। हउ......

पा के अघइलीं चरन का धोवन के
डर लागे हमरा ना तनिको मरन के। हउ......

रामजी से अतने अरज बा अधम के
पनही बनित उनुकर, चाम एही तन के। हउ...

[सतरह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[रामजी का दरस खातिर जंगल के भीलनी कहिये से बाट अगोरतारी। सेवरी के साध बा—]

निहुरि–निहुरि हम रहिया बहारीला,
रमइया हमरा दुआरे अइतन हो राम!

गाइ का गोबरवा से लीपतानी घरवा
रमइया आजु तनी थाढ़ि जइतन हो राम!

मलि–मलि कलसा भरत बानीं जलवा
रमइया आजु चरन धोवइतन हो राम!

धरतानी मीठ–मीठ चीखि के वइरिया
रमइया आजु भोगवा लगइतन हो राम!

ताकतानी कहिये से टूकू–टूकू रहिया
रमइया आजु नयन जुड़इतन हो राम!

लागल बाटे सेवरी के उनुके में नेहिया
रमइया आजु आके अपनइतन हो राम!

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[रामजी के खराऊँ लेके चित्रकूट से लवटला का बाद भरतजी नन्दी गाँव में तपसी बस रहे लगले। लोग-बाग देखल—]

फ़ूस के मड़इया, डासि कूस के चटइया हो,
वसेले राते-दिन जे अकेले नन्दी गँइयाँ हो,
वसेले राते-दिन।

तेजि राज-भोग, सुख, सवदगर रसोइया हो,
रटेले राते-दिन राम-जानकी के नँइयाँ हो,
रटेले राते-दिन ... ...

पूजि के खरँउवाँ मानि देवता के पँइयाँ हो
करेले राते-दिन पूछि-पूछि के उपइया हो,
करेले राते-दिन ..

सोचि-सोचि होइ गइले सूखि के खटइया हो,
सहेले राते-दिन कवनो टभकत घइया हो,
सहेले राते-दिन ...

ताकि-ताकि रहिया, होके वहुते असहइया हो,
कहेले राते-दिन 'कहिया अइहें रघुरइया' हो,
कहेले राते-दिन ...

आइल बाटे बाँव ई अवध के समइया हो,
रहेले राते-दिन फरके चकवा-चकइया हो,
रहेले राते-दिन ..

ढारतारी ढर-ढर लोर वड़की मइया हो,
झरेले राते-दिन जइसे बाँस के पतइया हो,
झरेले राते-दिन ...

[उनइस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[अपना सर्वांग लछुमनजी के बियोग उर्मिला चउदह बरिस ले सहल कइली । लखनलाल के पोसल मयना 'उर्मिला' 'उर्मिला' रटल करे । ना सोहाइल-सहाइल त पिंजड़ा का पंछी से एक दिन सुनावे लगली—]

ए मयना, वन कइ दऽ नँइयाँ के घइलका,
समइया देखि ना कुछु भावे हो राम !

ए मयना, काहें दोनी कुछुओ सोहात ना,
महलिया सूनी काटे धावे हो राम !

ए मयना, ढर-ढर ढरकेले अँखिया,
नजरिया में अन्हरिया छावे हो राम !

ए मयना, कुँहुँकत दानावाँ घोंटात ना,
सेजरिया ताकि रोवाई आवे हो राम !

ए मयना, बनवाँ में सहि सीति-घामवाँ
तपसिया बनि जे देहिया तावे हो राम !

ए मयना, कवो जनि सुधि के नगिनियाँ
चरनियाँ तिनिकर छाने पावे हो राम !

ए मयना, भाईजी आ दिदिया का लगे जे
उमिरिया लव तिनिके में लावे हो राम !

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[पंचवटी में सीता-हरन का बाद राम-लछुमन दूनो भाई बने-बने जोहत चलले। बेकल होके राम बोलत चलसु—]

सूनी मड़इया कइके कहँवाँ चलि गइलू ? सीता सूनरि ! बोलऽ,
लउके सुरतिया ना तोहार, सीता सूनरि ! बोलऽ।

कइसे अलोपित आजु छने भर में भइलू ? सीता सूनरि ! बोलऽ,
अछइत लखन रखवार, सीता सूनरि ! बोलऽ।

माया के मिरिगवा देखि जवहीं तू भोरइलू, सीता सूनरि ! बोलऽ,
मतिया मराइल तब हमार, सीता सूनरि ! बोलऽ।

दूनो भाई ढूँढ़तानीं कहँवाँ तूं लुकइलू ? सीता सूनरि ! बोलऽ,
हँसी छोड़ऽ होखऽ अब डिठार, सीता सूनरि ! बोलऽ।

जाइके बाहरवा अकसर केने जहुअइलू ? सीता सूनरि ! बोलऽ,
किया हरलसि राछछ बटवार ? सीता सूनरि ! बोलऽ।

केकरा से पूछीं कवनी रहिया भूलि घइलू, सीता सूनरि ! बोलऽ,
चुप बाड़न फेड़ो—रूख-पहाड़, सीता सूनरि ! बोलऽ।

चिरईं—चुरुङवाँ लेखा उड़िके तूं परइलू, सीता सूनरि ! बोलऽ,
झँखतानीं धइ के हम कपार, सीता सूनरि ! बोलऽ।

छानि लिहलीं सँउसे वनवाँ, कतहूँ ना भेंटइलू, सीता सूनरि ! बोलऽ,
आगावा बा अँखिया का अन्हार, सीता सूनरि ! बोलऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[सीता के लवटा देबे खातिर लंका में राक्षसराज रावन के उनुकर छोट भाई बिभीसन तरह-तरह से समुझा-बुझा रहल बाड़ें—]

काहें खातिर पूजतानीं पाँव तिरपुरारी के
बनि दुसमन भइया ! 'राम' अवतारी के ?

बीर होके काम कइलीं चोरिया-चुहाड़ी के,
हरि के ले अइलीं छल से अनकर नारी के।
काहें खातिर...

राखीं पत-पानी, चलीं चाल सरदारी के,
जनि अब उपाइ करीं फजिहति-गारी के।
काहें खातिर...

सोचीं तनी मन से हटाइ हठुआरी के,
करि के बिचार छोड़ीं कार मारामारी के।
काहें खातिर....

देखि लेलीं दूत वानरो का बरिआरी के,
गनी जनि आदिमी में नर-धनुधारी के।
काहें खातिर...

राज तेजि भेस धइले तपसी उघारी के,
वने अइले रोख राखि मयभो मतारी के।
काहें खातिर...

डोलिया चढ़ाइ भेजीं जनक-दुलारी के,
घात छोड़ि बात करीं राम से इयारी के।
काहें खातिर...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[बिभीसन के सलाह रावन का ना सोहाइल। राम के तारीफ कइला का चलते पीठी पर लात खाके विभीसन दरबार से बाहर भइले। राम के सरन छोड़ि के उनुका आन कवनो ठहर नइखे सूझत। मन में गुनावन करत लंका से निकलि रहल बाड़े—]

चलऽ हो मनवाँ, सिरी राम का सरनियाँ।

टूटि गइल मोह, लात पिठिया प' लागल,
भरि अँकवारी गहऽ हरि के चरनियाँ।
चल ऽ......

उमगत बा तन, हुलसत मन सुमिरत
नर भेस में नारायन के करनियाँ।
चल ऽ......

असरन-सरन तनी बँहियाँ बढ़इते
दरसन से होइत अधम के तरनियाँ।
चल ऽ......

नइखे सहात उतपात पापिन के
काँपेली थर अधरम से धरनियाँ
चल ऽ......

जहिया ले जइहें ना सिया रघुबर लगे
मेटी ना तहिया ले जिउ के जरनियाँ।
चल ऽ......

करिते उधार प्रभु! मारि निसिचर के
धरि हाथ हरिते हमार हहरनियाँ।
चल ऽ......

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[राम-रावन का लड़ाई में बानर दल निसाचर सेना के छरपट छोड़ा दिहलसि। मायाबी राक्षस के सबसे बड़ घात रहे लछुमन के शक्तिबान से मुरुछा लगा दीहल। राम के एक नइखे चलत। सुखेन बैद का फरमाइस से संजीवनी बूटी राते-रात उपरा देबे खातिर पवनपूत हनुमान निकलल बाड़े। किरिन फूटे का पहिले जो संजीवनी ना पिआवल जा सकी, त मुरुछाइल भाई से हाथ धोवे के परी। घोर चिन्ता में परल राम का कुछुओ बुझात नइखे। वेहोस लखने लाल से ऊ निहोरा करे लागतारे—]

नीनि तूरऽ, करऽ होस भइया लखन! नीनि तूरऽ ··
कब से निहोरा करत वानीं हम,
    बोलऽ मुँह से बचनियाँ तूं खोलऽ नयन! नीनि तूरऽ –
सहलऽ हरारत बहुत पर ना मुँदलऽ
    चउदह बरिस में पलक एको छन। नीनि तूरऽ···
छवलसि अन्हरिया नजरिया का आगा,
    परलीं अफदरा में, बूड़त बा मन। नीनि तूरऽ···
नइखे चलत कुछु जुगुतिया बतावऽ
    कइसे सम्हारबि अकेले ई रन? नीनि तूरऽ···
हदसल सभे सोच में बा परल आजु
    सीता से बेसी विभीसन के दन। नीनि तूरऽ··
जनितीं इहाँ परी अइसन विपतिया
    मनितीं उहाँ ना पिता के बचन। नीनि तूरऽ··
नड़खे सहल जात घइया भितरिया
    नइखे रहल जात विनु लछुमन। नीनि तूरऽ···
सुकवा उगल, ना पवनसुत लवटले
    फूटी किरिन, छूटी हमरो ई तन। नीनि तूरऽ···

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[दिन, मास, बरिस गनत रहत माता कोशल्या का आँखी आजु नीनि कहाँ ? चउदहवाँ बरिस के आखिरी राति के ई आखिरी पहर बा। बिहान होते उनुका सङ्ग सजी अयोध्या के नयन जुड़ाये के चाहीं। चिन्ता-फिकिर निकसी, हरख-हुलास के पइसार होई। उमंग-उछाह भरल मइया कोसिला के झांकी—]

निरखेले निसवद रतिया भवनवाँ में दीप वरे हो,
निनियाँ ना परे मइया कोसिला का नयना से नीर झरे हो !
टकसे ना आखिरी पहरिया वरिस चउदहँवाँ के हो,
जुगवा वनल पल–छनवाँ, ना मनवाँ धिरिजा धरे हो !

खने तिकवेली अगवार ओर, खने पिछुवार ओर हो,
सुकवा उगल दुखवा भागी, जनात वा फरिछ भोर हो !
खिरिकी से दखिनी बेयार आइल, जियरा जुड़ाइल हो,
आवत होइहें सिया–राम–लखन आजु घरे मोर हो !

फरकेले अँखिया वँवारी, सगुनवाँ उचारे काग हो,
सुदिन सुतरिहें अवध के वहुरिहें सोहाग–भाग हो !
हहरल हमरा अजोधेया में आनन्द-वधाव वाजी हो,
जियरा जुड़इहें आजु भरथ भुआल सङ्ग लोग-वाग हो !

उठु-उठु चेरि-सलेहरिया. दुआर-घर सजावहु हो !
हाली-हाली चउका पुरावहु, कलसा धरावहु हो !
परिछबि सोनकिरिनि अस आजु फेरू सीता सुनरि हो !
मंगल लछुमन-राम के सोहागिनि लोगिनि गावहु हो !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[अवध कें दिन बहुरल। राम-दरसन के आतुर लोगन के साध पुराइल। ललकल आवाज चारो ओर से आ रहल बा—]

अइलन, अइलन, अइलन हो रघुवीर अवध में !

उबरनिहार सोच-सागर से
बूड़त भरथ के भइलन हो, रघुवीर अवध में !

दरसन के तरसत नयनन के
आ के अजाची कइलन हो, रघवीर अवध में !

चरन-धूरि जोहत लोगन के
धाइ अँकवारी धइलन हो, रघुवीर अवध में !

भेंट करत, भाइन, माइनि से
सभ का मन में समइलन हो, रघुवीर अवध में !

कहत सभे अब सङ ना छूटी
जतने जिउ का धरइलन हो, रघुवीर अवध में !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[राम-राज का सुख में सीता के पताल-पइसार अस अपार दुख लोगन के देखे के मिलल आ सुने के परल सतवंती पतिब्ररता का मुँह के आखिरी बात —]

होखऽ ना देयाल अब धरती मतारी मोरी,
फाटऽ तनी गते से, सरन में समाये दऽ !

हाथी-घोड़ा-पालकी-कँहार आवे एही ओरी,
साटि हाली अपने में लोग से लुकाये दऽ।
फाटऽ तनी गते से...

आगि से उबारि के देखवलू तूं ईहो दिन,
बन में से अब तूं पताल में पराये दऽ !
फाटऽ तनी गते से...

उढ़री के नाँव रघुकुल के हँसारो करी,
बेटी के तूं नीके तरे निकसी कहाये दऽ !
फाटऽ तनी गते से...

हमरा कारन जनि पगरी धूमिल होखो,
जग में सुजस प्रान-धन के गवाये दऽ !
फाटऽ तनी गते से...

सून होई सीता बिनु कुछुओ ना बसुधा में,
लव-कुस लेइ बाप-पीती के अघाये दऽ !
फाटऽ तनी गते से...

दुखिनी जीअत बिआ लुगवो लुटइला प',
सहलीं बहुत, जनि अधिका सहाये दऽ !
फाटऽ तनी गते से...

कहनी कठोर ई जनम के ओराये दऽ तूं
लहरत जियरा के दियरा निभाये दऽ !
फाटऽ तनी गते से...

[सताइस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[लोक-लीला समेटल गइल। रामजी का साथे जनिहार लोग अजोध्या छोड़ि रहल बा। सरजू किनारे ठाढ़ महाबीर के सरूप, राम का मुँह से उनुकर बखान आ भक्ति-भाव के अँखियान एह राम-हनुमान का बिदाई-गान में होता—]

बेरा वा बिदाई के, ना निकसे वकारवा
झर-झर-झर वहे नयना से धारवा
राम-हनुमान के इ भेंट-अँकवारवा
देहिया से नेहिया के आखिरी दीदारवा
आंजनेय के वखानि वात-बेवहारवा
निकसे उदार सीतापति के उचारवा—
"मानतानीं हम रोंआँ-रोंआँ प' आभारवा
राजो देके दुनियाँ के होई ना उधारवा
कुछुओ त मांगऽ तनी करि के विचारवा
जोहेला तोहार मुँह रघु-परिवारवा"
उछहल गोड़े गिरि वल के आगारवा
मांगे महाबीर एके जिये के आधारवा—
"असरन-सरनवाँ छोड़ि घर ना दुआरवा
राउरे चरनवाँ हमरा लेखे सँवसारवा
लालसा वा राम-गुन-गान-रसधारवा
जोहल करीं अँजुरी में ओड़ले लिलारवा"

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्याम-सनेस

घुरुमे कपार चकचउन्ही नजरिया में
　　घन वनवाँ में आ के रहिया व्रतइतऽ
घेरेला अन्हार पाँव परे ना डगरिया प'
　　अँगुरी धराइ आगा चले के सिखइतऽ
दलकी भरल अन्हकूप में धसत वानीं
　　हाली सेनी दायानिधि ! बँहियाँ वढ़इतऽ
नइयाँ तोहार हम कव से उचारतानीं
　　जसोदा-ललन ! तनी एनिओं तिकइतऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[कंस का नेवता पर मथुरा में गइल कृष्ण-बलराम गोकुल में लवटि के फेरू ना अइलन। दिन बीतत गइल, बाकी ब्रज के लोग का मनमोहन स्याम बिसरले ना। उनुकर एक-एक चाल-ढाल, लीला-कौतुक नर-नारी का तन-मन के बेसुध-बेहाल कइ देला। नटखट गोपाल के हाव-भाव माता जसोदा का चित से उतरत नइखे। बालक कन्हइया का सोच में परल नन्दरानी के भरल करेजा के दाह आँखि का राहे उपटि रहल बा—]

दूनो नयना झरे,
मइया जसोदा का भोर ना परे

जहिया से अइले अकेले लवटि हारल नंदरइया घरे,
तहिया से बउरी वनलि मतिया कवनो ऊदम के मन ना करे
दूनो नयना झरे···

आवे सखा स्याम के ना दुआरे ना जाने कवना डरं,
मोहन बिना मनगर ना जाली जमुना किनारे गइया चरे
दूनो नयना झरे···

कवहूँ चले जव कर में मथनियाँ तव लागे जियरा जरे,
माखन के मेटुकी निहारत अन्हार होत लागे करेज विहरे
दूनो नयना झरे···

दिहली पेठाइ हाय तिनिका के अनते जिनि रहले आँचर तरे,
ओखरि में अपना दुलरुआ के वान्हल सभ दिन से आजु अखड़े
दूनो नयना झरे···

लहरेला तन, हहरेला मन छने-छन लागेले फँसरी गरे,
अँटकल परान सुनि नइयाँ कन्हइया के रहि-रहि के मयना धरे
दूनो नयना झरे···

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[मथुरा के राज-काज का आगा श्रीकृष्ण के गोकुल में आइल-गइल दूलभ हो गइल। अपना सलहिया ज्ञान-योग के दावेदार ऊधोजी से एक राति ऊ आपन मनसा परगट कइले—]

ऊधो, तूं तनी उहँवाँ जइतऽ !
हमरा विना मरत गोकुल के जा के जान वँचइतऽ ! ऊधो…
तोख-बोध दे झूठ मोह-माया के हरि ले अइतऽ,
आपन निरगुन-ज्ञान गोप-गोपिनि के तूं दे अइतऽ ! ऊधो…
कुंज गलिन में घूमि-घूमि मधुवन में अलख जगइतऽ,
लोग बटोरि जोग-जुगुती तूं जमुना-तीर वतइत ! ऊधो…
मइया-वाबा से तूं हमरा ओरि से माथ नवइतऽ,
पसगयवति में तनी राधिका से कुछुओ वतिअइतऽ ! ऊधो…

●

[ऊधो का जनाइल जे ई कवन बड़का भारी ऊदम बा। स्याम के निफिकिर करे खातिर ऊ चट दे तैयार हो गइले। कहे लगले—]

सोच जनि करऽ स्याम ! हम कामे आइबि हो ! सोच जनि…
कहल - सुनल बस करऽ
राति भर दम धरऽ
गोखुला का ओर डेग विहने वढ़ाइबि हो ! सोच जनि…
बृज के गँवार गाँव
रटेला तोहार नाँव
नीके हम निरगुन के चरचा चलाइवि हो ! सोच जनि…
रोग अँखियान करवि
जोग के वखान करवि
मोह - माया हरे घरे - घरे हम जाइवि हो ! सोच जनि -
अइसन देखाइवि राह
स्याम के ना करिहें चाह
सवुर धरऽ राधिका से हम वतिआइबि हो ! सोच जनि ‥

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

-

[मथुरा से साजल-सँवारल एगो रथ आइल देखि के गोकुल के लोगन का अगरहट के थाह ना रहल। उछाह-उमंग से धावल लोंगन के का हाल होवा, ई सुनल जाय—]

अइले हा बुझला वनवारी
सुनि आइल अगराइल धवलन आकुल गोकुल के नर-नारी
अइले हा .. ..

आइल बा मधुपुर से केहू सुनि पवली जसुमति महतारी
भरल बुढ़ारी के गोदी फिनु से पलुहल मन के फुलवारी
अइले हा ... ... —

लोग-वाग के वटुराइल देखत कइ दिहले सिखवन जारी
जोग-जुगुति के सुनि सनेस हँसि-दिहले गोपी-गोप अनारी
अइले हा ... ...

ठमकि गइलि हँकरति गइया होखलि अधिका अब जमुना कारी
बेकल जिया-जंतु मधुवन में लागल हो जइसे लुकवारी
अइले हा · ... ...

सुधि-बुधि विसरल सभके, कहिती का कुँहुँकत राधा बेचारी
गिरिधारी बिनु के वसुधा में बूड़त बृज के जान उबारी ?
अइले हा ... ...

नेह लगा के ज्ञान पेठावल छतिया पर बा दरल अङारी
करनी कइले स्याम-सुनर पर लागल ऊधो का हतेयारी
अइले हा ... ...

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[ऊधोजी सज से राधिका के ज्ञान सिखा रहल बाड़े]—

निरगुन रूप के धेयान धरऽ राधिका !

धुँइयाँ रमावऽ तूंहूं
जटवा बढ़ावऽ तूंहूं
जोग साधऽ भोगवा प' जनि ढरऽ राधिका !
निरगुन रूप के ····

केहू ना तोहार हीत
केहू ना तोहार मीत
मोह-माया-जालावा में जनि परऽ राधिका !
निरगुन रूप के ···

आसरा जगत के छोड़ऽ
नाता तूं अलख से जोड़ऽ
आगि में वियोगवा का जनि जरऽ राधिका !
निरगुन रूप के ···

तेजऽ अनका स्याम के तूं
चेतऽ अपना काम के तूं
कुँहुँकि-कुँहुँकि के अधिका जनि मरऽ राधिका !
निरगुन रूप के ···

वनऽ बैरागी अब
सरबस-तेयागी अब
दिहीला गेयान हम कान करऽ राधिका !
निरगुन रूप के ···

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[राधा का पाले कुछुओ ना परल।
एगो सखी से सुना रहल बाड़ी—]

तनिको बुझात नइखे, ऊधोजी के बतिया रे!
का-का दोनी कहतारे स्याम के सँघतिया रे!
तनिको ···

अँखिया का आगा बा हमार दुरगतिया रे,
मुँहवाँ खुलत ना, केहू मरले बा मतिया रे!
का–का दोनी ···

जोग साधि हमहूँ पाइबि का इजतिया रे?
रटतारे लोग 'राधे-स्याम' दिन-रतिया रे!
का–का दोनी ···

निरगुन नाँवें सुनिके लागे आजु दँतिया रे,
काढ़ेले करेजा टेढ़ साँवरी सुरतिया रे!
का–का दोनी ···

बनले कठोर एगो भेजले ना पतिया रे,
साटि तनी कागजे जुड़ाइ लिहितीं छतिया रे!
का–का दोनी ···

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[अंत में गोपी लोग ऊधोजी से अरज करे लागल—]

ऊधोजी ! अब मधुपुर जाईं
जाके स्याम-सुनर का लग हमनी के हाल सुनाईं
ऊधोजी ! अब ···

जनि बैराग बताईं अबलनि के जनि जोग सिखाईं
निरगुन-ज्ञान बिकाई ना, दउरी-दोकानि उठाईं
ऊधोजी ! अब ····

मतिया के बउरी गोपिनि से जनि कुछुओ कहवाईं
पगहा अब गोपाल छोड़ि जनि अनका हाथ धराईं
ऊधोजी ! अब ···

चारा-घासि चरे खातिर पसु-पंछिन के समुझाईं,
अन-जल घोंटत खा अदिमी के दुख तनिका पतिआईं
ऊधोजी ! अब ···

बूड़ि रहल बा बृज, गिरिवरधारी के अब लवटाईं,
कब ले साँस बाट जोहो उनुकर रउए बतलाईं
ऊधोजी ! अब ····

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[ऊधोजी का बूझे के कुछ बाकी ना रहल। गोकुल से लवटि के श्रीकृष्ण से भाव-बिभोर हो के समाचार सुना रहल बाड़े—]

गोखुला में पेठवलऽ स्याम! हमरा के

वड़ भारी ज्ञानी हईं हम कहिके
भकुहा वनववलऽ स्याम! हमरा के
गोखुला में

केकरा से का कहे के होई ओहिजा
तनिको ना सिखवलऽ स्याम! हमरा के
गोखुला में…

गोपिनि से नेह क' के एहिजा वइठलऽ
ओरहन सुनववलऽ स्याम! हमरा के
गोखुला में…

राधा के हाल जनि हमरा से पूछऽ
हतेयरिया लगवलऽ स्याम! हमरा के
गोखुला में…

हमरो निअर कठकरेजी मोंहाइल,
रोइ अपनें रोववलऽ स्याम! हमरा के
गोखुला में…

धनि हवऽ तूं आ तोहार गोप-गोपी,
लोक लीला देखवलऽ स्याम! हमरा के
गोखुला में…

आ गइलीं हम चउरासी भरमि के,
निभरम तूं वनवलऽ स्याम! हमरा के
गोखुला में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[धीर-गंभीर श्याम का मुँह खोले के
परल। ऊधो से गोटे बात बता दिहले—]

ऊधो! सुख-सार इहाँ नइखे।
राज–समाज वा मधुपुर में ऊ बात-विचार इहाँ नइखे।
ऊधो! ...

नन्द बबा, जसुमति मइया के छोह-दुलार इहाँ नइखे,
गाइनि, गोपिनि-गोपन सङ विरिदा के बिहार इहाँ नइखे।
ऊधो! ...

छूटि गइल बँसुरी उहँवें, सुर के रस-धार इहाँ नइखे,
देहि डिठार भले पर आजु परान हमार इहाँ नइखे।
ऊधो! ..

[ऊधो का अपना ज्ञान के थाह लागि गइल। ऊ मानि लिहले—]

चललीं सभ चाल उतान, गुमान बड़ा रखलीं हम ना नवलीं।
रस के हलिया हम ना जनलीं, कथ काठ कठोर कहे धवलीं।
रहि के पँजरे पुरुसोतम का कुछु ना मङलीं, कुछु ना पवलीं।
सभ नाच हमार अकारथ वा गुन माधव के जब ना गवलीं।

[सँतिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[द्वारकाधीश महाराज श्रीकृष्ण अपना लइकाईं के सँघतिया गरीब सुदामा के देखि के झँखि रहल बाड़न—]

काहें खातिर मिलल हमरा अनघा संपतिया
मोहाल हो गइल तोहरे दरसन सँघतिया !
मोहाल हो गइल ...

आजुवे तँवाइ गइल सोन-वरन देहिया
वा खाल हो गइल घसि के आँखि-मुँह, छतिया !
मोहाल हो गइल ...

पँइयाँ पिरात होई, फाटल वा पनहिया
वा लाल हो गइल कइसन फोरवन के पँतिया !
मोहाल हो गइल ...

पढ़ल पंडितवा के हइसन हलतिया !
बेताल हो गइल बुधि, बल, अवकतिया !
मोहाल हो गइल ...

गोखुला के रस छोड़ि बसलीं दुअरिका,
जवाल हो गइल जीअल पाइ के इजतिया !
मोहाल हो गइल ...

अछइत गोपाल के इयारवा लङोटिया
बेहाल हो गइल ई अखरखन के बतिया !
मोहाल हो गइल ...

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फुटकर

द्रौपदी–पुकार

(चीर-हरन का बेरा)

धावऽ कृस्न ! धावऽ, धावऽ, हाली सेनी आवऽ हो !
भरली सभा में आज
जात बा लुटाये लाज
पत-पानी डूबे चाहे, देरि जनि लगावऽ हो ! धावऽ कृस्न ! ....

टुकू-टुकू ताके केहू
एने-आने झाँके केहू
गूङ-वहिर वनि के तूं हूं जनि महटिआवऽ हो ! धावऽ कृस्न ...

पांडव का कुवूधि जागल
सहकेला कौरव पागल
गरहन धरम पर लागल, धाइ के छोड़ावऽ हो ! धावऽ कृस्न ...

खींचेला दुसासन सारी
पीटें दुरजोधन तारी
सिंह अस सुदरसनधारी ! गरजन सुनावऽ हो ! धावऽ कृस्न...

केकरो वरेला खीसि
रहे केहू दाँत पीसि
फरके भइले जनि बइठि के तूं हूं अब घिरावऽ हो धावऽ कृस्न...

चूप वाड़न सासु-ससुर
ताकतारन देवर-भसुर
लजिया बहिनि के अपना भइया ! बचावऽ हो ! धावऽ कृस्न--

खून घोंटि रहतानीं
तोहरे से कहतानीं
सहि लेलीं बहुते अधिका जनि सहवावऽ हो ! धावऽ कृस्न ...

रोवतानीं पूका फारि
केहू ना सुने गोहारि
दीनबंधु काहें खातिर वाड़ऽ तूं बतावऽ हो ! धावऽ कृस्न ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोलानाथ से
(निहोरा)

भोला ! फेरीं तनिका हमरो पर नजरिया,
करीला हम गोहरिया ना ।

सुनि के अवढरदानी नाँव
चाहतबानीं धरितीं पाँव
रउआ के मनइतीं करि के नकदरिया, करीला हम ...

बाटे बड़ी दूरि कैलास
कइसे आईं नियरा-पास ?
छूटत नइखे माया-मोह के बजरिया, करीला हम ...

माथे गंगाजल के धार
गर में जिअत सरप के हार
हाथे बा त्रिशूल, बँसहा के असवरिया, करीला हम ...

झोरी में बा भाँग-धतूर
देहे बा भभूति भरपूर
डांड़े बाघंवर के झलकेला रेघरिया, करीला हम ...

मइया पारबती का साथ
दिहितीं दरसन दीनानाथ !
लिहितीं एहू अनगराहित के खबरिया, करीला हम ...

इचिका करितीं एनिओं छोह
नइखे लागत काहें मोह ?
बानीं गौरी-शंकर ! हमरो, बाप-मतरिया, करीला हम ...

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमिरन
(सोरठी)

पहिले बिनईं हम धरती मतारी के हो,
धरती मतारी के हो,
सहेली जे चरन हमार नूं हो राम !
दोसरे विनईं हम उगत आदित देव के,
उगत आदित देव के,
पाले जे जग–सँवसार नूं हो राम !
तीसरे विनईं पवनदेव वलवान के हो,
देव वलवान के हो,
जिनि बाड़न साँस के आधार नूं हो राम !
चउठे विनईं अगिन देवता छछात के हो,
देवता छछात के हो,
जिनिकर तेजवा अपार नूं हो राम !
पाँचवें विनईं घनश्याम रूप मेघ के हो,
श्याम रूप मेघ के हो,
वरिसे जे अमरित के धार नूं हो राम !
छठवाँ में सुमिरीले पारापारी छवो रितु के,
पारापारी छवो रितु के,
अजगुत भारत के जे सिंगार नूं हो राम !
सातवाँ में 'सातो रिसि' अउरू 'ध्रुवतारावा' हो,
अउरू ध्रुवतारावा हो,
चमकत चनरमा के लिलार नूं हो राम !
आठवाँ में दरसन पाईं परबत–समुन्दर के हो,
परवत-समुन्दर के हो
काठ-पथल रतन-भंडार नूं हो राम !
नउवाँ में नाँव सुमिरीं नर-नारायेन के हो,
नर-नारायेन के हो,
महिमा वा जिनिकर अपरंपार नूं हो राम !
दसो नोंह जोरि हम बिनईला दसो दिसि के,
विनईला दसो दिसि के,
भाग जागे भोरे भिनुसार नूं हो राम !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत-चरनवाँ

सेवहु संत-चरनवाँ ए मन, होइहें तरनवाँ ॥
पाँक में धसल, भव-जाल में फँसल वाड़ऽ
करऽ होस होखे उवरनवाँ, ए मन ... ...

लोभ में परल, माया-मोह प' ढरल वाड़ऽ
भोगवा बढ़ावे हहरनवाँ, ए मन ... ...

करऽ सत-संग, होई नीक रंग-ढंग सब
छूटी छने-छन के मरनवाँ, ए मन ... ...

छोड़ऽ अभिमान, धन-वल के गुमान अब
मिलिहन असरन-सरनवाँ, ए मन ... ...

निरगुन

बसल वाड़े पवन-पँखेरुवा हो, पिंजड़ा में समाइ
चसकल विलरिया अगोरेले बइठल घात लगाइ

मटिया के तुनुक सिरिजना हो, सोनवाँ के सिङार
लहठी से लेवरल वा घरवा हो, जेह में जरे घोनसार

मोहवा के लादल वनिजिया हो, माया के वजार
सपना के बिकिरी-बेसहिया हो, कइसन नगद-उधार ?

छव खल के वान्हल लहँगवा हो, तीनि रंगी ओहार
नरिया के चढ़ि असवरिया हो, जाये के वा ससुरार

मिलि लेहु भरि अँकवरिया हो, छन भर खातिर आइ
कर जोरि बाटे गोड़धरिया हो, सुनऽ मन-चिन लाइ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरस्वती-बंदना

हमरा माथवा से चरन छुवाइ देतू तूं !
चाल-ढाल वा वनइला
पाप के भरल वा घइला
मइया ! ठगवा के मोहवा भगाइ देतू तूं !
हमरा ...

दुनियाँदारी के ई धन्धा
वा वनवले साँचो अन्धा
भरनी-तानी बीचे अलख लखाइ देतू तूं !
हमरा ...

तलमलाईला अन्हारा
केहू संगी ना सहारा
रहिया सूझे नाहीं, अङुरी धराइ देतू तूं !
हमरा ...

आन वात ना विचारीं
देहिया राते-दिन निहारीं
नेहिया चाम छोड़ि राम से लगाइ देतू तूं !
हमरा ...

मेटे करिखा के ई दगिया
धन्हके अब धुंआत अगिया
रवा कंठवा के तनिका सुनुगाइ देतू तूं
हमरा ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहे जइसे राखऽ

कुछुवो ना कहे के बाटे हमरा चुप रहे के,
चाहे जइसे राखऽ, मालिक हो ! मरजी तोहार ! चाहे···

दीहऽ बड़का बोझा बाकी रहिहऽ सगरे सोझा,
चाहे जइसे राखऽ, अतने बा अरजी हमार ! चाहे···

माथ ना नवत्रलीं कवहूँ हाथ ना उठवलीं,
चाहे जइसे राखऽ, बाउर बा मुँह के बकार ! चाहे···

लूरि ना निमनका एको, बानि सभ जबुनका,
चाहे जइसे राखऽ, अछरंगी बात-वेवहार ! चाहे···

मनलीं ना इरिखा, ढोवत बानीं अनघा करिखा,
चाहे जइसे राखऽ, हम बानीं ढिबिरी धुँआर ! चाहे···

कहिये से अइलीं जरते, मूड़-मूड़ बरते,
चाहे जइसे राखऽ, कोइला करऽ तूं भा अङार ! चाहे···

घाम में तँवाइवि देहिया, सीति में जुड़ाइबि,
चाहे जइसे राखऽ, रहे के वा सदईं उघार ! चाहे···

सुनलीं कहलिया तोहरे कइलींहाँ टहलिया,
चाहे जइसे राखऽ, भइलीं ना भलहीं लखार ! चाहे···

तोहरे

हाथ-गोड़ बान्हि के धसोरि देलऽ पाँक में तूं,
बानीं लसरात उबारे के परी तोहरे !

आँखि मूँदि, मुँह जावि, कानवाँ ममोरतारऽ
हूकवा हियरा के उचारे के परी तोहरे !

माथ पर राखेलऽ पहाड़ तूं जिनिगिया के
भार बेसम्हार उतारे के परी तोहरे !

साथ में रहत बाड़ऽ अतना अलोत काहें,
परदा ई अब उघारे के परी तोहरे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरज

अरज करीं त करीं कइसे,
गरज के तरज नइखें हो,
ए दीनानाथ! सहि-सहि के छतिया प' लातवा
करेजवा के कोर ढहे हो!

राज जिनिगी के हारि गइलीं,
ना तबहूँ भिखारि भइलीं हो,
ए दीनानाथ! जेकरा कारन कइलीं चोरिया
से हमरा के चोर कहे हो!

रहलीं हाँ सभ दिन सोझिया,
ना जाने पवलीं नव-छव हो,
ए दीनानाथ! जालवा के हाल हम ना जनलीं,
ना दाव ढेरि-थोर लहे हो!

काया में लागल बाटे घूनवाँ,
सूखत आइल खूनवाँ नूं हो,
ए दीनानाथ! गुनवाँ भइल बा अयगुनवाँ,
मसखरी प' लोर बहे हो!

मनलीं ना भलहीं कहलिया,
करीला हम टहलिया त हो,
ए दीनानाथ! हीकवा ना छोड़े आपन लीकवा,
चलत एके ओर रहे हो!

निभरम रहेले अन्हारा में
अकसरे लगवले लव हो,
ए दीनानाथ! लाफि दूबर दियरी के आन्हीं में
झँकोर के धसोर सहे हो!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गनपति से

गनपति, गनपति, गनपति, गनपति !
आजु होईं आगा ठाढ़, ना त बाँची ना ईजति
वा बढ़ल बेबिचार, पसरल जाला अति
सहे आन्हारा का पाछा अँखिगर दुरगति
घार डेगे-डेग पर बिआ डलले कुमति
ठग-वटवार करेला अन्हार में हुजति
मँझधार में वा नाव, बेसम्हार बा बिपति
राखीं निभरम मति, लागे जनि असकति
सिया-राम, लछुमन, हनुमान के मूरति
भरे हिया में अँजोर राधे-स्याम के सूरति

अबकी

अवकी वने राम जो अइते
दसा देखि वनवासिन्ह के ना लवटि अवध में जइते
उदवासल नगरी से अपना गाँवें-गाँइं धइते
सीता का वियोग से कम ना दाह घरे-घर पइते
वानर-भालु-गीध अस लोगन से भरि मुँह बतिअइते
निसिचर-दल का वीच बिभीसन के बिरोध पतिअइते
रिसि-मुनि लोगन का मतिया में पइसल भरम भगइते
वमकित चमकत पाप पवन–सुत अइसन आगि लगइते
राम-राज के बात भुलइलो ना अब राम कढ़इते
सरग छोड़ि भुँइयें रहिते, समता के पाठ पढ़इते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखीं–सुनीं

मंगलाचरन ... १०

'राम–लीला' में

१. राम ... ११
२. मुनि सङ्ग बालक ई धनुधारी ... १२
३. अरज अहिल्या के ... १३
४. सीता जोगे ईहे बरवा बा ... १४
५. चाह भरत कै ... १५
६. के अब रही भवन में ? ... १६
७. केवट राज के गोहरांव ... १७
८. सेवरी के साध ... १८
९. नन्दीगांव के तपसी ... १९
१०. उर्मिला के जँतसारि ... २०
११. सीता के जोह .. २१
१२. सलाह बिभीसन के ... २२
१३. गीत गुनावन के ... २३
१४. मुरुछाइल भाई से ... २४
१५. सगुन महतारी के ... २५
१६. अइलन हो, रघुबीर अवध में ... २६
१७. होखऽ ना दयाल अब धरती मतारी मोरी ... २७
१८. राम-हनुमान-बिदाई ... २८

'श्याम-सनेस' में

१. जसोदा-ललन ... २९
२. भोर ना परे ... ३०
३. ऊधो ! तूं तनी उहँवां जइतऽ ... ३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. सोच जनि करऽ स्याम ... ३१
५. अइलेहा बुझला बनवारी ... ३२
६. निरगुन रूपके धेयान धरऽ राधिका ! ... ३३
७. तनिको बुझात नइखे ऊधोजी के बतिया रे ... ३४
८. ऊधोजी, अब मधुपुर जाईं ... ३५
९. गोखुला में पेठवलऽ स्याम हमरा के ... ३६
१०. ऊधो, सुख-सार इहाँ नइखे ... ३७
११. हमना गवलीं ... ३७
१२. सँघतिया सुदामा ... ३८

फुटकर

१. द्रौपदी के पुकार ... ३९
२. भोलानाथ से ... ४०
३. सुमिरन ... ४१
४. संत-चरनवाँ ... ४२
५. निरगुन ... ४२
६. अरज ... ४३
७. चाहे जइसे राखऽ ... ४४
८. तोहरे ... ४४
९. सरस्वती-वंदना ... ४५
१०. गनपति से ... ४६
११. अबकी बने राम जो अइते ... ४६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation; Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

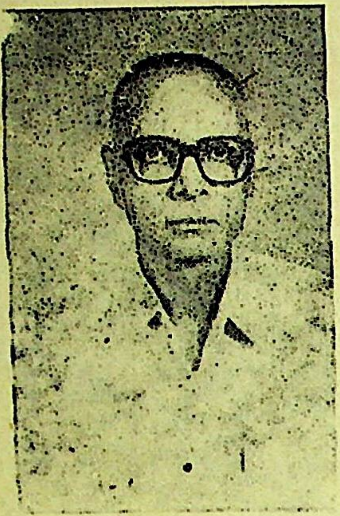

भाव - विचार से भरपूर अनुभूतिपरक भोजपुरी भाषा-साहित्य का सृजन, संपादन, संकलन, प्रकाशन आ प्रचार-प्रसार में पछिला सताइस साल से जीवे-जाने लागल

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

के

कृति-क्रम

प्रकाशित : १ जय बंगला (लघु काव्य)
२. कौशिकायन (प्रबंध काव्य)
३. बेटा के नइहर (ललित निबंध)
४. सुदिन (प्रगतिशील गीत संग्रह)
५. सेवकायन (प्रबंध काव्य)
६. पँखुरी भइल हजार (बरवै संग्रह)
७. लीला ई श्री राम-श्याम के (तगी रूपक)
८. भोजपुरी भूँइ (कविता संग्रह)
९. अनसाइल राग (कविता संग्रह)

प्रकाश्य : १. पतिआत ना केहू (गजल संग्रह)
२. गाँव बारहो मास में (गीत संग्रह)
३. डागा बाजि गइल (कहानी संग्रह)
४. घर के गूर (निबंध संग्रह)
५ गइल घर (उपन्यास)
६. हम (आत्मकथा)
७. स्वर मत दो (हिन्दी कविता संग्रह)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतिआत ना केहू

[गजल गीत]

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतिआत ना केहू

[गजल गीत]

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतिआत ना केहू

प्रकाशक : अतुल बंधु
शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१

रचयिता : श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

संस्करण : पहिल, सन् १९८७ ई०

सर्वाधिकार : प्रकाशक

दाम : रुपया १०/- (दस)

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-४

PATIAAT NA KEHOO
[Bhojpuri Poems]
by
Shree Avinash Chandra Vidyarthi
Price : Rs. 10/- (Ten) only

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

कविवर श्री जगन्नाथ प्रसाद

(प्रमंडलीय अभियंता, दूरभाष)

के

गीत इनिकें लगे रोज गावल करीं
चीज आपन बनावल सुनावल करीं

मीत मनगर मिलल एक ईहे रहसु
हीक जा के जहाँ हम जुड़ावल करीं

टेढ़ भा सोझ का हऽ बतावल करसु
नीक–बाउर अलग हम हटावल करीं

मीठ कम, तींत बेसी पचवले रहीं
लाज से हम कलम ना उठावल करीं

चाह इनिके रहे राह ई हम धरीं
डेग आपन पसन से बढ़ावल करीं

गीत हो भा गजल, 'केहू पतिआत ना',
श्री जगन्नाथ के हम चढ़ावल करीं

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेसी का बोलीं ?

गीत-गवनई हमरा सुभाव में लइकाइयें से रसल-बसल रहे। बचपन में बाबूजी का जबरे भजन-रामायन गाईं-गुनगुनाईं। 'ईआ' का मुँहें संस्कार-गीत, परब-तेवहार के गीत आ मातादाई चाहे गङ्गा मइया के लोकगीत भर-पेट सुनलीं आ सबदलीं। सेयान भइला पर नाच-तमासा में मन रमल। अपना चेतनउग गाँव का राजनीतिको बात-बिचार में जोरल गाना के हवेख कइलीं। कमे उमिरि में, प्रखर राष्ट्रीय चेतनावाला जुग में (मार्च, १९४५) अपना गाँवें का हाई स्कूल में मास्टर भइलीं, जहाँ सीखे-सिखावे के प्रतिष्ठित परम्परा रहे। पारिवारिक परिस्थिति से जँताइल रहलो पर अनुवंशिक अनुश्रुति आ प्रबुद्ध अध्यापकीय प्रारंभिक जीविकोपार्जन के स्वत: सुलभ साधन का चलते मन में हीनता के भाव ना उपटे पावल। सात साल का बाद पटना सचिवालय का सेवा में अइलीं। एहिजो अपना राजनीतिक, साहित्यिक आ आध्यात्मिक ज्ञान-परिधि का प्रसार खातिर पुरहर सुजोग पवलीं।

भौतिक साधन से संपन्न त ना बाकी विपन्नो ना रहलीं। भविष्य में अविचल आस्था राखि के वर्तमान के झेललीं। बड़, छोट ढेर जने का सम्पर्क में अइलीं; बड़ के बड़ाई गवलीं त छोट के छोटिहइयो बिसरवलीं। बाकी, भावनात्मक-विचारात्मक धरातल पर बरोबरी के दावा रखनिहार लोगन के एक-एक करके छटकत, भटकत आ भाव से उपराजल अनका करनी के गटकत देखि-देखि मने-मन बिहँसल कइलीं। अप्रील, १९५९ में 'भोजपुरी परिवार, पटना' के 'संयोजक' भइला का चलते फरमाइसी तौर पर हमरा तुकबंदी करे के परे। भोजपुरी सभा-सम्मेलन में जात-आवत एक-से-एक कविता सुने के सुजोग मिलल। अपना मनहूँ कुछ जोरलीं, जेह में गीत-गवनई का देहि में बुद्धि-विचार के साँस रहे। १९६० में भोजपुरी परिवार के बोलहटा पर बक्सर से स्व० भाई मंगलाचरणजी उपाध्याय का जबरे पधारल कविवर जगन्नाथजी पटना ट्रेनिंग कॉलेज में आयोजित कवि-सम्मेलन में अपना काव्य-पाठ से रस बरिसवले आ आचार्य शिवपूजन सहाय जी के मनगर आसिरबाद पवले रहले। उमिर-कद में छोट रहलो पर ऊ नेह-नाता में हमरा लमहर लउकलें। दस बरिस के बाद १९७० में जब ऊ पटना टेलीफोन केन्द्र का सेवा में रहसु, एक दिन बंधुवर ब्रजकिशोर मिश्रजी (प्रो० ब्रजकिशोर) का चहले हमनी के तीनों आदमिन के जुटान मीठापुर (पटना) में जगन्नाथजी का कोठरी में होखल। दूनो जने 'भोजपुरी कहानियाँ', वाराणसी के प्रतिष्ठित सुलेखक रहलन, बाकी ओह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन ले एक दोसरा से देखादेखी ना रहे। औपचारिक बतकही का बाद जगन्नाथजी के कविता-पाठ भइल आ थोर-ढेर हमरो सुनावे के परल।

जगन्नाथजी अपना कोठरी में अकसरुआ रहसु, अपने बनावसु-खासु आ अपना सहकर्मी आ हामा-सूमाँ अस लोगन का अइले-गइले प्रेम से नीमन चटक-मटक चिखइबो करसु। साँझि-के-साँझि हमार उनका इहाँ आवाजाही जारी हो गइल। एक दिन उनकर हुकुम भइल 'रउआ गजल लिखीं।' 'हम' आ 'गजल'? हम बतवलीं कि हमरा पासे गजल लायक ना त भावे-भूँइ बा आ ना देखनउग कहे के ढंगे, यानी गजल का जमीन पर पाँव रोपे के हमरा धिधिरिक ना हो सके। आशिकी-माशूकी के बेगर नगिचाह चीन्हा-परिचे के गजल लिखाई त कइसे 'पुछला पर जगन्नाथजी के जबाव रहे 'रउआ लगे जिनिगी के निकहन अनुभूति बा, ओही के आधार लेके सुरू त करीं।' बस, एके दिन (११ मई, १९७०) के गजल का ढंग पर लिखल आपन तीन गो रचना लेके उनका भिरी पहुँचल रहीं, जेह में पहिला, "कबो एकहू छन पसन से कटल ना, ई मनवाँ के सउदा बे-मन के पटल ना"; दोसर, "नगरिया में केहू कबो चुप रहल ना, डगरिया में कसि-कसि के का-का कहल ना" आ तीसर रहे "उमिरिया के बगिया फुलाइल-फरल ना, जिनिगिया में तनिको कबो कल परल ना"। करीब-करीब हर हफ्ते किसिम-किसिम के तर्ज में गावे लायक चीज उनका लगे, जा-जा के देखावे-सुनावे लगलीं। १९७० में '६८, '७१ में ३२, '७२ में १२, '७३ में ५, '७६-'७७ में १-१ आ '८५ में १ यानी मिला-जुला के १२० गो गीत रचाइल। ओह में से एको एने-ओने ना हटा के सभे के एके जगहा 'पतिआत ना केहू' में धइल गइल बा। इन्हनी में से कवना के गीत, कवना के गजल आ कवना के 'का' कहाई ई हम ना कहि सकीं। जे हमार जीअल-मुअल तनिको निहरले होई ओ करा इन्हनी में हमार सोझ-टेढ़, भल-बाउर, फरिछ-धूमिल परछाँहीं नजर आई। समान चाहे सदृश अनुभूति-अभिव्यक्ति वाला ढेरि ना त थोरहूँ लोग जरूरे मिलि सकेला, जेकरा ई संग्रह गड़ी ना। गजलन के भाव-भूँइ तइयार करे में कुछुओ उठा ना रखनिहार हीत-मीत-मुदई, अपना घर-परिवार-संसार के आभारी बानीं। लोक भाषा का साहित्य-सेवियन के सज से सुधी समाज का सोझा समुपस्थित करनिहार जयदुर्गा प्रेस के अलीक परंपरा हमार कतना सहारा भइल बा कहि ना सकीं। अपना ऊपर का कहनाम का प्रमाण में हम 'समर्पण' में जे सुनवले बानीं, ओकरा के सुधी सुकवि जगन्नाथ जी स्वीकार करबि, एह भरोसा का बाद बेसी का बोलीं?

चन्द्रायण, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी
शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१ २१-१०-८६
छव]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूची

१.	गजल में आगि बा हमरा	...	१३
२.	हम मीत देखि लेलीं	...	१३
३,	फूल का जोह में कांट	...	१४
४.	फूल महङ बहुते जनमार भइल	...	१४
५.	कांटो का सङ नेह निभवलीं	...	१५
६.	उमिरिया के बगिया फुराइल	...	१५
७.	नगर में दरदखाह एको	...	१६
८.	अनका सुघर सरूप से	...	१६
९.	पसन से कवो एकहू छन	...	१७
१०.	सहल करेज के जवान से	...	१७
११.	कहे खातिर गजल काहें दो	..	१८
१२.	जेही हमरा डगरिया के	...	१८
१३.	ताकल ना हमरा ओर कवो	...	१९
१४.	हम सोझ ठाढ़ होके भहरात	...	१९
१५.	अनका घरे भलहीं सुघर भिनुसार	...	२०
१६.	बहुते सकेत में हमार जान	...	२०
१७.	पतझार के बसेर वा इहां	...	२१
१८.	बटमार से कहीं का कुछुओ	...	२१
१९.	कइसे कहीं करम में का	...	२२
२०.	जान हाजिर रहल कइलीं	...	२२
२१.	देखे के हमरा दुआर इहां	...	२३
२२.	अपना गीतन के गा के	...	२३
२३.	पांखि पवलीं ना भले	...	२४
२४.	जिअल जा रहल ना	...	२४
२५.	कहीं का कि कइसे	...	२५
२६.	रहि के जमातन जवरे मन	...	२५
२७.	अकसर अजान राह जस-तस	...	२६
२८.	हम हाल का सुनाईं दिल के	...	२६
२९.	निकसल जोहे जे-जे इहेंवां	...	२७
३०.	इहां से लेबि ना कुछुओ	...	२७
३१.	हम रहीं भा ना रहीं	...	२८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३२. नीर अनघा बदरिया में ... २८
३३. भइलीं कहते कहिये से हम ... २९
३४. सुनल चहबऽ सँघतिया तूं त ... २९
३५. अरज हमार सुननिहार इहाँ ... ३०
३६. आन केहू भले कहि दे कि ... ३०
३७. जात रहीं हम गिरल ... ३१
३८. 'भइल भिनुसार' कहि के आजु ... ३१
३९. बेरि-बेरि काहें माङतारऽ ... ३२
४०. पसनगर तमासा जहाँ जा के ... ३२
४१. चुपचाप एह घरी तूं ... ३३
४२. तिकइहऽ जनि तूं हमरा ओर ... ३३
४३. ललक जाईं तँवाइ ... ३४
४४. चमक हरदम रहे तहरा में ... ३४
४५. कइल चाहे हुलसि के आजु ... ३५
४६. रहे अब साथ में ना देत ... ३५
४७. मुँह से ना सोझ बतिआवे ... ३६
४८. कढ़ा के नाँव कवनो एक दिन ... ३६
४९. उनुका भलहीं हमरा पर ... ३७
५०. उनुका दँवक से वहार जरि के ... ३७
५१. हमरा माथ पर अभाग ... ३८
५२. फुला के मुँह रहीं अकेल ... ३८
५३. ढोल के सोर सुनि के धावत ... ३९
५४. जहँवाँ बूड़ल सभे ऊ किनारा ... ३९
५५. बाग अपना लहू से पटावऽ ... ४०
५६. केहू रोवल कइल, केहू ... ४०
५७. देके अपने अँजोर हम ... ४१
५८. भोर ले के चोर अब मनवाँ ... ४१
५९. जोम में आन्हर लगे होईं ... ४२
६०. आजु ले अतिबार उनुकर ... ४२
६१. पहरिया अखरखन के ... ४३
६२. लखार होत नइखे रूप ... ४३
६३. अन्हरिया राति में चरचा चनरमा के ... ४४
६४. हम साँझि वा बिहान के चरचा ... ४४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६५. कहे पवलीं कहाँ, अबहीं त ... ४५
६६. सुदिन के बाट जोहत मन ... ४५
६७, तूं हँसावल करऽ भा ... ४६
६८. दियरिया के जो उसुकइवऽ ... ४६
६९. 'राति में भिनुसार' के चरचा ... ४७
७०. कहल गइल ना जवन हाल ... ४७
७१. बात असली इहाँ बतिआई के ... ४८
७२. भरल भंडार धरती का तरे ... ४८
७३. जिये के बा जिनिगिये भर ... ४९
७४ दिल गँवार ना दवल ... ४९
७५. आजु केहू लगे ना रहि ... ५०
७६. हम डेग ना बढ़ाईं अब ... ५०
७७. बहुत चहलीं कि कहि पइतीं ... ५१
७८. लाख जोर हम लगवलीं ... ५१
७९. साँझि भइलो प' दियरिया ... ५२
८०. भाग मानीला कि आइल बा ... ५२
८१. आस जम-जस इहाँ ... ५३
८२. सूझल कतो उपाइ ना ... ५३
८३. धइल चकोर के देखऽ ... ५४
८४. कवन बात ठहरे ठहर ... ५४
८५. धइ-धइ के अनकर बाँहि — ५५
८६. के कहाँ देखत ... ५५
८७. जनि अलोता रहऽ ... ५६
८८. लोग पँजरा ना आवे — ५६
८९. का रहुवे का भइल आदमी ... ५७
९०. रहल ना ठहर बाकी अब ले ... ५७
९१. पढ़े लगवऽ तूं उलुटा पाठ ... ५८
९२. गफलत में परल अब ले ... ५८
९३. हम भीर ना बोलाईं ... ५९
९४. गँववलीं का कहीं ... ५९
९५. भला हमरा से अब ... ६०
९६. सुकवार उमिरिया में . ६०
९७. बोलइतऽ त बड़ भाग ... ६१

[नौ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९८. बहुत हो गइल, अब का ... ६१
९९. रहे द भाग अब सूतल ... ६२
१००. सङ्‍े कतने रहन बरिआर ... ६२
१०१. बा भइल हमरा डगरिया ... ६३
१०२. माटी के दियरिया ई जो ... ६३
१०३ तसबीर त खुलता बा ... ६४
१०४ उड़े लगलऽ त देखवि ... ६४
१०५. आइलि जुआठि गर पर ... ६५
१०६. भेस में पहिला ना आइबि ... ६५
१०७. एक सुननिहार जो रहे त ... ६६
१०८. इहाँ आके हम अनगावल ... ६६
१०९. कहीं कवना मुँह से ... ६७
११०. रहि के अन्हार में हम ... ६७
१११. जब-जब तनिका देखल ... ६८
११२. किसमत में कहे के 'आह' ... ६८
११३. हाल का जानें कइसन ... ६९
११४. आके हमरा लगे केहू ... ६९
११५. आजु ओरमल बदरिया के ... ७०
११६. ना हम सरस बहार ... ७०
११७. केहू सोहाग के सिङार ... ७१
११८. केकरो अइला से ... ७१
११९. केहू हमरा भिरी कवहूँ ना ... ७२
१२०. सभा समाज में ना ... ७२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतिआत ना केहू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मुझे फ़ख़्र है मेरी शायरी
मेरी ज़िन्दगी से जुदा नहीं"

—शकील बदायूनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल में आगि बा हमरा

गजल में आगि बा हमरा गजल में पानी बा
धुँआत आँचि के हमरा लगे कहानी बा

कहे त का कहे, नइखे जबान ई मुँहगर
हमार बात सुनल वखत के जिआनी बा

फरिछ विहान के ना रंग चटक चेहरा पर
उदास साँझि के मइलछँहूँ रोहानी बा

जरल बा जीव, झनझनात चूर जाङर बा
जहान भर से तवो तइ भइल वदानी वा

रहल सहत सरद–गरम निठाह खँड़हर ई
भँड़ार भाव के अबो खड़ा निसानी वा

लिखल गइल ना कतो हाल एह परानी के
किताब में मिली कहाँ जवन जबानी बा ?

□

हम हीत देखि लेलीं

हम हीत देखि लेलीं, हम मीत देखि लेलीं
अपना सङे करम के अनरीत देखि लेलीं

सभ सोझ टेढ़ होखल, मेटल मुराद मन के
सुर-ताल जिन्दगी के विपरीत देखि लेलीं

सहलसि बहुत, रहलि ना सुकवार आजु देहिया
हम घाम देखि लेलीं, हम सीत देखि लेलीं

हमरा लगे बखानी अब का सवाद केहू
हम मीठ देखि लेलीं, हम तींत देखि लेलीं

दुख-सुख कबो जनाइल कम ना अधिक जगत में
के लीत देखि लेलीं, के दीत देखि लेलीं

सुनलीं बहुत, भले ना कुछ हम सुनाइ पवलीं
अब ले इहाँ गवाइल जे गीत देखि लेलीं

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फूल का जोह में काँट

फूल का जोह में काँट कम ना मिलल
का कहीं हम कि कइसन सितम ना मिलल

बान कसि-कसि करेजा प' लागल कइल
लोर ढारे के अब ले लकम ना मिलल

ऊँच चढ़ि-चढ़ि मनोरथ मिलल धूरि में
आसरा का लतरि के अलम ना मिलल

घाम का राह में ना छँहरिया भइल
टाँठ दिनवाँ का रतिया नरम ना मिलल

हाथ बहुते उठल, माथ बहुते नवल
साटि लिहलो प' छतिया गरम ना मिलल

सोझ रहलो प' सभ केहू टेढ़े कहल
चूक हमरे करम के रहम ना मिलल

□

फूल महङ बहुते

फूल महङ बहुते जनमार भइल
मङनी के काँट मिलनसार भइल

मिलत रहल कसि-कसिके मरम के कचोट
हँसमुख ना आजु ले मयार भइल

गइलीं हम आन का दुआर पर धधात
अपनो नइखे कवो हमार भइल

बंद सभे कंठ भइल सुनि हमार नाँव
करनी के ना कतो चिन्हार भइल

बनलीं ना काठ भले रहलीं कठुआत
केकर ना आँखि बा अङार भइल ?

धइल रहो किसिम-किसिम के सभ पहिराव
छार से उघार के सिङार भइल

□

RajGuru Math, Chhiwala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काँटो का सङ्ग

काँटो का सङ्ग नेह निभवलीं हाँ आजु ले
नाता ना जोरि फूल से पवलीं हाँ आजु ले
ताकीं कहाँ ले आगा? मिरिगा के भइल हाल
पानी का भके रेत प'धवलीं हाँ आजु ले
होला करेज घाही फूटेला तवे राग
ना गीत हम वनाइ के गवलीं हाँ आजु ले
लागे हमार बोली वे–रस वहुत कठेठ
साँचो कतो ना केहु का भवलीं हाँ आजु ले
पोसीं वनाइ आन के हम मड़ई तर के पाम
घामी अङ्जि साध से तवली हाँ आजु ले
काहें कबो निहारल जाइत रहनि हमार?
टूटल भले करेज, ना नवलीं हाँ आजु ले

□

उमिरिया के बगिया

उमिरिया के बगिया फुलाइल-फरल ना
जिनिगिया में तनिको कवो कल परल ना
चढ़ल साँस पर चाँप साँसति के सदईं
रहल ठाढ़ सकदम, छनो भर टरल ना
चलल धावते रेत पर मन-मिरिगवा
गिरल वे-खवर, हीक जल के मरल ना
रहल फाटते भूँइ मयगर के छाती
नयन कठकरेजी गगन के झरल ना
गँथाइल रहल काँट सँउसे गतर में
जखम खास खन्हरल मरम के भरल ना
लुकाइल कइल अब ले लवना में लुतुकी
धुँआते रहल जे जरल भा वरल ना

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नगर में दरदखाह

नगर में दरदखाह एको रहल ना
डगर पर चलत लोग का–का कहल ना ?

तनी 'आह' भा 'ओह' निकसल ना मुँह से
मरम पर गइल चोट कइसन सहल ना ?

खुलल दिल प' ताला लगावे ना जनलीं
कसम से कहीं दाव केकर लहल ना ?

भइल बा पथल पीर पोसल भितरिया
नयन से कबो ठोप एको बहल ना

रहल साध–पंछिन के सभ दिन बसेरा
विरिछ ई अरारे खड़ा बा, ढहल ना

सिहाइल सभे पर छोहाइल ना केहू
रहनि–चाल चहलीं नकल के गहल ना

□

अनका सुघर सरूप से

अनका सुघर सरूप से मिलान का करीं ?
अपना जबून रूप के गुमान का करीं ?

कब ले कहे-सुने के मजगर मिली सुजोग ?
सभ साध-सवख हो रहल झवान, का करीं ?

जरलीं भले, बरे के नइखे हमार भाग
करिखाह करम बाँव के बखान का करीं ?

भइलीं हरान वहुते लेके अल्हड़ करेज
नइखे चतुर सेयान के गेयान, का करीं ?

छतिया दरद बटोरि पोसि-पालि रहलि रोग
हलकानई, बे-जबान बा परान, का करीं ?

चहलीं निहारि पाइत केहू रहनि हमार
बनि काठ-पथल ठाढ़ वा जहान, का करीं ?

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसन से कबो

पसन से कबो एकहू छन कटल ना
महुङ मन के सउदा बे-मन के पटल ना

मिलल साध का ठेस कसि-कसि के अनघा
सवख पीर पोसे के जव भर घटल ना

उतरलीं बहुत आरती हम धधा के
बढ़वलीं बहुत बाँहि, केहू सटल ना

रहल ठाढ़ कूहा नजरिया का आगा
अन्हरिया के परदा डगर से हटल ना

कइल राति भर जोति कारन समर जे
दियरिया के लव आन्हियों में लटल ना

भइल सेइ सेमर के बदनाम सुगना
भजल नाँव एके ई दोसर रटल ना

□

सहल करेज के

सहल लरेज के जबान से कहाइल ना
बहल बतास तबो जीव ई जुड़ाइल ना

विहँसि-विहँसि अङेज वा कचोट कहिये से
रहल धुँआत भले नयनवाँ लोराइल ना

भरल गतर-गतर लहर इहाँ चिंलिगिया के
धन्हकि रहल अङार राख तर लखाइल ना

चमक-दमक बहुत समा रहल नजरिया में
बचन कठोर कवन वा जवन सुनाइल ना ?

वढ़ल हँसी-खुसी भरल बरात जिनिगी के
चलल सङे-सङे मरन कबो जनाइल ना

कहल गइल कतेक वेर कुछ बुझाइल ना
गजल सुनल अनेर दरद जो बँटाइल ना।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहे खातिर गजल

कहे खातिर गजल काहें दो तब ले भाव ना होला
सहे खातिर भितरिया जब ले कवनो घाव ना होला

पसनगर ना लखा दुनियाँ, सवदगर ना जना जिनिगी
दरदखाही भरलि जो दीठि, सहज सुभाव ना होला

कहेवाला - सुनेवाला त लगहीं - पास बइठेला
बने ना बात जो बोले - सुने के चाव ना होला

रहे मुँह फेरि के जवरे बनल बेपीर बेगाना
गजब नगिचाह ? अइसन आन ठहर दुराव ना होला

करेजा ना कबो अइंठात, पपनी कोर ना भींजे
निछोही का नजरि में नेह के दरिआव ना होला

गरज बा, हम करबि कर जोरि अतने अरज अपने से
तरज बा सोझ सभ इहँवाँ घुमाव-फिराव ना होला

□

जेही हमरा डगरिया के

जेही हमरा डगरिया के राही बनी
डेगे - डेगे करेजा के घाही बनी

साँचो बहुते गजब दिल के सउदा ई बा
भायी तनिको जो कम त तबाही बनी

नाता कहँवाँ ले जोहत - निबाहत चलीं ?
नेही सरबस लुटा के जे चाही बनी

केहू कतनो ना आपन कहावल करे
जे ना जवरे रहल से ना दाही बनो

मेली मुँह के रहल, साथ में ना चलल
ऊ बनी जो त कइसन सलाही बनी ?

जाई कहियो सराहल रहनि - चाल ई
बा मनाही जवन वाहवाही बनी

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताकल ना हमरा ओर

ताकल ना हमरा ओर कबो जवरे जे रहते आइल हा
जानत आइल हा अनका अस आपन जे कहते आइल हा

का हाल सुनाईं हम अपने मुँह से अपना उधिअइला के
वँहियाँ वँवड़ेरा के ई खर्ह आन्ही में गहते आइल हा

डूबत-उतरात रहलि जिनिगी अब ले परि के हिलकोरा में
बिसवास अचल दूबर हाथे पानी के महते आइल हा

नोनी लागल हा अइसन भीतर-भीतर रादा-रादा में
झरि-झरि के महल मनोरथ के रहि-रहि के ढहते आइल हा

हम निहँसल जनम-करम के आञ्छ ले के अगरइतीं कइसे ?
रोंआँ - रोंआँ जाड़ा-गरमी - बरखा में डहते आइल हा

बा रोग भितरिया ई अइसन जे लोग वटोरे ना जाने
अँइठात करेजा पीर सजी हँसि-हँसि के सहते आइल हा

□

हम सोझ ठाढ़ होके

हम सोझ ठाढ़ हो के भहरात चलत गइलीं
रहिया प' बढ़ल अपना दिन-रात चलत गइलीं

हम लोर बहवलीं ना, कइलीं ना कबो सोर
दरकल करेज तइयो मुसुकात चलत गइलीं

सगरो रहल सँघतिया हठुआर अस अभाग
दम साधि - साधि बूड़त – उतरात चलत गइलीं

भरलीं उड़ान बहुते, भेंटल कहाँ अड़ान ?
कहुवा वनल रहीं जव जहुआत चलत गइलीं

कहियो धइल कतो ना केहू हमार साथ
पँयड़ा में हम अकसरे अगरात चलत गइलीं

जगला में चलत गइलीं, अँघुआत चलत गइलीं
मंजिल का ओर निभरम सपनात चलत गइलीं

□

[अंगद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनका घरे भलहीं

अनका घरे भलहीं सुघर भिनुसार देखि लेलीं
अपना दुआरे हम अन्हार अपार देखि लेलीं

विहँसे कतो बहार, सोभे फूलन के सिङार
हमरा बगइचा में बसल पतझार देखि लेलीं

टहकार कतहूँ दिन लखाला गहगहात राति
मनहूस आपन हो रहल संसार देखि लेलीं

चढ़ितीं पहाड़ ऊपर रहुए होसिला हमार
बउसाब बा अलचार ठोकि कपार देखि लेलीं

घइले रहे मनगर सभे आपन अचल किनार
दरिआब बीचे कूदि हम मझधार देखि लेलीं

कइलीं मुदइयो से ना हलुको कबो तकरार
भारी हमार हीते बा बटमार देखि लेलीं

□

बहुते सकेत में

बहुते सकेत में हमार जान एह घरी
बा छाँछ पर चढ़वले अरमान एह घरी

कठिने कठिन धराता सोझा सजी सवाल
जनमार अस जनात इम्तिहान एह घरी

रतिया भइलि कुराहा, नइखे कतो अड़ान
मतिया अन्हार देखि के हरान एह घरी

जइतीं कतो इहाँ से धन्हके जहाँ बतास
थथमा निठाह डलले बा छान एह घरी

कब ले मिली जतन से कवना तनी उबार ?
कुँहुके कराल जाल तर परान एह घरी

निहँसे नजरि निहारि नाक-भँहू इहाँ टेढ़
पसरे हमार ना कतो जबान एह घरी

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतझार के बसेर

पतझार के बसेर बा इहाँ, उहाँ बहार बा
मुँह पर उहाँ अँजोर, आँखि तर इहाँ अन्हार बा

सज से सिङार होत फूल खोंसि कतो केस में
गतरे-गतर इहाँ गँथात काँट बेसुमार बा

अनते भले ढरल-झरल करे गगन सुतार से
हमरा जरत जजाति तर दहारि में दरार बा

नइखे इयादि नाँव आजु भूखि भा पियास के
रसधार जहाँ माहुर, मधु मीठ तींत-खार बा

पवन्नीं सजाइ हम, इनाम धइल करसु ऊ सजी
दिल ई दुलार बाँटि-बाँटि बनल गुनहगार बा

पनही तरे धरात रहो कतो सुघर पाँवड़ा
रँउदे चलल अङार लाल पाँव ई उघार बा

□

बटमार से कहीं का

बटमार से कहीं का कुछुओ दया-धरम के
चरचा इहाँ चलाईं कवना मुँहे मरम के ?

बा लहलहात कतहूँ फूलल-फरल बगान
हम हाल का सुनाईं अपना जरल करम के ?

चिलिङी निकलि रहलि, बा गतरे-गतर लहोक
तनिको जनात नेवर उतपात ना गरम के

अखड़े अभाग रहि-रहि अँइठा रहल करेज
कवना तरे सम्हारीं अपना मरम नरम के ?

हँड़होर घोर होला बेपरद बहुत नाच
लङटा-लबार जुग का दरकार का सरम के ?

अँधुआत-खा डगर में लागल निठाह ठेस
सपना हमार टूटल, परदा हटल भरम के

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसे कहीं

कइसे कहीं करम में का खोट हो गइल
बँहियाँ बढ़ाइ मनवाँ अब छोट हो गइल

कइलसि अँजोर हमरे दियना अन्हार में
चहलीं सनेह तनिका बस मोट हो गइल

धवलीं धधा-धधा के रसधार का भिरी
जिनिगी गरे हलाहल के घोंट हो गइल

सगरो भइल करीला घाही सुभाव से
हमरे सिरे निछोही सभ चोट हो गइल

उनुका लगे सुनाईं का हाल आँचि के
लुतुकी धराइ गँव से जे ओट हो गइल

धह-धह चिरारि लहकलि हमरा उमेदि के
धुरिया उड़ाइ दुनियाँ लहलोट हो गइल

□

जान हाजिर रहल

जान हाजिर रहल, कइलीं ना कबो इनकार हम
बानि से अपना बनल बानीं बहुत अलचार हम

धूरि-धुँइयाँ ओढ़ि के बा जोति धूमिल हो गइल
अब कहाईला मधिम, रहलीं कबो टहकार हम

दाब में रखलीं बहुत हम जाबि के मुँह साध के
होसिला अँइठा गइल, बानीं बनल हतेयार हम

माथ के गगरी भरल फूटल डगर का ठेस से
सामने बलुरेत बा, पाईं कहाँ रसधार हम ?

ना उगल हा नेह के अंकुरी पखान-करेज पर
का करबि कतनो बहा के आँखि से पवनार हम ?

बा बदाइल भाग पंच, कहाँ रहल कुछ हाथ में ?
मात खा के मीत से अब का करीं तकरार हम ?

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखे के हमरा

देखे के हमरा दुआर इहाँ ढेरि मिलल
ढुंढ़ला पर मुँह के इआर इहाँ ढेरि मिलल
रोग कहीं कवन, खास काटल ई कूकुर के
झाँके के हमरा इनार इहाँ ढेरि मिलल
बान्हल वा हाथ-गोड़, कंठ परल ताला में
दाबे के हुमचत उचार इहाँ ढेरि मिलल
ओझल ना होत कवो धूरि-धुआँ आँखिन से
धोवे के धूमिल विचार इहाँ ढेरि मिलल
जोरल कइलीं नाता अगिया से पानी के
खउले के हमरा सुतार इहाँ ढेरि मिलल
पोसल गइलीं अब ले घोंटी पर माहुर का
भोगे के साँसति दुलार इहाँ ढेरि मिलल

□

अपना गीतन के गा के

अपना गीतन के गा के अघइलीं ना हम
अपना हीतन के पा के धधइलीं ना हम
माथ पर हमरा के ना बिराजल कइल ?
गोड़ो तर अब ले केकरो सहइलीं ना हम
आँचि पर कहिये से वा करेजा चढल
मनलीं पपनी के पहरा, फफइलीं ना हम
खूँख होखल खजाना ई अनकर भरत
रहलीं हाँ भलहीं भूखे, हहइलीं ना हम
पाँखि बिनु कइलीं हाँ आँखि से हम उड़ल
कवनो पिंजड़ा में अब ले समइलीं ना हम
आजु ले हमरा अइसन ठहर ना मिलल
जहँवाँ जा के बेजइहाँ कहइलीं ना हम

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँखि पँवलीं ना भले

पाँखि पवलीं ना भले पाँव में जंजीर मिलल
नाँव अजसी के परल बाँव जब तकदीर मिलल

आजु ले बात ना आपन कहे पवलीं खुलि के
मीत मन के मुदइयो से बढ़ल बेपीर मिलल

का कहीं हाल हम अपना धुँअइला आङ्छ के
आगि जोरल करेजा पर, नयन में नीर मिलल

आँखि मूँदल करीला देखि के बाजत थपरी
लाज ढाँके के सभा में लुटाइल चीर मिलल

हाथ केकर धरीं ? मरम पर इहाँ निसाना बा
तीर मारे में सजी लोग बावनबीर मिलल

नेह–नाता निबाहत घूरि हम धङलीं अनघा
एक हमहीं फकीर, बाकी सभे अमीर मिलल

□

जिअल जा रहल ना

जिअल जा रहल ना मरल जा रहल बा
अगिनि ओढ़ि के ना जरल जा रहल बा

रहल रूप एके जवन जिउ–जुड़ावन
अलोता नयन से टरल जा रहल बा

झलक देखि जल के धरा ना मिरिग–मन
चरन रेत ऊपर परल जा रहल बा

बहुत मोह लागे सपनवाँ झुठावत
गुनत आजु होसे हरल जा रहल बा

पथल ना वनल ई करेजा सहाउर
पसन से अङारा दरल जा रहल बा

कठिन हो रहल कंठ से कुछ कढ़ावल
भरल आँखि से ना झरल जा रहल बा

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं का कि कइसे

कहीं का कि कइसे रहल जा रहल बा
कपारे परल जे सहल जा रहल बा

कछवले बिआ आजु गूडी नजरिया
मुँहे ना अखरखन कहल जा रहल बा

भँवर बीच बेड़ा कवन घाट लागी?
बवंडर सङे ई बहल जा रहल बा

गजब हो रहल, लँन निकसे जहर के
जहाँ छीर–सागर महल जा रहल बा

बहादुर बनल बा निपाङुर जुआड़ी
सजी दाव जेकर लहल जा रहल बा

कठिन बा सम्हारल मनोरथ–लतरि के
महल आसरा के ढहल जा रहल बा

□

रहि के जमातन जवरे

रहि के जमातन जवरे मन अकसरुआ हो गइल
बउसाव-बल का उछइत जीव अवरुआ हो गइल

अगते कहाअत आइल हा बड़ फरहर जेकर चाल
निअराइ आपन मंजिल ऊ अब परुआ हो गइल

सदईं मनावत आइल हा जे चढ़ि-बढ़ि सभकर भाग
तवने जबान जगत का काने करुआ हो गइल

कहियो कतो ना पावल हा लागे ई निभरम नैन
सुखनीनि सवादल तेजि आज पहरुआ हो गइल

लुलुआवे केहू भा करे कतनो केहू बदनाम
हमरा लगे अछरंग हमार दुलरुआ हो गइल
बिकिरी-बेसाह खातिर ना उपरजलीं नाता-नेह
बनि के रहल जे घरुआ कबो बजरुआ हो गइल

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अकसर अंजान राह

अकसर अजान राह जस-तस पार हो रहल
ढूँढ़त अँजोर आजु अउर अन्हार हो रहल

मनलीं अभाग आपन, दीं आन के का दोस ?
जवरे चलत परछँहियों अलचार हो रहल

थथमल कठिन बा पाछा से पाइ के घसोर
लादल निठाह भार अब जनमार हो रहल

जरिछार हो रहल बा सभ लहलहाइल साध
माहुर समान बा इहाँ रसधार हो रहल

मिरिगा बनवलसि मन के ई कान के सवाद
घाट्ही अल्हड़ करेज बारंबार हो रहल

बान्हल रहे भले कबो, अब खुलि गइल जवाम
तोपल रहे दरद हमार उघार हो रहल

□

हम हाल का सुनाईं

हम हाल का सुनाईं दिल के, दिमाग के ?
हम राग में रहीला बन्हले बिराग के

डोलल बवंडरो में नइखे हमार पाँव
हम माथ पर चलीला धइले चिराग के

हमरा लगे सिहइनी के ना मिलल अड़ान
बड़ भाग हम मनाईं अपना अभाग के

आइल कचोट सहते कब से कंवल करेज
हम ना कबो उघरलीं घवदाह दाग के

फर-फूल हाथ से बा छूअल इहाँ गुनाह
रखवार हम हईं, ना मलिकार बाग के

हम का कहीं कि कइसन होखलि नजरि हमार
कम ना लखात मोतिन से मोल ताग के

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निकसल जोहे जे-जे इहँवाँ

निकसल जोहे जे-जे इहँवाँ बा सभ केहू का भाग मिलल
हम भाग मनाईला आपन हमरे बस एक अभाग मिलल
हम साँच बतइतीं सपना के, सुख-नीनि बनइतीं जगरम के
सुनि-सुनि के महफिल झूमि उठित अइसन हमरा ना राग मिलल
भैरवी जगावे खातिर हम करते अइलीं हाँ रतिजागा
गावे के अधरतियो हमरा अब ले ना राग विहाग मिलल
जिनिगी में जाने पवलीं ना हम लहचह बात जवानी के
अब हाल सुनाईं का आपन जमते जब जोग विराग मिलल !
जुड़छाँह जनाइल ना मजगर कतहूँ भूँभुरि का रहिया में
धावल कइलीं ढोवत बहङी हमरा ना पनही-पाग मिलल
चमकल कइलीं सदईं तावल गइला पर लाल अङारा में
करिखाह सेरइला पर भलहीं कंचन काया में दाग मिलल

☐

इहाँ से लेबि ना कुछुओ

इहाँ से लेबि ना कुछुओ भरल भंडार दे जाइबि
अङेजीं आजु हम पतझार काल्हु बहार दे जाइबि
बङरकंटो उजारत जाये दीं हमरा के रहिया से
रही झर-झर झरत दिन-राति हरसिंगार दे जाइबि
करे केहू भले कसि-कसि के खोवसल, केहू लुलुआवे
निछोही घाव लगलो पर दुलार अपार दे जाइबि
सजावल बा जिनिस जतना ह उपरावल सजी हमरे
महङ सउदा भरल सँउसे बजार उधार दें जाइबि
नफा के बात सोचे ना कबो आइल जिनिगिया में
घटी सहि-सहि मनगरे जान बारंबार दे जाइबि
रही ना लोर आँखिन में, हटी करिखा अन्हरिया के
गगन का कोर आँचर में रङल भिनुसार दे जाइबि

☐

[सताइस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम रहीं भा ना रहीं

हम रहीं भा ना रहीं केहू बनल रहबे करी
हम कहीं भा ना कहीं केहू गजल कहबे करी

होत नइखे आजु हमरा ई कहत इचिको सँकोच
आन केहू ना बुला हमरा निअन सहबे करी

बा सटल भरमल नयन, सपना जनवले बा सुतार
राह जगरम के कबो थथमल चरन गहबे करी

साँच पूछीं त रहत आइल सँघतिया अस अभाग
बात हमरे ना रहल केकरो कहल लहबे करी

देर बा अबहीं भले, हरदम रही ना ई अन्हेर
गीत केहू त कतो हमरो सुनल चहबे करी

का कहीं कतना सँकाइल रहत सकदम में परान
टूटि जाये दीं बन्हन, खुलि के पवन बहबे करी

□

नीर अनघा बदरिया में

नीर अनघा बदरिया में भरल बाटे
बून रेती प' ना भलहीं झरल बाटे

जरे अकास, देहे आजु बा चिलिङी लेसले
छाँह जुड़गर कतो अनते टरल बाटे

गरे लगाइ केहू आजु ले ना अपनावल
भाग हमरे बुला अइसन जरल बाटे

भले करेज काढ़ि आपन थम्हाइ दीहीं हम
लोर ना आँखि से उनुका ढरल बाटे

इहाँ सुतार ना खरिहान लगावे के मिलल
ना कबो हाथ के बोअल फरल बाटे

तनी टेकाइ ना केहू कतो कहियो पावल
बोझ जे हमरे कपारे परल बाटे

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइलीं कहतें कहिये से हम

अइलीं कहते कहिये से हम, बतिया एको तूं मनलऽ ना
रहलीं जवरे तहरा तबहूँ कुछ हाल सँघतिया ! जनलऽ ना

हम चीन्हीं चान-चाननी ना, काटत बदरी के राति रहीं
लगलऽ कूह्रा के ताने में तूं बेग पवन के बनलऽ ना

कुछ काँट गड़ावल चहलीं हाँ हम टाँठ टनक अपना सुर से
मनलऽ इरिखा ना एक परन अगिया के कवनो ठनलऽ ना

रहलऽ तूं सवखे चूर सवादत अब ले गुलगुल रहिया के
धसि के दलकी में फँसि गइलऽ कसि के जाङर तूं टनलऽ ना

पतिआई जग, ई पातर रेख विला पाई ना धुँइयाँ में
चमका दी ऊ अगिया जवना लुतुकी के मोल गदनलऽ ना

चहितऽ त दूबि उगा दिहले रहितऽ पथलो पर तूं अब ले
कइलऽ हा तूरल तान बहुत, तनिको तूं मोत ! छछनलऽ ना

□

सुनल चहबऽ सँघतिया तूं

सुनल चहबऽ सँघतिया तूं त सचहूँ गीत गाइबि हम
नेवतबऽ तूं त देखिहऽ भुँइपरी मनमीत आइबि हम

रहत बानीं अबरुआ बनल हम अनपूछ भइला से
कबो तूं जोह जो करबऽ अलम बरिआर पाइबि हम

खड़ा होखबि, चले लागबि, धरइबऽ जो तनी अङुरी
बढ़इबऽ बाँहि जो आपन त परवत लाँघि जाइबि हम

बसवलीं हाँ भरम ना हम कबो निभरम नजरिया में
अन्हरियो में इसारा पर तहार धधात धाइबि हम

उघरवइहऽ करेजा जनि भितरिया घाव लागल बा
करम के हीन अछरँगी कहऽ केकरा सोहाइबि हम

लुटा के साध सभ आपन मनोरथ अब रहल एके
जिये खातिर जगत के माहुरो माथे चढ़ाइबि हम

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरज हमार सुननिहार

अरज हमार सुननिहार इहाँ केहू ना
तरज हमार गुननिहार इहाँ केहू ना

डगर - डगर में अनेरे हम छिछिआईला
गरज हमार पुछनिहार इहाँ केहू ना

नजरि से ना मिले नजरि, धधात धाईला
नगर में नेह रखनिहार इहाँ केहू ना

जहर के घोंट कंठ में दबाइ राखीला
मरम के चोट लखनिहार इहाँ केहू ना

लहर उठल करे करेज में त बोलीला
कहल हमार सहनिहार इहाँ केहू ना

सरद - गरम उघार रहत कइसे काटीला
रहनि हमार कहनिहार इहाँ केहू ना

□

आन केहू भले कहि दे

आन केहू भले कहि दे कि कुछ तहार ना ह
साँच पूछऽ त कठिन कार ई हमार ना ह

एक दिन राह चलत मीत ! तूं भेंटा गइलऽ
लाख चहलो प' ई चेहरा कतो लखार ना ह

बात का बात में हमरा के तू अपना लिहलऽ
ना जनाइल तनी अगते के कुछ चिन्हार ना ह

दूरि भलहीं रहीं, नगिचाह तूं हमरा लगलऽ
चान जनलीं कि आसमान के अङार ना ह

बोल मुँहगर निगाह राखि के बनवा दिहलऽ
लोग जानल हमार आन अस उचार ना ह

आजु जाईला जहें तहें इहे पाईला
[illegible] नयनन में बसल एक ह हजार ना ह

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जात रहीं हम गिरल

जात रहीं हम गिरल सम्हारि देलऽ तूं
हाथ धइ अबोध के उबारि देलऽ तूं

पाँव का जनात रहे राह ना कुराह
चाल अटपटाह सभ सुधारि देलऽ तूं

कान्हु ले कहात रहे दिन हमार बांव
जागि गइल भाग अब निहारि देलऽ तूं

रूप रहे अनसोहात, ढंग बेसहूर
रंग मटिगराह के निखारि देलऽ तूं

बोल बे-ठेकान रहे, ना बन्हात राग
ताल-सुर गँवार के सँवारि देलऽ तूं

देखि सभा बीच सभे तब गइल चिहाइ
नाँव पहिल-पहिल जब पुकारि देलऽ तूं

□

'भइल भिनुसार' कहि के

'भइल भिनुसार' कहि के आजु अधरतिये जगा देलऽ
अनेरे तूरि के निनियाँ सुघर सपना भगा देलऽ

सनेस तहार रहुवे खास बनल उचार मुरुगा के
भइल बेरथ पलक खोलल, भरोसा बनि दगा देलऽ

अकेले जागि के अब हो गइल बा हाल पागल के
रुचे ना कुछ नजरि के नूर अइसन जगमगा देलऽ

पसनहा खूब भइलऽ हा, हँसेला लोग हमरा के
जिनिस अनमोल कहि के हाट में सउदा ठगा देलऽ

कहाँ दो बा धइल अब ले गुलाबी भोर के बाना
चढ़त अल्हड़ जवानी में बसन गेरुआ रँगा देलऽ

रहे दऽ चीन्हि गइलीं हम ठठोली से भरल बोली
सबख दे के अमरता के मरन जबरे लगा देलऽ

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेरि-बेरि काहें माँगतारऽ

बेरि-बेरि काहें माँगतारऽ गीत तूं ?
ताल-सुर के हाल जानतारऽ मीत तूं
राग ना कढ़ात कोइलरि के काग से
मीठ ना उचार पइबऽ खार-तींत तूं
कंठ में भरल अपार लहर आगि के
ढेरि जनि करऽ उधार खीस-पीत तूं
जोर-सोर वा जहाँ जमल जुझार के
आजु जनि कढ़ावऽ आन बातचीत तूं
फेरि-फेरि मुँह बनत गइल सतुर सभें
ठाढ़ सामने रहऽ हमार हीत बूं
गीत काल्हु धरी रूप सुघर साध के
आजु भर करऽ अङेज घाम-सीत तूं

□

पसनगर तमासा

पसनगर तमासा जहाँ जा के देखऽ
नजारा खुलासा इहाँ आ के देखऽ
अनस त बहुत नाँव सुनते बरबहू
गवा ना सकल गीत जे गा के देखऽ
भइल ना करी थरथरी भा पसेना
सहाउर बनी देहि ई ता के देखऽ
गरजलऽ तड़पलऽ बहुत दूरि से तूं
बरिसवऽ कि ना आजु निअरा के देखऽ
जरल बाग लह-लह चढ़वलऽ भँहूँ जब
पथल पर उगी दूबि, मुसुका के देखऽ
मिली ऊ इहाँ जे कतो ना भेंटाई
तनी खोलि के बाँहि अगंरा के देखऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुपचाप एह घरी तूं

चुपचाप एह घरी तूं हमरा के रहे दऽ
हम काल्हु कहबि आजु ले अनके के कहे दऽ

सुनि - सुनि समाज जनि करे उपहाँस अब हमार
हमरा मिलल कचोट जे हँसि – हँसि के सहे दऽ

अबहीं अपार राख तर तोपल रहीं अङार
पतई के रोख देखि बेयरिया के बहे दऽ

आइल बिआ अन्हेरपुर में पहिल – पहिल बाढ़ि
कोइला के छान हो रहल, कंचन के दहे दऽ

अँखिगर उहे कहा रहल जे टेढ़ चले चाल
रहिया में दाव राति भर अन्हरे के लहे दऽ

होखी सुदिन सजोर, छूटी सोन – किरिनि बान
तनिका तनल पहाड़ ई बदरा के ढहे दऽ

□

तिकइहऽ जनि तूं

तिकइहऽ जनि तूं हमरा ओर तन तंहरो जरे लागी
दँबकि जाई करेजा, आगि आँखिन से झरे लागी

सोहाई ना इहाँ कुछ, झाँकि के मुँह टेढ़ हो जाई
बइठिहऽ जनि कबो पँजरा, उठे के मन करे लागी

कइल हा आजु ले हमरा से भरि मुँह बात ना केहू
गड़े लागी ई आखर बोल, तितिकी अस बरे लागी

इहाँ बा नाँव ना ओइसन, इहाँ ना छाव बा ओइसन
धइल ना बाँहि केहू, के भला हमरा गरे लागी?

सटल सपनो में जनि चहिहऽ, हटल हरमेस तूं रहिहऽ
अनेरे नाँव तहरो लोग हमरा सङ धरे लागी

सहेजिहऽ जनि कबो, कइलीं भले हम बात बढ़ि–बढ़ि के
गिरहि जनि बान्हि के धरिहऽ कबो सुरुता परे लागी

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललक जाई तँवाइ

ललक जाई तँवाइ, दसा निहारत तूं निहँसि जइबऽ
कुफुति पइबऽ इहाँ मनमोत ! अतना जे अनसि जइबऽ
सरस बनि के रहऽ लहसल, करऽ फूलल–फरल फरके
दँवक से दूरि तूं होखऽ, तिकवलो पर झँवसि जइबऽ
उठइहऽ डेग जनि आगे, डगर गुलगुल भले लागे
धरत खा पाँव दलकी में धधा के सोझ धसि जइबऽ
बढ़इबऽ बाँहि तूं कतनो हमार उबार ना होई
परल बानीं अथाहा, ई कुँआ झाँकत हदसि जइबऽ
बिछवलीं राह में तहरा नजरिया हम बहुत दिन ले
टकसि जइबऽ भला कइसे कबहुँओं जो मनसि जइबऽ
रहऽ छटकल फिरत सदईं, सटऽ जनि तूं कबो पंजरा
निकसि पइबऽ कहऽ कइसे नयनवाँ में जो बसि जइबऽ

□

चमक हरदम रहे

चमक हरदम रहे तहरा में हम एह से जरत बानीं
मुड़ेरा पर चढ़ऽ तूं, नेंव में हम त परत बानीं
बनऽ तूं मउर माथा के, सहाउर भार सभ हमरा
करेजा पर पथल हम हाथ से अपने धरत बानीं
सटल हा ना कबो पपनी अन्हरिया का अगोरिया में
किरिन सँउपत सुदिन के, अब ठहर से हम टरत बानीं
मिलल बा भाग से बनि खाद पइसे के जरी–सोरी
बनल तूंहीं करऽ फर – फूल, हम पतई झरत बानीं
हहइलीं ना कबो हम, हीक भरल तहार ना अब ले
अमर–फल तूं सँगोरऽ, हम जहर जग के हरत बानीं
करेजा काँपि जा जनि नाँव से हमरा जबाना के
कढ़इहऽ जनि कबो मुँह से अरज अतने करत बानीं

□

चंवलिस]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइल चाहे हुलसि के

कइल चाहे हुलसि के आजु भरि मुँह बात ना केहू
निहारे घाव ना केहू, दरद पतिआत ना केहू

करम के का कहीं बानीं बनल अपनन में बेगाना
सटे खातिर करेजवा का लगे अकुलात ना केहू

डगरिया में रहत अइलीं बिछवले हम नजरिया के
भुलइलो एह ठहरिया ओर आवत-जात ना केहू

परल बानीं अबरुआ हो के हम अकसर सकेता में
उबारे के अफदरा से तनी अकुतात ना केहू

अन्हरिया राति में ताकल करीं टक-टक तरेङन के
नयनवाँ में किरिन बनि भोर के मुसुकात ना केहू

रहे बड़ साध सभ केहू बन्हाइत नेह-नाता में
छँहरियो में लहर अतना कि आजु जुड़ात ना केहू

□

रहे अब साथ में ना देत

रहे अब साथ में ना देत मिलनसार केहू
मिली हमरा के कब हम कहिनिहार केहू ?

हमार नाँव त कुछ आजु ले धराइल ना
करी कवना मुँहें जनला बिना पुछार केहू ?

उमेदि कइलीं हम अनेर कठकरेजी से
सहीं कतना कइल कहाँ बा बिचार केहू ?

निहाल करित बनि अँजोर सून आँखिन के
तनी सुनबो त करित गूङ के गोहार केहू

चिन्हार होत कहाँ ? रूप असल तोपल बा
कतो लउके ना एह करेज अस उघार केहू

उबार ना भइल त रहल आजु मोसकिल बा
करे भलहीं हजार काल्हु के करार केहू

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुँह से ना सोझ

मुँह से ना सोझ बतिआवे केहू
खुलि के ना आजु मिलि पावे केहू
जोह केकर करे ई बउरहवा ?
मन के बा साध अपनावे केहू
राति में ना सटल पपनी तनिको
दिन में जनि हाय! भरमावे केहू
जोति बँटले चलित जे जरि-बरि के
दियना के देहि धरि आवे केहू
बात बे-बात के होखल बहुते
असली का हाल बतलावे केहू
गीत के सुननिहारे बा कहँवाँ ?
अपने से का अब कढ़ावे केहू ?

□

कढ़ा के नाँव कवनो

कढ़ा के नाँव कवनो एक दिन बदनाम हो गइलीं
बने खातिर उजागर आन के गुमनाम हो गइलीं
बहिर बनिके सराहे के सवख जागल इहाँ जब से
चुपइलीं आजु उनका मुँह के हम कहनाम हो गइलीं
करेजा बा कटाइल, चान अस नइखे मिलल चेहरा
लखाइल ना भले खूबी, सुनाइल खाम हो गइलीं
करीं का आस अब इजलास से अपना रिहाई के
सफाई दीत के ? इलजाम में सरनाम हो गइलीं
दुलारल ना कबो गइलीं अँचरवा तर बदरिया का
बने जुड़छाँह केहू, हम न रूखर घाम हो गइलीं
चलाना बा चलल अपने पिए के, ना पिआवे के
घरसु गगरी भरल ऊ, हम त ढारल जाम हो गइलीं

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust: Funding IKS-MoE-Grant-2

उनुका भलहीं हमरा पर

उनुका भलहीं हमरा पर अतिबार ना भइल
ई दिल हमार आपन कबो हमार ना भइल
छन में बदलि के रूप लाख–हजार हो गइल
मनवाँ हमार एके बा, दू – चार ना भइल
अँखियनि से आँखि फेरि के सतकार हो रहल
ऊ आदमी कहाँ जे दुनियाँदार ना भइल ?
सगरो नफा - घटी के बात - बिचार चलि रहल
काढ़त इहाँ करेजो नगद - उधार ना भइल
जहँवाँ सवाद लोरो के अब खार ना रहल
माहुर पिआसल कंठ का इनकार ना भइल
जिनिगी राते - दिन मउअति के भार ढो रहलि
तुनुकाह सांस ई तनिको सुकवार ना भइल

□

उनुका दँवक से

उनुका दँवक से वहार जरि के छार हो रहल
नाँव दुनियाँ में बेजइहाँ बड़ हमार हो रहल
ना भइल अङार लूक लगलो पर उघार आँखि
तरवा तर के जरत रेत आजु ठार हो रहल
हीत - मीत बनल हा हमार कहिया कवनो फूल ?
गतरे - गतर गड़ल कँटवे अब इयार हो रहल
मूँदि - मूँदि आँखि मनवाँ वढ़ल कइल हा धधात
पँउवाँ ठहरि अपना दर प' गुनहगार हो रहल
धवलीं माथ पर चढ़ाइ कबो हम हजार भार
हलुको साँस एगो आजु बेसम्हार हो रहल
ना मिलल कबो पसन से जरत कंठ के मिठास
कुँइयाँ पथलो पर खनल हमार खार हो रहल

□

[सँतिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा माथ पर अभाग

हमरा माथ पर अभाग, हाथे भाग उनुके बा
हमरा गतरे-गतर घाव, मुँह बेदाग उनुके बा
पवलीं ना करे उचार, कइले ना कबो पुछार
हमरा सुर में भरल भाव, गरे राग उनुके बा
रहिया हम चलीं निहुरि के, उड़ल ऊ करसु उतान
हमरा भगई के भरोस, पनही-पाग उनुके बा
धुरिया हम धरीं कपारे, पाँव उनुकरे पुजात
हमरा बा पुरनके दिल, नया दिमाग उनुके बा
कइले सात खून ऊ, कहइलीं हम कसूरवार
हमरा केहू ना हमार लोग-बाग उनुके बा
धइलीं ना बटोरि, दिहलीं गते सरबसो लुटाइ
हमरे करनी अब कहा रहल तेयाग उनुके बा

□

फुला के मुँह रहीं

फुला के मुँह रहीं अकेल कवो भावे ना
घधाके हमरा लगे लोग आजु आवे ना
उतारि आरती पखरलीं हाँ कतेक चरन
कपारे हाथ हमरा धरनिहार धावे ना
पधारि इहँवो लोग मनगराह कहित-सुनित
निहारे बाट खुललि आँखि, दरस पावे ना
इनाम लेत जात आजु बरहरुपिया नगद
उधारो मोल लोग भाव के लगावे ना
अकेल हमहीं करीं झँखल देखि उजरि रहलि—
सभे के छान्हि साझ केहुओ छवावे ना
बिहाग के पहर बताईला कि बीति गइल
पराती गाइ केहू गाँव ई जगावे ना

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढोल के सोर

ढोल के सोर सुनि के धावत अनते पाँव रहल
आँखि से दूरि एही चलते आपन गाँव रहल
आजु ले ना अइलन हा तिनि कबो कामे कवनो
काल्हु ले लाम-चाकर बहुते जिनिकर नाँव रहल
हाथ से ना कबो छूटल हा केहू का अयना
रूप ना रंग तबहूँ लागल बड़ लखराँव रहल
फारि के छान्हि बरिसल, लूटल हा सोना के ना?
साँच पूछीं त भाग हमरे खाली बाँव रहल
दाबि के कंठ में माहुर धइले बानीं सबके
डालि दिहलस सकेता केहू के फयलाँव रहल
ढह ऊपर बइठि के राते-दिन सोचल कइलीं
डेग डालीं त कहाँ? ठाँवें-ठाँव कुठाँव रहल

□

जहँवाँ बूड़ल सभे

जहँवाँ बूड़ल सभे ऊ किनारा मिलल
केहू बूझल कहाँ जे इसारा मिलल
रहितीं गिरि के भइल कहिये ना चकनाचूर
थाम्हि लिहले वा अइसन सहारा मिलल
निकसे पावल भले ना बदरिया से चान
एगो अचके में चमकत सितारा मिलल
अइलीं सदई सराहत इहे आपन भाग
ना अङारा का हमरा फुहारा मिलल
कइलीं हम ना कबो मूङा-मोती के जोह
जोति हीरा के हमरा अन्हारा मिलल
अब ना बाकी रहल एको जिनिगी के साध
एह नजरिया का निभरम नजारा मिलङ

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाग अपना लहू से

बाग अपना लहू से पटावल केहू
हाथ फर से भले ना सटावल केहू

फूल केहू कचारत चलल लात से
काँट-कुस के डगर से हटावल केहू

मोह-माया धराइल कतो बान्हि के
काढ़ि आपन करेजा लुटावल केहू

बात भरि मुँह भइल हा भले ना कतो
माथ आपन हुलसि के चढ़ावल केहू

नाँव एगो सुनत कान मूँदल सभे
लोर जग के नयन में अँटावल केहू

साँस के गाँठ मउअति सङे जोरि के
टाँठ बढ़ती उमिरि के घटावल केहू

□

केहू रोवल कइल

केहू रोवल कइल, केहू गावल कइल
केहू एको लबज ना कढ़ावल कइल

सोर कइ-कइ लगावल झमेला केहू
केहू बोझा अकेले उठावल कइल

केहू खोलत खजाना चलल लोर के
केहू मुसुकी प' ताला लगावल कइल

फूल धाङल कइल हा केहू लात से
केहू काँटो के माथे चढ़ावल कइल

केहू आइल कुहेसा बनल भोर के
केहू दियरी अन्हारा जरावल कइल

केहू बँहियाँ बढ़वले रहल आजु ले
केहू छाती बजर के बनावल कइल

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दे के अपने अँजोर

दे के अपने अँजोर हम अन्हार देखि लेलीं
काटि के जीभि हम आपन उचार देखि लेलीं

हाथ से ना हटल अयनक कबो इचिको उनुकर
हो सकलि चारि ना अँखिया हमार देखि लेलीं

छू रहल माथ आसमान के बा ऊँच महल
गोड़ तर साध के मड़ई-उजार देखि लेलीं

आप अपने का फिकिर में सभे बा बूड़ि रहल
हो चुकल बाँहि से अनका उबार देखि लेलीं

टेढ़ भा सोझ हम अब ले सुनत अइलीं जिनिकर
'ना कहीं हम कबो' उनुकर बिचार देखि लेलीं

ना रहल सवख एको काल का चरखी पर चढ़ि
होके हम ऊँच ठाढ़ अब उतार देखि लेलीं

□

भोर ले के चोर

भोर ले के चोर अब मनवाँ हमार हो गइल
सोर हम कइसे करीं मुँहवाँ लजार हो गइल

हमरा सोझा झलकल हा अधरतियो अगते राह
आँखि आगा आजु दुपहरिये अन्हार हो गइल

सुनते अइलीं कहिये से हम सभकर बढ़ि-बढ़ि बात
ठाढ़ होता आजु के कँहवाँ लबार हो गइल

धन्हके चाहेले करेजा भीतर आँचि धुँआत
लोर पी के ओढ ई जिनिगी अङार हो गइल

महङा होले जोति कतना जानेले ई आँखि
भार भादो के अमावस बे-सम्हार हो गइल

फर के लागल आसरा सेवत सेमर के फूल
आजु भूआ साँच बा, सुगना लबार हो गइल

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोम में आन्हर लगे

जोम में आन्हर लगे होई बहा के लोर का ?
लोग बा बज़रे-बहिर, होई सुना के सोर का ?

जे रहल जवरे कबो से ठाढ़ ना पँजरा रहल
आजु अकसरुआ बनल बानीं, लगाईं जोर का ?

रोक-टोक भरल रहल अनचीन्ह अस सँउसे डगर
'तोर का ?' सुनलीं बहुत, कहलीं कबो ना 'मोर का ?

ई अन्हरिया राति अब होई अधिक घनघोर का ?
ना बुझा का झूठ, का हऽ साँच, साँवर-गोर का

राति के बा आखिरी बेरा, करीं हुँड़होर का ?
साँझि अस हरदम रही इहँवाँ जनाते भोर का ?

बा खजाना-घर खुलल, नइखे परल ताला जँजीर
भाव का भंडार से कढ़िहें अभागा चोर का ?

□

आजु ले अतिबार उनुकर

आजु ले अतिबार उनुकर बा दगा कइलो का बाद
सोझ बा ई दिल हमार दिमाग अझुरइलो का बाद

बानि छूटे ना धराइल जे बुझा केहू कहो
होस में हरदम रहीला हम निसा खइलो का बाद

फेरि लेला मुँह सभे करनी हमार हवेखि के
लात लागेला करेजा काढ़ि के धइलो का बाद

अब कहाँ जाइँ लवटि के हम बतावे के परी
दूरि कतना अब रहीं अतना लगे अइलो का बाद ?

ताल-सुर होई मधिम ना, राति भर जलसा चली
सून महफिल ना बनी हमरा बिदा भइलो का बाद

हम रहबि ना पर हमार इयादि त रहबे करी
लोग जब कहनी कही इहँवाँ उहाँ गइलो का बाद

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहरिया अखरखनं के

पहरिया अखरखन के जाई कि ना?
समइया पसनगर भेंटाई कि ना?

चढ़ते चलल जाला छतिया प' भार
भितरिया ई बाथा, सहाई कि ना?

धन्हकेले कहिये से जियरा में आगि
पपनियाँ के पनियाँ झुराई कि ना?

बहियाँ बन्हाइल, छनाइल बा पाँव
फँसरिया बा गर में, रहाई कि ना?

सनकलि बेयरिया, बदरिया के राति
दियरिया अन्हरिया हटाई कि ना?

मेटी कि ना एह नजरिया के भूखि?
जिनिगिया कबो चैन पाई कि ना?

□

लखार होत नइखे

लखार होत नइखे रूप घूघ ढेर बा
उघार होई कबहूँ परदा, अबहीं देर बा

अलोत में रहे के बा मिलल सजाइ जब
डिठार हो चले के साध अब अनेर बा

अंजोर के सभे कपार पर चढ़ा रहल
अन्हार तर पइसनिहार के कड़ेर बा?

विहान हो गइल कहाँ लुका रहलि किरिन?
अपार घार सामने खड़ा मुड़ेर बा

कचोट बा कहत उछाह बड़ जंता रहल
उबार के भरोस का? मचल अन्हेर बा

जमात का सङ रहीं, चिन्हार ना भइल
निगाह ना उठल, निठाह कवनो फेर बा

□

[तेंतालिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्हरिया राति में

अन्हरिया राति में चरचा चनरमा के चलाईं का ?
भितरिया बात हम मुँह खोलि के बेसो बताईं का ?

समइया बाँव बा अबहीं जनाई ना निरिख केकरो
बजरिया में बतुस अनमोल के सउदा सजाईं का ?

केवरिया बा लगवले कान जहँवाँ आजु बजरे के
सरस—बे रस, सही—बेरथ, महङ—सहता सुनाईं का ?

कहे के बा बहुत कुछ पर लखा ना एक सुनवइया
बचनियाँ हम अपनहीं बोलि के बाउर कहाईं का ?

अइसहीं जे बुझाता से कहत बा लोग हमरा के
रहनियाँ का सङे जोरल जरल आङछ हटाईं का ?

बसल बा रूप नवका भोर के निभरम नजरिया में
सुदिन के साध बा हमरा, किरिन के मुँह बिराईं का ?

□

हम साँझि खा

हम साँझि खा बिहान के चरचा चलाईं का ?
ढिबिरी जरा अँजोर के परिचे कराईं का ?

तरई भरल सरग में बा चान के सुतार
सागर तरे लुकात सूरुज के लखाईं का ?

अब रंग लाल—पीअर के ना रहल चिन्हार
करिया ओहार तानि के कनियाँ बोलाईं का ?

भहरात गोड़ उठि-उठि, बा नाचि रहल माथ
निसइल निगाह पर अउर निनियाँ चढ़ाईं का ?

लभजान छान्हि तर बा नोनी भरल देवाल
बादुर-बसेर के भवन अपनो बनाईं का ?

बहुते कठिन सहल बा नइखे सहज अन्हेर
मुँह फेरि के महापुरुष हमहूँ कहाईं का ?

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहे पवलीं कहाँ

कहे पवलीं कहाँ, अवहीं त बहुते वात वाकी वा
पता नइखे कहाँ से अब कवन उतपात बाकी बा ?

करेजा हो गइल झाँवाँ जहाँ काँचे उमिरिया में
करीं का सोच अब्र केकर सहे के लात बाकी वा ?

निहारीं रूप का आपन लगा के हम गरे फँसरी
जरेला फेंड़ के जरिये त कइ दिन पात बाकी वा ?

इहाँ हम ठाढ़ होके सोझ दलकी में धसत बानीं
उबारे के भला केकरा में अब अवकात बाकी वा ?

जोगवले आ रहल बानीं वेयरिया में दियरिया के
सुनत बानीं झँकोरन के अनेक जमात बाकी बा

रतवन्हीं छूटि गइलो पर कपारे चढ़लि चकचवन्हीं
कसक अतने कि बीतलि राति तबहूँ प्रात वाकी वा

□

सुदिन के बाट जोहत

सुदिन के बाट जोहत मन अवहुँओं ले उदासल बा
किरिन का टोह में लागल हकासल बा, पिआसल बा

अन्हारा में परल उबिआ गइल बा पाँव धरती पर
गगन का राह पर धावत चलल बहुते वतासल बा

धराइल बान्हि के जे ना, कबो जे दाब ना मानल
लवटि के का करे आई नगर से जे निकासल वा ?

मनावत आ रहल कब से तबो जे ना परस पावल
भवन भीतर सुघर सुख सेज डासल अब उड़ासल बा

लगावल नेह ना अनते, रहल मुँह एक जे जोहत
झरत रहि-रहि नयन तरसत, दरस खातिर उपासल वा

सङोरल ना कबो, सरबस लुटावत जे चलत आइल
जनम सुकलान बा सेही मरन का आजु भासल बा

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तूं हँसावल करऽ

तूं हँसावल करऽ भा रोआवल करऽ
तूं जरावल करऽ भा बोतावल करऽ

रेत पर खूब जल के जनवलऽ सुतार
तूं जुड़ावल करऽ भा भोरावल करऽ

हम त बानीं बनल हुकुमी - बंदा तहार
दुरदुरावल करऽ भा बोलावल करऽ

एक तहरे रहल अब ले हमरा भरोस
आँखि जनि आजु अइसे चोरावल करऽ

खास तूंहीं अलम बाड़ऽ असली हमार
बाँहि जनि तूं अथाहा छोड़ावल करऽ

आस जीअत इहाँ मुरुदा नइखे करेज
साध के जनि कफन तूं ओढ़ावल करऽ

□

दियरिया के जो उसुकइबऽ

दियरिया के जो उसुकइबऽ त चटक अजोर हो जाई
चनरमा बनि जो मुसुकइबऽ त नयन चकोर हो जाई

बनल जाला अधिक झाँवर गगन के तन तरेङ्न से
बिहँसबऽ जब तनी साँवर सरगवा गोर हो जाई

जुड़ा जाई नजरिया के तरस टह–टह अँजोरिया में
बदरिया में जो अझुरइबऽ त मनवाँ थोर हो जाई

करेजा काँपि जाला सोचि के आगम अमावस के
चोरइबऽ मुँह त रतिया में अन्हरिया घोर हो जाई

लउकबऽ तव कि ना नइखे भरोसा होत अबहीं ले
रइनियाँ खास परिवा के हमार कठोर हो जाई

झलकबऽ चान बनि के दूजि के जहिया डगरिया में
जिनिगिया कांट के ई फूल पोरे - पोर हो जाई

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राति में भिनुसार के

राति में भिनुसार के चरचा चलावल ह हमार
भैरवी के सुर पसनगर ई कढ़ावल ह हमार

तानि के करिया चदरिया जब रहे सूतल सभे
आँखि से पहरा निनरिया के हटावल ह हमार

पाँखि ना फरकल रहे जब पात ना खरकल रहे
साँस मुरुछाइल बेयरिया के जगावल ह हमार

गंध सूँघसु ऊ कली के, रंग देखसु फूल के
ई कियारी खून से अपना पटावल ह हमार

राग भँवरा के सुनाई बोल जवदल कंठ के
गीत जे लागी गवाये गुनगुनावल ह हमार

माँग पूरुब का सँवरिया के भराई जानि लऽ
रूप नवका भोर के रुचिगर लखावल ह हमार

□

कहल गइल ना जवन

कहल गइल ना जवन हाल कहाई तवनो
गहल गइल ना जवन चाल गहाई तवनो

भइल बा धूम-गजर अब ले बहुत महफिल में
सुनल गइल ना जवन ताल सुनाई तवनो

थिराये दऽ ई हाँव-हाँव, छूम-छन-नन के
रचल गइल ना जवन गान गवाई तवनो

नगीच आइ के निहारि लऽ तमासा ई
हँसल गइल बा जवन भाव सोहाई तवनो

लकम लगावऽ जनि अँजोर में दिनवन्हीं के
धइल गइल ना जवन राह धराई तवनो

तनी उछाह से उठऽ बढ़ाइ बँहियाँ तूं
अचल भइल बा जवन पाँव धधाई तवनो

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात असली इहाँ

बात असली इहाँ बतिआई के ?
साँच कहलीं तबो पतिआई के ?

काल्हु भलहीं सभे दिलदार रहे
आजु हमरा लगे रहि जाई के ?

भेस धइलीं कहाँ भावे लायक ?
नाँव सुनि के कतो अपनाई के

जाल डलले अहेरी बइठल बा
हाल हमरा बिना कहि पाई के ?

चाह उनुकर 'रहीं हमहीं, तूं ना'
खास झउरा इहे, फरिआई के ?

कान पटले चले के बा निभरम
आँखि अछइत भला भरमाई के ?

□

भरल भंडार

भरल भंडार धरती का तरे बा आगि–पानी के
जगत ह नाँव गरमइला–जुड़इला का कहानी के
चढ़ल तव खूब चमकल, हो गइल धूमिल उतरला पर
खड़ग के धार ह अनमोल पानी जिन्दगानी के
सहत आइल झँकोरन के, रहत आइल लटत–बूड़त
बहुत पामाल बा जनि हाल पूछऽ एह परानी के
अकारथ हो रहल धावल, हबेखल जात ना पावल
अङेजत के कही कव ले चलबि अइसे हरानी के ?
लरिकपन भोर अस बीतल, घइल सँझिआ बुढ़ारी के
अङारा ओढ़ि के दँवकल रहल दुपहर जवानी के
चले का बेरि होई बस अरज अतने अभागा के
कतो चरचा चले जनि एह करम–फूटल निसानी के

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिये के बा जिनिगिये भर

जिये के बा जिनिगिये भर, कहऽ आभार का मानीं ?
पिये खातिर जहर का घोंट के रसधार का मानीं ?

मिलन के जब मिलल मोका, भइल बेरा विदाई के
जनम जवरे गइल जोरल मरन, तेवहार का मानीं ?

निकलि जाला केहू आगा, पिछिलि जाला केहू पाछा
गइल–आइल, खतम - सुरुआत के संसार का मानीं ?

समाइल बा बे - कहले, बे - जनवले जे निकलि जाई
पवन मतवार लेखा साँस पर अधिकार का मानीं ?

रही 'गुन-गुन' सुनावत कब ले कलियनि का लगे भँवरा ?
लखाला आजु, एकर कान्हु के अतिवार का मानीं ?

अङजत आ रहल जे सोति चाहे घाम अवहीं ले
पथल का दूवि के हठुआर भा होनहार का मानीं ?

□

दिल गँवार ना

दिल गँवार ना दवल चतुर दिमाग से
मन झँवान होत चलि रहल अभाग से

सीखि ना सकल सहूर रहल बहुत अल्हड़
बा बन्हात ई करेज तुनुक ताग से

आँखि मूँदि कतो जा रहल कुलाँच भरत
मन मिरिग मतिन घिचात सरस राग से

भूँइ तर रहे बसेर बुला बहुत गरम
जीव दिअकवा जुड़ा रहल चिराग से

कंठ में धरात जहर कालकूट निअन
वा सिङार गर के खास जहाँ नाग से

बेरि – बेरि देखि लिहलीं हम जनम – मरन
नेह लागि रहल भाग से विराग से

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु केहू लगे ना

आजु केहू लगे ना रहि पावल
साथ केकरो से ना निबहि पावल

आगि अइसन इहाँ जोराइल बा
आँचि केहू तनी ना सहि पावल

नाँव आ गाँव पुछनिहारन से
हाल आपन हिया ना कहि पावल

जान अब ले भँवर से उबरल ना
नाव मझधार में ना बहि पावल

बाढ़ि अइलो प' ठूँठ पलुहल ना
ठाढ़ आन्हीं में रहि ना ढहि पावल

माथ पर हाथ धरी के तेकरा?
गोड़ दुनियाँ के जे ना गहि पावल

□

हम डेग ना बढ़ाईं

हम डेग ना बढ़ाईं अब राह घटल जाता
जब आँखि खुलल जाता तब पाँखि सटल जाता

लउके पहाड़ अस ई दुख-दाह के उमिरिया
छन एक के अलम धइ दिन-मास कटल जाता

अपनें तरे बनेले बे-परद रूख जिनिगी
परते-परत लपेटल सभ छाल हटल जाता

गइले पराइ आपन, अइले लगे बिराना
अब हीत-मीत-मुदई का साथ पटल जाता

पवलीं बहुत हरानी मुँह हेरि-हेरि कतने
बिसरी अनेक, एके अब नाँव रटल जाता

कइसे कहीं बुझाता पँवरत नदी अकेले
बउसाव लटल जाता, बिसवास ठटल जाता

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत चहलीं कि

बहुत चहलीं कि कहि पइतीं कबो जे ना कहे आइल
रहत अइलीं जगत जवरे तबहुँओं ना रहे आइल

रहनि हम सीखि ना पवलीं, पसनगर चाल ना चललीं
डगरिया आन केहू के गहलको ना गहे आइल

फफाइल देखि के दरिआव लवटल कइल सभ केहू
पँवरलीं सोभ बढ़ियो में कबहुँओ ना दहे आइल

चलल आरा बजर अस धार के, तरुआर हलफा के
अरारे ठाढ़ मन के ठूँठ का नइखे ढहे आइल

परत बा पाँव पर केहू, कतो बा होत करजोरी
पलक - परदा गिरा के आँखि हमरा ना सहे आइल

भइल चाहे इहाँ सकदम, चढ़ल बा पहर ऊखम के
पवन के का कहीं खुलि के अबहुँओं ना बहे आइल

□

लाख जोर हम लगवलीं

लाख जोर हम लगवलीं, गवलीं गीत एक
दुअरे हम हजार धवलीं, पवलीं मीत एक

जनलीं आजु ले ना दुसमनो के आन हम
ठाढ़ ना भइल हा पँजरा हमरा हीत एक

नफा - घटी भरल बजार बा बहुत गरम
अभाव भाव के, इहाँ - उहाँ के रीत एक

गइल कहाँ लगाव? का भइल सुभाव अब?
रहल कहाँ सनेह साँच? बातचीत एक?

चढ़ा रहल बा लोग बान अब कमान पर
सिकार हो चलल गुमान से पिरीत एक

खनात जात कुँआँ आजु डेग - डेग पर
नजर - नजर का बीच उठि रहल बा भीत एक

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

साँझि भइलो प'

साँझि भइलो प' दियरिया का बरे ना आइल
चान उगलो प' अन्हरिया का टरे ना आइल

ना कहल जात हाल एह धुँआत जिनिगी के
आगि लगलो प' उमिरिया का जरे ना आइल

ना भरल घाव, खन्हरते गइल करेजा ई
दाह उठलो प' नजरिया का ढरे ना आइल

बा चलल जात उड़वले बेयार अवहीं ले
ऊँच चढ़लो प' बदरिया का झरे ना आइल

ना मिलल थाह कबहुँओं इहाँ दहइला से
डूबि गइलो प' गगरिया का भरे ना आइल

के रहल घोंटि कालकूट अस जहरिया के
नाँव रहलो प' नगरिया का धरे ना आइल

□

भाग मानीला कि

भाग मानीला कि आइल बा समइया आजु के
काम दीही काल्हु बटुराइल कमइया आजु के

आजु गइला काल्हु पर टिपुना चुआ के होई का?
सामने हाजिर भइल बाड़न गवइया आजु के

आजु बा गुलजार ना जाने सुनाई काल्हु का
ताल-सुर साजल गइल, बाजे बधइया आजु के

के इहाँ से काल्हु चलि जाई कहाँ नइखे पता
सून हो जाई कवो ठकचल मड़इया आजु के

के चली जवरे? बटोही! बोलि-बतिआ लऽ तनी
सूति लीहऽ फिनु कवो छोड़ऽ जम्हइया आजु के

काल्हु त होइबे करी जे ना भइल हा आजु ले
काटि लीहीं जा मिलल बा जे सजइया आजु के

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आस जस-जस इहाँ

आस जस – जस इहाँ जवान होले
साध तस – तस इहाँ झवान होले

आ रहल अरज करते भूँइपरो
दीठि दयगर जहाँ उतान होले

देत आइल हा चक्कर मन - पंछी
पाँखि उड़ि – उड़ि बहुत हरान होले

पोस मानल ना बानि जटही के
बाँहि वढ़ि – बढ़ि लहू – लुहान होले

भाव से ना जहाँ चीन्हा – परिचे
बात अनमोल वड़ जिआन होले

सोच में परि के नया जिनिगी के
रोज ई उमिरिया पुरान होले

□

सूझल कतो उपाइ ना

सूझल कतो उपाइ ना अपना उवार के
जोहल करीं अँजोर बनि राही अन्हार के

अइलीं कहात बाउर हम होस राखि के
देखबि करीं विचार के हमरा उचार के

सहता – महङ गुनल ना चहलीं वजार में
कीनत फिरीं गुमान से वाथा कपार के

उघटा - पुरान का करीं अजसी जबान ई
तेवर सहात ना कतो नेवर बकार के

कढ़लीं करेज हँसि - हँसि अब ले जँहें - तँहें
आपन समुझि दुलार हम अनका सिङार के

हम नाँव ना धरबि कबो मुँह का इयार के
चूमत लिलार चान के पवलीं अङार के

□

[तिरपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

धइल चकोर के देखऽ

धइल चकोर के देखऽ इहे धेयान ह
अन्हरिया में अञरिया के कहेला चान ह

मुदइया बान ह ना बाँसुरी के तान ह
भोरवनिहार जान के हरिन के कान ह

पपिहरा के तरास ह सेवाति - बून के
विना सनेह सुधा - घोंट गरल - पान ह

अपार तेज मन के बेग ह उड़ान में
पसार आसमान के नजरि के सान ह

बहुत जिआन भइल ताल - सुर रियाज में
गवा सकल ना तवन जवन असल गान ह

सभे ह हीत इहाँ केहू ना आन ह
करीं किरोध का ? आपन सभे परान ह

□

कवन बात ठहरे-ठहर

कवन बात ठहरे - ठहर हो रहल बा
कहा ना कि के ई जहर बो रहल बा

हिया खोलि ना देत अँकवार केहू
नयन में, बचन में बजर ढो रहल वा

हँसत ना लखा आजु एको परानी
जनाता जे संउसे नगर रो रहल बा

चहक छोड़ि वन में डहक बा समाइल
सुदिन-सुख अहेरी कवन छो रहल वा

कुलाँचल करे मन - मिरिगवा धधाइल
बुझा ना कि का पाइ का खो रहल वा

गजब हाल बा माथ के, हाथ के अब
कहाँ चोट लागल, कहाँ टो रहल बा

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धइ-धइ के अनकर बाँहि

धइ - धइ के अनकर बाँहि तब भहरात गइलीं हम
गिरि - गिरि के अपना पाँव पर अब ठाढ़ भइलीं हम

हमरा चउकठ का आगा वा बड़का गो मटिखान
भिरि - भिरि के अनते ऊँच अउर मकान कइलीं हम

चललीं मुँह जोहत सभ के अइलीं हम राखत रोख
रहि - रहि के जवरे एक आपन राह धइलीं हम

मनलीं अपना जाने भर केहू से ना हम मोट
हँसि - हँसि के अब ले चोट ऊपर चोट खइलीं हम

सहलीं दँवकत दुपहरिया, पवलीं अधरतिया ठार
जरि - मरि के रखलीं होस अब सनकी कहइलीं हम

धुरिआइल गोड़े भरमत फिरलीं हाँ देस - बिदेस
घुरि - फिरि के कतने ठाँव अपना गाँव अइलीं हम

□

के कहाँ देखत

के कहाँ देखत कि के का कर रहल वा
आन के मउअत मनावत मर रहल वा

फोरि के अमरित भरल कलसा हिया के
माथ में दिन - रात माहुर भर रहल वा

लोग वतिआवल विसारल अब बिहँसि के
के जुड़ा पाई सभे जब जर रहल वा

आजु आवत - जात ना केहू हुलसि के
भोर हितई अउर मितई पर रहल वा

साध लउके ना फरे के साथ सभ का
लालसा के फूल अकसर झर रहल बा

रोग का उतजोग में लागल सभे बा
चैन आपन अउर अनकर हर रहल वा

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जनि अलोता रहऽ

जनि अलोता रहऽ तूं ओहार तानि के
जनि चोरावऽ नजरिया गोहार जानि के
ऊँच कतनो उठावल करऽ तूं देवाल
आई चमकत किरिनियाँ पहाड़ फानि के
आगि लागल बा देखऽ धुँआला अकास
जनि बियरिया में बइठऽ सुतार मानि के
धावेला बहुते फरहर बे - पनहो के पाँव
जनि पगरिया दीहऽ एह उघार चानि के
खून का मोल से सउदा किनलीं हां हम
बाड़ऽ बहुते धधाइल उधार आनि के
अबहीं आपन सँवारल करऽ तनिका लूरि
कहियो लगवऽ सराहे हमार बानि के

□

लोग पँजरा ना आवे

लोग पँजरा ना आवे
ना हमरा के बोलावे
ढूँढ़े केकरा के अनेरे ?
चैन मनवाँ ना पावे
राति में ना सटे पपनी
दिन में सपना ना भावे
साध केकरा सुने के बा ?
गीति केहू का गावे !
गूङ केहू, केहू बोलता
बात कुछ के बनवावे ?
बोझ भारी ई कपारे बा
कान्ह केहू त लगावे

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का रहुवे, का भइल आदमी

का रहुवे, का भइल आदमी !
बा गरुओ से गइल आदमो

जिया - जंतु ना अइसन बिखिधर
नागो से जहरइल आदमी

भँइसो अस भरखाह ना रहल
साँढ़ो से बिगड़इल आदमी

लागे सरम - सँकोच ई कहत
बा बराह से मइल आदमो

देखि - देखि फरिआइ रहल चित
भेस घिनावन धइल आदमी

जारि - खोरि धरती, सरगो के
सोपह चाहे कइल आदमी

□

रहल ना ठहर

रहल ना ठहर बाकी अब ले एको हम जहाँ जइतीं
कहल ना बात केहू आजु ले जे सुनि के अगरइतीं

रहे बड़ साध राखित केहू हमरो के नजरिया में
अल्हड़ आपन करेजा काढ़ि केहू के थम्हा अइतीं

सहत अइलीं कचोट कतेक, सभ दिन चाँप तर रहलीं
परल कइलीं दँवक में हर जगे, कतहूँ जुड़ा पइतीं !

चढ़त गइलीं धधाइल रेत पर लहरत बेयरिया में
छँहरिया ना बबूरो तर मिलल जहँवाँ कि सुसुतइतीं

भरोसा ना रहल केकरो, रहत अइलीं अनेसा में
सँकाइल साँस लेले गीत हम कइसे भला गइतीं !

पराइल के कहाँ ? नइखे पता कवनो सँघतियां के
बसल केहू कहाँ निअरा तनी जेकरा से बतिअइतीं

□

[संतावन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पढ़े लगवऽ तूं

पढ़े लगवऽ तूं उलुटा पाठ, जनि हमरा से बतिआवऽ
गड़े लागी ई सूखल काठ, कसि के जनि तूं छतिआवऽ

कहाइल हर जगे अब ले जे अनका आँखि के कीरी
लुकाइल बा नयनवाँ में ऊ हमरा जनि तूं हुलुकावऽ

सहाउर हो गइल इहँवाँ वनल माहुर जे बा अनते
ई पोसल पीर के बा घाव काँचे जनि तूं उसुकावऽ

कहाँ ले तूं बनइतऽ पारखी हीरा भा मोती के
थम्हा के आजु माटी के खेलवना जनि तूं फुसुलावऽ

सराहे जनि कबो लगिहऽ, ह दीवाना के ई बाना
कहाले ई रहनि बाउर, भुलइलो जनि तूं अपनावऽ

करेजा पर पथल धइले रहत अइलीं कहीं कइसे
हलुक-पातर बा एगो भाव, हँसि के जनि तूं उधिआवऽ

□

गफलत में परल

गफलत में परल अपने रहले हा बे-सहूर
कहले त मानि लिहलीं हमरे रहे कसूर

हमरा सङे रहल बा गुलजार में उजार
चुपचाप बा सभा अब कुछ बात वा जरूर

रहलीं जहाँ-तहाँ से अइलीं इहाँ अनेर
जाईं त लगे केकरा निअराह आजु दूर

लउकल रहे नफा वड़, फउकल रहे मिजाज
अब सूदि के फिकिर का जब डूबि रहल मूर

ठकचल रहे हिया में तब भाव के भँड़ार
अब हो गइल इहाँ बा अरमान के अजूर

डर बा कबो धरे जनि केहू हमार नाँव
उतरे सुनत कतो जनि केकरो चढ़ल गरूर

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम भीर ना बोलाईं

हम भीर ना बोलाईं, हम ना लगाईं मेला
सङ-साथ में चलत हम रहलों अलग अकेला
के पाठ ना पढ़ावल ? के ना सबक सिखावल ?
मनलीं गुरू जगत के बनि के अकेल चैला
चेहरा सभे निरेखल, के हाथ-गोड़ देखल ?
हम का करे गनाईं फोरा परल कि ठेला
पतई बतास जवरे चढ़ते गइलि अकासे
हम भार भइल अपने रहलीं निठाह ढेला
अब सोझ ठाढ़ हो के पूछबि त के बताई
मूड़ो नवा-नवा के बा जात कहाँ रेला
निभरम बनल रहीला, बा आँखि के दोहाई
मंजिल हमार सूझे, ना राह के झमेला

□

गँववलीं का कहीं कइसे

गँववलीं का कहीं कइसे, कहीं कइसे कि का पवलीं
खोदाइलि आँखि त रोवलीं ना, लागल ठेस त गवलीं
बुझाई होस में रहला से ना केहू का सनकाही
लुकारी हाथ में ले के हम अपना घर के बमकवलीं
कहानी बनि गइल पानी रहे कहियो जे मोती के
मिला के धूरि में अपना के हम अनका के चमकवलीं
चनन के लेप ना बनलीं, धुँआँ भइलीं लुआठी के
झोंकइलीं हम तबो गम-गम सजी घोनसार गमकवलीं
सम्हरले कान्ह पर बहङी बेगरिहा हम बनल रहलीं
ज़हाँ अइलीं उहाँ गइलीं, धधाइल हर जगे धवलीं
निहँसि के जब पिआ दिहलीं जहर-माहुर मनोरथ के
बिहँसि के अब कहीला टूटि गइला पर कि ना नवलीं

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भला हमरा से अब

भला हमरा से कुछुओ अब का कहाई !
सुनावे के चहलीं त लिहले जम्हाई
कतने तपेसवा से दरसन भेंटाइल
भरोसा रहे आजु मनसा पुराई
बहुते दुलरुआ रहे साध पोसल
जनाइल कवो ना जे अइसे तँवाई
अब का बताईं भइल हाल कइसन ?
कढ़ावे चलीं गीत, आवे रोआई
लुआठल गइलि भाव के भूखि मजगर
जरी जीव अइसे त कइसे जुड़ाई ?
जनाई भला कइसे जिनिगी सवदगर
तनी नेह - नाता ना जग जो लगाई ?

□

सुकवार उमिरिया में

सुकवार उमिरिया में बहुते परल ममोर
अँइठात हियरवा ना ई बनि सकल कठोर
उमड़ल घटा गगन में ना झरल एक बून
झँउसात जिनिगिया के ना दाह भइल थोर
सुनसान डगरिया में छवले रहल अन्हार
लभजान दियरिया पर हहुआ रहल झँकोर
मुँह से कहात नइखे मन के निठाह चोट
उतरात पुतरिया में ना डूबि रहल लोर
गर में कसात जात आजु रेशम के डोर
हुदुका करेज खोभे कसि - कसि मिले धसोर
ठकठेनि से कुहेसा के हो रहल अबेर
अकुलात नजरिया में ना भोर के अँजोर

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोलइतऽ त बड़ भाग

बोलइतऽ त बड़ भाग आपन मनइतीं
कढ़इतऽ कबो तूं त हमहूं सुनइतीं
देखाईं ई तसवीर अनका के का हम ?
तिकइतऽ तनी तूं त सचहूं सोहइतीं
बतासल फिरीला बन्हइला बिना हम
सम्हरितऽ इहाँ त ना अनते परइतीं
भावल कबहुँओ ना गूङी कछावल
हूँकरितऽ कबो तूं त हम ना चुपइतीं
बहुत जोस पहिले पहिल हम देखवलीं
बरिजितऽ त बेहोस हम ना धधइतीं
कहइतीं अकसरे इजतिदार हमहूं
जो पानी ना जवरे रहत हम गँवइतीं

□

बहुत हो गइल

बहुत हो गइल अब्ब का अधिका सुनाईं
समेटे द तसबीर कतना देखाईं
सगरो रहीला करेजा उघरले
निहारे केहू हाल हम का सुनाईं ?
लखाले ना एको सँघतिया डगर के
परल बोझ कइसे कपारे उठाईं !
सनेहिया बिना सून लागे नजरिया
कहाँ जाके जियरा तनी हम जुड़ाईं !
खखन ना रहल, ना रहल साध बाकी
अघइलीं बे-खइले, भला का हहाईं !
तँवाइल करी सउदा गँहकी बिना ई
महङ माल के सहता कतना बनाईं ?

□

[एकसठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रहे द भाग अब सूतल

रहे द भाग अब सूतल, कहाये द करम कूटल
सभे हमरा से बा रूसल, तबो नइखे ई दिल टूटल
करीं कवना मुँहें कुछुओ बड़ाई अपना करनी के
घरी सभ दिन रहल बा बाँव, मुजनी ना कबो जूटल
रहे थोरे - बहुत हमरा लगे अवकात सपना के
मिलल जतना रहे संपति गइल ओह से अधिक लूटल
सम्हरलीं ना कबो सज से, चेतावल एक ना सुनलीं
पता नइखे डगरिया में गेठरिया कब कहाँ छूटल
हफन धुनलीं वहुत, खनलीं पथल पर हम गहिड़ कुँइयाँ
भरित कइसे भला ई भाग के गगरी रहे फूटल
मिले के धूरि में चाही तबहियें नयन के मोती
उंखड़िये के रही जब आजु ले मन में जे वा खूँटल

□

सङे कतने रहन

सङे कतने रहन बरिआर केहू ना भइल दाही
करेजा ई अवरूआ हर जगे होते गइल घाही
समुझ का फेर पर उनुका रहीला माथ निहुरवले
चलावल ऊ करसु ढेला कहाउ हमार सनकाही
भुला के जे लगे आइल त पोंछल लोर गोंइठा से
मिलल खरकोंच नयनन में कहाइल बड़ दरदखाही
बसावल ना कतो चहलीं नगर हम सुख - सवारथ के
कहल केहू करे हमरा फकीरी के सहनसाही
वढ़त गइलीं डगरिया पर, गड़ल कइलीं नजरिया में
कहीं कइसे कि ले के हूक एगो जा रहल राही
कइल तनिको ना कम आपन - बिराना लोग मरखाही
सभे बिजुकल रहे हमरा प' अजमावल नां के ढाही ?

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा भइल हमरा

वा भइल हमरा डगरिया में अन्हरिया राति घोर
तूं झलकि जइतऽ त हो जाइत नजरिया में अँजोर
तेल–बाती विनु बिआ बेरथ बनल दियरी अमोल
ताकि दिहितऽ तूं तनी होइत इहों टहकार भोर
तूं बिहँसितऽ त भरित कुहुँकत करेजा में हुलास
फूल अस लागित नयन में ना गड़ित काँटो कठोर
गंध तहरे साँस के लेके चलित उछहल बतास
रंग में तहरे रङा जाइत गगन के ओर–छोर
सोर ना कइलीं कबो, हो गइल तबहूँ बड़ हहास
रूप वा तहरे उठवले आजु हियरा में हिलोर
लालसा एके कि रहितीं तहरे सुधिया में विभोर
का करबि हम होस ले के आन कारन ढेरि–थोर

□

माटी के दियरिया ई

माटी के दियरिया ई जो ना करिति अँजोर
भादो के अमावस तव वेसो वनि कठोर
घनघोर एह नगर में छवले रहित अन्हार
काटत रहित डगर के अनजान ओर–छोर
भदराह रहित वेरा, जहुआह रङ्गित जोग
सपनात रहित पहरू, अगरात रहित चोर
लपकल रहिति नजरिया, कइसे करिति अङ्ज
ठनकल करिति बिजुरिया बदरी सङ्े सजोर
अकसर रहल भवन में सचहूँ बनित सजाइ
कुहुँकल करित करेजा, मन होत रहित थोर
धावे द बेयरिया के, आवे द अव झँकोर
बाती का कजरिया में मुसुकात फरिछ भोर

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तसवीर त खुलता बा

तसवीर त खुलता बा पर कुछ ना लखाई
जो मूँदि आँखि सज से मन लव ना लगाई

निकसे भले सनेस नया पात – पात से
बहकल करी धेयान त कुछुओ ना सुनाई

ढूँढ़ल भइल अनेर दूरि नगर – डगर में
पँजरे रहे बसल जे अनते ना भेंटाई

कइसन ह रूप धूप के ई छाँह का जाने
परिचे बिहान के भला गधबेर बताई ?

अइबे कइल त का भइल, जइबे करी त का
सकदम में परल साँस के जिनिगी ना कहाई

ठकचल बा भाव के भँड़ार कंठ ले इहाँ
चुपचाप अब जबान से कहिया ले रहाई ?

□

उड़ लगलऽ त देखबि

उड़े लगलऽ त देखबि हम कहाँ ले तूं उड़त जइबऽ
धराई ना कबो धरती गगन का ओर जब धइबऽ

फुँकाइल बा बुला मंतर, समाइल देहि में लुतुकी
उठल उदबेग ले के का कबो कतहूँ बिलमि पइबऽ ?

चिहाइल बा सभे चीन्हल गइल चेहरा चनरमा के
लखाई गोड़ तर के का भला अइसे जो तरनइबऽ ?

भराइल आजु ले ना भूँइ पर कब के खनल गड़हा
अकासे छू रहल अपना महल के नेंव भसवइबऽ ?

सहज एह बात के बूझल कठिन लागी बहुत तहरा
रहबि हम सोझ निभरम तूं सवख में टेढ़ अभुरइबऽ

पता ना भेंट कहँवाँ कब हमार तहार अब होई
भरोसा बा लगे हमरा लवटि के एक दिन अइबऽ

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइल जुआठि गर पर

आइलि जुआठि गर पर हमरा इहाँ धरात
रहलीं निठाह कोल्हू के बरध बनि हँकात
अँखिया हमार छोपलि, घेरा में परल पाँव
चकरात माथ, चाभुक बा पीठि पर हनात
छूटल पुरान माँकल, बिसरल पहिल सुचाल
अँइठात रहल रहि–रहि मन सहि–सहि उतपात
हमरा मिलल करम में पेरे के निछछ रेत
कवना कसूर कारन ना बात कुछ बुझात
थाके घठाह जाङर, थउसी चढ़ल हियाव
थहरात चलल जाता बल खाइ–खाइ लात
कीची भरल नयन से कुछ ना फरिछ लखात
भिनुसार–साँझि एके अस राति–दिन जनात

□

भेस में पहिला

भेस में पहिला ना आइबि
रूप हम नवका अजमाइबि
काल्हु ले सुनि के जे हँसलीं
आजु बतिआ ना से पाइबि
काल्हु हम गवलीं जे इहँवाँ
आजु ना तवने दोहराइबि
काल्हु रहलीं हाँ हम जहँवाँ
आजु ना फिनु तहँवें जाइबि
घूमि के आ गइलीं दुनियाँ,
आजु ना अनते छिछिआइबि
खोलि के घर ना मुँह बाइबि
आजु हम भलहीं कम भाइबि

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एक सुननिहार जो रहे

एक सुननिहार जो रहे त बहुते कुछ कहीं
होत बा इहाँ अकाज आजु कब ले चुप रहीं
बा अनेर बजरबहिर का लगे कहे के सवख
आँखि खोलि के अन्हार घोर कइसे हम सहीं ?
पाँव रोपि सोझ ठाढ़ रहत भइल एके ठहर
बा परन हमार धार जवरे कबो जनि बहीं
मूठ ना वन्हा सकल तबे त हाथ छूँछे रहल
देत बा सलाह सभे गोड़ जग के हम गहीं
होसिला निठाह काल्हु ले चढ़े-बढ़े के रहल
हाल हो रहल हमार आजु जब ना तब ढहीं
टेढ़ भँहू कइल सुनि हमार सोझ नाँवें नगर
हो चुकल पुछार अधिका कम हमार अब कहीं

□

इहाँ आके हम अनगावल

इहाँ आ के हम अनगावल गीत गवलीं
सुनल ना चाहल केहू तबहूँ सुनवलीं
निवाहत फिरीं सगरो धा - धा के नाता
कतो हीत सुबहित ना अबहीं ले पवलीं
रहल हा बहुत दिन से गरहुआइल बोझा
टेकावल ना केहू जे माथे चढ़वलीं
ना छँहियाँ जुड़ावे ना घमियाँ तँवावे
ठहरलीं ठहर पर, ना चढ़लीं ना नवलीं
चरन - धूरि चललीं हाँ पपनी से पोंछे
सभे हमरा भावल भले हम ना भवलीं
कहल कइलीं सभका से बतिया मरम के
नजरिया के हम अपना निभरम बनवलीं

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं कवना मुँह से

कहीं कवना मुँह से कहाँ चोट लागल
देखाईं त कइसे गतरवा ई दागल

चहलीं कि राखीं दरदिया के तोपल
सुना जनि केहू का अलोता के रागल

केकर दो अचके में आहट सुनाइल
चिहुँकि के सुतावल गइल पीर जागल

मरन से लड़े के रहल जोस बाको
अमरता के नाँवें सुनत होस भागल

निहारल सभे अब ले गमला के सोभा
उतरलीं हाँ हम फूल परवत प' टाँगल

विचरला बिना केहू कहि दे बेजइँहाँ
बुझइला बिना मानि ले लोग पागल

□

रहि के अन्हार में

रहि के अन्हार में हम अब ले अँजोर कइलीं
पिअलीं धुँआँ पसन से, सवखे झँकोर खइलीं

लउकल कबो कतो ना केकरो रहनि हमार
अनघा अङार चूमेवाला चकोर भइलीं

हुमचत किरोध होखित ना आन से सम्हार
अपना भिरी जतन से मन के ममोर घइलीं

हँसि – हँसि करेज आपन कढ़लीं हजार बेरि
अगरात खात सगरो सज से धसोर गइलीं

चहलीं वहुत सहाउर ना बनल ई जवान
कइलीं जहाँ भलाई बाउर तहाँ कहइलीं

घसकल गते–गते अब जाला सघन अन्हार
बनि साँझि के वटोही हम भोर ओर अइलीं

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जब-जब तनिका देखल

जब–जब तनिका देखल चहलीं का भाव पराया मन में बा
झलकल तब एके रूप बसल हर पुतरी का दरपन में बा
जानल चहलीं का भेद छपल घर–घर में भा बन–बन में बा
ढूँढ़त – ढूँढ़त पवलीं एके दुख – दाह भरल कन – कन में बा
धरती का लोरे के पानी मोती के आब रतन में बा
कहनी एके ई जुग – जुग से जग का उत्थान – पतन में बा
तसवीर खिंचाई ओकर का जे खन में कुछ, कुछ खन में बा
भरके ना पावे जिनिगी के बोझा बान्हल पल – छन में बा
बा बात – बिचार जहाँ अलगा, झगरा – झउरा जन–जन में बा
हिगरावल बा तन – तन में पर दिल एक सभे धड़कन में बा
ई साँसनि के तागा अइसन अझुरावल प्रान – पवन में बा
बा अरथ बन्हाइल सबदन में मुकुती के चाह बन्हन में बा

□

किसमत में कहे के 'आह'

किसमत में कहे के 'आह' मिलल, ना सुने के भले 'वाह-वाह' मिलल
मुसुकी के इहाँ ना निबाह भइल जिनिगी के जहाँ ना पनाह मिलल
रन-बन में परल चरनन का कहाँ अह-जह में कवनो राह मिलल
पँवरत - पँवरत थाकलि बँहियाँ, दुख के दरिआव अथाह मिलल
अकसरुआ मन का सभ केहू के अपनावे के चाह मिलल
उबरे के करीं का आस गरे फँसरी अँइठल अझुराह मिलल
उजिआर भइल मुँह ना अब ले अइसन आङ्छ करिखाह मिलल
बा मिलल जे दिमाग निपाङुर वा, दिल जे बा मिलल घवदाह मिलल
ना नीमन एक सलाह मिलल, पँजरा भलहीं दरगाह मिलल
केहू के तनी ना निगाह मिलल, जे मिलल से सभे अगिआह मिलल
का हालसुनाईं होस के हम, जब नाँव इहाँ 'सनकाह' मिलल
बतिआवे के जब साध भइल, मितवा मन के बउराह मिलल

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाल का जाने कइसन

हाल का जाने कइसन हमार होइत
आन अइसन जो हमरो पुछार होइत

पाँव रोपे के हमरा सुतार होइत
सोच – सागर से हमरो उबार होइत

भीर हमरो दुआरे अपार होइत
देखवइया के तब ना गोहार होइत

झूठ कहि–कहि जबान होसियार होइत
साँच रहि के ना मनवाँ गँवार होइत

राति त राति दिन में अन्हार होइत
माथ ऊपर निसा जो सवार होइत

रूप तोपल कबो ना डिठार होइत
आजु ना जो ई परदा उघार होइत

□

आ के हमरा लगे केहू

आ के हमरा लगें केहू का पावल
जे नजरिया ना अब ले मिला पावल

जवरे रहिओ के ना बतिआ पावल
किरिया खइलो प' ना पतिआ पावल

फूल के माथे से ना चढ़ा पावल
काँट अङुरी में जे ना गड़ा पावल

सेही सूतल सुदिन के जगा पावल
नीनि से ना जे नाता लगा पावल

ऊ ना गरमो गगन के कमा पावल
जे ना धरती का तह में समा पावल

धूरि चानो प' जा के उड़ा पावल
भूँइ के जें ना जियरा जुड़ा पावल

□

[उनहत्तर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आजु ओरमल बदरिया के

आजु ओरमल बदरिया के झरि जाये द
जाम अधजल उमिरिया के भरि जाये द

दूपहर के लहरिया उतरि जाये द
साँझि होई, समइया सुतरि जाये द

गाँठ जे बा बन्हाइल उभरि जाये द
काँट जे बा रोपाइल उजरि जाये द

सोरि टिसुना का हिङुआ के जरि जाये द
गाँछ मोजरल मनोरथ के फरि जाये द

जोति खातिर नजरिया हहरि जाये द
आँचि अब ले धुँआइल लहरि जाये द

आगि – पानी में अगरा के परि जाये द
जीहीं त जीहों, नाहीं त मरि जाये द

□

ना हम सरस बहार

ना हम सरस बहार बनीं, ना हम चटक सिङार बनीं
हम त चाहीला जे तनिका जरत अङार बनीं

ना हम मधुर पियार बनीं, ना हम सुघर दुलार बनीं
हम त चाहीला जे मजंगर तनी तकरार बनीं

ना हम परल पहाड़ बनीं, ना हम अचल अरार बनीं
हम त चाहीला जे नदिया के बहत धार बनीं

ना हम वजर केवार बनीं, ना हम भवन उघार बनीं
हम त चाहीला जे भटका खुलल बिचार बनीं

ना हम तनिक लबार बनीं, ना हम अधिक लजार बनीं
हम त चाहीला जे परदा रहत लखार बनीं

ना हम मइल अन्हार बनीं, ना हम गगन धुँआर बनीं
हम त चाहीला जे सगरो सुदिन सुतार बनीं

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू सोहाग के

केहू सोहाग के सिङार होके आइल बा
केहू अभाग के अङार होके आइल बा
सभे पड़ाव के सवार होके आइल बा
केहू हमार ना तहार होके आइल बा
केहू कुहेस में लखार होके आइल बा
केहू चिराग तर अन्हार होके आइल बा
केहू अलोत में लजार होके आइल बा
केहू बजार में उधार होके आइल बा
केहू जबान के करार होके आइल बा
केहू निगाह से फरार होके आइल बा
केहू उबार के सुतार होके आइल बा
केहू चढ़ाव से उतार होके आइल बा

□

केकरो अइला से

केकरो अइला से बगनवाँ में बहार आ गइल
केकरो गइला से नयनवाँ में अन्हार छा गइल
केकरो अइला से जिनिगिया में जुआर आ गइल
केकरो गइला से उमिरिया में उतार आ गइल
केकरो अइला से अंजोरिया में निखार आ गइल
केकरो गइले दुपहरिये में मुन्हार आ गइल
केकरो अइला से सनेह के सुतार आ गइल
केकरो गइला से कलेस बेसम्हार आ गइल
केकरो अइला से निगाह में खुमार आ गइल
केकरो गइला से करेज पर चिहार आगइल
केकरो अइला से संपतिया के भँड़ार आ गइल
केकरो गइला से बिपतिया के पहाड़ आ गइल

□

[एकइसर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

केहू हमरा भिरी

केहू हमरा भिरी कबहूँ ना आवेला
अपना लगवा ना हमरे के बोलावेला
कवो सोझा होके आँखि ना मिलावेला
केहू फरके भइले चरचा चलावेला
हमरा खाल-ऊँच तनिको ना भावेला
केहू का-का दोनी गते बतिआवेला
केहू ओठवा प' मुसुकी नचावेला
केहू मोतिया नयन में अँटावेला
केहू रोवे पूका फारि, केहू गावेला
केहू खोवेला इहाँ त केहू पावेला
केहू महटिआवे, केहू अनतिआवेला
केहू भरि अँकवारी धरे धावेला

□

सभा-समाज में ना

सभा-समाज में ना सायरी सुनाईला
कहेलऽ मीत ! तबे गीत-गजल गाईला
कहात ना कि लगे आइ के का पाईला
हँकार पर तहार हम धधात धाईला
बरे के नांव ना जानीं, सिरिफ धुँआईला
जरल-मरल करीं कतो, इहाँ जुड़ाईला
दरद के दूरि, बहुत दूरि हम भगाईला
मरम का घाव प' मलहम इहाँ लगाईला
संकोच बा बहुत कहत कि कुछ कुदाईला
तहार बाँहि धरत डेग हम बढ़ाईला
अड़ान तूं निठाह, बात ना बनाईला
हमार भाग ! तूं बनल रहऽ मनाईला

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

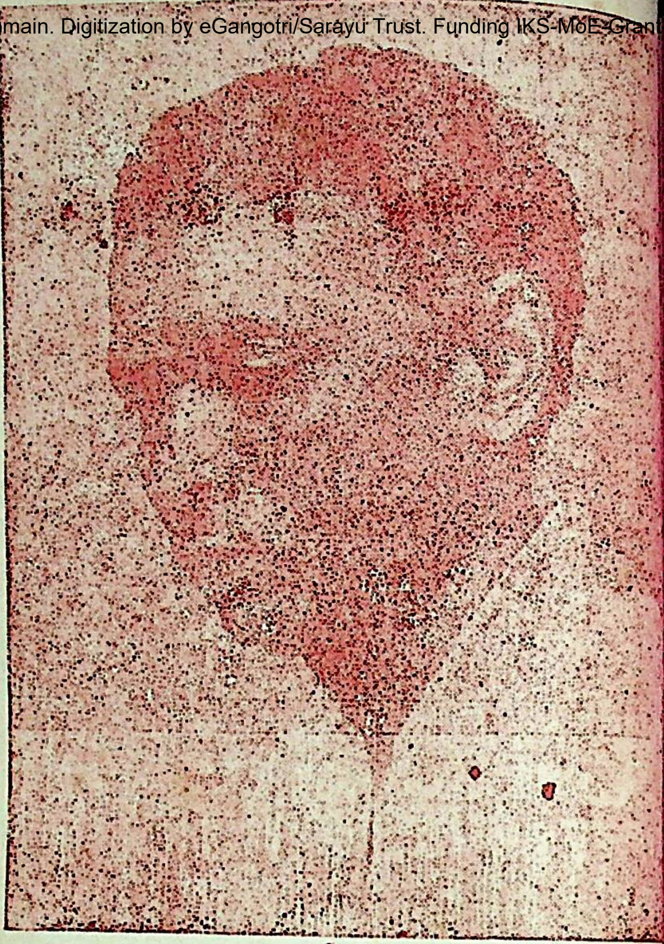

भाव-विचार से भरपूर, अनुभूतिपरक, भोजपुरी भाषा-साहित्य का सृजन, संपादन, संकलन, प्रकाशन आ प्रचार-प्रसार में पछिला सताइस साल से जीवे-जाने लागल

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के कृति-क्रम

प्रकाशित

१. जय बंगला (लघु काव्य)
२. कौशिकायन (प्रबंध काव्य)
३. बेटा के नइहर (ललित निबंध)
४. सुदिन (प्रगतिशील गीत संग्रह)
५. सेवकायन (प्रबंध काव्य)
६. पँखुरी भइल हजार (बरवै संग्रह)
७. लीला ई श्री राम-श्याम के
८. भोजपुरी भूँइ (कविता संग्रह)
९. अनसाइल राग (कविता
१०. पतिआत ना केहू (गजल

प्रकाश्य

१. गाँव बारहो मास में (गीत
२. डागा वाजि गइल (कहानी
३. घर के गूर (निबंध संग्रह)
४ गइल घर (उपन्यास)
५. हम' (आत्मकथा)
६. स्वर मत दो (हिन्दी कवित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

गाँव बारहो मास में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव बारहो मास में

(गीत-संग्रह)

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गाँव बारहो मास में

प्रकाशक : अतुल बंधु
चन्द्रायण, शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१

लेखक : श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

संस्करण : पहिल, सन १९८७ ई०

सर्वाधिकार : प्रकाशक

मूल्य : रु० १२/- (बारह)

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-४

GAON BARAHO MAS MEIN

(*Bhojpuri Essays*)

by

Shree Avinash Chandra Vidyarthi

Price Rs. 12/- (Twelve)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त अध्यापक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कविता, निबंध, कहानी, रेखाचित्र आदि के सर्जक सहृदय साहित्यकार, जनपदीय संस्कृति के संरक्षक पत्रकार, मैत्री एवं सद्भाव के आगार, यायावर, प्रमुदित संश्लेषक व्यक्तित्व

डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी

एम० ए०, पी-एच० डी०

के

सादर

रसगर सुर के बास ना रहल
सूखल - चरकल बाँस में
मजगर साज - सिङार सून ई
"गाँव बारहो मास में"

कइलीं पहिले पहिल उजागर
रउए हमरा नाँव के
टेढ़ - सोझ तसबीर निहारी
दया - दीठि से गाँव के

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चलत-फिरत तसबीर सजावे
गाँव बारहो मास में
दरस-परस के तरस जगावे
नाँव बारहो मास में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव का मोह

गांव छोड़े के मन ना रहे, पर होनी कुछ अइसन भइल कि सचहूँ हमार गाँव छूटि गइल !

ओह दिन (कतिकी छठि, दिन मंगर, २नवंबर १९५४ ई० का भोरे साढ़ चार बजे) गाँवें जाये खातिर 'बक्सर शटल' (अब 'भोजपुर शटल') ट्रेन धरे के रहे। रिक्सावाला हमरा बतावल राह पर ना चलि के अपने मने घुमावत-फिरावत लोदीपुर से पटना जंक्शन स्टेशन का ओर बढ़े। छनकबाह सुभाव के आगाह कइलो पर 'इंडियन नेशन प्रेस' का उत्तर सामने से आवत बड़का फटफटवा रिक्सा (शैतान के सवारी) से टकराव होइये के रहल। बारह-तेरह घंटा का बाद जब तनिका आँखि खुलल त जनाइल जे पटना जेनरल हॉस्पिटल में बानीं—बेड पर सँउसे देहे प्लास्टर में। 'मरफिया' का असर से ओह घरी दुख-दरद बूझि ना पवलीं। आठ महीना खटपरू रहि के जवन साँसति सहे के परल ओकरा सुरता मातर से रोंआँ-रोंआँ ठाढ़ हो जाता। बाँवां गोड़ के हड्डी ठेहुना का ऊपर से दू टूका होके चमड़ा का बाहर निकलि गइल रहे। डॉ० बी० मुखोपाध्याय रूपी धन्वन्तरी भगवान का हाथे दू-दू बेर के ऑपरेशन का बाद जान बाँचल आ साल भर का बाद कवनो-कवनो तरे चले-फिरे जोग भइलीं। अब त आवाजाही में छड़ी के सहार ओह पारि गइले पर छूटे त छूटे।

२८ के उमिरि रहे जब ई दुरघटना होखल। बरिस ना लागे पावल कि एक दिन गाँव (शाहपुरपट्टी, भोजपुर) से खबर आइल कि बाबुओ जी संसार छोड़ि दिहले। अपना दोसरा जनम का छव-सात साल बाद ले देहात में जाये भर ना जोरे हमरा जंगबाह जाड़र में रहे आ ना कवनो रसे-लस, जेह से गाँव से देहज नाता टूटल कस लउके। तबहुँओं चीत से गाँव ना उतरल। खटपरू हालत में सँघतियन का आफिस गइला का बाद मन ना लागे। कसहूँ-कसहूँ तनी-मनी अखबार देखीं। दोसर कुछ पढ़ला पर कपार घूमे लागे। सोच-फिकिर त जइसे भुलाइये गइल रहे। अकसरुआ मन परल-परल कुछ गावे के चाहे। भिखारी ठाकुर के गीत आ लोकगीत के दोहरवला-तेहरवला का बाद उन्हनियें का धुन में गुनगुनाये लागीं। एही तरे निफिकिरी में फगुआ, चइता, कजरी, झूमर, सोहर, बिआह के गीत, रामायन के बानी आ बिरहा का तरज पर कतने टेढ़-सोझ जोरत गइलीं जवना में थोर-ढेर इजाफा भइल सन् १९५९ में पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी का आश्रय में भोजपुरी परिवार के जुटान का आसपास एगो सांस्कृतिक कार्यक्रम का उदेस से रचाइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

"गैइया का ओर" नाँव के एगो गीत रूपक खातिर तरह-तरह का तरज में गावे लायक गीतन का रूप में।

सांस्कृतिक कार्यक्रम त ना सँपरल बाकी हमरा तुकबंदिन के दोसर निकसार मिलल। बगसर का सामने गंगा जी का ओह पार बसल उजिआर-भरौली गाँव के नाँव ना जाने कब से हमरा मन-प्रान के अभिभूत कइले रहत आइल बा। १६५८ से ही भरवली के श्री श्रीनेत राय, यांत्रिक अभियंता (सिंचाई विभाग) हमार अनुजवत बनि के हमरा भोजपुरी गीत रचनन में रस लेवे लागल रहले आ उनुके चलते हमार पहिल भोजपुरी पद्य-रचना "प्रभात" उनुका गुरुवर नरहीं (बलिया) के अध्यापक आ पत्रकार श्री लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी का चहले-कहले बनारस का दैनिक 'आज' के "पूरबी उत्तर प्रदेश के पूरक पृष्ठ" (१६ जनवरी १६५६) में छपल। कुछ दिन में गाँव के मौसमी सरूपन के नीक-बाउर तसवीर 'आज' में बेर-बागर निकसत रहल। ओह घरी 'अँजोर' ना परगट भइल रहे।

हमरा भोजपुरी रचना के प्रेस का माध्यम से अँजोरा ले अनिहार डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी जी के पुस्तक समर्पित करत उहाँ से निहोरा बा जे हमरा एह रूखर-आखर पहिल कृति के अपनावे—असीसे के कृपा कइल जाय।

आजु से अठाइस-ओनतिस बरिस अगते के खींचल 'गाँव बारहो मास में' के एह खाका में कवनो खूबी खोजे के काम नइखे। गाँव का धरती आसमान, फेंड़ रूख, नदी-नारा, खेत-बधारि, घर-अङ्गन आ माटी का मूरति के छोट-मोट सपना-साध कइसन होला, ओकरे के बाहरे-बाहर झाँके के हमार ई कोसिस भोजपुरी कविता का डहर पर डेग डालल भर कहा सकेला। भर सक कवि-कला का परछँहियों से भेंट इहँवाँ ना होई। बस गाँव का मोह एकरा पर छोह केहू करे त करे।

भोजपुरी जगत का जाने के बाकी नइखे कि मातृभाषा का साहित्य के प्रकाशन खातिर साहित्य-सेवियन के लमहर सहार 'जयदुर्गा प्रेस' कतना सहयोगी रहत आइल बा। शब्दन में एकर आभार ना प्रगट कइल जा सके।

वर्तनी में 'या' आ 'आ के प्रयोग ध्वनि का मोताबिक कइसे कइल ठीक होई एह बारे में हमार कवनो हठ धरम नइखे।

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी
२५ दिसम्बर, १६८७
(जनकवि भिखारी ठाकुर के १०१वाँ जनम दिन)

चन्द्रायण
शिवाजी पथ, यारपुर,
पटना-१

छव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूची

	पन्ना
१. धूरि गाँव के	८
२. गँइयाँ का ओर	६
३. देखत अइहऽ गँइयाँ हमार	११
४ भोर के सनेसा	१३
५. पुरवइया से	१४
६. दिनवाँ ई पहिला असाढ़ के	१५
७. मकई बोअइहऽ	१७-१८
८. अबकी सावन में	१६
९. रोपनियाँ के सुतार	२०
१०. सावन आइल वा	२१
११. सावनवाँ में ना	२१
१२. जीये जागे हरिअरिया	२२-२४
१३. एह भादो भदवारी में	२५
१४ मकई के रखवारी	२६
१५. बाढ़ि	२८
१६. गंगाजी से निहोरा	२९
१७ पानी अब पामाल कइले वा	३०
१८. दिनवाँ कुआर के	३१
१९. कातिक के हरवाही	३१
२०. कातिक के करिया बदरिया	३३
२१. अगहनवाँ	३४
२२. चाननी	३५

	पन्ना
२३. सुखारि में	३६
२४. पूस महीना आइल	३७
२५. भागल जाड़ बोलावे	३८
२६. साँसतिया जाड़ के	३९
२७. जाड़वा में भइल बरसतिया	४०
२८. माघ	४२
२९. आइ रहल मधुमास रे	४३
३०. बसंत के वहरिया	४४
३१. चइत	४५
३२. चइती वहार	४६
३३. बइसाख	४७
३४. दुपहरिया भइल वा	४८
३५. दुपहरिया जेठ के	४९
३६. जँतसारि	५०
३७. बिरहिनि के बारहमासा	५१
३८. साँझि	५२
३९. डूबि गइल दिनवाँ के नाँव	५३
४०. गंगातीरवा	५५
४१. बाँची का ?	५६
४२. जिनिगी हेठा रे के	५७
४३. माटी	६३
४४. गाँव बारहो मास में	६४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

धूरि गाँव के

बस्तल बानीं तेंतिस बरिस से भले बहरा में,
रहलीं हम सहरी कहावत बस नाँव के
ठेठ बा सुभाव, हेठ-मेठ जवरे निबहत बा,
संघति में, पंघति में नइखीं दहिन-बाँव के
होसिला-हियाव के बखान अपने कइसे करीं ?
उड़ल-बुड़ल छूटल, अलचारी बा पाँव के
हरदम रहेला खखन एके एह जिनिगी कें
चंदन अस चमकित लिलारे धूरि गाँव के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गँइयाँ का ओर

चलु भइया ! गँइयाँ का ओर

मनवाँ के मोरु तनी छोड़ि के सहरिया
चेत करु तनिका पहिलका ठहरिया
आसरा में कब से नूँ घूरि के डहरिया
बटिया निहारेले तोर
चलु भइया ! गँइयाँ का ओर

लउकेला दुरिये से खपड़ा आ नरिया
माटी के देवलिया प' फूस के छपरिया
रङल अलकतरा से करिया केवरिया
धुआँ छान्ही-छान्हीं साँझे-भोर
चलु भइया ! गँइयाँ का ओर

ठाँइ-ठाँइ भोरे-भोरे बोले लोहसरिया
तीसरे पहरिया जरेले घोनसरिया
करघा चलावे केहू गरहेला गगरिया
खाँची बीने, बरे केहू जोर
चलु भइया ! गँइयाँ का ओर

[नव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हर-हेंगा खेते, खरिहान में दँवरिया
इनरा प' मोटि चले, बोलेले घड़रिया
गरजेले चढ़ते असाढ़ के बदरिया
बरिसेला घाटा घनघोर
चलु भइया ! गँइया का ओर

सावन-भादो लहसेले धान के कियरिया
मकई का आरी-आरी जोन्हरी के धरिया
पहिरे सरेहि अगहन में पियरिया
पकठेला उखिया के पोर
चलु भइयाँ ! गँइयाँ के ओर

अठिमी, अनत, दसहरवा, दियरिया
गोधन, छठि, कतिकी, पिंड़ियवा, खिचड़िया
माघ में बसंत पंचिमी, फागुन होरिया
चइत रामनमी, घाँटो सोर
चलु भइया ! गँइयाँ का ओर

गाँव का गोंयड़वा के इनरा-पोखरिया
आमावाँ के बगिया, सघन बँसवरिया
मन परे आजु चरवाही के इयरिया
ढरकेला ढर - ढर लोर
चलु भइया ! गँइयाँ का ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखत अइहऽ गँइयाँ हमार !

वाहारा से जात बाड़ऽ घरे ए बटोही भइया !
देखत अइहऽ गँइयाँ हमार !
जेठ के भूँभुरिया, बँचइहऽ राह-बटिया में
छाँह होई चढ़ते असाढ़

बरिसी बदरिया धरतिया के हाल भर
आई तब मकइया के सुतार
देखिहऽ तूं खेतवा-बधरिया में चलत होई
हर - हेंगा खुरुपी - कुदार

होखे लागी चढ़ते सावन धनरोपनी,
कजरी गवाई लयदार
जेने तूं तिकइबऽ तेने लउकी हरिअरिये,
लहसल खेतवा - बधार

चलिहऽ भदउवा में तूं तनिका सम्हरले
आइल होई गंगाजी के बाढ़ि
खलको छवरिया प' चढ़ल होई पनियाँ,
टूटल होई धारावा से आरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

होई गते - गते फेरू कुटुकुर रहिया,
फरिछ होई घरवा-दुआर
चलत-खा बंचइहऽ राह-बाट के खरइया,
मुँह धो के भोरे-भिनुसार

भोरे - भोरे हर - हेंगा लेले हरवाहावा,
चलत होई कातिक में डेगार
खर-खर लागत होई करइल में हरवा,
दुबिया उजारत होई फार

झाँकत होई दिनवाँ में बिसुरल रहिया
केहू ठाढ़ होके धइ केवार
जाँतावा चलावत करनिनियाँ में गावत होई
बिरहिनि कवनो जँतसार

घूमते - फिरत तोहरा चढ़ी अगहनवाँ,
होइ जाई धानावाँ तेयार
कटिया करत तहरा पँयड़ा में मिलिहें
जहाँ वनिहारिनि-बनिहार

करत होइहें बिहने पहरवा पुरनियाँ
निरगुन-पराती के उचार
लेले अइहऽ सङे जनम-भूँइ के तूं चिटुकी भर
धुरिया चढ़ाइबि हम लिलार !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोर के सनेसा

खरकलि पतइया, फरकल अंग-अंग बगिया के,
भोर के सनेसा दखिनहवा सुनावेला
गुदुरावत कलियनि के, जा-जा कुंजगलियनि में
गुन-गुन के धुन में भँवरवा कुछु गावेला
'चह-चह' का बोल से जनाइल अनमोल पहर,
आँखि खोलि सूतल बटोहिया उठि धावेला
घसकत अन्हार घोर, छपकत बा उरुआ चोर,
मंद-मंद मुसुकी छोड़त बिहान आवेला

नीलबरनि सरिया का पुरुबी अँचरिया पर
झलकत किनरिया के गुलाबी रंग भावेला
सागर का तीर पर सँवरिया भरेले नीर
टिकुली के तेज रूप जोति के बढ़ावेला
छलकत गगरिया से बरिसत फुलझरिया अस
सोन-किरिनि के अच्छत माथे जग चढ़ावेला
सोहे सगुनवती पियरिया बधरिया में
सुदिन के लगन आङन-घर गहगहावेला

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पुरवइया से

तें आउ, आउ अब आउ !

ई जरत जेठ का जिनिगी के पुरवइया ! सरस बनाउ !

छाती पर बाती इहाँ बरल
ई आँच कपारे बिआ परल
रोंआँ-रोंआँ झँउसाइ रहल
एँड़ी से चोटी जात जरल

आरी पर दुबुकल दुबिया का फुलुंगी के लाज बचाउ !

धह-धह धन्हकेले दुपहरिया
साँसति के, सकदम के घरिया
हाँफेला हफर-हफर कुकुरा
खोजेले लेव भँइसि करिया

भूँभूरि का तलफल रहिया पर छँहिया तनिका पसराउ !

पानी ना रहल तलइया में
रस बाँचल तनी पतइया में
बा मिरिग-टेसुना के गर में
ई फँसरी मिलल सजइया में

मउअति से जूझत जिनिगी के अमरित के बून चटाउ !

करिया बदरी लेले अइहे
रस के गगरी तें छलकइहे
निहँसल नगरी में मनभावन
कजरी रिमझिम तें सुनवइहे

हहरल-लहरल अमरइया पर रोहिनि के बून गिराउ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनवाँ ई पहिला असार्ह के

मोरवा धधाइल,
बरिस दिन प' आइल वा
दिनवाँ ई पहिला असार्ह के
दिनवाँ ई पहिला असार्ह के !

धह-धह लहकेले जेठ के जिनिगी,
देहिया में लेसेले चिलिगी,
देहिया में लेसेले चिलिगी
जिउवा जुड़ाइल,
रोंआँ गनगनाइल वा,
लहरा ई पुरवा बेयार के
दिनवाँ ई पहिला असार्ह के !

बोलेले हऽ-हऽ-हऽ बुढ़िया आन्ही,
डोलेले छान्ही-छान्ही,
डोलेले छान्ही-छान्ही,
अँखिया मुँदाइल,
गरदवा समाइल वा;
जनि खोलिहऽ कीली केवार के
दिनवाँ ई पहिला असारह के !

गड़ - गड़ - तड़ - तड़ - हड़ - हड़ बाजे
के बरिअतिया साजे ?
के बरिअतिया साजे ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बरं परिछाइल,
अछत छिरिकाइल बा
चमेके तिलकवा लिलार के
दिनवाँ ई पहिला असार्‌ह के

झहर-झहर कुछु गावेला बुनवाँ,
केकर उठेला सगुनवाँ ?
केकर उठेला सगुनवाँ ?
गमकल सोन्हाइल,
बा अब चरचराइल
लगनवाँ ई धरती कुँआर के
दिनवाँ ई पहिला असार्‌ह के !

बरिसे वदरिया, भरेले पोखरिया,
भेंटेला भरि अँकवरिया,
भेंटेला भरि अँकवरिया
खेतवा खखाइल
भरल अगराइल बा,
लवटल सुदिनवाँ सुतार के
दिनवाँ ई पहिला असार्‌ह के !

रसगर आमावाँ के चाभेले दुनियाँ,
पाकेले लथरल जमुनियाँ,
पाकेले लथरल जमुनियाँ
हरवा जोंताई,
मकइया वोआई,
बधरिया सोहाई जवार के
दिनवाँ ई पहिला असार्‌ह के!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मकई बोआइहऽ

(जुगल गीत)

मेहरारू : वा नदिया किनारे जवन खेतवा
ओ' में मकई बोअइहऽ
असो मोर सजन !
छिटिहऽ धरिया अरिया-अरिया
बीचे रखिहऽ रहरि-जोन्हरिया
झोरी भरल जनेरवा के हाथ से
तनी टपके गिरइहऽ
असो मोर सजन !

मरद : पीअर-पीअर डिभिया जामी
सोहत-खा जनि होखें घामी
तनी भादो में बचा दिहें दहारि से
गंगा मइया से मनइहऽ
असो मोर धनी !

मेहरारू : तोहरा सङवाँ सोहबि हमहूँ
घसिया माथे ढोअबि हमहूँ
खीरा-कंकरी के लतरी बँचाइ के
तूँ विदाहावा करइहऽ
असो मोर सजन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मरद : पहिले झलक धनेहरा दीही
पाछे बलिओ मोचा लीही
बीचे खेते एगो गाड़बि मचानि हम
चिरईं तूँ हुलुकइहऽ
असो मोर धनी !

मेहरारू : केनिओं गमकी डम्हकल कँकरी
हम ले आइबि गोंइठा-लकड़ी
तनी सज से गोटाइल दूधा देखि के
दूगो बलिया पकइहऽ
असो मोर सजन !

मरद : अपना घरे बिआ लगहरिया
मेवा अइसन लागी दरिया
दलिया चानी के, सोना के भातवा
नीके भोगवा लगइहऽ
असो मोर धनी !

मेहरारू : वा नदिया किनारे जवन खेतवा
ओ' में मकई बोअइहऽ
असो मोर सजन !

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अबकी सावन में

धरती के हरिअर आँचर लहराई अबकी सावन में
तवल भले बा मिरिगडाह ई
मुरुझाई ना अमर चाह ई
जिनिगी के ई लहरल जिया जुड़ाई अबकी सावन में
लह-लह लहसल चली बधरिया
रतन - जोति होई हरिअरिया
अँखिया के ई रोग 'रतवन्ही' जाई अबको सावन में
अब अभाव के वात भुलाई
केहू ना अन्न कतो हहाई
चरिया देखि गदहवो ना दुवराई अबकी सावन में
भायी पुरवइया के लहरा
बिलमी ना परदेसो बहरा
बदरी रिमझिम-रिमझिम झाँझ वजाई अबकी सावन में
बँसवरिया में कोंपड़ फूटी
जबदल कंठ-कंठ के छूटी
कजरी घरे-घरे लयदार गवाई अबको सावन में

[ओनइस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोपनियाँ के सुतार

(समिलात गान)

संग धइ के चलऽ गोंइयाँ तनिका झटकरले
धनकियरिया में, आइल बा रोपनियाँ के सुतार
धनकियरिया में
आइल बा...

बान्हि लेहु फांड़ावा सम्हारि के चुनरिया
अब डगरिया में, आँचारा उड़ावेला बयार
धनकियरिया में
आइल बा...

रहि - रहि के चमकेला, झलके विजुरिया
घन बदरिया में, झर-झर झरेला फुहार
धनकियरिया में
आइल बा...

झलकेले अहरिया जइसे आँखि के पुतरिया,
ब़ा नज़रिया में छवले हरिअरिया के बहार
धनकियरिया में
आइल बा...

हेंगा - हर चलेला आजु लागेला कुदरिया
टेढ़ अरिया में, लेव के बा छेव पर सिङार
धनकियरिया में
आइल बा...

एक मूठी धानावाँ के सइ - सइ गो बानावाँ
कतरिया में रोपि - रोपि भरींजा भँड़ार
धनकियरिया में
आइल बा...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सावन आइल बा

छिछिली नदियो उतराइलि अब सजगर सावन आइल बा
रसगर फुलुङी फलकि रहल बा
डगर-डगर रस छलकि रहल बा
धरती के हरिअर आँचर धनखेती में लहराइल बा
फरल लाल-ऊजर करवनवाँ
पाकल तरकुल मोहे मनवाँ
फुलवा सोना-मढ़ल कदमवाँ गेना निअन फुलाइल बा
सरकत जात जनेरा सर-सर
खरकत्त बिआ जोन्हरिया खर-खर
गमकि रहलि डम्हकल कँकरी मन सियरो के ललचाइल बा
ढाबुस टर-टों टर-टों ठनके
झिल्-रिल् रिन्-झिन् झीङुर झनके
आजु फफिहरा वनल पपिहरा, 'पी'–'पी' टेर सुनाइल बा
राति अँजोरिया, ढुरहुर नइया
झाल-ढोल दस-पाँच गवइया
झिझिरो खेले खातिर नीक समइया आजु भेंटाइल बा
भरलसि बरखा आहर-पोखरि
बाजी धम-धम ढेंका-ओखरि
अगहन का उमेदि पर अवहीं से गिरहत अगराइल बा

[एकदस:

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवनवाँ में ना

रसगर करे तन-मनवाँ पवनवाँ सवनवाँ में ना
पछेवा रहेला चाहे पुरवा के पहरा
रहि-रहि भँवेला डगरिया में लहरा
छर-छर-छर छोड़े बानवाँ गगनवाँ सवनवाँ में ना

रसे-रसे लहसेले धान के कियरिया
पसरल जाले हाली-हाली हरिअरिया
हरिअर देखेला सपनवाँ सजनवाँ सवनवाँ में ना

लागे पवनार चूवे छने-छने ओरिया
पँइयाँ पखारे आजु गँइयाँ के खोरिया
लवले बा बरखा पहुनवाँ नवनवाँ सवनवाँ में ना

अब कन-कनवाँ के मेटिहें खखनवाँ
मिलिहें जतन से रतन-धन-अनवाँ
हुलसेला वन-उपवनवाँ-भवनवाँ सवनवाँ में ना

उमड़े के नदिया के लागेला लगनवाँ
उचरे सगुन भोरे कागावा अङनवाँ
निभरम खोलऽ कंठ-कानवाँ-नयनवाँ सवनवाँ में ना

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीये-जागे हरिअरिया !

लहसलि आऽवेले बधरिया
घरवा - दुअरवा छोड़ि
चलीं धनकिअरिया ओरि
गँइयाँ भितरिया अब ना
बइठि के रहाला
नीमन लाऽगेला बहरिया
लहसलि आऽवेले बधरिया

जेने देखीं तेने बा कीच - कादो
ईहे कहाला सरल सावन - भादो
पुरवा के बाटे पहरा,
आवेला रहि - रहि लहरा
गोड़वा में लार्थार लागे
रहिया करइल के
बिछिली बाँऽटेले छवरिया
लहसलि आऽवेले बधरिया

ठेहुना भर पनियाँ में लागेला लेव
अरिया सँवारे कुदरिया के छेव
चलतरुवे हेंगा - हर
देहिया काँपे थर - थर
बिअड़ा में तावड़ - तोड़
बइठल ठेहुनाइ के
अँटिया बाऽन्हेला कबरिया
लहसलि आऽवेले बधरिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेतवा बनावल बा होले रोपनियाँ
बिगहा में लागेली बीस-बीस गो जनियाँ
धान के गड़ाला बान
जान में परेला जान
होत बा निहाल कान
तानवाँ सुनाला
मनवाँ मोहिला कजरिया
लहसलि आऽवेले बधरिया

अँजुरी से घुघुनी आ महुआ बँटाता
खोंइछा-अङवछा में नीके बन्हाता
केहू नून सतुवा घोरे
केहू पूआ-ठेकुआ भोरे
रिमझिम बदरिया झहरे
गरजेला सरगवा
मटकी माऽरेले बिजुरिया
लहसलि आऽवेले बधरिया

भरि गइले गोंयड़ा के गड़हा-पोखरवा
छलकलि नहरिया, अघाइल अहरवा
देखीं कहिया आई अगहन
तेकरे ई थाती बड़हन
बढ़िया ना आवे 'अवकी
होखे ना सुखरिया
जीये-जाऽगे हरिअरिया
लहसलि आऽवेले बधरिया

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह भादो-भदवारी में

रहिया चलल भइल बा मोसकिल एह भादो - भदवारी में
बिछिली बा आरी - आरी पर
जाये के बा रखवारी पर
छिटिकी लागे ना पावे तनिको भर धोती - सारी में
एह भादो - भदवारी में

बा सँउसे दरिआव फफाइल
अब चकोह में नाव घेराइल
लगिया लागेला ना कतहूँ कवनो नारो - नारी में
नव दिन से झापस कइले बा
बर - बैपारी घर धइले बा
लदना बरधा बा वइठल, अलचारी बा बनिजारी में
गोंइठा भींजल, आँचि धुँआइल
फूँकत - फूँकत आँखि लोराइल
भुजुनो भूँजे भर सूखल पतई नइखे घोनसारी में
पुरवा बरिसे झहर - झहर के
रतिया सूतल गाँव - नगर के
बिरहा गावेला सेन्हिया पर चोरवा एही अन्हारी में
होई जतने कीचड़ - कादो
सरल कहाई ततने भादो
खदिया कामे आई ई कातिक का खेती - बारी में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मकई के रखवारी

बइठऽ हो, बइठऽऽ !

बइठऽ हो बइठऽ, ले आवतानीं फाँस

नीक पवलऽ सुतार
बिना नेवते जेवनार
करे चललऽ हजार
जने बइठि के उजार
करे खेत बे-मोआर
दाव लही ना तोहार
ई हऽ जिअका हमार
इहाँ वानीं रखवार

अवरू हाथे वा ढेला आ लमहर ढेलवांस
बइठऽ हो, बइठऽऽ !

कवे भागल अन्हार
भइल दिनवाँ लखार
जागल दुनियाँ सँवसार
बहल झुरु-झुरु बेयार
डोललि पतई सुकवार
आई बरखा बरिआर
छपकल अरिया प' ठाढ़
केनिओ बोलल सियार

हई देखबऽ ई दिनवें में छोड़ल हुआँस !
बइठऽ हो, बइठऽऽ !

राति झापस निठाह
रहे लउकत ना राह
परल भँइसा मरखाह
कहाँ ? लागल ना थाह

छ बस]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भौरे लउकल जिआन
मन होखल झवान
बिगदे जनि बे - ठेकान
गड़लीं मड़ई - मचान
देबि बाँचल - खूँचल के ना करे सतेयानास
बइठऽ हो, बइठऽऽ !

पहिल बावग के कार
भइल चढ़ते असाढ़
रहे घामी वरिआर
होखे देहिया जरिछार
बथल सोहत कपार
बाबू परले बेमार
लेके करजा - उधार
ढोवत जिनिगी के भार
उनुकर थाकल हियाव, कसिके अड़कल पिठांस
बइठऽ हो, बइठऽऽ !

रहे अइसन सकेत
रोनि - करज लेत - देत
साहु कइलन अनेत
सूदि - मूर का समेत
दाया कइलन ना लेत
बाबू गिरले अचेत
जोंति - कोड़ि निछछ रेत
बनल मकई के खेत
ईहे मेहनति के सउदा बा हमनी के साँस
बइठऽ हो, बइठऽऽ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाढ़ि

गाङाजी के पानी आइल, गँइयाँ घेराइल बा
खदिया उखाड़ल नइखे, जिउवा डेराइल बा

मड़ुवा में दाना बा ना मकई गोटाइल बा
साँवा भइल हावा ना टाङुनियें मोटाइल बा

मूँगिया, उरिदिया, कँकरी - फूँट भितराइल बा
मड़ई - मचनियाँ गिरल, खर्‌ह छितराइल बा

जोन्हरी, रहरिया हरिअर आजु पिअराइल बा
दिअरा का जिनिगी कारन काल निअराइल बा

बढ़िया में गढ़त - गढ़त रढ़ियो ओराइल बा
चरी नइखे, बाग - बगइचवो बोराइल बा

अङना में पानी लागल, भीति सहलाइल बा
बाले - बाचा लेले लोगवा छन्हियाँ प' आइल बा

ओरिया से छपकल बीछी - कूछी लपटाइल बा
रसरी का भक्के हांथे सँपवा धराइल बा

खटिया - चउकिया, सुजनी - तकिया दहाइल बा
सूपवा-चलनियाँ, लोर्‌हा-सिलवटि भुलाइल बा

धुँआ-धुकुर होखत नइखे, चिलमो सेराइल बा
लुतियो ना निकसेला, सलाई मेहराइल बा

आइलि दुपलिया नइया, मनवाँ खखाइल बा
लागेला पराहि दरिअउवा फफाइल बा

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंगाजी से निहोरा

तनिका सङोरी लहरिया, ए गाङाजी !
तनिका सङोरीं ... ...
अवहूँ से रछ करीं, जिउवा उवारीं,
विनवेले गँइयाँ - नगरिया, ए गाङाजी !
तनिका सङोरीं ... ...
वढ़िया से रहिया - डगरिया घेराइल,
बूड़ल बा खेतवा - वधरिया, ए गाङाजी !
तनिका सङोरीं ... ...
सरल जनेरवा, जोन्हरिया मराइल,
ना बाँची कोदो - रहरिया, ए गाङाजी !
तनिका सङोरीं ... ...
गोरुन के साँसति बा, गवति ओराइल,
कतहूँ ना लउकेला चरिया, ए गाङाजी !
तनिका सङोरीं ... ...
मड़ई गिरलि, वा मचानि भहराइ ल,
ओरमल वा चउकठ-केवरिया, ए गाङाजी !
तनिका सङोरीं ... ...
घर में ना खरचो, बा लइका भुखाइल,
लागे दों जनि हतेअरिया, ए गाङाजी !
तनिका सङोरीं ... ...
नीचे वा धार चलत, ऊपर वदरिया,
वीचे लागल थरथरिया, ए गाङाजी !
तनिका सङोरीं ... ...

[ओनतिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पानी अब पामाल कइले बा

अन्नदाता के समइया ई कंगाल कइले वा
ई बरखवा 'बिहार' के 'बंगाल' कइले वा

आस ना रहल अगहनी के, ना भदई के भरोस
चइती के चबा के अगते से अकाल कइले वा

वाढ़ि बइठेले बँड़ेरी, ताड़ पर टङात साँस
पानी नाक में समाइ के बेहाल कइले वा

धा रहल डंड़ार लाँघि - लाँघि 'गंगा' जी के धार
'सोन' फानि - फानि चउकड़ी कमाल कइले वा

'विहिटा' का लगे लखात वा 'बड़हिया' वाला टाल
ई 'मनेर' में 'मोकामा' वाला हाल कइले बा

जल - समाधि में रहल ना कतो ऊँच चाहे - खाल
काल ई कठोर जिनिगी के जवाल कइले बा

नइखे पार लागे जो'न आजु अकसरे ई जूझ
'धावऽ धावऽ लोगे!' कहि के केहू चाल कइले वा

पानी आगि से गरम बा ई लगवले देहे आगि
पानी आगा, पाछा पानी अब पामाल कइले वा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनवाँ कुआर के

वदलि रहल रूप - रंग अङना - दुआर के
सोहि रहल धरतो पर दिनवाँ कुआर के

आइ गइलि सरग के सँवरिया नेहाइ के
निखरि रहलि सबुज] रङ चुनरिया झुराइ के
झूमि रहलि धान के कियरिया वधरिया में
डोलि रहल झुरु - झुरु रस - बेनियाँ बेयार के
सोहि रहल धरती पर दिनवाँ कुआर के

फूल खिलल धरती पर उजर - उजर कास के
विहँसेला गतर - गतर जोंतल चउमास के
फरिछ भइल राह - डगर अब दसो दुआर के
मनवाँ मोहे बहार नदिया किनार के
सोहि रहल धरती पर दिनवाँ कुआर के

चूमि रहल भँवरा 'गुलमेंहदी' सुकवार के
ताकि रहलि तितिलो 'दुपहरिया'^ टहकार के
उतरि रहलि सँझिया अमरुधिया का डाढ़ि से
वोलि रहलि रतिया कुछ वतिया दुलार के
सोहि रहल धरती पर दिनवाँ कुआर के

^ कुआर में फुलाये वाला खैरा रंग के गुल मेंहदी लेखा फूल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कातिक के हरवाही

आव रे बाबू, हव रे भइया !
एने - ओने गोड़ ना परे,
बिगदे जनि पावे हरइया !
हव रे भइयाँ !

कान्हे के इहे भार, ढोवल करी बेड़ा पार
करी गड़ल चोख फार दुबिया के जरि-उजार
'धवरा' तें देहि झारु, 'गोला' जनि हिमति हारु
होखे दे नोके तरे अवकी गहिड़ार जोंतइया !
आव रे बाबू !

खरर - खरर हर चलाउ, लमहर आँतर फनाउ
हाली - हाली सङ धराउ, अगहरियो के हराउ
पालावा ते जनि गिराउ, परुआ तें जनि कहाउ
जिनिगो के रइनि इहे, जीते के करु उपइया !
आव रे वाबू !

हेंगा डोले खड़र-खड़र, सींकर बोले हलर-हलर
ढेला फूटे भहर - भहर, मटिया झरे झहर-झहर
बीति गइल तीनि पहर, चूर भइल गतर-गतर
उखड़लका खेतवा गड़े, रकतल जिअतार बेवइया !
हव रे भइया !

माथे बन्हलीं जनेव, अब हम ना मानबि भेव
कोनो-कोनी मारबि छेव, अनजा के डालबि नेंव
बोलबि 'हरिअर महादेव', 'हरिअर-हरिअर महादेव !'
कइल-धइल इहँवें फरे, चारू धाम वा एही ठँइया !
हव रे भइया !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कातिक के करिया बदरिया

फाटु कातिक के करिया बदरिया !
गरजल सुनाइल, बा जिउवा डेराइल
छन भर में छवलसि अन्हरिया
बदरिया, फाटु कातिक के ......

बढ़िया पराइल, लाथरिया झुराइल
धुरिया उड़वलसि छवरिया
घुसिगरका खेतवा जोंताइल, भइल बा
करइल में अब फरहरिया
बदरिया, फाटु कातिक के ......

तेलहन छिटाइल, बोआइल गहुम - बूँट
जव - मटर - मसुरी - खेंसरिया
घरवा के गाड़ल बिगाइल बाहरवा
जामे खातिर हरिअरिया
बदरिया, फाटु कातिक के ......

बरखा का पानी से सपटा लागी,
रहि जाई बिअवा भितरिया
पूँजी - पताई जरी गिरहत के
जब तें बरिसबे अङरिया
बदरिया, फाटु कातिक के ......

लहसी बधरिया जुड़ाई नजरिया,
मुदई के मुँह होई करिया
हटु - हटु आउ जनि अबहों पँजरिया,
करतानीं तोर गोड़धरिया
बदरिया, फाटु कातिक के ......

[तेंतिस]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगहनवाँ

आइ गइल अगहनवाँ, कटाला अगता धानवाँ

उघरे रहरिया, टुङाले जोन्हरिया
कोदो के होला दँवरिया, रही अब ना टानवाँ

मटरा - खेंसरिया गहुम - जव के घरिया
लहलह करे हरिअरिया, परल जान में जानवाँ

खेतवा के अरिया, डगरिया, छवरिया
ओसवा से लथरल वधरिया, बा फरछीन खरिहानवाँ

नदिया कगरिया वहेले बेयरिया
पहिले लागे थरथरिया, गरम पाछे असनानवाँ

पाटे कोड़रिया, कटाले केतरिया
दिने - राते चले कल्हुअड़िया, होखत बाटे रस-पानवाँ

सांझे चदरिया, बिहाने दोहरिया
रतिया के ओढ़ल कमरिया निहाल करेला प्रानवाँ

गँइवाँ - नगरिया उठावे झझकरिया
बहिनी लगवले बाड़ी पिंड़िया* करेज छूवेला गानवाँ

ढोवे कंहरिया लागी असवरिया
गवना के आइल निअरिया, सुनत लागेला बानवाँ

---

*भाई खातिर गोबर के पिण्डी बना के गीत गावे वाला एगो मेहरारून के पर्व जे कातिक में गोधन से अगहन का अँजोरा दूजि ले मनावल जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाननी

चाननी पसारि चान करेला अगोरिया
टूकू - टूकू ताके केहू करे जनि चोरिया
आइ रहल विहँसत मनभावन
गह - गह लागी राति सोहावन
रही ना अन्हार घोर उगते अँजोरिया

सोहे अकास जइसे भूअर भतुआ
दुजिया के चान बिना बेंट के हँसुआ
बोआ निअन जोन्ही, ना गिनाला ओरि - छोरिया

गह - गह करे अब खेत - खरिहनियाँ
उतरे अङनवाँ गगनवाँ के कनियाँ
सरग - सुनरि आवे धरती का ओरिया

उतरि रहल सुकवार सँवरिया
चूमि के चरनियाँ निहाल बिआ धुरिया
छान्ही - छान्ही चमके, बिहँसे खोरी - खोरिया

झलकेला झल - झल उड़नखटोलवा
सङवा में सोहरे सोनहुला हिंड़ोलवा
छल - छल छलकेले रेसम के डोरिया

पवन दखिनहा बनल बा कँहरिया
रसे - रसे डोले फूलवा के असवरिया
कहँवाँ दो जाये लगली गते - गते गोरिया

चमके पूरुब ओर लाल - लाल कोड़वा
धाङे ना पथार पावे सूरुज के घोड़वा
हाऊ - हाऊ भोरे चान करेला बटोरिया

[पंतिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सुखार में

परेला बिपति बड़ भारी सुखारि में

नइखे सावन-भादो पानी परल कतो,
धान सूखि भइले मोआरी सुखारि में
परेला बिपति बड़ भारी…

तकला प' नजरी में धुँइयाँ उठत बा
सोपह बा सँउसे वधारी सुखारि में
परेला बिपति बड़ भारी…

जल के जुझार, धावालागी भइल बा,
सगरे मचल हाहाकारी सुखारि में
परेला बिपति बड़ भारी…

सेर भर के जोन्हरी-जनेरा विकाता
सेरे भर के मिलेला खेंसारी सुखारि में
परेला बिपति बड़ भारी…

सतुआ भइल आजु चीनी से महङा,
माहुर निअन तरकारी सुखारि में
परेला बिपति बड़ भारी…

खेत चाहे गहना प' करजा मिले ना
माटी का मोले लोटा-थारी सुखारि में
परेला बिपति बड़ भारी…

ईजति-वरोहि गइल पेट का पाछा,
छूटि जइहें हितई-इयारी सुखारि में
परेला बिपति बड़ भारी…

लइका-गदेला जब भात के छछनेला
फाटेला करेज आवे कारी सुखारि में
परेला बिपति बड़ भारी…

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूस महीना आइल

आइल, पूस महीना आइल

दिन थाकल वा सूतल - हारल
वन वा पिड़िया के झक्कारल
आजु चुपाइल गवनहरिनि के
डोला में के पूका फारल
अगहन बीतल, लगन ओराइल

ढरल ओस के अछत छिटाइल
भरल सीति के कलस धराइल
सोन किरिनि का अगवानी में
मोती के बा हार गँथाइल
सोहेला - सरेहि अगराइल

फूलल तीसी, सरसो - तोरी
साँवर कान्हा, राधा गोरी
मटर बैंगनी - लाल आँखि से
झाँकि रहल वा चोरी - चोरी
खेतनि में मधुवन मुसुकाइल

मकई लागेले अब बाउर
आ पहुँचल जब नवका चाउर
साग सङे मङसटको नीमन
जिया जुड़ावे रस के जाउर
उखिया के कल्हुआड़ धराइल

दलकि रहल अब ढेंका - भुँड़िया
धमके ओखरि, खनके चुरिया
लचके बहङी, जाला चिउरा-
तिलवा के अब पाहुर - पुरिया
खिचड़ी के दिनवाँ निअराइल

[संतिस:

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भागल जाड़ बोलावे

पछिवा भागल जाड़ बोलावे
ठाटी कइसे माघ-पूस के
मड़ई-टाटी बाँस-फूस के
कनकनियाँ बा दिनवाँ में, रतिया-खा ठार गिरावे
पछिवा भागल जाड़ बोलावे

साँझे-विहने माँह-बधारी
बान निअन लागे सिसकारी
रखवारी में थरथरिया अब लागल हाड़ हिलावे
पछिवा भागल जाड़ बोलावे

छूँछे खाँड़ा-टूका खा के
माटी के दियरा ठंढा के
घुसिआइल पुअरा में जाऽर घुकुड़ी आजु लगावे
पछिवा भागल जाड़ बोलावे

भोरे-भोरे लागे पाला
राह चलत तरवा कठुआला
घास-पात पर पानी के गगरी के दो ढरकावे
पछिवा भागल जाड़ बोलावे

नांवे भर अब रहल घाम के
ठिठुरल नइखे जात चाम के
हाथ-गोड़ सेंके के कीरिनि अछते कउड़ जोरावे
पछिवा भागल जाड़ बोलावे

घोंटल जा ना सुबहित अनवाँ
काटे अकसर सून भवनवाँ
परदेसी का सुधि में विसुरत बिरहिनि अलख जगावे
पछिवा भागल जाड बोलावे

अरतिस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साँसतिया जाड़ के

तें सहले चलु रे मड़ई ! साँसतिया जाड़ के
बइसाख - जेठ में जरले
सावन - भादो में सरले
खाली रहि के अपने तें
घर अनकर सभ दिन भरले
काटे के वा तोरे ई त्रिपतिया जाड़ के

पछिवा डोले, खर्‌ह खरके
रहि - रहि के छाती धड़के
सिर धुनि - धुनि के कलपेला
दियरा माटी के फरके
संकट में डललसि जियरा ई रतिया जाड़ के

तन ठिठुरि रहल वा बाहर
मन किकुरि रहल वा भीतर
सटले जनमतुआ कवनो
छाती काँपेले थर - थर
के पतिआई बे - सहले दुरगतिया जाड़ के ?

अन ना भरपेट भेंटाइल
बसतर कहँवाँ से आइल ?
काँखें मूठी बन्हले के
बा पुअरा में गरमाइल ?
जानेला कउड़ सँवतिया ई वतिया जाड़ के

ई रबिया के रखवारी
रहना वा माँह - बधारी
राखे के जिउ का जतने
बा आपन खेती - बारी
लागे पावे ना तनिको असकतिया जाड़ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाड़वा में भइल बरसतिया

वहेले जुलुमी बेयार, जाड़वा में भइल वरसतिया
उतरल पूस, माघ चढ़ि आइल
बिहँसत वा वधारि अगराइल
धरती के साजल सिङार लूटे चलल कवन घतिया ?

तिसरे पहरिया उठल चउआई
करिया वदरिया बिपतिया वोलाई
छवलसि अगतहीं अन्हार घर - घर में बरे लागल वतिया

टप - टप वून परल कपरा पर
टिपिर - टिपिर नरिया–खपड़ा पर
चूवे मड़इया लाचार, उधिआइल चाहेले टटिया

खरकि रहल वा छान्ही–छान्ही
आइलि बुझला बुढ़िया आन्ही
घरवा के टूटल केवार, गरदा से भरल विआ अँखिया

पहिले टिप - टिप, पाछे पट - पट
लागल आड़ धराये झटपट
लागल वनउरी के मार, विधुनाइल पंछिन के पँखिया

डा ढ़ गिरल पतई छितराइल
अररात फेड़ो भहराइल
केरा के सूतल कतार, भुँइयाँ लोटेला फूल–भतिया

चालिस]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कसराइल - पिघुनाइल लतरी
छितराइल मटरो के बॅवरी
सीसी के फूटल कपार, सरिसो के भइल दुखतिया।
परे टूटि के भइल ठूँठ अब
एजियाई का पछुम - बूँट अब ?
मसुरी करे हाहाकार, फाटल रहरिया के छतिया।
का मटिआर अउर का बालू ?
कनवाँ सरे, गली अब आलू
करइल के डूबल दरार, खेतवा में पँवरे इजतिया।
भदई, आइलि बाढ़ि, दहाइल
बे पानी के धान मराइल
रबिया के बीतल सुतार, सभ के हेराइल बा मतिया।
बाँचल - खूचल ऊँचा - खाला
सेहू के जनि मारो पाला,
सगरो मचल हाहाकार, कइसे के बाँची इजतिया।
छावे के बा राम - मड़इया
काटे के बा कठिन समइया
दिनवाँ बनल हतेयार, होले हुँड़ार निअन रतिया।

●

[एकतालिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

माघ

बीतल फूस-फास पूस महिनवाँ, आइल माघ
सोचेले बिरहिनि हमरे कारनवाँ होखल बाघ

होखेला गते-गते लमहर दिनवाँ, छोटहन राति
अब चढ़ि गइल लगनवाँ, बीति गइल सँकराति

ठनके कुदरिया कोड़ारे अलुवा रहल कोड़ाइ
राते-दिन चले कल्हुअड़िया उखिया जहाँ पेराइ

गदरल मटर-खेंसरिया, मसुरिया, रहरिया, अगता बूँट
मचेला बधरिया में होरहा झोले खातिर लूट

गम-गम गमके बगइचा, मोजराइल बा आम
'कुहू'-'कुहू' होत बा, कोइलिया कइ दिहलसि मोकाम

बाजल 'तक-धिन' ढोलक, 'झन-झन' झनकल झाल
देवता प' चढ़ल अबीर-गुलाल, ठोकाइल ताल

मातसु खास परबवा 'बसंत पंचिमी' के पढ़निहार
देखे के सारदा-पूजनवाँ मनवाँ करे हमार

आधा माघे कम्मर कान्हे, घामवाँ लागे खार
रसे-रसे देत बा सनेसवा फागुन के बेयार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइ रहल मधुमास रे !

मन अगराइल चढ़ते फगुनवाँ, आइ रहल मधुमास रे !
गम-गम गमकेले आमवाँ के बगिया, कोइलरि कहे कुछ खास रे !

'गुन-गुन' गावेला झूमत भँवरवा नाचि-नाचि कलिया के पास रे !
वड़ नीक लागेला भोर के पहरवा, झुरु-झुरु वहेला वतास रे !

धरती का पोरे-पोरे चढ़ेले जवानी, देखि-देखि हुलसे अकास रे !
बँसिया पिरीति के बजावेला दिनवाँ, रतिया रचावेले रास रे !

फुरु-फुरु उड़े सतरंगी तितिलिया, परिया के देले आभास रे !
चम-चम चमकेले 'कुसुम'-कतरिया, कँटवो का मन में हुलास रे !

ठाढ़ हरिअरिया प' चढ़े सोबरनवाँ, करे जनि केहुओ हहास रे !
खरर-खरर बोले सूखल पतइया, होरहा के जागेला तास रे !

गमकि रहलि निमियाँ कउआइनि, रहि-रहि लागेला पियास रे !
टपके ले डढ़िया से रसवा के बरिया, छलकेला महुवा के बास रे !

धह-धह धन्हकेले बिरह के अँचिया लहकत देखि के परास रे !
रहि-रहि जागेले सूतलि सुधिया, उठेला दरद अनेयास रे !

गँइया-नगरिया में धूम मचल बा, रंग चलेला बेतहास रे !
फागुन लागेला ननदी-भउजिया के, बुढ़वो देवर भर मास रे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

बसंत के बहरिया

गुन - गुन गाइ के सुनावेला भँवरवा
कि आइल बाटे ना अब बसंत के बहरिया
रसे - रसे डोलेला दखिनहा बेयरवा
सोहाइल बिआ ना आजु भोर के पहरिया

गम - गम गमकेला आम के मोजरिया,
मोहाइल बिआ ना कुँहुँकत कोइलरिया
गदरल गहुम - बूँट, पकठे मसुरिया,
टँठाइल बिआ ना भुँइयाँ लोटत खेंसरिया

खेतवा में सोना निअन चमकेले धरिया,
फुलाइल बिआ ना पीअर कुसुमी कतरिया
खीखो - खीखी बन बा, कटात बा रहरिया
लुकाइल बिआ ना कतो छपकल खेंखरिया

हँसे कचनार, मुसुकात बा मकोइयां,
टुसाइल बिआ ना आजु ठूँठियो पकड़िया
निहुरेले लथरल पाकल बइरिया,
लदाइल बिआ ना तुनुक सहिजन डढ़िया

लउकेले सेमरा के ललकी पगरिया,
भोराइल बाटे ना आजु सुगना अनेरिया
गह - गह करे लागल सँउसे बधरिया,
अघाइल बिआ ना देखि-देखि के नजरिया

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चइत

सुधिया लेऽे फगुनाहट के चढ़ल चइत मुसुकात बा
रहि - रहि के टिहुकेला 'डेंढ़िया', घाँटो-चइत गवात बा

धरती के थाती तेयार बा, 'झन् - झन्' रबी कटात बा
गिरलि बालि के बिनिया होला, बान्हल बोझ गनात बा

'झपर् - झपर् के चऽे डगरिया, दुलुकी चाल ढोआत बा
अन - धन - लछिमी का अगवानी में खरिहान लिपात बा

छलके लागलि रस के गगरी, महुवा चुवल बिनात बा
भनकि रहल भन - भन - भन माछी, हाँकत मन अनसात बा

पीअर - पीअर फरलि निमउरी, जामुनिओं मोजरात बा
ताकि टिकोढ़ा हरिअर - हरिअर सुगना उड़ि-उड़ि जात बा

फुरु-फुरु-फुरु - फुरु बहे बेयरिया, डोलत पीपर पात बा
पाकड़ि तर जा दुपहरिया में राही तनिक जुड़ात बा

गंगा - जमुनी रतिया - दिनवाँ, गह - गह टह - टहात बा
दिन में सोना बरे, अँजोरिया में चानी पसरात बा

सजो राति रतिजागा बा, मइया के गीत गवात बा
'रामजनम' के बजे बधाई, 'नवमी' आजु पुजात बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चइती बहार

छवले वा चइती बहारवा हो रामा, ठहरे - ठहरवा

'कुहू - कुहू' कोइलिया बोले
घूँघट बिहँसत कलिया खोले
'गुन - गुन' करेला गुँजारवा हो रामा, रसिया भँवरवा

मुसुकी छोड़त दिनवाँ आवे
रात अँजोरिया रास रचावे
झुरु - झुरु बहेला बेयरवा हो रामा, भोरे भिनुसरवा

खिलल गुलाबी सूरति सोहे
तितिली के मूरति मन मोहे
फरकेला गतर - गतरवा हो रामा, हुलसे हियरवा

सोना अस सरेहि अब दमके
मोती खरिहनियाँ में चमके
सजले बा सोरहो सिङारवा हो रामा, रूप - नगरवा

छलकि रहलि महुवा के गगरी
झलकि रहलि सेमर के पगरी
आमवाँ बनल आजु बरवा हो रामा, मउरि मोजरवा

कन - कन वा मधु - रस में पागल
परदेसी के सुधिया जागल
'पी' - 'पी' रटेला पपिहरवा हो रामा, जरेला जियरवा

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बइसाख

रहि - रहि के लागेला पियास
अब आइ गइल बइसाख मास
बीतल दिन के बस एक पहर
ठेकल बतास के गरम लहर
दँवकल राही के गतर - गतर
पीअत पछिवा के तींत जहर
मुरझाइ चलल मन के हुलास
अब सूखि गइल गड़ही - गड़हा
जेठुआ कारन भींजल करहा
किकिआत घड़ारी 'कोंइ - कोंइ'
लागे लागल लमहर बरहा
उखिया के अजबे बा लहास
लागत बा माहुर निअन घाम
सुसुतइला से ना चले काम
भूँभुरि में पैदल धाइ - धाइ
फुटहा तरवा के होत धाम
सतुआ पर सोख भइल तरास
जुड़गर तनिका बा साँझि - प्रात
गरमाइल रतियो - खा सेरात
बाहर - भीतर छटपटी बरत
कतहूँ अब दिन में ना रहात
चिलिङो लेसले बाटे अकास
माछी - मच्छर के बा सेना
छूटत नइखे कर से बेना
बा देहि खराइल पुरवा में
अनसाइल ऊमस से के ना ?
लागेला दोहरी गरे फाँस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दुपहरिया भइल बा

दिन के चढ़ेले जवानी, दुपहरिया भइल बा
'हई जोड़'—'हई जोड़' के गोंहरिया भइल बा
लागे छने-छन तरास खरउरिया भइल बा
घुरिया लमहर डगरिया के भुँभुरिया भइल बा
अब जहरिया बहरा लूक के लहरिया भइल बा
सबहूँ बड़ मीठ नीमि के छँहरिया भइल बा
चिखिड़ी लेसले बाटे जिनिगी कोहसरिया भइल बा
माटी जरि के लाल लोहा के अङरिया भइल बा
धावे लरिके-सेयान घरहरिया भइल बा
जुगवा अबकी रन का छन में अगहरिया भइल बा

तप के मंत्र, आजु हीरा के अकोरिया भइल बा
बल के साध, बा अगाध, मन मछरिया भइल बा

जिनिका मध दुपहरिया में अन्हरिया भइल बा
उनुका आँखि के सफेद अब पुतरिया भइल बा

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुपहरिया जेठ के

तें सहले चलु रे जिनिगी ! दुपहरिया जेठ के

सहले तें भादो-भदवारी
लँघले उमड़ल नारा-नारी
जागल रहि रतिया में कइले
तें ठार पूस में रखवारी
जोहेले तरवा तोरे भूँभुरिया जेठ के

देखल कइले हरिअर सावन
कातिक-कुआर तें मनभावन
रस भरल रहल सँउसे फागुन
बइसाख-चइत ओसवन-दाँवन
धन्हकेले धह-धह आगि अस बधरिया जेठ के

झलके झल-झल लाल ओहरिया
लचके कान्हा पर असवरिया
सुसुकेले नइहर का सुधि में
हुचुकति, सकदम सहति बहुरिया
ढूँढ़े छँहरिया हाँफि-हाँफि कँहरिया जेठ के

चिलिङी का बीचे देहि परल
तरवा तलफत बा माथ जरल
बा जिया-जंतु के हूक बनल
छाती पर लूका आजु बरल
घरिहे डगरिया घोंटि-घोंटि जहरिया जेठ के

●

[ओनचास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जँतसारि

बाबा का भवनवाँ से माडि के गवनवाँ राम,
सामी गइले पुरुबी बनिजरिया ए राम।

भेजले ना लीखि कवनो आपन सनेसवा राम,
लिहले कवो हमरो ना खवरिया ए राम।

नींनियाँ ना रतिया - खा ना दिनवें में चयेनवाँ राम;
कुँहुकीं साँझे - भिहने - दुपहरिया ए राम।

ससुरा से वीस कोस दूरि नइहरवा राम,
माई - बाबू अछइत टूअरिया ए राम।

डहकेला आजु मोरा अल्हड़ करेजवा राम,
काँपीं जइसे गरई मछरिया ए राम!

एक मन करे कतो डूबि - धसि मरितीं राम,
गोड़वा भारी करे धरहरिया ए राम!

उचरेला कागा भलहीं, फरके बाँवाँ अङ्वा राम,
नीको वा सगुनवाँ अब अनेरिया ए राम!

कूटि - पीसि खइतीं, भलहीं करिते वनिहरिया राम,
रहिते वाकी आँखि का पँजरिया ए राम!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिरहिंनि कें बारहमासा

आसारा असार्‌ह बीतल, सपना सावनवाँ, ए साजनवाँ,
झरे भादो, हहरेला मनवाँ, ए साजनवाँ।

खुलल दुआर दसो राह के बन्हनवाँ, ए साजनवाँ,
चढ़ते कुआर के चरनवाँ, ए साजनवाँ।

दियरी बराइल हा, कुटा गइल गोधनवाँ, ए साजनवाँ,
गिरलीं आदित का सरनवाँ, ए साजनवाँ

साँझे-भोरे सुनि-सुनि पिड़िया के गानावाँ, ए साजनवाँ,
गते से ओराइल अगहनवाँ, ए साजनवाँ।

पूसवा महीनवाँ के फूस-फास दिनवाँ, ए साजनवाँ,
काटे धावे राती-खा भवनवाँ, ए साजनवाँ।

माघ बने बाघ, काँपे थर-थर तनवाँ, ए साजनवाँ,
कइलीं कुँहुँकि के बिहानवाँ, ए साजनवाँ।

अंग-अंग फरकल बेरथ सगुनवाँ, ए साजनवाँ,
माहुर भइल रस के फगुनवाँ, ए साजनवाँ।

डगर-सींघा बाजल चइत-नमी के बाजनवाँ, ए साजनवाँ,
तनिको सोहाइल ना अङनवाँ, ए सजनवाँ।

हेठ बइसाख करे जेठ हलकानवाँ, ए साजनवाँ,
लूकवा में हूके जाई जानवाँ, ए साजनवाँ!

छछने परानवाँ, घोंटात नइखे दानावाँ, ए साजनवाँ,
भरि-भरि आवेला नयनवाँ, ए साजनवाँ।

बनबि जोगिनियाँ, ढूँढ़बि बन-बनवाँ, ए साजनवाँ,
मरबि बाकी कके दरसनवाँ, ए साजनवाँ।

ठाने के त ठानि लेलीं हम ई परनवाँ, ए साजनवाँ,
हाथ में बा तोहरे जुटानवाँ ए साजनवाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

साँझि

ढरल जवानी अब दिनवाँ के चउथापन निअराइल
दँवकल नेवर दुपहरिया के घामो अब पिअराइल
राह-डगर गुलजार हो रहल, तलफत धूरि सेराइल
हँफनी भागल दूरि जेठ के, छँहरी जिया जुड़ाइल
हर-हेंगा दँवरी-मोटिया के नाधल बरध खोलाइल
खूँटा सोहि रहल बा अबगे सजगर नाद गोताइल
रमत-झमत पगुरात भँइसिया चढ़ि चरवहवा आइल
हेंकरत आवे लगहरि गइया, बान्हल बछरू भुखाइल
सोन किरिनियाँ चढ़लि बँड़ेरी, जाले कहाँ पराइल ?
गच्-से गोता लिहले सुरुज, नदिया के जल करिआइल
धुँआँ उठल छान्ही-छान्ही से, घर-घर आगि जोराइल
सँझवति के बेरा जनि बीते, घर-घर दिया बराइल
दीप घीव के तुलसी चउरा, देवस्थान धराइल
मंदिर में आरती हो रहल, घरी-घंट घहराइल
आँखि खोलि के पढ़ु रे बबुओ ! एको लबज ना सुनाइल
साँझि पहर के सूतल नीरस अतनो ना तोरा बुझाइल ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डूबि गइल दिनवाँ के नाँव

बा निझात जात जरत पच्छिम में अगिया
पसरि रहल गते-गते कारिख के दगिया
धोइ रहलि हाय सोनकिरिनि लाल मँगिया
डूबि गइल दिनवाँ के नाँव

मन मरले आइ रहलि साँझिली पहरिया
पइसि रहलि घर-घर में चोरिनि अन्हरिया
'कर-कों' से ऊबि उठलि घन बँसवरिया
ढूँढ़ि रहल पंछी बा ठाँव

रतिया अब तानि रहलि करिया चदरिया
होइ चललि धूमिल अब हरिअर चुनरिया
थथमि गइलि धरती पर धावति नजरिया
थाकल वा राही के पाँव

पनहिया उतरि गइलि, उभरि गइलि पगरिया
सून भइलि हलचल से अलगल डगरिया
बिजुली से चमकेले जगमग सहरिया
ताकेला तरइन के गाँव

[तिरपत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गंगातीरवा

वसे हमरो परानवाँ गंगातीरवा

मुरुगा सनेस जगरम के सुनावे
चिरईं - चुरुङ के चुचुहिया चलावे
निनियाँ से नातावा नयनवाँ तुराबे
'उठऽ गंगाराम' कहि मयना जगावे

झलकत वा विहानवाँ गंगातीरवा

भोरे-भोरे ठाढ़ होके ताकीला बहरिया
धूँआँ-धुकुर होखे लागे उठते सहरिया
नाक-मुँह ढाँपि हाली मूँदि के नजरिया
कूदि-फानि धरीं दरियाव के डहरिया

परे जानवाँ में जानवा गंगातीरवा

झुरु-झुरु-झुरु जहाँ डोलेले बेयरिया
हलफी उठेले, हिलकोरेले लहरिया
थल के करेला जहाँ जल गोड़धरिया
रसे-रसे भींजे बलुरेत के अररिया

होला प्रात-असनानवाँ गंगातीरवा

हाथ से मलत मुँह चम-चम चमके
डेगिया डालत झाँझ झम-झम झमके
कतहूँ हुमाधि गम-गम-गम गमके
होत बा पुकार 'हर-हर बम-बम' के

गूँजे देव-असथानवाँ गंगातीरवा

गंगाजी के देखि भरि उठेला जियरवा
मन परे दुख-सुख, हहरे हियरवा
रहे दूरि सेहू चलि आवेला नियरवा
छूटि गइल बाटे जवन दानर-दियरवा

तेकर आवेला धेयानवाँ गंगातीरवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीचे-बीचे बबुरा, सघन मुंजवनियाँ
घर घड़रोजवा के, सियरा के मनियाँ
हरिना के टापवा के रेत प' निसनियाँ
चीका-कबड़ी आ चरवाही के चलनियाँ
भइल सपना समानवाँ गंगातीरवा

सावन-भादो चढ़ेला अररवा प' पनियाँ
डूबि जाला गाँव-घर, मड़ई-मचनियाँ
फिनु अगहनवाँ में लागेले लगनियाँ
मोती उगिलेले पूस-माघ के किरिनियाँ
बिहंसेला मयदानवाँ गंगातीरवा

जिअरा के सुगना फगुनवाँ में चहके
होरहा के टिसुना बधरिया में बहके
तरवा जरेला, बाल जेठवा में लहके
खेत खरबूजावा के मह-मह महके
रसगर हिनुआनावाँ गंगातीरवा

डूबते किरिनियाँ बेयारि सिसिकारे
लोर बिरहिनि करनिनियाँ में ढारे
केहू पूका फारे गंगा मइया का किनारे
निरगुन पदवा के मनवाँ बिचारे
देखि जरत मसानवाँ गंगातीरवा

धनि-धनि गंगाजी के निरमल जलवा
जिनिगी सुफल होले पाके चारो फलवा
दरसन क' के होला मन निरछलवा
माटी के सिरिजना बनेला निरमलवा
पा के पद निरबानवाँ गंगातीरवा

[पचपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

बांची का ?

बाँचो का जब गँइयाँ छूटी ?

आइल कब से तप करत गाँव
अपने से फूलत-फरत गाँव
मूठी भर सहरन के अपने
भूखे रहि जरि-मरि भरत गाँव
जे लूटो से हइया लूटी

गँइयें 'गोपाल' नाँव धइलसि
मधुवन 'लीला' से अगरइलसि
थाती मथुरा नगरी के धइ
जे कइलसि से गोकुल कइलसि
गोधन सज से गँइयाँ कूटो

रामोजी के बनवास भइल
कामो जवना से खास भइल
ना अवधपुरी का पलटन से
बानर से लँका-नास भइल
आइल हा 'संजीवन' बूटी

पीपर तर आसन लगाइ के
'बुद्ध' कहइले बोध पाइ के
बँटले हा 'सिद्धार्थ' ज्ञान-सुख
गाँवें-गाँईं धाइ-धाइ के
ना 'अशोक' के पहिया टूटी

जवना रहिया पर परल पाँव
बनि गइल तिरिथ बस ठाँव-ठाँव
लाखन में 'सेवा गाँव' एक
'गाँधी' के कइलसि अमर नाँव
भुँइयाँ के देखवइया जूटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनिगी हेठारि[1] के

साँचो के कहनी ह, कथ ना लबार के।

भागड़ से निअरे
बा वसल खास दिअरे में
'रतनवली' नाँव के
सइ घर के टोला, सैंतिस हर के गाँव एक।

जेठ जरिछरिया में
लहरत बलुरेत का वघरिया में
भूँभुरि का रहिया में
लउके हरिअरिया बस हिङुवा का काँट में।

हँकले भँइसिया के
धइले पगरी ऊपर घूर का छँइटिया के
'पुच्' से थूकत थथम्हले
'कच्' से गड़ि गइल गोड़े काँटवा बनवइरि के।

लेव के चढ़ल तास
भंइसि के, किसान के रोहिनि के बढ़ल आस।

तबल जेठ, मिली असो
वलिया केहुनाठ भर के मकई का खेत में।

हाथ में सुतार का
भदई के खेती ह, जुआ जीति-हारि के
सोचत-खा हाथ से निकालि के
फेंकि देले काँटवा के बड़ी दूरि आरि से।
खन्-खच्-खच्, खच्-खच्-खन्

1. भोजपुर में जिला पूरबी रेलवे लाइन का उत्तर के भूभाग जहाँ ले गंगाजी के बाढ़ि आवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुरपी का ताल पर डोले लागल तन-मन ।
आँचर पुरवइया के लहरल
आ लिहले 'जगदेव रा' जम्हइया सरियाइ के ।

झाँकी तसवीर के
उतरि गइल अँखिया में करनी तकदीर के ।

इहे रहे रोहिनि के बरखा
जवार के हर-हेंगा चलल रहे चढ़ते असाढ़ के ।

पियर-पियर डिभिया
जनेरवा के लउकल जोन्हरिया-रहिया में ।
दू बेरि सोहाइल
विदाह भइल फिनु मुँहवाँ वरधनि के जावि के ।
सावन का लहरा में
नाचल तव झूमि-झूमि लहसल घनेंहरा ।

मोचा का गाछि पर
ताव देत निकसल फिनु बलिया तरनाइ के ।

बहुते हेयरिया में
रहे करे के परल राते दिन रखवरिया
कमरा के घोघी लगाइ के
बइठि के मचनियाँ प' रति-रति भर टिनवाँ बजाइ के
सियरा भगाइ के
दिनवाँ में "बइठऽ हो, बइठँ हो' कहि के धिराइ के
सुगवा हुलुकाइ के
गरुआ अनेरिया, घड़रोजवा-लिलगाइ के
बिछी-कुछी भरल भींजल रहिया प' धाइ के ।

फरल जरल खून के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीआ, भेंटाई अब मुँह के आहार दूनों जून के ।
खटल-छटपटाइल
ना कामे कुछ आइल जब पनियाँ फफाइल दरिआव के ।
ना बाँचल फेंड़-रूख
गड़हा-गड़ही डूबल, एक भइल खाल-ऊँच ।
ठेहुन भर, डाँड़ भर
छाती भर पानी तब खेत में समा गइल
दोसरे दिन मकेया का
ठाढ़ टाँठ देहिया में अढ़ेया[1] अमा गइल ।
हरिअर जे बनल रहे
घामी में सेही तिसरे दिन पिअरा गइल ।
अन्न ना गोटाइल
ना गवतिये भेंटाइल
फिनु बढ़िया में गढ़त-गढ़त रढ़ियो ओरा गइल ।
काटे का पहिले मकइया ढोआ गइल
निरमोही नदिया का धार में धोआ गइल ।
बढ़िया पराइल
जब भादो के पानी कुआर में सुखाइल ।
कातिक का आस पर
भींजल पपनियाँ गिरहत के झुरा गइल ।
करइल में लागल हर
उजरे लागल मोथा, मटिया बोलिल खर-खर ।
गहुमा के खेतवा तेयार भइल—
हाल बा जुआड़ी का दाव के
ढेला में डालह ह चीन्हा गिरहत का हियाव के ।
तेरह दिन रहल गइल तरे
फिनु बहराइल सोझ-सोझ गहुम के बरछवा गते-गते ।

1. 'अढ़ेया' नाँव के मवेसिन के अढ़ाई दिन के जानलेवा बेमारी ।

[उनसठ :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सपटा ना लागल
हरिअरिया का सङे भाग सँउसे वधरिया के जागल।

सावगा खोंटाइल
घोंटाइल कोदइया के उजर-उजर भातवा रउताइनि का चाव से।

फूलल तब बूँट-मटर
लाल-उजर
अगराइल पिअर-पिअर तेलहन के गतर-गतर
तिसिया के आँखि लीलपरिया के पाँखि भइल
गहुमा मुँह मारि लेलसि मुँजिया का भूरके।

रबिआ उजिआइल
चलत बा छवरिया प' हाथिया का पिठिया के हउदवे जनाइल।
बुँटवा गोटाइल
मटरवा पकठाइल
जव-गहुमो के बलिया के टुँड़वा पिअरा गइल।
पछेया बेयार रहे
बारह बरिस पर बा लवटल सुतार इहे सभे कहे।
चढ़ते फगुनवाँ
लउकल असगुनवाँ
जब रतिया गरमाइलि पुरवइया का दाब से।
छवलसि अन्हरिया
अँजोरिया लुकाइल, आइल केहँवाँ-दो सेनी करिया वदरिया।
जिउवा डेराइल
अदंकल करेजवा, धिरिजवा धराइल ना बान्हि के।
कपरा पर टप्-टप्
बिरल बूंद झुपड़ो पर
नरिया आ खपड़ा का ऊपर पटस्-पट्।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर-हर सरग से
गिरल धार मूसर के
छूटल वनउरी के गोला तब तोप से ।

टूटल गहुम-बूँट
तेलहन भइल ठूँठ
मटरो का लतरी के अँतरी छितरा गइल ।

कातिक के धावल
भइल रहे बेरथ बधरिया में खूनवाँ-पसेनवाँ के एके बनावले ।

कुँहुँकत फगुनवाँ गइल बीति
सतुआनि खेदलसि चंइत में खरवाँस के ।
भोर परल भदई मराइल
आ रबिया हेराइल
जब लउकल मोटरिया कपार के ।

पनही चमरुआ पहिरलन
आ बन्हलन कपारे मुरेठवा उजरका धरउंआं ।
दिन में चयेनवाँ
ना रतियें-खा निनियाँ
गइलि टूटि पनही के एँड़ा खिआइ के ।

होखेला धानवाँ
करारी दखिनवाँ में
जहँवाँ ना बढ़िया, पथलवा बा दुसमन अनाज के ।
बेटी अनबोलता के डालबि सुचिताहे घरे
हम ना मड़निओं में बिअहबि हेठारि में ।
मनसा पुराइल
तिलकवा चढ़ावे में टोपरा निमनके भले रेहन धराइल ।
गँउवाँ सिहाइल
जवरवा चिहाइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जब सज-धज से आइल बरिअतिया धनगवाँ से ।

घोड़ा हेहनाइल
आ 'बेन' बाजा बाजल
बिदेसिया के नाच अउरु गोंड़वन के हुड़ुका सुनाइल ।
बहुते धधइली
रउताइनि अगरइली
परिछत खानी माड़ो में गोरका दमाद के ।

कइले इजतिया
दिअरहा जगदेव रा'
खातिर से खुस भइले सँउसे बरिअतिहा दखिनहा
मिलनी का बेरिया
इसारा से समधी का
खोललसि सहबालावा पगहवा जब हाथ से
बरधा चमेलिया
गइल चलि दहेजवा में
कइके बिदइया ना बाँचल अधेलिया ।
भइले निहचित
बइठि तनिका सुसुतइले
ना जनले इचिको कुछुओ आगा का हाल के ।

धइलन तब डाँड़े
जब लउकल समहुत का समइया पर
बाँचल बस बलथर आ टाँड़े ।
रोहिनि नछतरे में
जतरा ह बावग के
पर बा मुदइया भँजहरिया सुतार के ।
(साँचो के कहनी ह, कथ ना लबार के ।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माटी

माटी के मूरति खाँटी !
तूं चीन्हऽ सज से माटी

नर-जनम जेहि दिन पवलऽ
माटी के माथ नववलऽ
अङ्ना में 'मा' बनि घा-घा
माटी देहे लपटवलऽ
के लीहल चूमा-चाटी ?
तूं चीन्हऽ सज से माटी
आइल बचपन, नादानी
खेलल के माटी-पानी ?
मिलि-जुलि के बनल घरवना
बनलऽजा राजा-रानी
भल केहू भइल अवाटी
माटी के मूरति खाँटी !
माटी जब तनी छुआइल
पथलो तब परी लखाइल
माटी से पावल सीता
ना जरली, जगत चिहाइल
सोना के लागल माटी
तूं चीन्हऽ सज से माटी
माटी जब देहि जरावे
माटी जब धूरि उड़ावे
करिया बादर उमड़ेला
'बोरो' तब नयन जुड़ावे
आखिर अपने में साटी
माटी के मूरति खाँटी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गाँव बारहो मास में

चलत-फिरत तसबीर सजावे गाँव बारहो मास में

चारि महीना मेंह झरेला
चारि महीना खेंह जरेला
जरल-जुड़ाइल घासि-पात पर
चारि महीना ओस ढरेला

उठि-उठि, गिरि-गिरि चकर लगावे पाँव बारहो मास में

सोना भोर पहर चमकेला
हीरा दुपहरिया दमकेला
डगर-डगर में मूड़ा-मोती
झलके, धावत मन ठमकेला

किसिम-किसिम के जिनिस जुटावे ठाँव बारहो माह में

राह-बाट में छोह धइल बा
रूख-बिरिछ से मोह भइल बा
भरल नदी-नारा दुलार से
फूल-सूल के द्रोह गइल बा

दरस-परस के तरस जगावे नाँव बारहो मास में

गाँव जनम के छूटि रहल बा
गाँउभ नाता टूटि रहल बा
चकचवन्हीं सहरी माया के
धन गँवार के लूटि रहल बा

माटी के तकदीर कहावे बाँव बारहो मास में

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

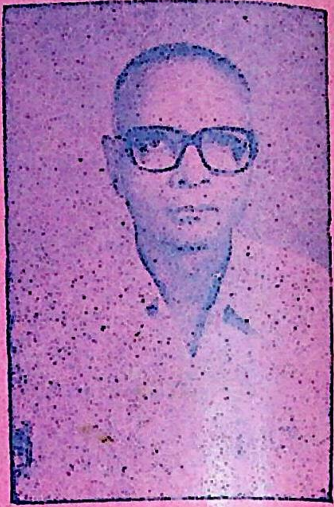

भाव - विचार से भरपूर अनुभूतिपरक भोजपुरी भाषा-साहित्य का सृजन, संपादन, संकलन, प्रकाशन आ प्रचार-प्रसार में तीस साल से जीवे जाने लागल

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

के

कृति-क्रम

प्रकाशित : १. जय बंगला (लघु काव्य)

२. कौशिकायन (प्रबंध काव्य)

३. बेटा के नइहर (ललित निबंध)

४. सुदिन (प्रगतिशील गीत संग्रह)

५. सेवकायन (प्रबंध काव्य)

६. पँखुरी भइल हजार (बरवै संग्रह)

७. लीला ई श्री राम-श्याम के (गीत रूपक)

८. भोजपुरी भूँइ (कविता संग्रह)

९. अनसाइल राग (कविता संग्रह)

१०. पतिआत ना केहू (गजल संग्रह)

११. गाँव बारहो मास में (गीत संग्रह)

१२. घर के गूर (निबंध संग्रह)

१३. डागा बाजि गइल (कहानी संग्रह)

१४. स्वर मत दो (हिन्दी कविता संग्रह)

प्रकाश्य : १. गइल घर (उपन्यास)

२. हम (आत्मकथा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर के गूर

निबंध संग्रह

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर के गूर

(निबंध-संग्रह)

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

घर के गूर

प्रकाशक : अतुल बंधु
शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१

लेखक : श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

संस्करण : पहिल, सन १९८७ ई०

सर्वाधिकार : प्रकाशक

मूल्य : रु० १०/- (दस)

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-४

GHAR KE GOOR

(*Bhojpuri Essays*)

by

Shree Avinash Chandra Vidyarthi

Price Rs, 10/- (Ten)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेवछावर

हमरा भाव-भाषा के 'एक भरोसो एक बल'

साहित्य-समाज-सेवा-व्रती

अंतरजनपदीय चेतना के ध्वजाधारी

डॉ० अनिलकुमार आंजनेय,

एम० ए० (द्वय), पी-एच० डी०

के

सप्रेम

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

"जो लोग राष्ट्रभाषा के स्टीम रॉलर से जनपदीय भाषाओं को कुचल डालनें का स्वप्न देख रहे हैं वे, जन्म-जन्मान्तर में भी अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकते। जनपदीय भाषाएँ राष्ट्रभाषा हिन्दी की 'सौत' नहीं हैं, वे उसकी माता हैं।"

—आचार्य बनारसीदास चतुर्वेदी
(अंजोर : अप्रील, १६६०)

"भोजपुरी मेरी मातृभाषा और हिन्दी मेरी अपनी भाषा, इसलिए मेरा स्नेह दोनों के प्रति एक-सा है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन
(मेरी जीवन यात्रा, भाग ४, पृ० ४७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई संग्रह

ई संग्रह हमरा से मोका-मोका पर लिखवावल निबंधन के जोरि-बटोरि के तइयार भइल हा। सात गो निबंधन मधे पाँच गो भोजपुरी पत्रिकन में अगते प्रकाशित आ दूगो अब ले अप्रकाशित हवन स। भोजपुरी गद्य में हम बहुते कम लिखले बानीं, अपना मने साइते-संजोगे। जब कवनो जोरदार तगादा भइल तबे हम कलम उठवले होखबि। मतलब, हमार गद्य-रचना सोद्देश्य होखल हा।

ओनइसे बरिस का अदनार उमिरि में साघे-सबखे शिक्षक भइला का बाद से सीखे-सिखावे के लत लागि गइल जे आजु ले बरकरार बा। भावुकता बुझला जनम-घोंटिए में मिलल रहे; दुनियाँदारी वाला अकिलि-गेयान तेंतिस साल ले सरकारी सेवा में रहलो पर ना रुचे पावल। अनका के ठाढ़ करे, अङुरी धरा के चले सिखावे, सम्हारे-संवारे का निसा में अपना तन-मन-धन के लगावत गइलीं हाँ। आपुस का बतकही में, सभा-सोसाइटी में, राह-बाट में ऊहे कुछ बोललीं जेह पर आचरन करे में आहस ना लागल। जे हमार जीअल ना देखल चहले होई ओकरा हमरा कथ में कवनो तथ ना भेंटाई। अपना मातृभाषा खातिर मोह हमरा अनका देखादेखी लागल रहे सही के, बाकी भोजपुरी भाव-भाषा-साहित्य-संस्कार साँस-साँस में समात गइल हा। जिअता भर भोजपुरी के अलम हमरा से छूटे का मान के नइखे बुझात। भोजपुरी भाषा-साहित्य आ धरती खातिर दरद बहुते आदमिन के रहल होई बाकी एकरा बारे में जवना तरे सोचे-समुझे के, कहे-सुने के हमरा परल हा, ओह तरे आन केहू से बुझला ना सँपरल होई। जेकरा में कुछ बतावे-सुझावे के दूब ना होई आ जेकरा सीखे-समुझे के लालसा-साध ना होई ओकरा हमार बतकही बे-रस के बुझाई। हम जानतानीं जे सार्थक बात के सुननिहारो नइखे, गुननिहार के कवन सवाल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाकवि भिखारी ठाकुर के "मातृभाषा घर के गूर है" वाला सुझाव से तइयार भइल ई 'परकार' उनका जन्म-शताब्दी-समारोह में हमार एगो हलुक योगदान के प्रयास मानल जाय।

अपना मरमी अँखिआन से हमरा गद्य-रचना के कुछ मोल लगवनिहार, हिन्दी-भोजपुरी भाषा-शैली के अप्रतिम अधिकारी डॉ० अनिल कुमार आंजनेय अस हितकारी व्यक्तित्व के अपना मन-प्राण पर आभार मानीला जे पहिले पहिल ललित निबंध ('बेटा के नइहर') लिखे खातिर हमरा के उद्बेगल। एह संग्रह के उहें के समर्पित करे में हम आपन अहोभाग मानत बानीं।

हम कउड़ी में कसीदा काटे के ना, अपना हाथ से मोटिआ बीने के, कोसिस कइले बानीं। मोटिआ रूखर-आखर होला सही के, बाकी जाड़ा-पाला में कुछ काम के होखेला ओकरा जे गाँव-गिरान में जाङर चला के अनकर-आपन मुँह के आहार उपराजेला। निबंधन का भाषा में वर्तनी के एकरूपता ना अइला के कुछ कारन रहल बा। 'या' आ 'आ' के प्रयोग उच्चारन का मोताबिक कइसे कइल जाय एह पर हमार कवनो हठ धरम नइखे।

अब तक हमरा एगारह कृतियनि के अँजोरा ले अनिहार, आग्रह-प्रेम के व्यवहार भरल जयदुर्गा प्रेस के आभार कहि के ना व्यक्त कइल जा सके।

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

चन्द्रायण पूस सुदी पंचमी : २५ दिसंबर, १९८७ ई०
शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर के गूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रम

१. घर के गूर ... ९

२. भोजपुरी काहें खातिर ? ... १३

३. भोजपुरी भाव के रछपाल ... १९

४. अपनइती ... २३

५. खँड़हर बचाईं ... २६

६. जूझ जहालत से ... ३१

७. नीनि नइखे परत ... ३५

८. बेटा के नइहर ... ४१

९. भोजपुरी के हबेख ! तुलसीदास का हाथे ... ४९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर के गूर

कहल जनकवि भिखारी ठाकुर जे "मातृभासा घर के गूर है।" खड़गपुर (बंगाल) में बंगला भाषी लोगन के अपना बोली में नाटक भा नाच-तमासा करत देखि के अछरकटू भिखारी हजाम के सवख जागल जे अइसने जलसा हमनिओं का गाँव-घर, जिला-जवार में होखित त बड़ नीक रहित। पारसी थियेटर भा नवटंकी के बोल भलहीं उनुका ना आवत रहे बाकी नाच-गान के, रासलीला-रामलीला के लह-चह उझंख दिअरो-दानर वाला देहात में ले आवे के ललक उनुका मन में उठल। कागज आ कूट के मुकुट, बाँस आ सिरिकी के धनुही-तीर बनाइ के चरवाहन का गोल में ऊ लगले रामलीला रचावे। खड़ीबोली, ब्रजभाषा आ भोजपुरी का फेटफाट से नाधल कार उनुका हाथे आगा जा के ठेठ भोजपुरी भाषा के सरस साहित्य के सिरिजन करवलसि। उनुका होती से सदिअनि से जबदल कंठ के बान्ह खुलल। उनुकर लालसा पुरवनिहार रहे मातृभाषा के पुरहर भँड़ार—घर का गूर अस हर माने में साँच।

हँ, त 'घर के गूर' के माने-मतलब तनी पसन से बूझि लेवे के चाहीं। पर-पाहुन एक-प-एक दुआर पर आ गइलन। बेरा-कुबेरा केहू राही-बटोही हकासल-पिआसल पहुँचल। ओह घरी पत-पानी रखनिहार 'घर के गूर' से बढ़ि के दोसर कुछ ना होखे। आँटा, घीव, दूध, दही सभ का साथे मिलि के गूर से जवन परकार चाहीं तेआर कइ सकीला। सोचीं सभे, बिना गूर के छूँछे पिसान कि घीव ईजति बँचाई? दूधो दही बेगर मीठा डलले सरबत बनी? जाए दीहीं आँटा, घीव, दूध, दही कें, घरे कवनो धराऊँ-फरछीन जलखई जोग जिनिस ना होखे त सोगहग सोन्ह गूर के भेली आ भर लोटा टटके घींचल कुँइआँ का जलो से जवन कंठ-जुड़ाँव होला तवन तरफ का सरबतो से ना। ओह में गूर जो अपना घर के उपराजल होखे त का पूछे के! घर के गूर खरचे में इचिको आहस ना लागे।

गूर के महातम अतने नइखे। गूर हमनी किहाँ अपना घरहीं बनेला। चीनी-मिसिरी कल-कारखाना में तेआर होला आ दोकानि से नगद पइसा दे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के आधा सेर, पाव भर कीनि के आवेला, ऊहो खास-खास मोका पर काम आवे खातिर। चीनी-मिसिरी के मूल गूर ह। गूर में चिउटा-हाड़ा के मिसइला-पिसइला के कम डर रहेला बाकी चीनी जवरे ऊ बात ना होखे। भले तनी खटतुरुस लागे बाकी गूर चीनी से पवीतर आ फायदेमन ह। ऊहे हाल मातृभाषा के बूझीं। अटपट चाहे सोझ बात में लइका-सेआन-बूढ़, निपढ़-पढ़निहार सभे जेकरा के हरदम हवेखल करे। ऊहे नू असली धन ह, जवना के भंड़ार कबो ना खलिहाय, ना जेकरा के खरचला में कवनो आहसे लागे?

चीनी-मिसिरी का मोताबिक हिन्दी (खड़ी बोली) का गद्य पद्य के जानीं। समाज का आगा बढ़ला पर ईजति-वरोहि खातिर सफिआना बतुस के महातम बड़ले बा, रहवे करी; बाकिर जेकरा चीनी-मिसिरी उपरावे के अवहीं अवकाति नइखे ऊ का करो? का ओकरा से गूरो छोड़ा दिआउ? फिनु, गूरो के मिठास जेकरा ना रूची ऊ चीनी-मिसिरी के सवाद भला कइसे सराही?

जहँवा अवहीं कंठ में खाली तरास भा खटास के माहुर बा ओहिजा मिठास के अमरित उपरावे खातिर सभ से सुगम उपाइ बा मातृभाषा रूपी गूर का ओर चाव बढ़ावल। अपना बोली में नीके तरे कुछ कहे-सुने के, गावे-बजावे के लोग चसकी तबे नूं राष्ट्रभाषा हिन्दी भा आनो कवनो भाषा का साहित्य में अनुराग देखाई? बड़को आदमी, सवखीनो आदमी मुँह फेरवन खातिर कबो गूर के पकवान—ठेंकुआ, गुलवरा, गुरगुझिआ, मेंथी, सोठि, कचवनिआँ, कसार, तिलवा—नेवान करिहें। गूर त गूरे ह, महुअरिओ का सोन्हाई से मुँह में पानी भरि आवेला।

त असली सवाल एह घरी साहित्य का ओर लोगन के नेह जगावल बा। कहाउति ह कि साहित्य, संगीत भा कवनो कला से सरोकार ना राखेवाला आदमी विना सींघि-पोंछि के जनावर होला। एह तीनों में 'साहित्य' अइसन साधन बा जेकरा के साधे से बाकी दूनों के परिचे हो जाई। ओहू में खास कर अपना मातृभाषा भोजपुरी का साहित्य के त कुछ कहहींके नइखे। गोरख-कबीर-तुलसी-दरिया-धरनी अइसन कतने सन्त-महात्मा आ पुरान कवि लोगन का कंठ से एह बोली में अइसन उचार भइल जवना के कवनो मोकाबिला नइखे। सएकड़ बरिस से कतने पद आजु ले गवात अइलन स। उन्हनी के राग भा धुन के चलाना संगीत शास्त्र का पंडित से लेके हरवाहो-चरवाह का बीचे अवहीं ले बनल बा। कबीर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'दुलहनी गावहु मंगलचार' का साथे 'गंगतीर मोर खेती-बारी, जमुन-तीर खरिहाना', भोरे पहर निरगुनिहाँ लोग अवहुँओं सहेजेला। धरमदास के 'कहँवाँ से जीव आइल, कहँवाँ समाइल हो' भुलाइल नइखे। पलटूदास के 'प्रेम बान जोगी मारल हो, कसके हिया मोर' सुनिके करेजा थाम्हे के परेला। धरनीदास के 'चित चितसरिया' देखि के केकर मन ना मोहाइल? रयिदास लोगन का मंडली में गवात 'सी गरैनी' सुनि के मन होस में ना रहे। गोसाईं जी ववे से चेतावतानीं—'राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे!' जायसिओ कहले बाड़ें—'जोगी भँवर न आपन होई,' 'पंथी कहाँ-कहाँ सुसुताई', 'पंथ चले तव पथ सिराई'।

माई-बहिनी लोग जुग-जुग से कतने परब-तेवहार, बिआह-गवन, मूँड़न-जनेव, छठि-पिढ़िया, मातादाई, कजरी, जँतसारि आ सोहर का अनमोल गीतन के जोगावत आ रहल बाड़ी। बूढ़-पुरनियाँ आ नवहो लोग निरगुन आ बिरहा-कहरवा के सुर अब ले जगवले बा। जनकवि भिखारी ठाकुर एही लोक गीतन का धुन में तुकबंद गीत रचले। उनुका नाच-तमासा के जमावे में अधिका हाथ एह रोचक गीतने के रहे। उनुका गीतन के पइसार कतना दूर ले भइल ई बतावे के नइखे। मातृभषे के एकवाल ह कि भावुक भिखारी हजाम का मन में एक दिन 'कहूँ से गीत, कवित्त कहूँ से लागल अपने बरिसे।' ऊ छूटि के एह बरखा में अपने नेहइले आ दोसरो के सरबोर करे खातिर अनेआसे हाथे लागल गीतन के जल भरि-भरि अँजुरी उविछे लगले। नतीजा ई भइल जे भोजपुरी इलाका कबीर-तुलसी के पद आ दोहा-चउपाई का बाद 'भिखरिआ के नाच' के एगो-ना-एगो गीत अपना जबान पर चढ़ा लीहल। घर का गूर के हवेख भिखारी ठाकुर से बढ़ि के आन केहू का हाथे ना होखल।

गाँव-गिरान में अधिकतर भाई-बहिनी लोग निपढ़ बा सही के, बाकी ओहू लोगन का लगे दिल-दिमाग बा जेकरा से जगत के कलेआन हो रहल बा। छव-सात करोड़ भोजपुरिहा लोगन का लगे मातृभाषा छोड़ि के दोसर माध्यम नइखे। एह से जरूरी बा जे ओही लोगन का बोली में कहि-सुनि के जब ले ओह लोगन के मन ना रमावल जाई, नीके तरे भाव-बिचार के संस्कार ना कइल जाई तब ले देस में जनतंत्र के मतलब खाली किताबे में रही। थोर कहना ढेर समुझना। आजु भोजपुरी में जे कुछ लिखा-पढ़ा रहल बा ओकर इतिहास ढेर पुरान ना ह। महज चालिस-पैंतालिस बरिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का भीतर अतना किसिम के चीज आ गइल जेकरा के देखि के ई ना कहा सके जे एह भाषा के विकास नइखे भइल। बिना कवनो सहारा भा ललकारा के भोजपुरी के कवि-लेखक अपने आगी-काठी मातृभाषा का बड़नई में जइसन अँजोर कइले ऊ ओह लोगन का जीवट के परमान बा। घोर निखट्टू समाज में रहि के ओह लोगन से जे बनि परल ओकरा पुरहर सराहना खातिर कंठ ना खुलल। तथाकथित 'शिक्षित समुदाय' चाहे सहरी सभ्यता में सनाइल अपना संस्कृति के भोर डलनिहार लोगन के बस चलित त भोजपुरी साहित्य के सिरिजन ना होखे पाइत। भरोसा एके बा जे गाँव-गँवई का भाग का साथे भोजपुरिओ के भाग एक-ना-एक दिन जागि के रही। कोटि-कोटि जने का कंठ आ कान के सह पा के ई अमरलत्ती दिनो-दिन पसरते जाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी काहे खातिर ?

अब तक के इतिहास इहे बतावेला कि खास-खास लोग जे सभका से कवनो तरे अपना के अधिका अकिलगर बना लीहल, समाज का ऊँट के नकेल अपना हाथे राखत आइल हा। ऊँट अइसन ऊँच बरिआर जीव आपन अगार धीरज, सहाउर सुभाव का चलते साढ़े तीन हाथ के आदमी के कहल करत आइल। 'रेगिस्तान के जहाज' कहवनिहार जानवर आदमी के अपना पीठी पर चढ़ा के नगारा बजववलसि। भारी-भारी बोझा ढोवत थाके के नाँव ना लेत ऊ बबूर के काँट चबवलसि। देखे में फूहर, छूवे में रूखर ओह बकलोल का देहे कबो खरहरा ना लागल। कवनो टहल से ऊ कबो इनकार ना कइलसि, गारहे-सकेते केकर उपकार ना कइलसि ? पहिले के रेत का राह में भले कतहूँ अड़िआइल ना बाकिर अब आगा बढ़े में ओकरो गोड़ भहराइल चाहेला। अँकुसा कतनो खिचाता ओकरा से डेग डलाते नइखे। पीठी पर नव मन के भार लेले ऊ दलदल में चले से अलचार बा। हाँक-डाँक का बस के बात अब ना रहि गइल। ऊँट का मरे के होई तबे नूँ आपन सुभाव छोड़ी ? आदमी के लहे वाला अब कवनो दाव बाकी ना रहल।

ऊँट का जाने कबो करवट लेले होखे कि ना बाकी समाज अब बे कर फेरले ना मानी। अपना छाती पर धइल हजार मन के पथल हटावे खातिर ऊ छटपटा रहल बा, केहू कवनो तरे ओकर भार टकसावे में टेढ़ भा सोझ हाथ लगइबे करी। जब-जब धरती पर भार बेसम्हार भइल बा तब-तब ओकर उबार के उपाइ भइल बा। पीर का पुकार पर चीर के बिस्तार होला, अबरुआ का गोहार पर बीर के चिग्हार होला। बेद, पुरान, रामायन, महाभारत सगरे साँच के झूठ पर जीत के गीत गवाइल बा। पुरान नियम-कानून में जकड़ल बिचार 'क्षेत्रज' संतानन के सुई का नोक बरोबर भूँइ के हिसदार ना मनलसि तबे 'महाभारत' भइल। असमंजस भा थथम्हा के बान्ह तूरे खातिर समर में 'गीता' के सहारा लीहल गइल। अधोगति का आगा प्रगति के राह खुलल। कुछ ना कइला-धइला से, धृतराष्ट्र का जवरे सँउसे समाज का आँखि पर पट्टी चढ़ल रहेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झाँपल आँखि के अन्हार हटावे खातिर गौतम बुद्ध आ कबीर के अवतार होला। दान-दछिना, जग्य-बलिदान, तंतर-मतर के भरम भगावे खातिर 'धरम के चक्का' फिनु से चलावल जाला, करघा के ताना-बाना में अलख लखावल जाला। राह-बाट के धाङल धूरि माथे चढ़ावत चलत गजराज के कूकुर का भुँकला के फिकिर ना रहे। पोथी में पानी बुड़वलो पर तुलसी जन-मानस पर उतराइल रहेले। दयानन्द आ गाँधी का तेज निगाह में जे लर-कल ओकरा बादे नूँ जगमग अँजोर भइल?

जब ले अधिका अनगँव ना होखे, सभ कुछ सहात चलेला। कुछ लोग का मन के मउज जब ढेर लोग खातिर सजाइ हो जाला तबे ओकरा के जरी-सोरी से उखाड़ि फेंके के उपाइ होला। कर्मकांडी ब्राह्मण-धर्म का साथे-साथ संस्कृत के खोलि उतारि फेंकल जरूरी समुझले 'सिद्धार्थ', जब उनुका कवनो मठ में ना बलुक माँह बधारी पीपर तर सहजे ज्ञान भेंटाइल। जनता का ठेठ बोली—पाली-प्राकृत—में अइसन जुआर आइल कि का पूछे के! 'गौतम बुद्ध' के चन्द्रमुख के किरिन जन साधारण का समुद्र में अइसन हल्फा उठव-लसि कि का कहे के! सदिअन तक संस्कृत का आगा प्राकृत पटाइल रहे। बौद्धधर्म 'सिद्ध' आ 'नाथ' संप्रदाय में बदलत चलत गइल। प्राकृतो बनावट का जाल में अझुराइल। फिनु से हिन्दू याने ब्राह्मण धर्म के चलाना चलावे के भरपूर कोसिस भइल, ज्ञान धरे खातिर संस्कृत के गगरी गढ़ाए लागल। बड़का पंडित ऊहे कहासु जिनि ढेर-ढेर पोथी घोखले होखसु। एही बीचे पछिम का ओर से हहास बन्हले एगो दोसरे आन्ही आइल। ई रहे अरब में उपजल इसलाम मजहब। 'कुफ' के दूर कइला का साथे-साथ देसा-देसी लूटो-खसोट कइल एकर उदेस रहे। आर्यावर्त का तन-मन का भीतर सदि-अन से पइसल घून इहाँ का सामाजिक ढाँचा के भीतरे-भीतर खोंखड़ बना घलले रहे। महमूद ग़जनवी का गदा से 'सोमनाथ' के लिंग त टूटवे कइल पृथ्वीराज आ जयचन्द के बखेड़ा मुहम्मद गोरी के गोड़ो रोपववलसि। अन-धन से भरपूर भारत-भूँइ पर सदिअन तक ठहरला के असर इहाँ के मुसलिम मजहब का प्रचारको लोग पर परला बिना ना रहल। ओहू लोगन में हिन्दू धर्म के बेड़ा खेवनिहार पुरोहित-पंडा निअन मुल्ला-मोलवी के बेवहार बढ़े लागल। अंध विश्वास से आन्हर बनल आम जनता, चाहे ऊ हिन्दू रहे चाहे मुसलमान, पंडा-पुरोहित आ मोलवी-मुल्ला का डालल फंदा में छटपटाए लागल। ओकर बन्धन काटे खातिर कबीरदास कसि के कुठार चलवले। ऊ ना त रोजा-नमाज के जबान अपनवले आ ना मंत्र-तंत्र के भाषा। ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनता का ठेठ 'पुरबी' बोली में काटल-काटल बात कइले। तरह-तरह का भेद-भाव से अलगावल-हिगरावल लोगन से उनकर एके कहनाम रहे—'ढाई अच्छर प्रेम के पढ़े से पंडित होय'। आसमान का कोना-कोना में, धरती का कन-कन में एके भगवान—'राम' भा 'रहमान'—के रंग—'लाली' उनुका लउकल। दोसरो के देखावे खातिर, दोसरो के समुझावे खातिर उनुका कवनो तरे घुमा-फिरा के त वहे के रहे ना। कबीर पंथ के पसार पंजाब से बंगाल ले भइल।

कबीर का बाद जवन नाँव उत्तरी भारत में सभ से बेसी लिआइल ऊ ह 'तुलसी'। संस्कृत का घइलन में भरल ज्ञान के उझिलि-उझिलि के ऊ 'मानस' भरले। हजारन बरिस पहिले रचल कवनो ग्रंथ से कई गुना अधिका प्रचार-प्रसार 'रामचरित मानस' के भइल। काहें? एह से कि लोक भाषा में अपना ओर खींचे के जवन जोर होला ऊ बनावटी भाषा में ना होखे।

आर्य समाज आ स्वाधीनता वाला भा सुराजी बिचार करीब-करीब आगा-पाछा आइल। गुजरात के रहनिहार स्वामी दयानन्द आ महात्मा गांधी का चहला से उत्तरी भारत में सगरो देवनागरी लिपि में हिन्दी के बेधड़क प्रचार होखे लागल। व्रजभाषा में बन्हाइल काव्य के भाषा बदलत जुग-जबाना के जवाबदेही ना निबाहि सकल त खड़ीबोली गद्य आ पद्य के बिकास भइल। वहे के मतलब जे जब-जब जरूरत बुझाइल, समाज पहिले के डालल छान तूरे के उतजोग कइलसि। समय-समय पर महापुरुषन का अवतार से जवन जोति बरेला ऊ अनेरे ना। ओकरा खातिर अगते से आगि-काठी के इन्तज़ाम होत रहेला। धन्हकवनिहार बेयार मोका पा के उठवे करेला।

एह घरी हिन्दी का साहित्य के कारबार दिल्ली से दुमका ले जवना लोगन का हाथ में बा उनुकर अब ले ई उदेस नइखे बनि पावल कि हम जे कहीं ऊ सभका बुझाउ। सभका बुझाए लायक के माने होला जेह में कुछ माने-मतलब होत होखे, समाज के अँटकल गाड़ी के निकाले के कोसिस होखे भा आगा अवनिहार युग के अँखिआने-चहचान होत होखे। हिन्दी के अनघा साहित्यकार लोगन का बुझला ऊ गरज थोरे बा जवन बुद्ध, कबीर, तुलसी, दयानन्द आ गांधी के रहे। जनता के दुख-दरद देखला पर दाह उठेला आ तबे कवनो-ना-कवनो राह बनेला। बौद्ध धर्म, निर्गुन-सगुन रूप, आर्यसमाज, स्वाधीनता-संग्राम के चलावे में उदेस रहे जनता के कल्यान, ना कि आपन उठान। आजु जो नीके तरे केहू जनता का ओर निहारित त ऊ ना होइत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे अब ले होखे देखा रहल बा। कागज-कलम के बेवहार त हजारन लोग कर रहल बा बाकी समुझीं त ओह में अधिका अनेरिए बा। जवना के समुझे-वूझे खातिर कपार ककुलावे के परे ओंही साहित्य के सृजन होत चलो त स-हित के भाव ना रहि जाई। साहित्य हमरा इहाँ सेही कहाइल जेकरा में सभके 'हित' होखे, 'अनहित' केकरो ना। 'कीरति, भनिति, भूति भलि सोई, सुरसरि सम सभकर हित होई' ई जे जानी-मानी ओकरा सभका बुझाए लायक बात कहहीं के परी। चाहे त करोड़न मरदे-मेहरारू, बूढ़-लड़िके-सेयान के तुरंते हिन्दी के अइसन जानकार बना दिआउ जे सभे ओकरा आधुनिक साहित्य के सवादे लागो, चाहे निपढ़ो के कान के अइसन चसकावल जाउ जे ऊ दोसरो के कुछ सुनि के आपन जनम सुफलान करे। पहिला का जाने कब ले होई, तब ले का होखो?

एही खातिर पुरुबी उत्तर प्रदेश आ पछिमी बिहार में जामल बाढ़ल, देसादेसी में पसरल करोड़न लोगन के चीन्हल-जानल जबान—भोजपुरी—के जाब खोलल जरूरी बा। जनता का आगा आइल समस्या के सागर बे-खेवे खरचे पार कइल जा सकेला जो जन भासा के बेड़ा बनावल जाय। थोरे लिखना ढेर समुझना। ई कतना महानकार बा तनी सोचे के चाहीं। बाकी, लोगन के जगावे का पहिले अपनहूँ त जागे के परी। देखीं के कब ले जागता!

'सभकर हित' के बात गोसाँई जी कहले बानीं। 'सभकर हित' के बत-कही पतित पावनी भागीरथी अस होले। 'हित' 'साहित्य' शब्दे में बइठावल बा। 'हित' निकालि दीहीं, साहित्य में कुछ ना रहि जाई, ई 'राहित्य' हो जाई।

'हित' के छोड़ि के, कुछ लोग का-का दोनी कहे लागता। एह लोगन का ना अपने कुछ जनाता आ ना ऊ लोग दोसरे के कुछ लखा सकता। असल में ओह लोग का लगे 'दृष्टिए' नइखे। तुलसीदास आ भिखारी ठाकुर के आँखि मुँदाइल ना रहे एही से ऊ लोग अनकरो आँखि खोलल। कटकटाह-परपराह ना, बलुक जीव-जुड़ावन मनरूचा आँजन उपराइ के लोक रुचि के ऊ लोग अनगराहित ना बूझल। आपन जाङर चला के आपन आ अनकर पेट भरनिहार धुरिआइल, गाँव-गिरान के सोझ लोगन से जे लोग भरि मुँह बात ना कइ सकल ऊहे लोग फरछीन दरबारी 'सभ्य' समाज के मुँह जोहल कइल। एह से 'लोक साहित्य के उपेक्षा आ 'शिष्ट' साहित्य का समादर के चलाना भइल। काल्हु तक जे शिष्ट' साहित्य कहाइलहा ऊ आज 'विशिष्ट' के कहो, वि-विशिष्ट' ले हो गईल जे साँच पूछीं तक कमे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोगन का बुझात होई, सोइत भर सक केहुए-केहू का होखे।

एह से अब ऊ दिन दूर नइखे जब जाह से निकालि के समाज के सुघट-राह पर ले आवे के काम साहित्ये का करे के परी। भोजपुरी भाषी लोगन में अपना बोली खातिर मोह-ममता जगावे खातिर तुरंत उतजोग होखे के चाहीं। भोजपुरी के आपन शब्द आ मुहावरा होला जेकरा से अलगा रहि के भोजपुरी लेखक भोजपुरिहा संस्कृति, ओकरा प्राण, ओकरा आत्मा के ना समुझि सकिहें, ना उजागर करि सकिहें। कम-से-कम पचीसो-तीस लेखक-कवि अनेक विधा में पुष्ट, सुष्ठु आ उत्कृष्ट कृति-रत्न के चमत्कार देखा देवे खातिर आपन-आपन कलम उठा लेसु।

भोजपुरिहा लोग भलहीं धरती का पुरबी-पछिमी गोलार्द्ध में पाँव पसरलन, बाकिर आजु अपना घरे में विदेसी बने खातिर बेचैन लउकत बाड़न। अनकर नीक-जबून के बे बुझले-समुझले नकल उतारे के सबब हमनी में से कुछ भाइन कीहाँ पोसल जा रहल बा। हमनी का के हईं, का हईं, एकरा जोह के जरूरते अब उहाँ सभे के ना रहल। जिनिका अपना पुरुखा-पुरनिआँ बाप-महतारी, भाई-बंधु, हीत-नाता, घर-दुआर, गाँव-जवार, गीति-गवनई, रसम-रेवाज के मोह नइखे ऊ बहेंगवा के टाटी अस उधिआइले बोलतारे। आन्ही-बतास का बेरा जइसे समियाना तर बइठल सभे खूँटा, बाँस आ रसरी के अपने पुरहर बल लगा के थम्हले रहेला, ओइसहीं आजु जरूरत बा अपना संस्कृति का प्रति जागरूक रहे के। घर में त जरूरे, बाहरो का बेवहार में भोजपुरिहा लोग आपुस में भोजपुरी में बोलसु-बतिआवसु आ अपना परिवार सङे आ हितई-नतई में चीठी-चिठिआंव भोजपुरी में अधिका-से-अधिका करसु।

भोजपुरी साहित्य-सर्जको सज्जन का सोचे के चाहीं। भोजपुरी लिखे का पहिले सीखे के जरूरत बा। हिन्दी का कोश के कम-से-कम इस्तेमाल भइला से भोजपुरी शब्दन के अभिव्यंजना-शक्ति अधिका-से-अधिका उजागर होई। भोजपुरी के आपन बोलचाल वाला अन्दाज होला, लहजा होला जेकरा के उपरावल जाय। विषयन मते हिन्दी के खिआइल-रगराइल, बासी-तेवासी जिनिस के भोजपुरिहा जामा परिहावे के सबब छोड़ल जाय। नाटक, कहानी, उपन्यास आ काव्य में तसवीर जीअत-जागत जिनिगी के उरेहल जाय। अपना आँखी देखनिहार के,—परकलवी के ना,—रीठि ठोकाय, बाँहि पुजाय।

एकरा खातिर जोह बा स्वयंसेवी सर्जक के। पाँच-दस के कहो, तीनिओं से काम नधा सकेला। ई तीनों जने आपुस में सर-सलाह करसु एक दोसरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रचना देखसु-सुनसु। ना.के तरे सराहना चाहे निठुरी मुँहे आलोचना-प्रत्यालोचना होखे। अपना मने भा अनको कहला से विषय आ विधा के चुनाव कइके ई लोग पाँचो-सात दिन पर कलम जरूर चलावसु। ढेर जल्दी ना सँपरे त हर पखवारा तीनों जने मिलसु-जुलसु चाहे दूर रहला पर आपुस में चिटिआव से भोजपुरी साहित्य का बारे में बतिआवल करसु। साल भर, छव महीना पर, एक ठहर जवराये के कोरसिस करसु जेह से खुलि के मुँहा-मुँही एक दोसरा के बात-चीत सुने-गुने के सुजोग मिले। प्रकाशन का पहिले जरूरत बा गनल-गूँथल गुन-गाहकन के। समिलात ना हो सके त अकसरहूँ कवि-लेखक का चाहीं जे आपन पाठक भा श्रोता ढूँढ़े में ओजसु जनि। एगो ना, कम से कम दू गो मनगर आदमी जरूर चाहीं जेकरा जवरे बइठि के कविता, कहानी, निबंध पढ़ल-सुनल जा सके। दू से पाँच, पाँच से दस आ दस से पचीस के गोलबंदी होखो जेकरा के तीन-चार-पाँच कवि-लेखक के सुने खातिर एक ठहर नेवतल जा सके। संगीत में अकसरे आ जवरे दूनों तरे रेयाज होत रहेला तब जाके साज पर सुर लहराला। गवनिहार-बजवनिहार लोगन के बरोबर बइठकी होत रहेला। ओही तरे साहित्यकारो के होत रहे के चाहीं। जइसे जवरे बजला में साज के सोभा आ सार्थकता बा, तइसहीं कवि-लेखक के सम्मेलन आनन्द उपराजे खातिर जरूरी बा। 'अपना मुँहें मिट्ठू' के अबहीं छोड़ल जा सकेला। उनुका मुँह का बास से स्वस्थ वातावरण के विकास कम, निनास अधिका होई।

आम जनता के रुचि अपना भाषा में अपार होला। भोजपुरी खातिर जरूरत बा त बस एकरे जे विशुद्ध, प्रबुद्ध आ हितकारी गद्य-पद्य-साहित्य के प्रचार-प्रसार कलम आ कंठ दूनो से दिल-दिमाग खोलि के करनिहारन के टाड़ कइल जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाव के रछपाल

आजु-काल्हु का पढ़ाई-पद्धति के चलवनिहार मेकाले साहेब के कहनाम रहे जे एह पद्धति से पढ़निहार हिन्दुस्तानी नीमन किरानी बनि सकेले। बनिआदम वाली भाषा का रूप में पइसि के अँगरेजी सरकारी ओहदा आ रेलवे, बंदरगाह आ बैंक का नोकरी के सीढ़ी बनत गइल। उत्तरी भारत का आम जनता से संपर्क खातिर ईसाई पादरी लोग हिन्दी के सहारा लीहल आ एकरा खातिर कर-किताब निकासल। बाद में नया जुग-जवाना के जरूरत जननिहार बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र आ हिन्दी प्रदेश के समाज-सुधारक मनीषी लोगन का चहला से किताबन आ अखबारन में खड़ी बोली का प्रयोग के चलाना चलल। कलकत्ता, दिल्ली आ बंबई का बीचे अपना फायदा खातिर व्यापारी लोग हिन्दी के हवेखे लागल। मतलब, खड़ी बोली वाला हिन्दी के रूप, जे गद्य में लखार भइल, समाज का रोजाना के जरूरत बस—नून-तेल-लकड़ी, रोजी-रोजिगार, सर-समाचार के ले के—ठाढ़ होखल। आधुनिक हिन्दी गद्य के जनम-करम सवँरनिहार भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का मुँहें 'रस' खातिर जवन उचार सुनाइल ऊ ब्रजभाषा में रहे—

जा में रस कछु होत है ताहि पढ़त सब कोय
भाव अनूठो चाहिए भाषा काहू होय

'रस' याने आनन्द जवना बोली-वचन, बतकही आ लिखतंग से उपटे सेही अपना इहाँ 'काव्य' कहाइल हा—'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।' काव्य के दू गो रूप मनाइल—श्रव्य आ दृश्य। सुन्दर श्लोक आ छंद सुनि के जतना आनन्द होखे ओह से अधिका मनहर नाटक देखला से। गद्य आ पद्य दूनों का समतूल समायोजन वाला भारतेन्दु का नाटकन से हिन्दी समुझनिहार क्षेत्र में रस के बरखा होखे लागल। सामाजिक चेतना जगवनिहार, साहित्य-सेवा में आपन तन-मन-धन नेवछावर करनिहार बाबू हरिश्चन्द्र का भारत के दुर्दशा ना देखल गइल त ऊ सजी भारतवासिन के 'भाई' कहि के समिलात सुर में 'रोवे' खातिर गोहरवलन—"आवहु सब मिलि रोवहु भारत भाई! हा-हा भारत-दुर्दशा न देखी जाई!!" उनुके परंपरा में आगा चलि के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी अकसरे ना, सभ केहू के बोलवलन ई सोचे खातिर जे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी
आवें बिचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी

ओह हिन्दी के, जवना से कवो विशाल जनसमूह निहाल भइल रहे, इहे उद्‌बोधनात्मक स्वरूप आजादी का लड़ाई का अगते रहे। बंगाल का राहे अंगरेजी भाषा का साहित्य के बेयारि बिहार-यू० पी० में आइलि आ ओकरे झोंक में हिन्दी में अनुवादित भा मौलिक उपन्यास, नाटक, कविता-कहानी-एकांकी लखार भइलन स। आगे चलि के एक-से-एक बारीक कला-कृति-अनि का उपरइला से अगते के सोझ-सोझ, समुझनउग बात-बिचार तर परत गइल। स्कूल-कालेज का कोर्स में रखाए जोग रचाइल साहित्य के भाव-भाषा सहज सुगम ना रहला से हिन्दी के जवन 'शिष्ट' रूप उभरल तवन दिनो-दिन 'विशिष्ट' बनत गइल। हिन्दी का कलेवर के कमनीय बनव-निहार पंत, प्रसाद आ निराला अस महान कलाकारन के सूक्ष्म बोध सामान्य पाठकन का दिल-दिमाग का आँवक में ना आवे पावल। उहाँ ले 'लोक' के पहुँच 'बेरोक' ना रहि गइल।

कबीर, सूर, आ तुलसी गूढ़-से-गूढ़ ज्ञान आ भाव-राशि से उत्तरी भारत के वाङ्‌मय-भंडार भरत गइल बाड़न। निरगुन गान का साथे-साथ राम-कृष्ण के सगुन चरित के बखान सभ का नीक लागल। साखी-सबद, सूरदास के पद आ रामचरित मानस के दोहा-चौपाई में से कुछ-ना-कुछ कंठ-कंठ पर चढ़ल। एह रचनन का भाव-भाषा में से अधिकतर सभ का भेंटाए जोग रहे। एह महात्मा लोगन के, छुद्र सवारथी आदमिन लेखा खाली 'अपने खातिर' वाला ट्रेडमार्क के कुछुओ ना रहे। ई लोग जे कहल, गावल भा सुनावल से सभ का हबेख खातिर रहे, सभे के तारे, सम्हारे आ उबारे जोग रहे। गोसाईं जी के त घोषणे रहे—

कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥

इन्हिके-उन्हुके ना, बलुक सभ के भलाई जेकरा से ना भइल ऊ तुलसीदास का कहनाम से 'भलि भनिति', 'सत साहित्य' ना हो सके। साँच पूछीं त हमनी इहाँ के साहित्य शब्द में से 'हित' हटा देल। पर एह से 'अहित' होखे के डर बा। 'अहित' आ 'अनभल' कइल भा मनावल अपना इहाँ के लोग ना चाहे। अनका दुख से दुखी आ अनका सुख से सुख पवनिहार भारतीय 'लोक'—आम आदमी—मंगल कामना करेला। "मंगल भवन अमंगलहारी" "मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै" आ "साधो सहज समाधि भली" उचरनिहार संत महाकविअन का परंपरा में "रखिहऽ चरन का सरन, ए मोरा गंगाजी हो"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहनिहार, जनकवि भिखारिओ ठाकुर के मिहोरा बस अपने तक सीमित ना रहि के लाखन गँवार-होसियार के मन-परान पर छा जाला।

आजु अपना देस आ समाज का ओर जे तनिको निगाह फेरी ऊ पाई जे "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल" मननिहार भारतेन्दु लेखा बलुक उनुको से बेसी बल-बउसाव वाला साहित्यकार का कंठ से "आवहु सब मिलि" के गोहराँव के जरूरत बा आजु। गोरन का गुलामी का चङुरा से मातृभूमि के छोड़ावे खातिर केहू भोजपुरिओ में "बाघावा का पाँजावा में माई हो परल बाड़ी, चलु बाघ मारि आजु माई के छोड़ाई जा!" सुनवले रहे (सरदार हरिहर सिंह जी)। अपना देस का धरती खातिर 'माई' शब्द के आकर्षण बेजोड़ रहे। देस का लिलार से गुलामी के करिखा पोंछइला का ४० बरिस बाद अब मातृभाषा खातिर ओइसने सरधा-भाव ऊपर होखे के चाहीं। महापंडित राहुल सांकृत्यायन का विचार से "जब ले महतारी के दूध के साथ पीअल भाखा के मान-सम्मान न बढ़ी तब ले गरीब जनता के उद्धार ना होई।" गरीब-गुजरा, निपढ़-गँवार, देसा-देसी में रोजी-रोजिगार कारन जाङर ठेठ-बनिहार, गाँव-घर के हरवाह-चरवाह-बनिहार का नीरस जिनिगी में रस के संचार करनिहार 'भिखारी' कम असरदार कइसे कहइहें? गनल-गुथल, खुस-फैल, साधन-संपन्न लोगन का मन-बहलाव खातिर, सवख-सिङार खातिर, हिन्दी-उर्दू के के कहो. अंगरेजिओ भाषा के साधन-प्रसाधन मौजूद बा। एह से प्रगतिशीलता के तगादा बा जे करोड़न भोजपुरी भाषी सामान्य जन के जिनिगी 'रस' का माध्यम से सार्थक बनावल जाय। एह रस खातिर भिखारी नाई अपना प्रारंभिक रचना-काल में कहले रहसु—

"देखन के जलसा ललसा कर मातृभाषा घर के गूर है।" सरबत मधे बगते हमनी कीहाँ गूरे के 'रस' पीअल-पिआवल जात रहे जे चीनी का रस अस बारीक आ साफ भलहीं ना होत रहे बाकिर आपन सोन्हाई आ खटतुरुस मिठासवाला खासिअत राखत रहे। चीनी या मिसिरी के मूल गूरे ह जेकर उपमा मातृभाषा का मिठास खातिर दिआइल बा। बिना औपचारिक शिक्षा पवले, तिपट नादानो के जवन 'रस'—ज्ञान भेंटाइल ऊ बे-मिसाल रहे। अपना सेवा का पेसा में घर-घर से कुछ पवनिहार 'पवनी' कहइलन। पवनी भिखारी हजाम 'राम नाम' के सहारा पवलन आ अपना साथे-साथ लाखन लोगन के सुनवलन "बेड़ा पार लगा दऽ राम" आ "पिअः राम नाम रस घोरी, ए मन, इहे अरज बा मोरी।" एह तरे "झुठहूँ राम नाम कहला से, भोजपुरी भासा गहला से" उनुका नाँव-गाँव के सोर होत गइल आ उनुके अस एक-बाली आदमी का चलते भोजपुरी के नाँव देसादेसी में उजागर होखे लागल—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अइसन भिखारी कइलन तमासा। फैलि गइल भोजपुरी भासा।"

'हिन्दी' कवनो खासे क्षेत्र के भाषा आ ओहिजे का सभ्यता-संस्कृति के वाहक ना रहि के जब सउँसे देस के संपर्क-भाषा का रूप में विकसित हो रहल बिआ, तब ब्रजी, अवधी, भोजपुरी, मगही आ मैथिली के आपन-आपन खूबी देखावल जरूरी हो गइल बा। स्वदेश का मातृभाषा-भएवध का गुलदस्ता में, जहाँ कतेक भाषा-संस्कृति के सुन्दर सुन्दर फूल सजत-सोभत बाड़न, भोजपुरिओ के हेहर-छेहर ना, बलुक पुष्ट रंग-रूप-गंध वाला फूल खोंसाए के चाहीं। सरस्वती का आराधना खातिर सजावल थार में भोजपुरी सु-भाव के फरिछ फर-फूल धराए के चाहीं, अनते से उपरावल बासी-तेवासी जिनिस ना। भोजपुरी साहित्य आ संगीत का साधकन का हाथे भोजपुरी महतारी के मुँह उजियार होइबे करी। जरूरत बा त बस अतने जे दुराव-बेगानापन का जगहा नगिचाहि आ अपनापन के हर घरी, हर ठहर पसरावल चलल जाउ जेहसे अपना पुरखा-पुरनियाँ के जगमगात नाँव-निसानी का अँजोरा हमनी के जाएल-पोअल निभरम बिचरल करिहें।

अब विश्वविद्यालयनो में भोजपुरी भाषा-साहित्य के पठन-पाठन होखे चलल। साहित्य अकादमी से मान्यतो लेवे के सवाल बा। एह से नीके तरे सोचे-समुझे के जरूरत बा जे अइसन कवनो हलुक बात ना होखे जवना से हमनी के हँसारो हो। आन-आन भाषा-साहित्य का पंगति में बइठे खातिर अपना आगा-पाछा देखि के अपना स्थान बनावे के होई। एह में आपने लूरि आ लछन से ईजति रही आ बढ़ी। तबो एगो बात ना बिसारे के चाहीं। भोजपुरी के मूलतः लोकभाषा वाला मरजाद-महातम बनवले रखला से लोक-कल्यान होखी। ई भाव-प्रेम के, नेह-छोह के भाषा ह, बनाव-फुसिलाव के ना। एह से अइसन कुछ ना होखे के चाहीं जे लोग एकरा ओरि से मुँह फेरत जाउ। आजु-काल्हु रचात ढेर-मानी साहित्य में से देखे के होई कि कतना ले अइसन बा जे लोगन का भावता, जेकरा के केहू दूसत नइखे। जब ले रउआ केकरो भ.इबि-सोहाइबि ना, तब ले रउरा ओरि से सभे मुँह फेरले रही। अइसन हालत में राउर रहल ना रहल बरोबर बा। एह से जरूरी बा जे अपना छाती पर हाथ धइ के जाँचल जाउ जे हम काहें नइखीं आउर केहू लेखा लोगन का भावत। जो सचहूँ राउर हठजोग लोगन का रूचत नइखे त गरगट जनि करवावल जाउ। दुनियाँ में आउरो ऊदम बा अपना के जिआवे-जनावे खातिर। भोजपुरी के बकसि दिआउ!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनइती

आदमी का तन-मन में अपना महतारी के का लागल बा ई भुलाएं के ना चाहीं। महतारी खाली जनमे ना देली, जिअइबो करेली। भुंइयाँ गिरते गोदी उठा लेली, अपना छाती से लगा लेली। करेजा के टुकड़ा खातिर उनुकर माया उमड़ेला। ममतामयी के दूध के धार जनमतुआ का मुंह के आहार बनेला। उनुकर पिआर अपना लाल के पुचकार में लखार होला। किलकारी वाला कंठ के तोतर उचार में मतारिए के पुकार रहेला। मतारी के दुलार बिना लइका-लइकी के पोस-पाल के कल्पना ना कइल जा सके।

अपना इहाँ एह सृष्टि के आधार, आदिशक्ति का रूप में, महतारी के महिमा अपार बतावल गइल बा। माता रूपी पृथ्वी से नाता बतावत बड़हीं विनम्रता से, गौरव मानत आपन परिचे अथर्व वेद के एगो ऋषि देतारे—

माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

मतलब, माई हमार भूंइ, हम धरती के पूत हईं। धरती माने जे धारन करे। हटावे-दुरदुरावे ना। चाहे कपार पर चढ़ा के राखे चाहे छाती से लगा के, चाहे तरहथी पर अलगा के। एह धरती का ओर तिकवला बिना अनरथ होता। हवा में उड़े का सबके घुमरी आवता। चकर-चाल में परल हाल बेहाल बा। थिराए के होखे त उतरल जाय भुंइयाँ। सपना छोड़ल जाय, निहारल जाय यथार्थ के। लिलारे लगावल जाय टीका अपना गाँव का माटी के। रतवन्ही के दवाई उघारे गोड़े धड़ात धरती के दूबि दीही। आपन नयन-जुड़ाँव चाहीं त चलीं हरिअरी का ओर।

अलगा-अलगा महतारी अछइतो, सउसे जगत में जिआ-जंतु के एके महतारी हमनी कीहाँ 'माता दाई' कहाली। ऊ 'माता दाई' कवनो राजमहल का कोठा-अटारी पर ना बिराजसु बलुक माँह-बधारी "निमियाँ के डाढ़ि मइया लावेली हिंड़ोलवा' आ 'झूलि-झूलि, मइया गावेली गीति"। 'निमियाँ' कइसन ? त "निमियाँ रे करुआइनि सीतल बतास बहे।" गाँव का कड़ुआ गंध के प्रभाव गुनकारी, जुड़कारी होला। कवनो अतर आ सेन्ट बनफूल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
का गमक अस मोहक ना हो सके। लइका का जनम का साध-सोहिला वाला अवसर के सोहर होखे चाहे बिआह के सगुन, भोजपुरी लोकगीतन मधे मइया (माता दाई) का गीतनि के झनकार अजबे होला।

यथार्थ से मतलब राखे खातिर भोजपुर जनपद का भूँइ के महतारी माने के होई आ तब 'भोजपुरी' के महतारी-भाषा कहहीं के परी। एह में उजुर-माजुर ना चाहीं। केकरो पहिल गुरु महतारिए होली। माई के दूध पी के बकार निकसेला। भोजपुरी बोली बोलनिहार करोड़न लोगन के बेगाना-बिराना ना, बलुक खास आपन, जाने-माने के गरज होखले पर एह भासा के मोल-महातम बुझाई। श्रेष्ठ भारतीय शब्द-कोश-निर्माता तेलुगू विद्वान वेंकट राव जी का बिचार से "भाषा से प्रेम बोलने वालों के प्रति प्रेम से ही संभव है"। ना जाने कब से भोजपुरी में एक से एक गूढ़ तत्त्व के बात कहात-सुनात आ रहल बा। 'भोज' गन के गुरु-उपरोहित महर्षि विश्वामित्र का जुग से आजुके जबाना ले ई क्षेत्र अपना जनवादी चिंतन के धार बरकरार रखले बा। कबीर दास से भिखारी ठाकुर ले अपना उचार में अप्रतिम बाड़न। रूढ़ि-परंपरा के छान्ह-बान्ह तूरत, बरिआर से बरिआर शासन के दाब ना मानत आ राज-दरबार का जोह-पूछ के आसरा ना राखत छूँछ, अलचार, अनबोलता जन-समूह के जगवनिहार, धार्मिक, राजनीतिक आ साहित्यिक नेतृत्व का पाछा एह क्षेत्र के सांस्कृतिक विरासत रहे।

मातादाई, महादेव आ महावीर के भजनिहार 'भोजपुर' राम के चरन-धूरि धइले बा। भूतभावन भोलानाथ के अपना हृदय-स्थल—काशीधाम—में बइठवले बा। एह जनपद में सगुन उठावत खा आजुओ घरे-घरे 'गउरा-पारबती' के गीत गवाला। 'आदि भवानी' आ 'ईसर महादेव' के गूँज ठहरे-ठहर सुनाला—जनम में, बिआह में, फगुआ-चइता में, जगि-उपनेत से हरवाही तक ले। अनका खातिर सरबस लुटवनिहार, अनाम गोत्र-कुल, जगत के जहर अपना कंठ तर जँतनिहार सर्वहारा श्रेष्ठ 'शिव' के महादेवत्व का ओर इहाँ के लोगन के आकर्षण सुभावतन होखल। जननायक 'राम जी' के सभ कार सज से सँपरवनिहार हनुमान जी का सेवा भाव के सराहना अपना अङना-दुआरे महावीरी झंडा खड़ा कइ के करत आइल हा भोजपुरिहा लोग। महिमामयी 'माता दाई' आ परमोपकारी महाबली हनुमान के भजन-भाव भरल भोजपुरी संस्कृति के रखपाल जरुरी बा। माता के नाता इआद रही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तबे तृष्वी-पुत्र आपन भाई-बंधु भोर ना परिहें। भोजपुरी आपसी प्रेम के भाषा बनी।

लोगन खातिर नेह-छोह राखल बहुते कठिन कला ह ई मैक्सिम गोर्की के अनुभव रहे। नगर-निवासी नया जुग के नेवतनिहारन के फरज बा जे ऊ बहुसंख्यक अपढ़ भा अछरकटू लोगन का आंखी का आगा अँजोर ले जासु। आम जनता से पुरहर संपर्क खातिर कल्याणी जनवाणी के आसिरबाद लेवहीं के परी। लोगन का का चाहीं ई जाने के होखे त लोगन का बोले-बूझे जोग चरचा चलावहीं के परी। लोगन का भावे जोग बात कहाए के चाहीं। तबे साहित्यकार के एतबार होई। एह घरी अधिकांश कंठ में तरास भा खटास के सवाद भरत जा रहल बा। एह से संजीवनी बूटी उपरावे खातिर नीक सूझ-बूझ वाला स्वयंसेवक समीर-कुमारन के जरूरत बा। लोक कल्याण खातिर समर्पित साहित्य-संस्कृति-सेवी के आवाह्न अनिवार्य बा। श्रद्धा के पात्र आज ढनढना रहल बा। नेह का सोत में रसे नइखे। होखो त का?

मातृभाषा के मोल-महातम जनला पर रचना निरुद्देश्य ना हो सके। सिरिजन लोक मंगल खातिर होखे के चाहीं। जन साधारण के समझनउग, सुरुचि-संस्कार बढ़वनिहार भाषा आ भाव-विचार के रचनन के उपरावल जाय। प्रकाशन का अलावे लोगन का बीच प्रचार-प्रसार खातिर पाठक-श्रोता के टोह-पता लगावत जगहे-जगह संगठन होखे। भोजपुरी साहित्य कुंठा-संत्रास का जगहा विसवास भरे, निरास जनि करे। अकास-बँवरि ना बनि के ई दूबि अस सँसरे-पसरे। लोगन का जोग बने, रोग कवो ना। खाली पइसे से अइसन कार ना हो सके। भोजपुरी भाव खातिर पुरहर अपनइती चाहीं। भोजपुरी कलह-कलकान के ना, मेल-मोहब्बत के वाहन बनो। एकरा खातिर दूसल छोड़ि के सराहे का कार में लागि जाए के काम बा। केकर मुँह टेढ़ बा ई ना, बलुक केकर बानी-बचन नीक बा ई परिखल जाय। फुहरई असत्य ह, फरिछई सत्य ह, शाश्वत ह। सूरुज आ जोन्हिनि के देखि के जरे के ना बलुक बरे के सवख जागो, भोग का जगहा त्याग-तप के साथ लागो। आपन अनकर-सभकर भलाई एही में बा। जहाँ कतो सराहे जोग बात-विचार लउके ओह ओर ललक के लकम लगावल जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खँड़हर बचाईं

ढहि रहल बा, ढिमिला रहल बा।

ऊ जे कबो ऊँच रहे, ठाढ़ रहे, बड़हीं अरमान से उठावल। नर-नारी के अड़ान रहे, खपड़पोस छपकाहूँ घर भा बुलंद आलीसान मकान रहे। जनाता एकर सँकाइल साँस-परान, एकरा मान-मरजाद का अलोप होते एह ठठरी अस ठाढ़ दुआर-दलान से नाता तूरिए के दम लीहीं।

जइसे देहि का कवनो अंग के उपयोग ना भइला से ऊ गते-गते बेकार-बे-मतलब हो जाला, ओइसहीं मरो-मकान के बूझे के चाहीं। जवना अङना-घरे झाड़-बहार ना होखे, दीआ-बाती ना बरे ऊ बादुर के बसेर हो जाला। नीचे मुसकोइल के ढेर लउकेला त ऊपर मुड़ेर पर से राति-बिराति उरुआ के 'हू'—'हू' वाला टेर सुनाला। बीचे चउकठ-केवारी, जङला-खिरिकी के ठाढ़े चबवनिहार दिअकन के कारगुजारी राते-दिन जारी रहेला।

आइल बानीं अपना राज का राजधानी से बहुत दूरि—सरजूजी का दहिना किनार पर बसल उत्तरप्रदेश के एगो नामी गाँव में, अंतरजनपदीय परिषद का जलसा में। पीच रोड से गाँव में पइसार के सुपट राह का बाद खड़ंजा ईंटा बिछावल खोरिओ-गली कुटकुर-फरिछ पा के मन अगरा जाता। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' के वैदिक मंत्र से अनुप्राणित डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के 'पृथिवी पुत्र' वाला मनसा पुरवनिहार विचारकन मध्ये पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी का कहले-चहले जनपदीय सांस्कृतिक-साहित्यिक चेतना के जवन सरूप लखार भइल ओकरा खातिर एहिजे के जमिन्दार कुलोद्भव आचार्य कुलदीप नारायण जी 'झड़प' के आभार हामी-सूमी मानीला। राति में बहरा से आइल-जवराइल साहित्य-सेवी लोगन के मान-सम्मान भइला का बाद बिहने दल निकसल बलिया जनपद के नगर 'लिच-कर' निरेखे। इतिहास-भूगोल में एक-रस रुचि रखनिहार झड़पजी के प्रसाद-गुन-संपन्न शांत रस से स्निग्ध संभाषण में एक से एक जानकारी मिलि रहल बा। एहिजा के पुरनिआँ लोगन के लोहा दूरि-दूरि ले मनाइल। वेमिसाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहादुरी के बखान कहनी अस लागता। गाँव में ऊँच कुरसी वाला, लमहर-चाकर पक्का के मकान बाड़न स। कवनो-कवनो त बहुते बुलंद लउकता। बाकी कवनो के बकुला का पाँखि अस चमकत बहरी के देवाल अब बदरंग मटिमइल हो गइल बा। किसिम-किसिम के कटाँव काटल पकिया लकड़ी के खम्हिआ वाला दलानि देखते बनतारी स, भलहीं आदमी-जन के उठ-बइठ ना होखे। कतने ऊँच मुँड़ेर वाला छतन का देवालन पर बर-पीपर लहलहा रहल बा। बड़का केवार का जंजीर में लटकल बीता भर के ताला बतावता जे ई कवनो खन्दानी बड़का आदमी के मकान ह जेकर सर-सवाङ बहरवाँसू बाड़न। कवनो फरदाँव अगवासा में गदहा लोटत लउकता त कवनो ऊँच चउतरा पर कूकुर आराम करत। दरजनन मकान एही तरे खाली आ उपेक्षित जनाता(न स। बे-मरम्मत कतनन के पलास्तर झरि रहल बा आ कतनन के देवाल खन्हरि रहल बा। बे मोआर के दरदखाह के होखो ? हवेख ना त देखरेख ना। नतीजा साफ झलकत बा। कतो परछतिन पर घासि के जंगल ठाढ़ हो गइल बा त कतो आगा से लभजान मोहड़ा का अलोता पाछा से कुकुर-लँघान हो रहल बा।

ओहोह ! बड़हीं मोह लागता, बाकी करिए का सकतानीं ? ठाढ़ मकानन के दीन-दसा पर केहू छोहात नइखे। केहू इम्हनी के जोह-फिकिर करनिहार रहित त कवो के भरल-पूरल पोखरापाटन हवेली एह तरे उजार-भूतखापड़ ना नूँ बनित ! सवचला पर इहे पता चलता कि हई मकान फलाना बाबू के ह जिनिकर फलाना-फलाना बेटा-नाति फलाना-फलाना पोस्ट पर फलाना-फलाना जगहा टिकल बाड़न। उहँवें आपन कोठिओ उठा लेले बाड़न लोग। बरिसन भइल एह मकानन के केवार खुलला।

केवार खुलला बिना, निकसार-पइसार ना रहला से बड़का से बड़का आगार बेकार हो रहल बा। भाव-प्रेम के आधार अनपूछ भइला से अलचार हो रहल बा। जे सहर-सहरात से दूर बा ओकर चलनसार नइखे; नाहीं त फेंकिओ दिहला पर गाँवन के एह बड़का खलिहा मकान के कर-किराया हजार से कम ना मिलित।

किराया ! रोपेया ! ! फायदा ! ! ! देसादेसी में पुरान ऐतिहासिक महत्त्व के मकानन, महल-मकबरा, मंदिर-मसजिद के सरकारी भा सामाजिक देखरेख होला। कुछ में देखनिहारन के पइसो लागेला। अपना इहाँ के कतने ऐतिहासिक चीन्हन के मेटे के ठेकान लागि गइल बा काहें कि उन्हनी के मङनिओं में देखनिहार हालाहाली नइखन लउकत। 'का फायदा ?' सोच-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निहार खाली व्यावसायिके बुद्धि वाला व्यक्ति ना, सँउसे समाजो, सरकारो हो रहल बा। वस खाली हमहीं भा हमरे अस जे केहू होखी ऊहे झट-से 'का फायदा ?' निठुरी मुँहें कढ़ा देबे के के कहो, सोचिओ ना सके। 'का फायदा ?' के सवाल करनिहार जो छनो भर ठाढ़ रहे तब त ओकर जवाब दिआ सके। आजु के नफा-घटी तकनिहार अकिलमंद से केहू ई पुछनिहार नइखे कि आखिर अतना भाग-दउड़ बा काहें खातिर ? अइसन धावा-धूपी कब ले चली ? कबो-कतो ठहरावो-बिसराम मेंटाई कि भरि जिनिगी चरखी भइल नाचते रहे के परी ? हमरा एह सवालन का उद्‌क से हो सकेला तनी ठेस लागे बाकी पानीदार खातिर छन भर ठहरे के, एगो सलाह सुने-गुने के मोका जरूरे मिली। 'काहें खातिर ?' का जवाब में ऊ बतलाई जे जिनिगी के जुझार में बरिआरे के गुजारा होला एह से हारा-हूँसी भरल एह दुनियां-दारी कारबार में ओकरा डेगार ना चलला से पछुआए के, कहीं के ना रहि जाए के अनेसा बा। हँ, 'हाली हाली' आ 'हाऊ-हाऊ' के उदबेग कब ले देहे लुतुकी लेसले रही एकर जवाब झट-से ना निकलि सके। 'कब ले ?' के मतलब साल, महीना चाहे दिन में ऊ लोग लगा सकेला जे नोकरी-चाकरी में बा, बाकी रोजिगरिहा लोग का देहे बल-बउसाव जब ले रहीं तब्ब ले ऊ लोग बइठी काहें ?

जाङर सोझ कब ले रही भला ई कइसे केहू बताई। एह तरे अगुअइला-पछुअइला का हुलास-हरास में उतरात-बूड़त जिनिगी में केहू के आँखि-कान खुलो त कइसे ? ओहदा, मकान, जर-जमीन, हाली-महाली, टी० भी०-टेलि-फोन, बैंक-बैलेंस सभ कुछ के अनघई जो जिनिगी के असली सुख के सवादे खातिर आदिमी के पनिगर-मेंही दिल-दिमाग के भोथरे बना दे त कवना काम के ? सोचे-समुझे के बस अतने त बा।

यूरोप-अमेरिका भा आन-आन देसन में आदमी पसु लेखा खाली तने के सुख का पाछा ना धावे मनो के सुख का जोह में निकसेला। ऊ नदी-नाला जंगल-झार लांघत ऊँच परबत का चोटी पर चढ़ि के बरफ में बिछिली खेलल चाहेला, देसादेसी के खेह फांकत, अजंता-एलोरा के खोह झांकत, भा हरप्पा-मोहन-जो-दड़ो, नालंदा-सारनाथ के ढूह धाङत चलेला। ऊ लैटिन, ग्रीक, फारसी, पश्तो, संस्कृत के तह उघारत हजारन-हजार बरिस अगते से चलि आवत भाषाई संबंध झलकावत देसादेसी पसरल, अलग-थलग बसल, भिन्न-भिन्न जाति-धरम में बँटाइल आजु के आदमिन का बीचे पुरान नाता ढूँढ़े के जुगुति जोहल हा। कतहूँ के सभ्यता का देहि में ओकर अतीत पीठि होला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्तमान छाती त आँखि का रूप में भविष्य। पीठि, छाती आ आँखि का साथहीं सवतुक देहि ठाढ़ रहेला, कवनो के अलगा हटावल ना जा सके। केहू लाख चाहो, परंपरा से चलि आवत संस्कार झट-से छूटि ना पावे। ठीक से सोचला-समुझला पर जे बाउर जनाय, जेकरा के ढोवला से विकास का जगहा ह्रास होखे, ओकरा के धरे-सम्हारे के सवाले नइखे। बाकी जेह से अपना-अनका-सभका मिठास मिले, हुलास जागे ऊ पुरनका भाव-विचार, बात-बेवहार के छोड़त चलला से जिनिगी के सरस धारा नीरस तपत-तवांत रेत तर जँतात जा रहल बा।

पीठि पृष्ठभूमि ह मेरुदंड के, आधार ह। मेरुदंड के महत्त्व बतावे के ना परी। मेरुदंड सोझ ना रही, टाँठ ना रही त किकुरल-निहुरल काया के कवन गति होखी? टोअला-छुअला पर हाड़ हाड़ जनाउ भलहीं, रीढ़ि के दूसे के ना ह। ओकरा के आपन ठोस आधार बूझि के हिफाजत से राखे के चाहीं। पुरान मर-मकान, घर-दुआर, बाग-बगइचा, हीत-नाता, बाप-दादा के अवज्ञा-उपेक्षा से उझंख-उदास ना बनावे के ह। उचित देखरेख, आवाजाही, सेवा-टहल से बरकरार-कारगर राखल आपन धरम जाने के चाहीं। आजु ढाहे के, उजारे के, तूरे के, बिसारे के बेमारी चलल बा। किला लेखा ठाढ़ पुरनका मकान ढहि जाता त ओह जगहा तेलहन छिटाता। जे ओकर पहिल रूप देखले बा ओकरा मोह लागता, आहि आवता। बाबा-दादा के खून-पसेना से जोरल-बनावल स्मारक के चिन्हासिओ नइखे रहे पावत। तपेसवा से अरजल बुढ़ऊ के ज्ञान आ विद्या के कवनो हवेख नइखे। नाती-पूत पँजरा बइठत नइखन, ठहरत नइखन, सटत नइखन। जोमे अँइठल रहतारन। सहज सुलभ अनुभव-कूप के भाठि के, दूर-दराज से अवनिहार जल-कल के उमेदि पर लोग उतान बा।

गाँवन में बे मरो-मरम्मत के अबहीं ले ठाढ़ मकानन में पाठशाला चलावल जा सकेला, पुस्तकालय खोलल जा सकेला, कल्यान केन्द्र बनावल जा सकेला। गाँव का बहरा पोखरा का पींड़ि पर उठावल प्राइमरी स्कूल के उजरल छान्हि एह से नइखे छवाये पावत कि ऊ सरकार का जिम्मे बा, लोग का एह से का दरकार? लइका-मास्टर सुखरुख में माँह-मैदाना आ फेंड़-रूख तर बइठतारन। बरखा में 'रेनी डे' मनावल आम बात हो गइल बा। सार्वजनिक हवेख खातिर खँड़हर भइल चाहत मकानन के लीहल-दीहल जा सकेला। एकरा खातिर जरूरत बा त बस तनिका भर सही सोचाहट के। ओही तरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरकारी-गैरसरकारी नोकरी से रिटायर होके गाँवें बइठल आदमिन के उपयोग होखे लागी त ऊ लोग ठाढ़ रही। बेगर काम के, उमंग-उत्साह ना रहि सके। तनिका भर आदर-मान, भाव-प्रेम, सेवा-सतकार भेंटात रही त साठ-पैंसठ के कहो आजु काल्हु पचहतरो ले टाँठ लउकनिहार कतने आदमी ढहे ना पइहें। ई लोग अगते अस बुलंद भले मत रहि गइल होखे, बाकी खँड़हरातो बहुत काम के बा। पर-पंचाइत के भार चाहे लइकन के कुछ पढ़ावे-सिखावे के कार इहाँ सभे के सँउपल जा सकेला। खँड़हर होत मकान का लगे जा के ओकर कवनो ना कवनो तरे हवेख खातिर सही निरेख-परेख होखे के चाहीं। बुढ़ऊ लोग कवना काम के बा ई उहाँ सभे का पँजरा गइला से, भरि मुँह बोलला-बतिअवला से बुझाई। उहाँ सभे जीअत इतिहास बानीं, परतिआवल सिद्धांत बानीं, सही भविष्यवक्ता बानीं जेकरा नीक-जबून, राह-कुराह के अँखिआन बा। बहुत कुछ उहाँ सभे से अइसन मिली जे आन तरे ना भेंटाई—'किताब में मिली ना जे इहाँ जबानी बा।' उहाँ सभे अपना आँखी देखल आ अपना काने सुनल अइसन-अइसन आदमिन के संस्मरन सुनाइबि, घटनन के बरनन करबि जे फिनु कबो भेंटाई ना। लिखइला-छपइला बिना पुरान-पुरान स्मृतिअनि के, कहनिअनके, ढहत-ढिमिलात खँड़हर लेखा मटिआमेट हो जाए के ठेंकान लागल बा।

नया मर-मकान के जोगाड़ जब लागी त लागी, तब ले अगते से ठाढ़ रीढ़ि का हाड़ अस खँड़हरो के लेवार-छाप कइ के, उजरे-ढहे से बचा के रहे जोग बनावल जा सकेला। अपना घर-दुआर, कुल-खन्दान, गाँव-नगर, सभ्यता-संस्कार, भाषा-साहित्य खातिर जो तनिको मोह होखे त सँपरे भर छोह जरूर कइल जाय।

आन ठहर अपना पुरुखा-पुरनिआँ का नाँव के सुमिरनी बनावल जाला बाकी हमनी कीहाँ पुजनउग पुरुखन का किरती-कथा के कवनो खोजे-खबर नइखे लिआत। फिल्म ऐक्टर-ऐक्ट्रेस चाहे क्रिकेट के खिलाड़िन के नाँव हर घरी जबाने पर रहता बाकी अपना दादा-परदादा के नाँव जाने के जरूरत साइते-संजोगे केहू का बुझात होखे। पितर-नेवतनिओं में अब मुअला-मतारी-आजी-दादी के नाँव ना लिआ पाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जूझ जहालत से

जवरे रहे के सवख सभ करम करा देलस। सुभावतन ना, पेंचे कतने ऊदम कपारे चढ़ावे के परल एह सवख का पाछा। 'जवर' का मोहे 'जवार' के माने लगलीं, अपना अङना से अधिका अनका दुआर के जाने लगलीं। गोड़ अइसना चकर पर रहे जे जेनिएँ नेह-छोह के इचिको ढरकांव पावे, डगरल चले। चारो ओर अपनइती के पसराव लउके। 'नैनन' के सनेह 'बैनन' के सरबोर कइले रहे। खुदगरजी के 'चैन' खोजाउ त कइसे ?

'जवर' के साध आजुओ वा, वाकी ओइसन ना रहे पावल। 'हीक' भलहीं 'हूक' नइखे बनल अब ले आ ना 'प्रयासें' 'पछतावा', वाकी करेजा के पोढ़ त करहीं के परल। दिल-दिमाग दू जगे ना रहल। एक दिन जवरे बइठल। दूनो में बतकही बरोबरी के भइल, ना दिल के पलरा भारी आ ना दिमाग के दरजा ऊंछ। बुधि बेवकूफी के लुलुअवली-खोवसली ना, जे भइल से निमने भइल बतवली। हँ, पहिल जानी रतिजागा करे के ठनली त दोसरो जानी सुसुताए—सूते चलली। दिली दिमाग भा दिमागी दिल का जगरम के भार सम्हारे के परल।

सुनले रहीं कविवर 'सोमेश' के कहनाम—'ई दियरिया हमार, रात भर अन्हरिया से मार करेले'। हमार कान खड़ा भइल। सोचलीं वाह रे 'हमार दियरिया'। 'मार करेले' कमाल के उक्ति बा। एकरा आगा सभ कहल-सुनल बासी, वेसवाद आ वेरथ। कहलीं कलम से—कछावल छोड़ के परी। 'दियरी' के कमाल तें अनका हाथे जइसे देखवले ओही तरे असमंजस के जाब हटावत हमरो मन के हाल तोरा सुनावे के होई। लेहाज के नांव मुँहचोरी आ परहेज के कमजोरी धराए के ठेकान लागल बा।

अन्हरिया से मार करत दियरिया हालाहाली पटकाले ना। राति भर जरत-बरत ऊ भिनुसार वोलाइए के जुड़ाले। कलम के करेज इतना कड़ेर बा कहि ना सकीं। एकरा गोहराँव करे के बा, 'धावऽ, धावऽ' के आवाज उठावे के बा। मारू-जुझारू बाजा बजावे के बा; मतलब थथमा के छान तूरि के चारो ओर पसरत जहालत से जूझ करे के बा।

मधुमाछी फूलन से रस पा के जगत के मधु देले। ऊ कतो बन्हा ना, उन्मुक्त रहेले। बाकी कबो काल ओकरो अझुरहटि लागि जाला। ओकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक फूल से दोसरा लगे जाए का राह में अपना लोभ-लार का तार से किला-बंदी कइले मकड़ा महाराज बइठल रहेले। मधुमाछी के पाँखि कवनो-कवनो तरे मकड़जाल से उबार पावेले। अपना उबरे का उतजोग में उद्यमी मधु-माछी मायाबी मकड़ा के मनसा ना पुराए देलसि, उनुका माया-महल के मटिआमेट कइए घललसि। ओइसहीं, बाहर-भीतर के अपना नगद अनुभव का आँचि में पका के गुनगाँहक लोगन का आगा परोसनिहार कलम के आपन रछेआ अपने करे के परी अगल-बगल, ऊपर-नीचे पसरावल जाल से। ई जाल मकड़जाल ना, बलुक मगरमच्छ का मुँह अस कराल काल ह। ई मानि के आपन उबार सोचे के बा जे हम घरिआर का पेट में परल बानीं। एहिजा अन्हार बा। एकरा आगा आँखि के चलनसार नइखे। ई जहालत के घार ह। फरिछ भिनुसार के कहो, हलुक बतासो इहँवां मुरुछार बा; साँस के फाँस लागल बा।

"ज्ञान दूर कुछ, क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की?
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडंबना है जीवन की"

स्व० जयशंकर 'प्रसाद' जी के ई कहनाम ठीक रहल होई केहू खातिर, बाकी एह घरी हामाँमूमाँ का कुछ दोसरे सूझता। आपन ज्ञान अनते ना, अपनहीं लगे बा, 'क्रियो-कलाप' 'भिन्न' नइखे। बाकी झङाठ फेंड़ होखे के के कहो 'मन-कामना' के त कोंपड़ो ना फूटे पावल अपना अँजरा-पँजरा का चेतना-शून्य, भावना-शून्य, सूखल, कठेठ अँकड़उर माटी का दाब से। महँगमोला अमोला झुरा रहल बा, थाला में पानी डलनिहार गमला के चूल्हा बनावल चाहतारे। 'तजिए ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही' के सलाह गोसाईं तुलसी दासजी देले बानीं सही कै, बाकी 'जाके प्रिय न राम-बैदेही' अइसन-तइसन गर धइले बाड़न! केंकड़ा लोग का चाङुर में परल कचूमर निकल रहल बा। पिंड छोड़ावल महा मोसकिल भइल बा। जीए खातिर जनाता जे देहि झारहीं के परी।

'परिवार' व्यक्ति का संरक्षण, संपोषण खातिर बड़हन अलम कहाला। बाकी जहाँ 'एक अचरज हम अइसन देखलीं, पंडुक पिआसल जाय' वाला हाल होखे तहाँ उच्चाकांक्षा के तरसवाला आदमी का 'असी कोस के पोखरा, चउरासी कोस के घाट' का तरे ओस का पसार से भला तृप्ति होई? 'बाबूजी' कहिहें 'पूरुब' त कुलदीपक लोग कही 'पच्छिम'। 'निउलाइट' के नौनिहाल काँच कसइली लोग जरिगराह पुरनका पीपर अस अभिभावक का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुँह पर सटासट दुलत्ती झारतारन। सुनता के सीत जाता के देरे के साथ बाबड़तोड़ जवाब आ बहसाबहसी का आगा तँवा जाता। बात-बात में 'आपन मुँह देखें' के हुकुम देनिहार अर्द्धांगिनी समझदार मरद के सोगहग होखहीं नइखी देत। देहि के रोंआँ-रोंआँ नोचनिहार परिवार खातिर पोसुआ भेंड़ा बनल रहला से व्यक्तित्व के विकास भइल आ कुछ बाकी बा!

टोला-परोस का बतकही के का कहीं? 'आप सुखी सँवसार सुखी' का सिद्धांत के प्रयोगशाला पंच हमरे घरे पवले बा। 'रउआ कवना बात के तकलीफ बा?' सवाल करनिहार जवाब सुने खातिर तइयार नइखन। सरकारी, सहकारी आ खानगी करजा से उठावल मकान का चलते हमरो गनती कलकाता के 'झाँगर' जबरे होखते करी चाहे हम लाख सफाई देत रहीं इंड़तूर होल्डिंग टैक्स के आ सूदि का दर के। नोकरी का जुआठि तरे रोजे-रोज दस बजे धावत जात-खा भा साँझे हाँफत हर-हेंगा का बरध अस घरे लवटत देखि के आन ठहर के पुरान परिचित लोग भविष्य में हमार तीन-तीन, चार-चार 'प्रोमोशन' खतिर अगवढ़ बधाई देला बेगर दम ना ली। नोकरी में अब लजत नइखे, तन-मन टूटि रहल बा, ई भला ऊ लोग मानो? ओह लोगन का नजरी हमार तीन बरिस से विरा 'इन्क्रिमेण्ट' वाला ओहदा मधु का छाता लेखा लउकता त एकर कवन इलाज बा?

सामाजिक भइल जीव के काल अगते ना जनात रहे। 'जवन पूत दरबारी बनले, तवन पूत भनसारी परले' पुरान कहाउति ह। गाँव-घर कें चाहे हितई-नतई के, एगो ना एगो आदमी हर हफ्ते हमरा हाल-चाल के जायजा लेवे आइले करेले। नया बहाली भा पुरान नोकरी में बदली खातिर पैरवी पहुँचावल ओह लोग के खास गरज होला। हजारन बेर बता चुकल बानीं जे एह इलिम में हमरा के 'फेल' समुझीं सभे, बाकी काहें के केहू मानो? गरजे बउराइल लोगन के बढ़ंती बा। सजी स्वागत-सत्कार बेकार हो जाता अइसन आदमी के उपकार ना कइला का चलते। अतिथि देवतन का काने ई कठोर बात पइसते नइखे जे उहाँ सभे का अन्हरघोड़ अस दउरला से देस के दुरदासा हो रहल बा। गरीब-गुरबा त कुछ होसो-हवास रखले बाड़े, ढेर फेर सुचिताहे लोगन का बा। ऊ लोग आग-पाछ सोचते नइखे। नतीजा होता जे ना अपने चैन से बइठता लोग आ ना आने केहू के कुछ घरी निफिकिर छोड़ता। एह 'नारद-मोह' के मोचन हरिये का हाथे बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक जने उड़ंतू रहले। पाँखि चलावत-चलावत पहुँचले पहाड़ का तरिआनी में। देखले जे करिआ, ऊजर, नीला, बैंगनी वगैरह रंगन का मेलजोल वाला पर गिरल बा। सुघर-सुभेख बने के, ईजतिदार कहाए के सुगम उपाइ उनुका सूझि गइल। चट से चमकदार पर उठा के अपना पाँखि में खोंसि लिहले। उनुका 'मोर' बनि गइला के सोर हो गइल। तोंता, मैना हारिल, गवरइया, सभे सिहात रहे उनुका 'सरूप' पर। बड़का भयवध काग लोग त उनुका भाग से जरि के आउरो झाँवर हो गइल रहे। तमासा देखत रहे झुरमुट में बइठल एगो छोटहन बुलबुल आ मरम बूझति रहे आम का डाढ़ी छपकलि कोइलरि। जेठ के मिजाज हेठ करत एक दिन चढ़ल असाढ़। पहाड़ पर मोर-मोरनी जवराए लगले। सूगा-चिरईं लोगन का ललकारा पर 'मोर' बनल कउओ महराज का ओह अखाड़ा में उतरे के परल। गड़-गड़-तड़-तड़ का साथे पूरब ओर ले घनघोर घटा उठल। पुरनका मोर लोग ढूरे लागल। मोर का पाछा मोरनी घिरनई हो गइली। बाकी 'नवका मोर' महोदय के गोड़ ना उठे। उनुकर पाँखिये ना पसरे। आँखिये ना खुले। चकचवन्हीं लागि गइलहिन बुझला। मेघ गरजत रहल, मोरनी-मोर थिरकत रहले। मोर बनल कउआजी भारी फजिहति में परले। मुँह-करखी लागते खोंसल पाँखि नोचि के गते भगले कवनो कनरा-खोंढ़रा ओर।

हमरा जाने ऊ कउआ काबिले तारीफ रहे। आखिरस लाज लगलहिस त बेचारा के। सीना तानि के, ताल ठोकत, गाल से देवाल उड़ावत, मुँहजोरी करत ऊ ना नूं चलल? बाकी ओकर अनुयायी लोगन मधे कुछ कलाकार, साहित्यकार चाहे समाज बदले के ठीका लेनिहार के चिन्हार देखीं कब ले होता; असली आ नकली मोर का अँखिआन खातिर असाढ़ एहिजा कहिआ आवता।

नचदेखवा लोगन के का पुछले बानीं? इहाँ सभे का कपारे भाँग चढ़ल बा। सँउसे दुनियाँ नाचते नजर आवता। ई लोग जो आँखि खोलित, अपना माथ के घुमरी हटा पाइत तब नूं अ-गात्र के रोक-टोक होइत। लोचन बे-खुलले आलोचना ना हो सके। नकली नचनियाँ त मलाई-मिठाई चिखा-चिखा के आपन मान बनवलहीं रही, माल सहोथते चली। एह से निसा तूरे भर खटाई उपरावल जहालत से जूझ खातिर जरूरी जनाता। अब आम का बदला इमिली रोपे के काम बा। बाहर के जहालत हटावे के गरज होखे त अपना जेहन में ई बात बइठावे के परी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नींनि नइखे परत

नीनि नइखे परत ।
काहें ?
एह से कि आँखि मुँदाते नइखे ।
ह-ह, ई कवनो बात में बात भइल ?

हँसीं मत, तह में पइसीं । ई बतकही अइसन बा जे राउरो नीनि जनि छीनि लेइ । का नीनि नइखे परत खइला बिना ? उहूँ; खाली पेट त फोंफ काटता । निनियाँ पेटभरुए का आँवक में नइखे आवति । धराति नइखे, पराइल रहतिआ । आदमी का साथे-साथ जिआ-जंतु का सुभाव में 'आहार निद्रा' के अवश्यंभाविता बतावल गइल बा । गजराज से गदहा ले आ गीध से गवरइया ले, सूँढ़ सँकोरले, टाँग पसरले, पाँखि समेटले, हीक भर हरारत मेटावतारे, बाकी हाइ रे हाँमा-सूमाँ, हाइ-हाइ कइला का मारे हमनी खातिर महमूलिओ चीज महङमोला हो गइल, जवन कुकुरो-सियार का मोअसर बा ।

धइल-बटोरल त बहुत गइल, बाकी कवना काम के ? कठिन कमाई करत ई ना बुझाइल रहे जे 'सहज सुख' छिना जाई । नीनि के 'सुख' कहल गइल बा । 'रतिया हरेलू हो बेटी ! बाबा सुख रे निनियाँ' कन्यादान का बेरा गवात गीत करेजा काढ़ि लेला । घर-बर के जोह का फिकिरी बेटी के बाप का ना भूखि-पियास लागे, ना नीनि परे । कवना गाँवे-नगरे जोड़-जुगत जोगाड़ लागी, ई के जानेला ? बाकी एहिजा ई बात ना रहे । गंतव्य त अगतहीं से जानल रहे—बहरा से रिटायर होके अपना गाँव पर जाए के । खरउरिया-दुपहरिया अनते अङजला का बाद बाप-दादा के गाड़ल खरई तर के जुड़छाँह हवेखे खातिर हिया हहरत रहे ।

नकल के चलाना अइसन चलल जे असलो अलोप हो गइल । देखादेखी भेंड़ियाधसान में हारा-हूँसी लागल बा । बीच गाँव में ऊँच डीह पर गोतिहारो का समिलाती घर में रहला में हेठी होइत । आपन खुदसर, खास मकान चाहीं । खास पहचान चाहीं । 'आम' से 'खास' के हस्ती फरिआवल जरूरी जनाइल । आजादी आउर बातन में ढिठार भइल होखे भा ना, एगो में त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
खूबे भइल। हमरा इहाँ के आदमिन के आदत आजाद हो गइल। जवन काम गुलामी में गँव-गोचर से निबुकि जात रहे, ऊ अब असङ्गाह हो चलल। फेहू केकरो कहला में ना रहल। जे 'बेकहल' ना हो सकल से 'बैकवर्ड' बुझाइल। 'फारवर्ड' आ 'ऐडभान्स' कहाए खातिर दू डेग आगा बढ़ि के गाँव का बहरा सड़क का किनारा मकान बनावल जरूरी जनाइल। 'ग्रेचुइटी' आ 'जी० पी० फंड' के तोड़ा अनकर जमीनि, ईंटा, पथल आ लकड़ी-लोहा में समा गइल। राजमिस्त्री लोग राजरोग (टी० बी०) अस देहि के खून सोखि लीहल। केवारी-खिरिकी, पर-पलस्तर आ घर-भोज खातिर थोरे 'पिनसिनिओ' बेंचे के परल, तब जा के मन के गूतल कवनो-कवनो तरे परगट भइल हा।

प्रेमचन्द जी लिखले बानीं कि आदमी जीए ना, सपना देखेला। जगता भर में जे सपना लउकेला ऊ आँखि मुँदइला पर के सपना अस ना होखे। नींनि में त हाथी से रगेदात, नदी का बाढ़ि में बूड़त-उतरात, चोर परल घर में 'धावऽ धावऽ' के गोहराँव लगावे में कंठ का जँतइला से अकुलात आ आन-आन अफदरा में उजबुजात जीव के जवालो भोगे के परेला, बाकी राह चलत, चाह पीअत, पान चभुलावत, खाली रंगीने तसवीर लउकेला, गोड़ तर के ना, बलुक पुरहर लमहरा के। ई 'जागृति-स्वप्न', 'निद्रा-स्वप्न' अस परवस, संयोगाधीन ना ह। 'सर्वमात्मवशं सुखम्' के सूक्ति के मिठास सभ के त ना, बाकी मनसूबा गढ़निहार के गरसले रहेला। मोह से मीठ के जनम ह कि मीठ से मोह के, राम जानसु। मोह छोड़वले ना छूटे, तिताई गरे ना उतरे। कल्पना के सुख यथार्थ का दुख पर ओहार तनले रहो त बड़ नीक। 'होस' के हटावे खातिर 'बेहोस' करे के एक से एक जुगुति उपरावल गइल। गाँजा-भाँग, दारू-अफीम लगाइत किसिम-किसिम के दवाई आ सूई तर परि जाला 'भिजनरी' चसमा का सोझा 'बेखुदी' खोलावे में।

सहर का हर-हर पट-पट से अउँजाइल परान गाँव का ओर ललकल एह उमेद में कि निकहन मनफेरवन होई आ जिनिगी के बाकी दिन तनिका निफिकिरी में कटी। कुछ दिन ले जनइबो कइल एही सोचाहट का मोताबिक। साँझे-बिहने दुआर पर बइठकी जमल। बाबू-भइया, जे आवे सभ के चाह चलावल जाय। सहरी खातिर-बात में चाह पतराखन रहबे कइल हा, देहातो में खरमेटाँव आ पन-पिआड़ के ई नीक अलम हो चलल। राह-बाट में चाह-पान के दोकान 'सुरसरि सम सभकर हितकारी', हरारत हरनिहार भइल बा।

३६ : घर के गूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव में चारे-पाँच महीना बीतत निफिकिरी के कुहेस फाटे लागल। कपूरी गमक गाएब हो गइल। खेत-बधारि का हरिअरी से जिउजुड़ांव का जगहा जरनि उपटता। हहइनी का लाफि से असमान धह-धह करता। आरि-डँड़ार के काँट-कूस गोड़ गड़ो भा ना, आदमी के बात-बेवहार हाड़ छेदि देता। मुँह के इआरी से वढ़ि के हतेआरी दोसर कुछ ना रहल। सोझा 'हँ-हँ' आ अन्ह-अलोत में 'हुँ:' ई आम रेवाज हो गइल। कहला-कइला के कवनो कियामे नइखे। अगते आन खातिर जान दिआत रहल हा। जरत-मरत रहल हा लोग कवो सभ का जीए खातिर, अब त बस अपने-आप के हफन धुनाता।

एगो कहाउति ह जे बाघ राखेला वन आ वन राखेला बाघ। बाघ के डर हमरा कबो रहल भा ना, बकरी से दुख हरमेसे भेंटाइल। चीक का हाथे घिसिआवल जात खँसी-बकरिन के हारि देखि के, उन्हनी के मेमिआइल-अललाइल सुनि के करेज कुँहुके लागेला। का त ई हमार कमजोरी ह ! ह त का करीं, केहू आजु ले बतावल ना। गाँव में कबो-काल जिमिदार का हाथे कवनो असामी डँड़ात-बन्हात भा लात-जूता खात रहे। अब जिमिदार नइखन, बाकी जिमिदारी अगरी-कगरी सगरो पसरल जाता। हवेली में बइठल मलिकार हाला-हाली लाचार ना होत रहले हा। उनुकर बोली साइते सुनात रहे। बाकी एह घरी के बिना पोटरी-लगान चुकवनिहार सरदार लोग हाट-बजार में सात-पाँच इयार लेले ठाट से मुआइना करे निकसता। बीरा के बीरा पान चभाता तबो तपावन में तर भइल जीभि से बास छितराइए जाता। आँखि के लाली केहू के सुघराई, सुचिताई के लीलि घालल चाहेले। तबे त हर हफ्ते केकरो ईजति, केकरो धन पर छापा परला के हाला होता।

कतनो कुबेरा सूतीं, जागे के बानि सेकराहहीं के ह। एक दिन झुल-फुलाते निकसि गइल रहीं लोटा लेले मैदान का ओरि। सिवान पर जात-जात देखत का हईं जे दस-बारह गो मेहरारू माथ पर बड़का गो तसला लेले अहरा के पींड़ि धइले चलल आ रहल बाड़ी स। दूध-दही के अउल-पउल हमरा वह में वा अबहीं ले ई जानि के एक दिन घर भर के दारा खिआ देवे के मन कइल। 'ई दहीवाली कहवाँ के हई स ?' पूछत मातर दतुअनि खातिर बबूर के गाँछ ठेठावत एगो लइकाहे चरवाह बोलल—'ई अहिरिनि ना हई स जी।' 'काहें भाई, हम गाँव के नाँव पूछतानीं त तूं जाति नकारे लगल ऽ। दूध-दही के रोजिगार कवनो खासे जाति के पास अब ना रहल ई हमहूँ जानतानीं।'

नीनि नइखे परत : ३७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रउआ धोखा हो गइल बा बुझला । माथ पर दही-दूध ना ह दारू ह ।' 'दारू'? हमार मुँह बवा गइल । अतना भोरे ई देसी दारू कहाँ से कहाँ जाता एकर हाल हमरा अस तीस बरिस बाद गाँव का गोंएड़ा गोड़ डलनिहार का काने गते-गते डलात गइल ।

अगते गाँवन में पीए के काम चुपका चलत रहे । हमरा गाँवे एगो वूढ़-ठूढ़ वेमरिहा अस आदमी राती-खा एकाध चूकड़ ढारे अपना घर का वंद कोठारी में। एगो अधेड़ रोजिगरिहो महीना-दू-महीना पर घरी भर राति गइला सड़की पर आपन बदसाही बतावत चले, गाँव का भारी से भारी आदमी खातिर हलुक-पातर कढ़ावत । लइकै-सेयाने सभे हँसे ओकरा बउरइला पर । भट्ठी का ओसारा में आजुओ तरह-तरह के तराना आ हाव-भाव सुने-देखे के मिलि जाला ओह भाई लोगन का गोल में जेकर बापे-दादा समाज के पराछित उठावत अइले हा । 'मोहि ले, मोहि ले, मोहि ले रे, मोहिनी अलबेली' पर ताल तुरनिहार बुढ़ऊ फलाना बँसफोर अपना चेल्हिकपन में दूरि-दूरि ले कुलाँच भरसु । वगली-सेन्ह मारे में ओस्ताद रहले । बाँस का कइनि अस एह पतरछिउँका जवान के देखला पर ओहू समे काहें दो ढेरि खीसि ना बरत रहे । अपना जान के रछेआ खातिर वहुत भइल त एगो काता डाँड़े खोंसि लेले । हरिना अस छड़पत, आरि-डँड़ार फानत, नदी-नारा लाँघत ई धइले ना धरात होइहें । भादो का अन्हरिया आ माघ का हाड़ हिलवनिहार ठार अधरतिया में अधिका चलत होइहें ।

बाकी एह घरी... ..? कहे के परी ? अन्हरिआ-अजोरिआ से कवनो फरक नइखे परे के । गड़-गड़-तड़-तड़ का साथे दुआरे वरिआति लागि जात-। कतो-कतो त जीप के कहो ट्रको ठाढ़ रहता । बड़का-बड़का पावर के चोर बत्ती, गेसबत्ती वारि के, लेफ्ट-राइट करत, हथियार से लैस, तीस-चालिस आदमी खम-खम खाड़ हो जातारे । देरी ना होखे के चाहीं । ठाइँ-ठाइँ चारि टाँगा परल ना कि वड़का केवार चरचरा के मुँह बा देलसि । ओना-कोना के खनतलासी लिआता । आहि-कराह नइखे होखे दिआत । खिदाइल दलिद्दर अस हाली-हाली अङना-घर के बेकति कवनो अँतरा-दोवा में लुकाइल, सटकल वाड़ी । जहाँ केहू टोकल-रोकल कि दरे पर टन बोलि गइल । धनो गइल, जानो गइल । आजु एह गाँवें त काल्हु ओह गावें डकइती भइल हा सुनत-सुनत कान पाकि गइल । अब खीसि वरे लागल । केकरा पर ? थाना-पुलिस कहाँ-कहाँ ले धाई ? आरे ईहे कहीं कि उहाँ सभे के परसेन्टेज अबहीं कम बा, दालि में सुबहित नूनो बरोबर ना । नाहीं त ......।

कहाला जे कोइला का खान में कबो-कबो हीरा भेंटा जाला । त का एहू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जबून में से कुछ नीमन निकसी ? निकलि सकेला। कंचन से काया के कमनीय बनावे का फेर से नूं अतना कुफुत्ति-किलफित अङ्जे के परता ? पाँचो थान गहना चढ़े खातिर पचीस हजार चाहीं। दुइओ-चारि गो बनारसी भा निकहन साड़ी भइल त अढ़ाई-तीन हजार अउरी धरीं। एह तरे एगो देहि कारन कतने परानन पर गरहन लागि जाता। ई अतहतह बन होखे के चाहीं। चानी के कटाव काटल कनफूल आ सोना के पानी चढ़ावल झुमका आ गरे बनावटी मोतिन का माला से मन भरे के सीखे के चाहीं। देखे के होखे त 'आकाशवाणी' का 'कालयंत्र' का जरिये कण्व-आश्रम में पहुँचे के प्रयास ना बलुक अपने आँखी छोटानागपुर आ छत्तीसगढ़ का वनवासी जनजातिन के फरिछनई, चिकनई आ सुघरई नीके तरे निहारे के बउपाव चाहीं। फेर त का पूछे के ? जहाँ भलमानुस लोग जानल जे एह घरे 'सोना' नइखे स्टेनलेस आ फुनहा का जगहा अलमुनिआँ ढवढबाता आ रेसम-साटन ना बलुक तांत का तागा से गतर तोपात बा त भरसक एने का ओर डेग डालल ऊ लोग डाँड़े बूझी।

ई त हाल भइल बहरी के बाघ-सिंह के। देवाल तर के लागन घुइसन के बड़का-बड़का मूसन के का पुछले बानीं ? बिलरिओ इन्हनी से डेरातिआ। ई कतो ना कतो लागले रहतारे स। केकरो रतेराती जोन्हरी के बालि टुङा जाता। केकरो लागल धान काटि लिआता। बोआता केकरो आ ढोवाता केकरो। सियारन के पइसार किला आ कुटिया सगरो बा। मूस त छोटहने के खूँब बना देतारन स।

परसों डाँक-डाँक क के केहू फेंकरे लागल। छत पर चढ़लीं त पूरब ओर लोही धावत लउकल। 'आहि-आहि' के आवाज दखिन से आवत रहे।......बो बियोग से रोवत रहली। हमरा घरे जानल लोग जे कवनो के कुछ भइल त ना। थोरे घरी का गुपचुप का बाद टनकारे सुनाइल जे भइँसि चोरी चलि गइल बिआ। 'कहँवाँ बन्हले रहल हा लोग पूछे का रहिलही पता चलल जे माटी का देवाल में खोल कइ के चोर घरका भीतर ताला में बन कइल राति-बिआन भइल भइँसि निकालि ले गइले हा स। अब बताईं, 'तुम डाल-डाल हम पात-पात।'

सोच में परल बहरा निकसलीं फर-फराकित खातिर। दू-चारि गो नाँव धइ-धइ के जोर-जोर से अपना हिकमत के हुमाच भरत रहे केहू। "फलनवाँ का करिहें ? चिलनवां के देखि लेबि" मुँह से कहत, गोड़ से धूरि उचिलावत भोरहरिआ स्कूल का ओर लाइकन के गोल चलल आवत रहे। मास्टर साहेब लोगन के छूँछे नांव धरे में हामाँ-सूमा के त जिभिए अइँठा जाइति। नाँव का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथे 'बाबू' आ टाइटिल जबरे 'जी' के लगवले रघुनाथ बाबू भा ठाकुर जी का बारे में तब सपनो में ना बतिआ सकत रहे केहू। बाकी आजु-काल्हु ? हाल मत पूछीं। अपना हरवाहो-चरवाह के नांव ओतना हाली से केहू ना कढ़ा सके जतना झटका से ओह दिन गुरुदेव लोगन के नांव धरात सुनाइल। नोनिहालन के मुँह तावत राह पार करे के परत। एही ढजिअ.वन लोग खातिर नूं नव गो अधामति रटावे के परता। बाघ-सिंह, हुँड़ार-सियार भ मूसो-बिलार के हरल बिसरल जा सकता, बाकिर अपना आँखि का अँजोर लोग का हाथे करेज-खँखोर ? बाप रे बाप, ई सहाए जोग नइखे। हमनी कीहीं अइसन खजाना नइखे गाड़ल जे छलिहदले ना ओराई। जहवां के धरती टूटला तिनिए सइ बरिस भइल होखे, ओह अमेरिका के परतर हमार धरती ना करी।

दोसरकी लड़ाई में बेगर जान माल के हानि उठवले जे जगत-सेठ बनि के बइठल ओह बाप के पूत झबराह कूकुर अस केस लेले बग्मड़ भेस बनवले हजारन कोस ओहटा के खेह ओढ़त फिरतारें त फिरे दीं। निरीह भोला-भाला चोला के पतवखा में डलनिहार का जाएल-पोएल के मति गराइल होखे त ओकर दवाई समय दीही बाकी सदिअन से तपत-दबॉल, रोग-सोग भोगत, हमरा मयगर-दयगर मातृभूमि के संतति निरुद्देश्यता के भटकाव भँवरजाल का ओर बढ़ल चलल जाई, ई बहुते बाउर बा। विछलाहरि पर के धाका से अबोध सुकवार का सम्हार खातिर बरिआर बाँहि के सहार चाहीं।

राति साइँ-साइँ करतिआ। हर-हेंगा के टूटल बरध आ कटनी-दँवरी के थाकल-थुराईल मरदे-मेहरारू पटरा अस परल बाड़ें। जे तोसक-गलइचा, रजाईं-दोलाई का तरे बा सेकर त हाले नइखे पूछे के। केहू जरला का मारे, केहू पेट भरला का चलते जागत नइखे। पुस्त दर पुस्त से दुख के आदत बनावे वाला का सोचे के सावँग कहां आ धनसुत का संग्रह का सवखे चूर का चिंतन से का मतलब ? बजरुहा बुद्धि के छूदुर सवारथ का बाढ़ि में परमारथ के पुरुसारथ दहि-बहि गइल का दो। अनका अस हमरा कहहीं नइखे आवत, काहें कि सभ का अस हमरा रहहीं ना आइल। आपन-आपन भाग। एह अमावस का राति में बुझला सभे सूतल बा। सूतो।

खिरिकी का फँफरा महें झलफुलात एगो जोन्ही लउकतिआ। बुझाता जइसे हमरे के ताकति होखे। हमरो आँखि नइखे लागति। बोरा-टाट से फाँक मूँदे के काहें दो मन नइखे करत। खटिया से उठि के ललटेनिओं के मधिम करे में असकति लागता। आजु जरते रहो राति भर। छोटहने बाती बड़हिस, जब ले तेल रही तबे ले नूं बरी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेटा के नइहर

निबंध के नावें सुनत पंच भड़किहें। केहू पूछी—"एं, ई का सुनाइल ?" केहू कही, "हई देखबऽ बउराइल !" तिसरका होसियार बोली—"छपहीं में गलती भइल होखी। 'टी' का जगहा 'टा' हो गइल बा। अइसन होते रहेला। एकरे के नू कहल जाला 'प्रिंटर्स डेभिल'। आरे ई का, एक से एक बलंडर हो जाला छपखाना में। ई त किताब में बा जे भीतर पइसनिहारे का भेंटाई। अचंभो त बड़का-बड़का अखबारन का ऊपरी पाना पर कबो-कबो लउकि जाला लाम-चाकर अछरन का मथेला मधे। 'मुख्य मंत्री' खातिर 'मुख्य संत्री' कतेक बेरि छपाइल होखी।

बाकी लालबुझक्कड़ के लक्कड़ इहँवां ना लागी, अकिला फूआ के अकिल कवनो काम ना करी। सात अछर आ दस मात्रा का एह मथेला में छपटूट नइखे। फेरु से पढ़ीं—बे-टा-के-न-इ-ह-र। कोंहनाईं—खिसिआईं जनि। धिरिजा धरीं। फरिआ के कहला से अझुरहटि ना रही। तनी दिल-दिमाग काबू में राखीं।

जुग-जवाना जनतंत्र के बा। एह घरी चारू ओर समता के सोर सुनाता। गरीबी हटावे में घरी-पहर के देरिओ ही सकेला बाकी चिरुकी कटावे में का लागे के रहल हा ? आजु-काल्हु भेख-रेख, चाल-ढाल, पहिरन-ओढ़न, सवख-सिङार में तनी ओहटा से देखला पर चिन्हार हालाहाली नइखे होत। लइका-लइकी के भेद हटावे के कोसिस हर जगे हो रहल बा। बबुआ बबुनी के, आ बबुनी बबुआ के बरोबरी करे खातिर कुछुओ उठा नइखी राखत। चलल-फिरल, पेन्हल-ओढ़ल, बोलल-बतिआवल त बात ह सभ्यता के जे बाहरी वतुस कहाले बाकी संस्कृति त भितरिया भाव नू ह ? तनी एनिओं ताकल जाउ।

बेटा का जनम लिहला पर थरिया बाजेला। बाप-महतारी के करेजा पोरसा भर ऊँच हो जाला। बेटी का जनमते का त धरती बीता भर दबि जाली। बाकी ई ऊँच-खाल बरोबर होखे में अब अनेसा मत बूझीं। बाप-महतारी का कपार पर के भार बनकर पाती कुँआर बेटी पनरह-सोरह के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहाँ आजु-काल्हु बीसो-बाइस बरिस ले घर में बइठल रहतु, कवनो हरज ना। बाकी बी० ए० पास कइके बेटा अपने दुआर पर हलुक हो जातारे। बाबू-भइया से उनुकर बइठल बरदास नइखे होत। बरिसन ले बेटी का जोड़-जुगुत घर-बर जोहात रहो, पर बेटा के नोकरी मिले में महीनों भर के देरी ओगन का अखड़े लागता। भार बनल बेटी जइसे उतारि फेंकल जातारी ओइसहीं हलुक होखल बेटो कमाए खातिर उदबेगल-उचिलावल जातारे।

बेटी-बहिनि का जिनिगी के मिलान एक दिन अचके सूझल। धनहर खेत में बीआ कबरात रहे। पलुहल-फफसल, सुगापंखी रंग के रेसम का सूत अस सघन लमछर धान के बीआ बूनी-बेयार का हिलकोरा में झूमत रहे। बड़हीं जतन से जोंतल-बोअल, खाद-पानी पटावल बीअड़ के छोट-छोट टोपरन में बनिहार लागल रहन स। केहू ठेहुनिआइ के तावड़-तोड़ दूनो हाथ चलावत रहे त केहू अँटिया बान्हत रहे। केहू माथ पर भरल खँचिया-खँचोली उठवले दोसरा टोपरा का ओर हाली-हाली डेग बढ़ावत रहे जहँवा काछा बन्हले बनिहारिनि छपर-छपर करत रही स। 'बीअड़' आ 'रोपहथ' के हाल देखि के मन बेहाल हो गइल। अनेयासे मुँह से 'ओह' निकसि गइल। अपना समाज का ओरि नजरि परल त पवलीं जे 'नइहर' रूपी बीअड़' में पोसल-पालल धान के बीअड़ अस 'धीआ' 'ससुरा' रूपी 'रोपहथ' में भेजल जातारी। एक जगे से उजारि के दोसरा जगे बसावल जातारी। हाय रे किसमति! गहुम-बूँट अस बेटा एके खेत में, अपने परिवार में, रसल-बसल रहतारे आ खून के नाता तूरि के बेटी के आन ठहर हटावल जाता।

ओह घरी ना जनलीं जे बेटा आ भाई-भतीज के ई हाल होखी कबो। कवनो ना कवनो तरे लइकी के बर त खोजि लिआता बाकी लइका के नोकरी ढूँढ़त-ढूँढ़त छरपट छूटि जाता। छीर-सागर के अनंत भगवान भलहीं धरिये में भेंटा जासु बाकी चाकरी के चनरमा खातिर बेकार नवहिन के सउँसे अकास-पताल छाने के परता। कवनो नया घर में कइसहूँ जोगाड़ लागे के होता त केहू ई नइखे देखत जे अतना दूरि-दराज, जंगल-झाड़-पहाड़ पार कइ के एकलउत के जाये दिआउ कि ना। बड़हीं धरछना से पोसल पूत उड़ीसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र आ नेफा-आसाम का ओर पेयान करतारे—आपन चाहे अपना परिवार का पेट कारन।

बिआह-गवन कइ के बेटी के ससुरा भेजल जाला। रसम कहीं चाहे भाव-परेम, तीनि से तेरह दिन का भीतर कलेवा बउँरहत लेले नइहर के पेठवनियाँ पहुँचेले। सासु-ननदि-गोतिनी, गोतिया-देयाद, टोल-परोस सभे देखेला कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
दुलहिनियाँ कीहाँ से का-का आइल हा। बउरहँत का जवरहीं नइहर से दुलनियाँ के भाई-भतीजा आवेले। महीना छव महीना का भीतरे बेटी बोला लिहल जाली। कबो-कवो त दूइ से चारि दिन का भीतर अहुर-बहुर हो जोला। बाकी बहरवाँसू बेटा के का होता? गाँव-घर छोड़ला का बाद बेचारू बहरा पहुँचतारे। नोकरी-चाकरी के अलम भेंटा गइला पर पहिल खोज उनुके घरे के होता. घर के आउर सवाङन का ना। ऊहे चीठी लिखतारे गाँव पर। ओह में आपन नीके तरे पहुँचला के दू अछर टाँकि के जे आन समाचार लिखाता ओह में उनुका अपना से अधिका परिवारे का मतलब के बात रहता। गाँवे पाती पहुँचतिआ। बाँचि के ध दिआता। दू दिन, चारि दिन, कवो पनरहिअनो का बाद नेह के रसम निबाहे भर जवाब जाता। सवा महीना का बाद बहरा से चीठी आ मनीआडर आगा-पाछा आवता। घर भर के जीव में जीव परता। अब से हर महीना एके चीजु के जोह-फिकिर रहता—बहरा से मनीआडर के। साल, दू साल, चारि साल पर अगते कलकतिहा सिपाही लोग अपना गाँव के धूरि धङिहें। अपना जवरे मेहरारू-लइका के ना राखि के ऊ लोग अकसरे परिवार कारन परदेस अगोरत रहल हा। कवनो काजे परोजने घरें पहुँची लोग। सहती का समे नोकरिहा एह घरी से अधिका फँफराह रहलन हा। अब ऊ बात नइखे। नोकरी धइला का बाद बरिस लागत-लागत नवही के अपना सहूलियत खातिर 'फेमिली' ले आवे के परता; सेहू अङरेजी माने-मतलब का मोताबिक, मेहरारू आ एगो-दूगो बाल-बाचा। बस, एकरा बाद त गाँव से उनुकर उहे नाता हो जाता जवन उनुका बिआहल बहिनि, भतीजी भा फूफू के अपना नइहर से रहेला।

मेहरारू-लइका का गाँवे रहता भर में कतनो दूरि के नोकरिहा गाँवे आवत जात रहेले, अधिका ना त कम-से कम साल में एको दू बेरि। फगुआ, दसहरा भा छठि का परब में चाहे बिआहे-सादी भा जिअनी-मुअनी का मोका पर सर-सवाङ जवराले। ओह घरी घर-दुआर भरल लागेला। बुझाला जे जिनिगी में कवनो सवाद बा। साइंस कहेला कि हरेक चलत (नाचत) चीज का साथे दूगो परबल खिंचाव रहेला—एगो बहरा भागे के आ दोसर भीतर पइसे के। अङरेजी में एकरे के 'सेंट्रीफिउगलफोर्स' आ 'सेंट्रीपीटल फोर्स' कहल जाला। उधिआए के आ सङोराए के सवख का माँह सभे बा। दिन-राति चलत साँसन का जवरे दिल का भीतर अइसने कुछ उखमंज उठत रहेला। घर में परल-परल जवन मन कबो कहेला कि आङन के छेदवाली छड़पि के बहरी निकसल जाउ ऊहे मन बहरा धावत-धूरत कबो ईहो चाहेला कि लवटल जाउ अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुँइजबरा का भीतर। राग आ बिराग, लगाव आ अलगाव एह दूनो का बहाव में कतो एक ठहर समदीना ठहराव कठिन ह। 'फेमिली' ले के जवन पूत 'बहरा' गइले ऊ सचहूँ बहरा गइले, कम से कम अपना गाँव से। अब उनुकर अड़ान परदेसे के ठहर-ठेकान में बा। गाँव के लोग उनुका के अपना में नइखे गनत। तबे त कबो काल छुट्टी-छपाटी में गाँवें अइला पर संछेपे में साहेब-सलामत का बाद नोकरिहा से निठुरी मुँहें केहू ना केहू पूछिए देता— "कब ले जाये के होखी ?" जे तनी तवर-तरीका जानता ऊ कहता—"कब ले रहे के होखी ?" सोचत रहीं जे बिआहल बेटी आ बहरवाँसू बेटा, दूनो, बरोबर हो गइले गाँव नगर खातिर जहवाँ पर-पाहुन अस उनुका आवे के ठहरल। बाकी ना, दूनो बरोबर नइखन। ई माने के परी जे एक तरे बेटा के बेसी दुरगति बा बेटी से। भला मजाल बा जे नइहर में ससुरइतिनि बेटी से केहू ई पूछि बइठे कि कब ले जइबू ? बात के मजाक बूझि के हँसि देउ केहू भलहीं, पर जिनिका काने अइसन सवाल परल होखी ऊहे जनिहें। छनाक-दे लागल सबद के कलक कागज पर नइखे उतरि सकत।

दूर देस के त बाते दोसर बा, निअरो-पास के नोकरिहा भा रोजिगरिहा खातिर गाँव के दरसन दूलम हो रहल बा। जिनि जाना आन ठहर अपना दुखरा-धान्हा में लगले ऊ अब अपना गाँव खातिर बिराना हो गइले। दस-दस बारह-बारह बरिस ले अनते रहि के जिनिका गाँवें आवे के बेंवत लागता तिनि का देखतारे ? गाँव का रहे का हो गइल ? जवना धूरि-माटी के ऊ अंग रहले उहे अब उनुका के चीन्हत नइखे, कटावन लागता। खोरी में चलला पर कूकुर भूँकतारन स। इनरा-पोखरा पर नया-नोहर बेटी-पतोहि चिहार-चिहा के ताकतारी। आरी-खांवा चलबीधर लइका टोकि देतारसन 'कहाँ घर ह?' भड़कल सियार अस डेग ना आगा परता ना पाछा। हालाहाली चिन्हार खातिर कवनो पुरान परिचित चेहरा के जोह होता। ईहे ह बहरा के कमाई। घर छोड़ला के मतलब गाँव छूटल हो गइल। पहिल बाते-बेवहार जब ना रहल तब उनुका एहिजा एको छन टिकल जबुर जनाता। जब रसे ना त सब का ? बेचारू बहरवाँसू कवनो जरूरी कार निबुका के परदेस लवटि आवतारे। इहँवाँ अइला पर फिनु अपना चरखा-सूत में अझुरा जातारे। उनुका परिवार का परला-हरला पर गाँव-घर के लोग ना, एहिजे के रहवइया कामे आवतारे। कहल बा 'जे लग ह से सग ह'। सगा-सहोदर से भेंटे नइखे होत। केहू ईर घाट त केहू मीर घाट धइले बा। बंबई, कलकत्ता, डिब्रूगढ़, दारजिलिङ सब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बो एके हूक बा—गांव छूटि गइल ! घरे जुगुत रहित त अँकवारी बान्हल जाइत !

पुरानो बेटी-बहिनि ससुरा जात खा नइहर का बियोग में पूका फारेली। डोली भा गाड़ी जस-जस आगा बढ़ल जाले उनुकर जनम के गांव छूटल जाला आ आँखिन के लोर सूखत जाला। ससुरा का अँयड़ा-गोंयड़ा अइला पर त रागल-कानल बरजिते ह। आपन गांव छोड़त-खा का मरद-मानुस के मोह ना लागे ? कठकरेजी के बात छोड़ीं, मयगर के आँखि भरि-भरि आवेली स। बाकी ऊ करो त का ? बेटी-बहिनि के भलहीं 'बाबू हो बाबू', 'भइया हो भइया' के गोहरांव हीक भर लगावे के हक होखे पर ओकरा नइखे। जनम-भूँइ से जबरन बनते घिचात-खा ऊ मुँह नइखे खोलि सकत, फेंकरे के के कहो, सुसुकहूँ नइखे पावत। एहिजो बेटा के हक-पद बेटी का बरोबर ना रहल।

'नइहर' 'माई घर' के कहल जाला। 'गरज परला पर गदहो के बाप कहे के परेला' ई उकुति सभे सुनले होखी बाकी 'गदही के माई' कहे के कहाउति अब ले नइखे गढ़ाइलि। 'बाप' आ 'महतारी' का महिमा में बाढ़ि-घाटि हमार उदेस नइखे। हमरा अतने कहे के बा जे 'मातृ-गृह' छोड़ि के सभी लइकी त 'श्वशुरालय' पवली स बाकी सभे नोकरिहा लइकन के अधि-वास पर आपन आवास ना बनल। ढेरि जने क्वाटर भा किराया का मकान में रहेले जहँवां कबीरदास के चेता : । कबो भोर ना परे—'रहना नहीं देस बिराना है।' सरकारी सुबिधा भा ना होती से किछु भाई सहर-सहरात में आपन मकान बनाइ हल बाड़ का उनुका मेहरारुन का 'ससुरा' अस रागात्मक संबंध ओह में भेंटाता ? टुटे गांव-घर का नजरि में अइसन आदमी खातिर मोह ना द्रोह लउके लागता। 'फलनवां के अब बाप-दादा के थेह से का मतलब ?' कहत जेकरा राहे चले के लूरि ना सेहू मेहना मारे लागल।

बेटी बुढ़ाली, बाकी करनी ना बुढ़ा। परब-तेवहार पर नइहर से उनुका भिरी पाहुर-पुरिया थोर भा ढेरि जरूरे पहुँची। पर बहरा बसल अइसन कमासुत कमे होइहन जिनिका लगे गांव से घीव, अँचार भा आउर कवनो घराऊँ जिनिस जात होखी। रेलि आ बस के भारा अतना ना बढ़ि गइल बा जे दूर-दराज से कवनो हलुक नोकरिहा भा टुटपुँजिया रोजिगरिहा के साधन-सवखे गांव पर मेहरारू-लइकन के ले के आवे के अब सवाले ना रहल। आम-जामुनि, काँकरि-फूँट, सुरुका चिउरा, मूकी-चिउरी, गादा-कचरी, रस-होरहा ओकरा भा ओकरा लइका-मेहरारू के नेवान नइखे होत। बहरा से रोपेआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवो, चीजु-बतुस आवो बाकी बबुआ के बाल-बाचा आवो एकर खखन कमे बाप-पीती में लउकता। माई के जिउवा गाई अस, ओह बेचारी के चलित त सइ-सइ बिगहा के जोंत अधिया-बँटइया लगा के लोग नोकरी खातिर एने-ओने छिछिआत ना फिरित।

नइहर का नाँव पर बेटी जीएले-मूएले। ऊ दुख सहि सकेले बाकी नइहर के गिला-सिकाइ ति ना सुनि के। ऊ नइहर के बहुत बड़ अलम बूझेले। बेटी नइहर में अपने ना आवे, बोलावल जाले। आपन सावङ देखि के बहरवांसू बेटा घरे अइवो करेले त दू दिन चारि दिन खातिर। छुट्टी बढ़ावे के होला त बेमारी कछावे के परेला, डाक्टर का हाथ में नोटि धरावे के होला। बेटी के ससुरा से निआर आवेला, एके हाली में दिन ना धरा जा। बाप-महतारी का सावङ से सुदिन सोधाला। बेटा के नोकरी पर वे बोलहटे जाये के परेला। एह में खरवांस ना लागे। आगा-पाछा भा दहिने-बाँवें सुकवा-चनरमा ना निहारल जासु। उनुका अइलो-गइलो पर अङना-दुअरा अँकवार-भेंट ना होखे। जिनिका रहला-गइला से हरख-विसमाद के कवनो हलचले ना बुझाइल, ऊ पर-पाहुन अस हो गइले त का? ससुरइतिनि बेटी खातिर गाँव अवहीं ले किछु रसम-रेवाज रखले बा बाकी बहरवांसू बेटा के सामाजिक पूछ नइखे।

जब ले जिअका के अलम खेती-गिरहती रहल हा, बेटा लोगन ले गाँव ना छूटल हा। गाँवें में उठल-बइठल, जागल-सूतल, चलल-फिरल, बोलल-बतिआवल, नीक-जबून होखल हा। गाँव का राई-रत्ती से चीन्हा-परिचे रहल हा। अब ऊ बात ना रहि गइल। पेंचे भा सवखे, हँसि के भा रोइ के गाँव छोड़ि के सहर का ओर लोग धावल जा रहल बा। सभे कि सफियाना काम चाहीं, धूरि ओढ़े के भरसक केकरो मन नइखे। एह हालत में गाँव के जनम-भूँइ धनहर का 'ओअड़' खेते अस रही जहँवां से लइकन के पाम्ही आवत-आवत पढ़गिति भा पेसा खातिर परदेसे पहुँचावे के उतजोग होत रही। 'रोपहथ' खेत अस नोकरी भा रोजिगार का जगह के कवनो कियाम ना होखे। सरकारी नोकरी में त तीनि-तीनि बरिस पर बदली होत रहेले। पुरान ठहर छोड़ि के अनचीन्ह जगह जाये के मन नाहिये करे पर सेवक का सुख कहँवां? तीस-पैंतिस साल का बहरवार नोकरी का वाद जिनिगी में ऊ लजति नइखे रहति जे गाँव-घर का ओर पिनसिनिहा लोग डेग बढ़ाओ। गाँव से उनुकर देहज नाता टूटि गइल रहता। परिवार का, गोतिहारो का, घर टोल-परोस का कलह-काँट में अझुराए के वउसाव अव ना रहल। तबो एगो बात सोचनउग बा। घर-दुआर, भाई-बंधु, जर-जजाति में आपन-अनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बिचार भलहीं होखो बाकी गांव त सभ के होला। गांव के नदी-नारा, रूख-बिरिछ, चिरईं-चुरुङ, देवी-देवता, सतीदाई, बर्हम बाबा, सभ के साझ होले। एह सामाजिक-सांस्कृतिक संपत्ति में बाँट-बखरा के सवाल दायर करे खातिर कवनो कचहरी अब ले नइखें खुललि। अपना कुल-खंदान, गोतिया-देयाद से मन तींत भइलो पर गाँव के हवा-पानी आ माटी के इयादि बेटी के नइहर अस बहरवाँसू बेटा खातिर सभदीना मीठे लागेले। आदमी अपना आचरन से कतनो माहुर घोरो, 'करुराइनि निमियाँ' 'सीतल बतास' बहइबे करी। जुड़छाँह खातिर आईं, देखीं।

बेटा का बियाह में बर परिछे का बेरा ना जाने कब से गवात ई गीति आजुओ गवाले—

> निमियाँ रे करुआइनि, सीतल बतास बहे हो
> ताहि तर ठाढ़ कवन दुलहा, नयना से नीर झरे हो
> किया तोर आजन-बाजन थोर भइले,
> साजन धूमिल भइले हो ?
> नाहिं मोर आजन-बाजन थोर भइले
> साजन धूमिल भइले हो
> लाढ़िल भइया हो.......भइया, सेहू ना जवरे अइले हो

बेचारी लइका के महतारी आ बहिनि एह गीति के मरम बूझि के आँचर का खूँट से आपन आँखि पोंछतारी। बहरवाँसू 'फलाना भइया' के अपना छोट भाई का बरिआति में सामिल होखे के सवख केकरो से कम थोरे रहल हा ? बाकी करसु त का ? छुट्टिए ना मिललि।

अब ले बिअहल बेटिए परबस रहली हा जिनिका खातिर अपना बूढ़-पुरनियाँ बाप-महतारी का आखिरी बेरा भेंट-मुलकात मोसकिल रहल हा। आजु-काल्हु अनते कलम, बनूक आ मसीन चलावत बेटो का माई-बाप का चलती बेरी सिरहाना-गोड़तारी ठाढ़ होखे के बेंवत नइखे। गाँव पर से तार आवता। गाँवें आइ के पीपर का डाढ़ी बान्हल घंट में कतनो पानी देसु बाकी बाबू-माई का मुँह में आगि ना डलला के हूक मेटत नइखे। सराध-करम सँपरला का बाद फिनु सहर धराता। गाँव का मोह-माया के जेंवरि त माई-बाबू का चिरारिये पर जरि गईल। ना ओकर जोह-फिकिर केहू करता आ ना ऊहे अब गाँव का ओर कवनो खिचाव पावता। हँ, गाहे-बेगाहे एगो-दूगो तसवीरि ओकरा आगा सपना अस ठाढ़ हो जातारी स। फगुआ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन ओकर मन उड़ल रहता। पिंजड़ा के पंछी पाँखि पीटि के आपन बेचैनी बतावेला बाकी ऊ त ईहो नइखे कइ सकत। एगो लमहर साँस भर खींचि के आन कार में लागि जाता। रहि-रहि के अपना दुआर पर फगुआ के गोल का बीचे अपना हाथे अबीर-मसाला चलवला के सुरता आवता। ओकरा आँखि तर अन्हार छा जाता। ओइसहीं चइत में घाँटो सुने खातिर, सावन-भादो में फफाइल नदी का पाट पर झिझिरी खेले खातिर, छठि के घाट अगोरे खातिर, सँकराति के तिलवा तूरे खातिर, होरहा निकिआवे खातिर, कल्हुआड़े रस पीए खातिर; कराह के खँखोरी खाए खातिर परदेसी पूत के हिया हहरि जाता। राउरकेला, भिलाई में ठाढ़ हो के तकला पर 'भोजपुर' लउकते नइखे। अपना देसे में आदमी परदेसी बनि गइल!

ई त ठीक ना भइल। अमेरिका-रूस कतनो लोभावन लागो बाकी साटी अपना माटी में भारते के भूँइ। एह से एहिजा के उझंख होत बगइचा के सोहावन बनावे के परी। जरूरत बा त बस अतने जे सहरइतिनि जिनिगी का जवरे गाँउझ नाता लगावल जाउ, दूनो में छत्तिस के ना, तिरसठ के मेल बइठावल जाउ; ठीक ओइसहीं जइसे ससुरइतिनि बेटी का दूनो बाँहि का भीतर नइहर-सासुर के नेह समेटल रहेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के हबेख :
तुलसीदास का हाथें

भोजपुरी परिवार, पटना के त्रयमासिक मुखपत्र 'अंजोर' का बारे में जाहि घरी चारो ओर से सराहना के सनेस आवे लागल ओही बेरा भोज-पुरिए सिवाना का भीतर के एगो नामी-गरामी विद्वान राजनैतिक महा-पुरुष (अब दिवंगत) के चउलि आ ठोना भरल बोलिओ सुनाइल जे एह भाषा के कबो कवनो मसहूर कबि-लेखक आपन माध्यम त बनवलहीं नइखन; हँ, मनवहलाव खातिर ई चीज (पत्रिका) अच्छा बा। भोजपुरी के पुरान साहित्य के खोज आ नया साहित्य के सिरिजन का साध वाली पत्रिका के मामूली मनबहलाव के साधन मानि के उहाँ के एह कामना से 'अंजोर' के सहायक संपादक कहात हमार त मने झुझुआ गइल। तब त अतना अधामत्ति से भोजपुरी भाषा-साहित्य के पत्रिका निकासल अनेरे नू रहे? बाकी महा-पंडित राहुल सांकृत्यायन आ संपादकाचार्य पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी अस दूगो बरिआर बाँहि का हाथे पुरहर प्रोत्साहन के असीसो भेंटाइल जेह से 'अंजोर' के दिनोदिन टहकार बनावे के उतजोग होत चलल।

ई बात आज से अठाइस साल अगते के ह। बाकी अब सोचीला जे का ओह महापुरुष के बात साँच ना रहे। पहिले के कबि रहले कालिदास, चंद-बरदाई, भूषण, बिहारी आ केशवदास निअन राजदरबार में आसन पवनिहार, राजा का भावे जोग भाव-भाषा के रचना सुनवनिहार। एही तरे उत्तर बिहार के राजा 'सिवसिंह रूपनाराएन' आ 'लखिमादेवी रानी' का चहले विद्यापतिओ ठाकुर के भासा-भनिति 'पदावली' के जस दूजि का चान लेखा ऊगल आ बढ़त-पसरत गइल। अइसे तकला पर नू लउकी जे भोजपुरी भाषा के अपना रचना के माध्यम बनावे के गरज कवनो दरबार तक पहुँचल कवि का ना रहल। दरबार में कविता के सुननिहार-सरहनिहार भेंटात रहले। एह राज-दरबान के उड़सला का बाद अमीर-उमरा, सेठ-साहुकार आ लोगबाग से उगाहल नेग-नेवछावर (चन्दा) का बल पर मुशायरा आ कवि-सम्मेलन होखे लागल। अइसना मजमा लायक कबिओ ऊसर भइले आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फुरमाइस पर रोचक चीजो सुनावे के चलाना चलल। आन लोगन के गुद-गुदावे दुलरावे खातिर (चाहे ऊ लोग अगते के राजा-महाराजा होखस चाहे आजु-काल्हु के कवि-सम्मेलन के संयोजक आ श्रोता) कविताई के कला एगो पेसा का रूप में जे अपनावल ओही लोग के कबि मानल गइल। बाकी अइ-सनो आदमी रहले एह भारत-भूँइ पर, खासकर उत्तरी आर्यावर्त्त का, जे आजु हिन्दी प्रदेश कहाता, सभ से लमहर-चाकर पसारा वाला, सभ से अधिका लोगन के बसेर वाला भूभाग में जहँवां फुरमाइस पर कविता बनावे वाला पंडित-कवि का अलावे अपने मन से, अपना व्यग्रता से, अपना हूक से, अपना कर्त्तव्य-बंध से राजा-परजा, धनिक-गरीब, गृहस्थ-संन्यासी, मरदे-मेहरारू सभे के सुनावे खातिर दोहा-चउपाई, कवित्त-सवइया, पद आ गीत रचनिहार संत-महात्मा का रुप में इहवां बिराजमान। ओह लोग के कुछ बतावे के सिखावे के, चेतावे के, 'आ समाज के सही राह देखावे के उदबेग रहे। कबीर आ तुलसी अइसन संत जब बनारस में बइठि के अपना आसपास का, पूरब-पच्छिम का लोगन का समुझे खातिर 'बानी' आ 'मानस' के रचना करे लगले तब उनुका कबिताई में अवधी आ भोजपुरी के प्रयोग सहजे, सुभावतने हो गइल। कबीर आ तुलसी के जनम-भूँइ के फरिअउअल होखे भा ना, करम-भूँइ त दूनो महात्मन के ओही क्षेत्र में रहे जहवाँ कबो माँह बधारी पीपर तर पावल अपना बोध के बांटे खातिर सिद्धार्थ गौतम ओह घरी का लोकभाषा—पाली प्राकृत—के अपनवले रहले।

मगध क्षेत्र में स्थापित बिहार का राजधानी पटना में टिकल-बसल कुछ भोजपुरिहा साहित्यिक-सांस्कृतिक सेवानुरागिअन के भोजपुरी अस जीअत-जानदार आ जोरदार मातृभाषा के संरक्षण आ विकास खातिर एगो हार्दिक हलुक प्रयास के भारी निहँसावे वाला बोल ओह महानुभाव के रहे जें 'वेदन' के जते ना अनुसंधानकर्त्ता कहासु, गनेस के महातम बतावत ब्राह्मण के सावधान करसु, समाजवाद के सराहत देश-सेवा का बल पर शिक्षामंत्री, मुख्य मंत्री होत-होत राज्यपाल के गद्दी तक के हवेख कइल। उहाँ के जाने के चाहत रहे जे 'भोजपुरी' भी ऊहे हईं जे बंगला, उड़िया, असमी, मराठी, गुजराती वगैरह ह लोग। ऊ लोग 'बोली' से 'भाषा' होत-होत 'राष्ट्रभाषा' होखे, कवनो हरज ना, बाकी 'भोजपुरी' के नांव केहू जनि लेउ ना त 'हिन्दी' के नाव डूबि जाई अइसनके कर्णधार लोगन के मान्यता रहे। एही तरे एक बेर कवनो कोना से आवाज उठल रहे कि पाठ्यक्रम से 'रामचरित मानस' के अंश हटा देबे के चाहीं। आजु दूरदर्शन के धारावाहिक 'रामायण' का चलते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रामचरित मानस' के कुछ पढ़वाइन के अनुगूँज दर्शक-श्रोता लोगन के बदना निहाल कइ रहल बा ई बतावे के ना होई। 'राम' अस मर्यादा-पुरुषोत्तम के, सगुन रूप में भगवान के एह धरती पर अवतार के बखान आ उनुकर गुनगान का उदेस से 'नाना पुरान-निगमागम' के भरपूर जानकार प्रकांड पंडित गोस्वामी तुलसीदास जी का 'भासा' के 'भनिति भदेस' के माध्यम अपनावे के परल रहे। उहाँकें 'रामचरित मानस' का साथे-साथ आउर कृतिअनि में अइसन-अइसन शब्दन के प्रयोग अनघा मिलेला जे अवधी चाहे आन कवनो लोकभाषा में होखन स भा ना, भोजपुरी में आजुओ ले बोलाल न स। एह निबंध में एगो बानगी भर रखा रहल बा।

रामचरित मानस

जनकपुर से चारो भाइन के बिआह करा के अवधपुर में लवटला आ उहवाँ कुछ दिन ठहरावल गइला का बाद महर्षि विश्वामित्र जी अपना आश्रम में लवटि गइल चाहतानीं—"विश्वामित्र चलन नित चहहीं"। रोज-रोज का आग्रह का बाद अंत में बिदाई का बेरा चक्रवर्ती महराज दसरथ अपना लरिकन का साथ महामुनि का आगा कर जोरत जवन सरधा-प्रेम आ अपनइती के भाव देखवले बाड़न ऊ बगसर का बोली—ठेठ भोजपुरी—में बा ई के काटी?

करब सदा लरिकन पर छोहू
दरसन देस रहब मुनि मोहू

आदर्श पश्चिमी भोजपुरी में पूर्वकालिक क्रिया के रूप ह्रस्व 'इ' कार होला—उठि के, बइठि के, कहि के, सुनि के, आइ के, जाइ के, गाइ के बजाइ के, करि के, भरि के, देखाइ के, सुनाइ के आदि। एकरे संक्षिप्त रूप 'कि' के हटा देला से बनेला—उठि, बइठि, कहि, सुनि, आइ, जाइ, देखाइ सुनाइ, करि, भरि आदि। 'रामचरित मानस' में अइसना पूर्वकालिक क्रियन् के रूप ढेरि मिलेला—

उठे लखन निसि बिगत सुनि अरुन सिखा धुनि कान।
सकल सोच करि जाइ नहाये। समय जानि गुरु आयसु पाई।
जाइ देखि आवहु नगर। सुंदर बदन देखाइ। मंजन करि।
अस कहि फिरि चितए। देखि सीय सोभा सुख पावा।

'मानस' का ताना-बाना में भोजपुरी के सूत जोहे खातिर चिराग के जरूरत नइखे। अनगिनित भोजपुरी शब्द अइसना बारीकी से अवधी का शब्दन जवरे जड़ल गइल बाड़न स जवनन के वाक्यांश से अलगा कइ के ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखल जा सके। कुछ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण आ क्रियात्मक शब्दन के देखल जाय।

संज्ञा शब्द

अकाज—जौं न जाउँ तव होइ अकाजू।
अनट—मिटिहि अनट अवरेब।
अनहित—निज हित अनहित पसु पहिचाना।
अभाग—मोर अभाग जिआवत ओही।
अहवात—अचल होइ अहवात।
कहाउति—भरत कहाउति कही सुनाई।
काँखासोती—पिअर उपरना काँखासोती।
कुदारी—मर्मी सज्जन सुमति कुदारी।
गरदनि—सो जानइ जनि गरदनि मारी।
गारी—गारी देत न पावहु सोभा।
जनवासा—उबरा सो जनवासेहिं आवा।
जनेउ—द्विज चिन्ह जनेउ उघार जती।
जरि—जरि तुम्हार चह सवति उखारी।
डाढ़ा—जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा।
दियटि—समता दियटि बनाइ।
धनुही—बहु धनुही तोरी लरिकाईं।
धूरि—पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा।
ननिअउरा—पठये भरत भूप ननिअउरे।
नोई—नोइ निवृत्ति पाइ बिस्वासा।
पइसार—नगर करौं पइसार।
पनही—कोमल चरन चलत बिनु पनही।
पहुनई—भूप पहुनई करन पठाई।
पुरइनि—पुरइनि सघन चारु चौपाई।
बजनियाँ—सेवक सकल बजनियाँ नाना।
बतकही—तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि।
बतिया—इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं।
बनरन्ह—देखहु बनरन्ह केर ढिठाई।
बानि—एक बानि करुना निधान की।
बायन—भले भवन अब बायन दीन्हा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.
मजूरी—बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी ।
माछी—माछी उड़इ अकास ।
लरिका—लरिका स्रमित उनींद बस ।
सवति—जरि तुम्हार चह सवति उखारी ।
ससुरारि—ससुरारि पियारि लगी जब तें ।

विशेषण शब्द

अकसर—कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयहु तात ।
अकेल—चला अकेल जानि चढ़ि तहँवां ।
अधिका—राम सकल नामन तें अधिका ।
अनइस—करत नीक फल अनइस पावा ।
आगिल—आगिल चरित सुनहु जस भयऊ ।
आन—आन जीव इव संसृत नाहीं ।
आपन—आपन नाम कहत तब भयऊ ।
उघार—द्विज चिन्ह जनेउ उघार जती ।
उतान—जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना ।
एही—एही बीच निसाचर अनी ।
करिया—करिया मुँह करि जाइ अभागे ।
कवन—बड़ दुख कवन कवन सुख भारी ।
का—का अपराध रमापति कीन्हा ।
जुवान—बाल जुवान जरठ नरनारी ।
झूठ-फुर—प्रेम प्रपंच कि झूठ-फुर ।
पाछिल—पाछिल दुख न हृदय अस व्यापा ।
पिअर—पिअर उपरना कांखासोती ।
बरिआर—तप बल बिप्र सदा बरिआरा ।
बाउर—तेहि जड़ बर बाउर कस कीन्हा ।
बूढ़—बूढ़ भयउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार ।
हेठ—हेठ दाबि कपि भालु निसाचर ।

क्रियाविशेषण शब्द

अबहीं—गवनब अबहिं कि प्रात ।
आजु—आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा ।
इहां—इहां न लागिहि राउरि माया ।
उहां—इहां-उहां दुइ बालक देखा ।
एतना—एतना करहु तात तुम जाई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
कतहूँ—मो कहँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं।
कबहूँ—द्विज द्रोहिन्हि न सुनाइअ कबहूँ।
गँवहिं—देखि सरासन गँवहिं सिधारे।
जनि—अब जनि करहिं बिप्र अपमाना।
जहँवाँ—बन असोक सीता रह जहँवाँ।
जहिया—भुजबल बिस्व जितब तुम जहिया।
तहँवाँ—अनुज समेत गए प्रभु तहँवाँ।
तहिया—धरिहहिं बिस्नु मनुज तन तहिया।
नीके—तुम्ह नीके निज नयन निहारे।
बरजोरा—लै जातहुँ सीतहिं बरजोरा।
सगरे—तनु पोषक नारि-नरा सगरे।

सर्वनाम शब्द

तिन्हकर—तिन्हकर चरित बिदित संसारा।
तोर—मोहि बिलोकु तोर मैं कालू।
रउरे—हित सबहीं कर रउरे हाथा।
राउर—राउर रीति सुबानि बड़ाई।
हम—देबि न हम पर छाड़बि छोहा।
हमहूँ—हमहूँ उमा रहे तेहि संगा।
हमार—बचन हमार मानि गृह रहहू।

क्रियात्मक शब्द

अघात—नहिं अघात स्रवनामृत जाना।
अँचवाइ—अँचवाइ दीन्हे पान।
आनब—हरि आनब मैं करि माया।
आनु—बेगि आनु जल पायँ पखारू।
उबरा—उबरा सो जनवासेहिं आवा।
कहत-सुनत—कहत-सुनत रघुपति गुन-गाथा।
कहब—जेहि बिधि भा आगे कहब।
कँहरत—कँहरत भट घायल तट गिरे।
खिसियाना—तुरत आन रथ चढ़ि खिसियाना।
गढ़ि-छोलि—सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि-छोली।
गुदरत—मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई।
गुनत—अस मन गुनत चले मग जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
गोइ—राखहुं नहिं कछु गोइ।

जिअत—तुम्ह बिन जिअत बहुत दिन बीते।

जिआवत—मोर अभाग जिआवत ओही।

जोगवत—जिअनमूरि जिमि जोगवत रहहूँ।

पतिआहू—कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू।

पराइ—चले पराइ भालु कपि नाना।

पहिरावहु—पहिरावहु जयमाल सुहाई।

बराए—सीय राम पद अंक बराए।

मरती—मरती बेर नाथ मोंहि बाली।

लुकाइल—तरु पल्लव महँ रहा लुकाई।

लेसल—एहि विधि लेसै दीप।

सराहत—हृदय सराहत वचन न आवा।

सिराइल—जुग सम दिवस सिराहिं।

हथवाँसल—हथवाँसहु बोरहु तरनि।

हनल—मुठिका एक महाकपि हनी।

हिंकरि-हिंकरि—हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही।

भोजपुरी में आम तौर पर संबंधकारक के विभक्ति 'के' होला, मगर कुछ जगहा (गाजीपुर जिला में) 'क' ओ बोलल जाला। 'मानस' का दू गो चौपाइन में एकरो प्रयोग बा—

पितु आयसु सब धर्मं क टीका। मित्र क दुख रज मेरु समाना।

'किवा' के 'की' ('अथवा' का अर्थ में) वाला भोजपुरी रूप के प्रयोग—

उभय भेस धरि की सोइ आवा।

भोजपुरी का कुछ शब्दन के बानगी गोसाईं जी के आन-आन पुस्तकन से भी लीहल जाय।

विनय पत्रिका

थिर न रहति कबहूँ। ले चिउरा निधि दई सुदामहि। सुनु मन मूढ़ सिखावन मेरो। सब आस छाड़ि कर होहु राम के चेरो। इहे खयाल उर अनिहें। असमंजस जिय जनिहैं। भक्त-सिरोमनि मनिहें। जीति, हारि, चुचकारि, दुलारत, देत, दिआवत दाउ। सुनत, कहत, फिरि, गाउ। समुझि-समुझि गुन ग्राम राम के उर अनुराग बढ़ाउ। जो न द्रवहु रघुबीर धीर दुख काहे न लागे। जग बूझत-बूझत बूझे। राम नाम लेत होत सुलभ सकल धरम। सठ तूं साँसति सहत। का सुनि सकुचे कृपालु, नर सरीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरत। सो न समुझि परत। तुलसिहु से तरत। दलनिहार, दुखहरन। पेट भरि। लाज अँचई घोरि। लाज न लागत दास कहावत। राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे। बाँस पुरान साज सब अटखट सरल तिकोन खटोला रे। मन पछितइहैं अवसर बीते। लेहु अपनाइ। पेट भरि तुलसिंहि जेंवाइय। खेलत खात लरिकपन गो चलि।

गीतावली

निकसत पइठत लोग परस्पर बोलत लगि-लगि कान। लेत-देत पहिरत-पहिरावत। बिछौना बिछाइ के। बारहिं-बार पहुनई अइहैं। पीठि चढ़ाइ। जहाँ-जहाँ जइहैं। ये उपही कोउ और अहेरी। अनबन भाँति। चित्रकूट पर राउर जानि अधिक अनुराग। डोलति नहि डगति। हौं तिन्हकी महतारी। पोथी नेवति। जाइ के, देखाइ के, मनाइ के, बनाइ के, अघाइ के, ललाइ के, बजाइ के। रोटिहा राउरो। भुजा उठाइ कहत हौं सकल सभा पतिआउ। कैकई जौं लौं जिअति रही। तौं लौं बात मातु सो मुँह भरि भरत न भूलि कही।

कवितावली

आरि करें। रिसिआइ कहैं। भरि आनि पानी। बसन बटोरि। बोरि-बोरि तेल। खोरी-खोरी धाइ-धाइ। मेरे पूत ऊ अनेरे सब। तुलसी अगारु न पगारु न बजारु बच्यो हाथी-हथसार जरे घोरे-घोरसारहीं। तूं लजाहि न माँगत कूकुर-कौरहि। गढ़ि-गुढ़ि के, छोलि-छालि। ललात, बिललात द्वार द्वार ही। मूसर-धमधूसर। मेरे माय-बाप-गुरु संकर- भवानिये।

बरवै रामायण

का घूँघट मुख मूँदहु नवला नारि। का पूछहु। कहहु कृपानिधि राउर कस गुन गाथ। एकहि एक सिखावन जपत न आप। तुलसी रामनाम जपु, आलस छाड़ु।

गुन गनत। गुनी के पाले परँगी। साँसति सहत। राम नाम लेत। माँगि खाय टूक टाक हौं। फूटि फूटि निकसत। जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको।

अपना इष्टदेव 'श्री राम' के चरितामृत बाँटत जब कवो ओह घरी का समाज का दुरदसा पर गोसाईं जी के नजर परल तब उहों के बनारस के खाँटी बोली के बानगी देवे के परल रहे—

> जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस
> कहैं एक एकन सों "कहाँ जाईं, का करीं ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाव - विचार से भरपूर अनुभूतिपरक भोजपुरी भाषा-साहित्य का सृजन, संपादन, संकलन, प्रकाशन आ प्रचार-प्रसार में तीस साल से जीवे-जाने लागल

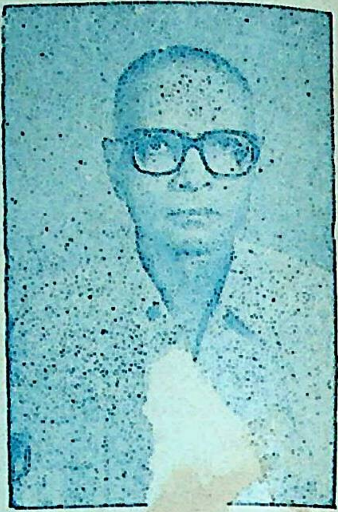

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

के

कृति-क्रम

प्रकाशित :
१. जय बंगला (लघु काव्य)
२. कौशिकायन (प्रबंध काव्य)
३. बेटा के नइहर (ललित निबंध)
४. सुदिन (प्रगतिशील गीत संग्रह)
५. सेवकायन (प्रबंध काव्य)
६. पँखुरी भइल हजार (बरवै संग्रह)
७. लीला ई श्री राम-श्याम के (गीत रूपक)
८. भोजपुरी भूँइ (कविता संग्रह)
९. अनसाइल राग (कविता संग्रह)
१०. पतिआत ना केहू (गजल संग्रह)
११. गाँव बारहो मास में (गीत संग्रह)
१२. घर के गूर (निबंध संग्रह)
१३. डागा बाजि गइल (कहानी संग्रह)
१४. स्वर मत दो (हिन्दी कविता संग्रह)

प्रकाश्य :
१. गइल घर (उपन्यास)
२. हम (आत्मकथा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डागा बाजि गइल

(कहानी - संग्रह)

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डागा बाजि गइल

(कहानी-संग्रह)

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डागा बाजि गइल

(भोजपुरी कहानी-संग्रह)

प्रकाशक : अतुल बन्धु
शिवाजी पथ, यारपुर, पटना–१

लेखक : श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

संस्करण : पहिल, सन् १९८८ ई०

सर्वाधिकार : प्रकाशक

मूल्य : रु० १२/- (बारह)

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना–४

DAGA BAJI GAIL

(Bhojpuri Short Stories)

by

Shree Avinash Chandra Vidyarthi

Price Rs. 12/- (Twelve)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स म र्प ण

कथा साहित्य में भोजपुरी का अवदान के उजागर करनिहार,

हमरा 'करकस बानी' में 'रस' लेके

'जस' देनिहार

प्रियवर

प्रो० ब्रजकिशोर जी

के

सस्नेह

——अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो—

जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।

——प्रेमचंद

(सारनाथ–वाराणसी मार्ग पर पाण्डेयपुर चौक में स्थापित प्रेमचंद जी की संगमर्मर की प्रतिमा के नीचे उत्कीर्ण)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द

भोजपुरी-हिन्दी की गद्य-पद्य की समस्त विधाओं पर समान अधिकार रखने वाले और सभी में स्तरीय सृजन-सेवा का अप्रतिम आदर्श उपस्थित करने वाले समर्पित साहित्य-सेवी श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी की सात कहानियों के संकलन 'डागा बाजि गइल' के ऊपर दो शब्द लिख कर मेरी लेखनी आज पवित्र हो गयी। गंगाधार की भाँति पवित्र विद्यार्थी जी के हृदय की भाव-धारा में अवगाहन करते मन कभी तृप्त नहीं होता है। नैसर्गिक निर्झर की भाँति झरता उनकी वाणी का सौन्दर्य क्या गद्य और क्या पद्य सर्वत्र अपनी एक अनाविल मौलिकता लिए सहृदयों के चित्त को अनुरंजित करता रहता है। अटूट प्रवाह वाली अपनी कहानियों में भी चूँकि वे अपनी सहज भावुकता को विसर्जित नहीं कर पाते हैं अतः पग-पग पर भाव-भाषा की चिपकनशीलता अपना रंग लाती है।

मुझे विश्वास है कि विद्यार्थी जी की कहानियाँ उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप से संपृक्त होने के कारण भोजपुरी कहानी साहित्य में अपनी नयी छाप छोड़ने के साथ ही नयी पहचान बनायेंगी।

(डॉ०) विवेकी राय

रीडर, हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर

विवेकी राय मार्ग
बड़ीबाग, गाजीपुर
दिनांक २०-५-८८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एके–दूगो बात

'डागा बाजि गइल' हमरा हाथे सन् १६६० से ८६ तक (सताइस साल) का भीतर के उरेहल सात गो कहानिअन के संग्रह ह। 'अंजोर' त्रयमासिक के सहायक संपादक भइला का नाते जब हमरो से कवनो गद्य के रचना के तगादा होखल तब 'झगरू भाई' परगट भइले—पहिले-पहिल 'कहानी' का रूप में, अपना गाँवें केहू का मुँहे सुनावल एगो चतुर-चोन्हर के चल्हाँकी के दुरदसा पर हँसी-मसखरी खातिर कहात कहाउति "बुरबक के कवनो सींघि-पोंछि ना होखे" के घुलुई धइ के। दू-तीनि बरिस का बाद 'अँजोरे' में 'सुरुता' उजागर भइल। एकरा में अपना आँखी-काने परतिआवल एगो जीअत जिनिगी के तसवीर देखावे के ललक रहे। 'भोजपुरी कथाकहानी' कारन 'मूड़ी गड़ाइले रहीं' आ 'डागा बाजि गइल' लिखाइल आ 'पाती' खातिर 'सवख बुता गइल'। बाकिओ दूनो कहानी—'छूँछ छोह' आ 'गरगट' कवनो पत्रिके में भेजाए के रही स बाकी सँपरल ना। अपना रचनन के प्रकाशित करा देबे के परन एह अंतिम प्रकाशन से बहुत कुछ पूरा हो रहल बा। अब मन उबार पावल चाहता, भूमिका-भार के सम्हार ओकरा से ना होई। बस एके-दूगो बात बोले के बा।

भोजपुरी 'बोली' के 'भाषा' कहे आ एकरा अर्हता के सुधी समाज का सोझा सिद्ध करे का साधे तीस बरिस से जीवे-जाङर लागल रहला का बाद हमरा ई बुझा गइल कि एकरा विकास आ संस्कार के सवाल उठावल भा सुनल अबहीं अनेर बा। आजु जरूरत बा त अतने जे एह सरूप के साँस अछइत एगो चलत-फिरत, बोलत-बतिआवत तसवीर (वी० डी० ओ० फिलम लेखा) खींचि के रखा जाय। ई 'फिलम' आगे चलि के, पुरान भइला पर मनरूचा लागी। का जाने का सोचि के महाकवि भिखारी ठाकुर अपना कृतिअन का आधार पर पसरल अपना नाँव-जस का बारे में सुना गइल बाड़े जे हमरा ना रहला का सइ बरिस बाद "नाम हो जइहन" आ "पंडित-कबि-सज्जन जस गइहन।" भोजपुरी में तुकबंदी करे के, गीत-गाना जोरे-बनावे के सीख भिखारी ठाकुर का गीतन से लेके जब गद्य में कलम चलावे के जरूरत जनाइल तब ले प्रेमचन्द, शिवपूजन सहाय आ विवेकी राय का अवदान के माथे चढ़ा चुकल रहीं।

अपना रचनन के सोद्देश्यता का बारे में बहुत कुछ अपना अब तक ले प्रकाशित पुस्तकन का भूमिकन में कहि चुकल बानीं; एह से पीसल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिसान अधिका का पीसीं ? तबो एह सातो कहानिअन में लखनिहार का हमार मानें-मकसद बे-बूझ ना रहि पाई। निरीहता, असहायता आ अभाग के कथानक पर मोलामा नइखीं चढ़वले। एकरा चलते कुछ लोगन का नजरी हम काँट अस गड़ि सकीला। वाकी हमरा लगे आन कवनो चारा ना रहे, हम करितीं त का ? अपना होती से जे रूचल ऊ कहले आ कइले बानीं। सभ का सोझा पसरल हमरा करनी पर जब केकरो आँखि मुँदा रहल होखे तब एह थोरिका भर कागज के पन्नन के कवन हाल होई ? शिल्प शैली, वस्तु-विन्यास भा कोटि-श्रेणी केहू कतनो निरेखो हमार गरज त बस मातृभाषा का माध्यम से अपना परिवेश के तेवर तनिका नगीच से निहरवा देबे भर के बा।

पछिला तीस वरिस से जेह महानुभाव के सहज-गंभीर लेखनी के प्रसाद दैनिक 'आज' के 'पूर्वी अंचल के पूरक पृष्ठ' में के 'मनवोध मास्टर की डायरी' से लेके विशाल हिन्दी भाषी क्षेत्र का पूर्वांचल के सजीव-सशक्त चित्रमय अमर औपन्यासिक कृति 'सोना माटी' का रूप में पा के परितृप्त होत अइलीं हाँ ओही अपना परम सनेही स्वनामधन्य डॉ॰ विवेकी राय जी से 'दो शब्द' सुनि के धन्य हो रहल बानीं। हमरा एह अनगढ़ कृति के हाथे उठा के अपनेका एकर कतना मोल बढ़ा दिहलीं ई हमहीं जानतानीं। आभार के उचार नइखे हो सकत।

प्रियवर ब्रजकिशोर जी के प्रेरक स्वर के ही सुफल ह हमरा गद्य के साज-सँवार। उहें के चहले साप्ताहिक 'योगी' का भोजपुरी खातिर निर्धारित पृष्ठन में हमार 'रिपोर्टिंग' अठारह बरिस अगते उजागर होत चलल रहे। आगे चलि के भोजपुरी कथा साहित्य के प्रणयन, संकलन, संपादन आ प्रकाशन का दिसाईं ब्रजकिशोर जी के पहुँच कहाँ ले भइल ई आधुनिक भोजपुरी साहित्यानुरागिअन के बतावे के ना परी। उहाँ अस सज्जन सुहृद् हमरा हार्दिक आभार का साथे एह हलुक-पातर उपहार के स्वीकार करतिं।

हमरा एह एगारहवीं कृति के पुरहर मनोयोग से, नीके तरे पाठक का आगा रखनिहार 'जय दुर्गा प्रेस' के लाख-लाख धन्यवाद आ भरपेटा बधाई ! धन्यवाद अनेक कठिनाइअन का रहतो मुद्रण-भार सम्हारि लेला खातिर आ बधाई आनन-फानन में कउल-करार का अगतहीं किताब निकालि देला कारन।

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी
गंगा दसहरा, सं॰ २०४५ वि॰
(२४ जून १९८८ ई॰)

चन्द्रायण
शिवाजी पथ, यारपुर
पटना—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथा–क्रम

डागा बाजि गइल/९
मूड़ी गड़ाइले रही/२०
सवख बुता गइल/२५
सुख्ता/३४
झगरू भाई/४१
छूँछ छोह/४६
गरगट/५७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डागा बाजि गइल

टीका-फाना वाला आधा उधार देहि। खाँटी करइल माटी के काठी। हेठ से ऊपर ले अइँठल। मुँह माहुर लेखा कइले पोखन चउधरी बोलसु ना, बोन्हसु। सुननिहार अइँठा जा। कउआ उचरे-उचरे तव ले गोरू-माल के सानी-पानी चला के डेढ़ कोस के पयेंतरा मारे निकलि जासु। कवना वधारी खेत ना रहहिन ?

सरेह घूमत, माथे हलुक-पातर बोझा भा भर मूठा दतुअने लेले पहुँचसु अपना दलानि प पहर भर दिन चढ़ला। बरधन का पीठी माछी ना बइठे पावे एकर खेयाल हरदम राखसु। खरहरा उठा लेसु त बारहे बजा के दम लेसु। हाऊ-हाऊ कूँची फारि के मुँह धोवे के नेम निबाहसु। नेहाहूँ में चटकवाहिए करसु। हाली से गमछा पहिरले धोती फींचि के पसारि देसु। हँ, गगरा-लोटा मलसु तनी धीर से। महादेवजी के जल ढारत-ढारत बेरा गिरि जा बाकी धोतिओ सूखि जाहिन। एके धोती आ गमछा से उनुकर रोज के काम चले। धोती के जोड़ी घराऊँ रहे, सनूखि में से निकसे कतो अइले-गइले। जाहूँ के त बस एके ठहर रहहिन, महीना में एक बेरि दू बेरि आरे का अदालत में।

पोखन चउधरी खासु एके हाली, तीसरा पहर-खा। चालिस लगला का बाद कतने लोग एकसंझा हो जाला। चउधरी के नेम तन्दुरुस्ती खातिर रहे कि ना ई त ऊहे जानसु बाकी लोग एह में उनुकर कवनो गँवें सोचे। खासे मोका प गोड़े जूता आ देहे पुरहर गंजी-कुरुता चढ़वनिहार के बिहने-साँझि के दू गो जलखई आ राति खा के भरपेटा भोजन के तेजल गाँव का नजरी करम-दरिदरी के हद रहे। मरूह के मसल खातिर पंच पचपन बिगहा के जोतनिहार पोखन चउधरी के नाँव ले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनुका बाबूजी दुखन चउधरी के जवार में नाँव रहे। आन केहू अस मोगल ना बनले ऊ महाजनी कारबार में। बोले-बतिआवे के ढंग कमाल के रहहिन। लोगन का सूदि ओतना ना अखड़े जतना लहनादार के तेवर। तगादा में निकलसु घोड़ी प चढ़ल। 'चउधरी जी पावलागी' लइके-सेयाने सभे कहे। गार्हे-सकेते केकरा कामे ना आइल होइहें बड़ से छोट ले? देरी कारन नालिस नाहिंयें कइले। हँ, हैण्डनोट के तमादी बचावत-बचावत कतने नादेहन्द के काठा-बिगहा उनुका हर तर आवत गइल गते-गते। मरले त पूरे पचपन बिगहा छोड़ि के दूनो बेटन खातिर।

पोखन चउधरी के छोट भाई लोचन उर्फ ललू का पढ़ाई के घोंटी ना भावल। हँकात-डँकात नउवाँ के चउकठ ले पहुँचे के त पहुँचले बाकी लाँघि ना पवले। बिआह-गवन हो गइल रहहिन बाबुएजी का जिनिगी में। रहन-सहन तनी फरछीन रहहिन। साइकिल के झारल-पोंछल केहू उनुका से सीखित। जब देखीं तब धोती-कुरुता बकुला के पाँखि अस लउके धप-धप ऊजर। काम का नाँव प उनका जीमे रहे घर के सउदा-सुलुफ कइल। लमहर बजरुहा गाँव गोड़े तर रहे। रोजे जाये-आवे के परहिन। दिन में खा-पी के निकलसु। साइकिल का हैंडिल में एगो-दूगो झोरा जरूरे लटके। पान का खनिहार के इयार के कमी? अड़ान प एगो ना एगो दोस्त-महीम भेंटाइले रहसु। पान का दोकान से घसकसु त पारचून का दोकान प पड़ाव लेसु। पसरहटा भिरी हाऊ-हाऊ कइला से ना फरिआ। केहू तेल खातिर बोतल-सीसी बढ़ा रहल बा त केहू हरदी-धनियाँ तउलावता। केहू कवनो बतुस के भाव पूछत कलकान कइले बा। मरदे-मेहरारू, लइके-बूढ़-सेयान सभ के जुटान पनसारी का दोकान प होला। भीर-भार में परे के कवनो हड़बड़ रहे ना एह से साइकिल डाक्टर साहेब का चउतरा प चढ़ा के लोचन चउधरी असथिराह होखसु। डाक्टर साहेब आन ठहर के हवे। कब से एहिजा बिराजतारे ठीक-ठीक कहल ना जा सके। हजारन आदमिन से परनामा-पाती बड़हिन, रोजिगार भलहीं कबो हेठ कबो ऊपर होत होखो। अखबार रोजीना मँगावेले। भल-मन जुटले रहेले। कुरसी-बेंच खाली ना लउके। संसार भर के खबर-खबरात का बाद गाँव-जवार के मुँहजबानी जायजा डाक्टर साहेब का दवाखाना में भेंटा जाला।

तर-तरकारी लेत किरिन डूबे लागेला। उनुका गाँव के भार डाक-पिउन का ना बुझाय। लोचन जी खोदि-खोदि के चीठी-चपाठी उपरावत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहेले। लोगन का काजे-परोजनें मदत-मोख्तारी से बाजि ना आवसु। केकरो दवाई-बीरो करवावे में देहि लगावल आपन धरम बूझेले। घरे लवटे में घरी भर राति चलि जा कवनो हरज ना। कवनो बात के जोन-फिकिर खातिर भइया रहवे कइलहिन।

पोखन चउधरी का देहे दिन भर लुतुकी लेसले रहेला। खा के अँचवत कहीं कि एगो ना एगो कार उनुका कपारे चढ़ि जाला। जागता भर में हाथ के आराम नाहियें लेवे देसु। जोर वरल उनुकर बरहमसिआ ऊदम ह। हरवाही भा कटिआ-दँवरी का बेरा जन-बनिहार जवरे अपनहूँ लागि जाले। का कुदारी का हँसुआ, दू ना त डेढ़ आदमी भर अकेले देखि देसु। हरवाह-चरवाह का उनुका मारे नाकन दम रहेला। बनिहारिनि त उनुकर नाँवे बदलि देले रही स। 'चंट चउधरी' का खेते-खरिहाने अइसने कवनो भुखारतू होखे से ही आवे। बनि के बोझा पुरहर ना बान्हे देसु। दस बेर गुदारेले। सातू-घुघुनी खातिर रोपनिन जवरे तोर-मोर होते रहेलहिन। हरवाह के कोला साले-साल बदलल करेले। हड़वर में खेंसारी चाहे जव-जोन्हरी देले। गहुम-बूँट काढ़े का बेरा करेज अइँठा जालहिन। हरवाह-चरवाह के कवो-काल चाउर देवे के होला त दाँत लागेलहिन। नगदी के त हालाहाली नाँवें ना लेसु। लोचन चउधरी का ना देखल जा केकरो ढेरि घिघिआइल। 'का हरज कुछ देइऐ दिआउ वेचारा के'—उनुका मुँह से निकसत कहीं कि पोखन चउधरी भभके लागसू—"का हरज, तोहरे बुझाई? बइठल-बइठल पगुरी कइल खूबे आवेला। अनका कमाई प सखरज ढेरि लोग बनल चाहेला ए बबुआ! हुँः, अपने त कुछ उजिआए के बा ना, अनके उपराजल लुटावे के सवख जागेला।"

जवाब ललू ना देसु। केहू से तूरि के ना बोलसु। वड़ भाई त बापे वरोबर होला। आखिर केकरा खातिर हाड़ ठेठावत आ रहल बाड़न पचीसन वरिस से पोखन चउधरी? उनुका आगा-पाछा के बा? मरदे-मेहरारू दू परानी। बाकी चारि गो बेटा, तीनि गो बेटी आ जाठि अस मेहरारू लगाइत नव गो खनिहार त ललुए के लउकता।

पुरनका तवर-तरीका के आदमी अन्हरघोड़ अस ना चलसु। उनुका वेवहार में आपन-अनकर के भेद हालाहाली ना लखा। अपना बेटा-बेटी के केहू कोरा-कान्हा ना चढ़ावे। अपना मेहरारू के गहना-कपड़ा अपने ना कीने। घर के बड़-जेठ 'सरकार' कहासु। परिवार के लजार-बिजार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के जरूरिआत सरकारे का जुटावे के परे। गाँव में पाँच भाई के एगो समिलाती परिवार में कवनो कनकतिहा कमासुत अपना मेहरारू खातिर बहरा से एगो बढ़ियाँ ऐनक ले आइल रहले तवना खातिर घर में पंचाइत बइठल रहे। भउजाई का कुछ चाहीं त अपना देवर से कहसु, भवहि का घटला-बढ़ला के जोह-फिकिर भसुर करसु। लइका-लइकी अपना महतारी के छोड़ि के काकी भा बड़की माई का लगे सटल रहसन।

भउजाई के लोचन चउधरी महतारिए लेखा जानसु-मानसु। गवने आइल रही ओह घरी ललू लङटे धावसु। उनुकर चउको-चनन उहे कइली। रामजी देवे के त उनुको के देलहीं रहले बाकी सउरिए में उठा लिहले। तब से फिनु गोदी ना भराइल। मेहरारू के दवा-बीरो में कोनाही कइल पोखन चउधरी खातिर कवनो अबिभो ना रहे। हँ, महतारी जब ले जिअलहिनि, चोरी-चूपे देवकुरि-चउरा के भभूति मँगवावल भा ओझा-गुनी के गोहरावल ना छोड़ली पतोहि के मराछ हटावे खातिर। ललू बो का देहि से लहवर लागल त सासु का भाग-पारस मानहीं के परल। दयगर-मयगर बड़की पतोहि का अपना खातिर कवनो हरख-बिसमाद ना रहे। 'बड़की माई', 'बड़की माई' का नकवान से उनुका अनस ना बरे। बड़का बाबू का डरे लइका-लइकी थर-थर काँपसु बाकी बड़की माई के सभ चङो-मङो कइले रहसन। काँपी-किताब चाहे फराक-कमीज खातिर ठुनुकनिहार के मनावल बड़किए माई से सिरात रहे। अपना मतारी का नइहर गइला-अइला के खोज-फिकिर केहू करो त काहें? घर चलवनिहार हो तो 'बड़को' अइसन, टोला-परोस में अनेरे ना कहात रहे।

गाँव में उनुका से हलुको जोंत वाला ढेर लोग आपन खुदसर बोरिंग-पंप बइठा लेले रहे बाकी पोखन चउधरी के कार अहरे-पोखरी भा इनार से चले। उनुका ई मंजूर ना रहे जे बाप का अरजल में से एको धूरि खेत धराउ, बन्हक चाहे सरकारे का हाँथे काहें ना होखो। बोरिंग के कुफुति देखत रहले। जवार में मोटर खुलल, पंप चोरी गइल बरमहल रहे। घर में धइल गइल गहना-गुरिया से अधिका जीव के जवाल माँह-बधारी बोरिंग के रखवारी भइल बा। हुँः, लोग बनूक राखता त ओकरो रखवारी करे के परता। बारह बिगहा के चकला एके जगे बड़हिन त का, ऊ बोरिंग के ना अपनवले, पंप ना बइठवले। तबो कवनो ढेरि के घाटा में ना रहले। मोट-अनजा गोट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होत रहुहित । बेयहर-बेटा के ठोस आमद रहवे कइल । बड़का बाबूजी बनवाइए गइल रहले । जनानी कीता आ दुआर पाका के बनववले रहसु खुद पोखने चउधरी । ईंटा के भाठा लगवला से ले के मकान का जोराई तक ले हाथे-माथे अपने लागल रहले । दू पइसा अइसे ना बटोराई त कइसे आगा के कार चली, मन में बूझल करसु ।

आगा खातिर खेयाल चउधरी बराबर राखेले । ललू ना पढ़ले, ना पढ़ले; उनुकर बेटा त बी० ए० में बा नूं ? एको बेर फेल नइखे कइले । जाहि दिन पास करी, लोगन के हँसल निकसी । उनुका घर का चाल-बेवहार के 'मोट' कहे के मजाल केकरो ना रही । आन केहू से थोर ई घर पढ़ाइए का ममिला में रहल हा । खाली पढ़ले का जोर से नूं अइसनो आदमिन के पगरी ऊँच भइल जाता जेकरा समहुतो करे के जगह नइखे । नीक-नीक आदमी ओह लोगन का दुआर प मूड़ी पटकतारन बिआह खातिर । भगवान चहिहें त एह साल उनुको इहाँ बाजा बाजी ।

गोतिया-देआद, टोल-परोस के इयाद नइखे कि कब कवना परोजन में पोखन चउधरी कीहाँ बीजे भइल रहे । जे घरगइआ बाछा के अपना हाथे गढ़ल छोला खिआ के, दाना-खरी चला-चला के तउन बरध बनावत आइल होखे ओह अछरकटू आदमी के अतना भर अकिल बा जे अपना पहिलका भतीजा के बिआह के बतकही बेगर बी०ए० पास कइले ना चले दिआई । उनुका घरे सतदेव स्वामी के काथा भखले रही । बंस-बिरिछ में पहिल-पहिल मरजाद के फल तइआर भइल बोलत रहे जेकरा ओर परिवार टिकोढ़े से टकटकी लगवले रहे । आखिरस ऊहो दिन आइल जब साइकिल से उतरे का पहिले लोचन चउधरी चउतरा का नीचे से 'भइया कहाँ बाड़े ?' के उचार कइले । 'बड़का बाबू खाये गइल बाड़े' सुनते धड़धड़ाइले पहुँचले अङना में जहँवाँ पीढ़ा प पोखन चउधरी चूका-मूका बिराजत रहसु । ऊँच बारि का पितरिआ थरिया में सतुआ, नून, मरिचा ठहर पर धरात-धरात लोचन चउधरी सुनवले 'रिजल्ट निकलि गइल ।' 'ऐं ?' कहत बड़ जाना ठाढ़ हो गइले । 'रजेसर पास क गइले' आरे से आवत उनुकर एगो सँघतिया बस से उतरते बजार में हमरा भेंटाइल रहल हा । हई बतासा धरऽ लोगनी, हम महाबीर जी के गोड़ लागि के आवतानीं' खुसखबरी सुना के लोचन चउधरी दुअरा गइले । मुँह मीठ करे-करावे का बेरा सतुआ ना खाए दिआत रहे बड़का चउधरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के। 'ना-ना', 'हूँ-हूँ' का बाद मूँ जबरे ना, बबुआ मूँ जबरे गरहले।

बिहान भइला पोखन चउधरी के भतीजा के बी० ए० पास कइला के सोर एह टोला से ओह टोला ले हो गइल। ढेर आदमी वाह-वाह कइल, थोर जने चिहइलन। चउधरी के दुआर-दलानि अगते मे चिहुलगर लउके लागल। बाजार से बेलगरामी आ मोतीचूर बतासा से बेसी आवे लागल। भइया के हुकुम का मोताबिक ललू अगते से अधिका दुआर अगोरे लगले। दिन बीतत देरी लागेला? खिचड़ी का बाद से माथ प के मोटरी उतारे का फिकिरी धावत लोग लउके लागल। सतुआनि बाद पोखन चउधरी का दुअरा देखनहरू भहराए लगलन। बसावन बाबा के आवाजाही एह दुआर प बढ़ि गइल। उमिर उनुकर ढेर ना रहहिन बाकी सँउसे गाँव भर के बाबा कहासु। उनुका बारे में के ना जाने? बसावन पंडित के मारल मेमिआत ना रहे। गाँव के लोग उनका के खँड़लिच बूझे। ना गोड़ लागे जोग, ना ढेले मारे लाएक। जवना दुआरे उठे-बइठे लगले, उनुकर खउरा-खापट लागि गइल। बुझनिहारन का बीचे बसावन बाबा 'उजारन' कहासु।

पोखन चउधरी कीहाँ बसावन बाबा के उठ-बइठ ना होखत रहे। कुचरई का चलते एह दुआर से उठावल गइल रहले कबो। ई ढेरि दिन के बात ह। पोखन चाहे लोचन का अब ले इयाद ना होई। बाकी बसावन बाबा का भोर नइखे परल। आपन कवनो मनसा पुरावे का गरज से ऊ बरतुहार का आवत-आवत चउधरी का चउतरा प जमि जासु। टहल आ ठकुरसोहाती खूँखार से खूँखार आदमी के के कहो, बाघो-सिंह के बस में कइ लेला। सउँसे गाँव में पोखन चउधरी के संगी-सलहिआ ना रहे केहू। बसावन बाबा का मीठ बोली-बचन के लोहा उनुका माने के परल। देखनहरुन से जवना तरे बसावन पंडित बतिआवसु ओइसे उनुका ना बोले आवे। चढ़ावल कवना तरे जाला ई त सभे देखेला बाकी उलुटा मंतर कइसे पढ़ा दिआला ई एह फन के ओस्तादे जानेले।

बरतुहार आवत गइले। जेठ बीते-बीते हो चलल, बाकी एह दुआरे बाजा बाजे के ठेकान ना लागल। बे मङले हजारन के गननिहारो का एह दुआर से लवटे के परि जा। लोचन का ई पसन ना परे बाकी कहसु त कइसे? बड़ भाई माथ-मालिक रहन। एने बसावन बाबा अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कानाफुसुकी का सीढ़ी से पोखन चउधरी के मिजाज तरकुल प चढ़ावत चलल जात रहले। "तूं तनी दम धइले रहऽ। तोहरा अङना अइसन तिलक चढ़ी जे देखनिहार के धरनिहार लागी। अपना के बड़का बुझनिहार कतने जाना के दाँत लागि जाई, दाँत। लछिमी त रहले रहली हा तोहरा घरे गोड़ तूरि के बइठल, अब सरसतिओ आ गइली। तोहार नाँव जो हम गाँव ऊपर ना चढ़वा देलीं त हमरा नाँव पर कूकुर पोसिहऽ।" बसावन बावा का एह कहनाम में गलतीका रहे ? जो ठानल ना जाई त मनगर गहूँकी भेटाई ? सउदा चोख बा त फिकिर का ?

आजु-काल्हु करत-करत आधा आसार्हो निअरा चलल। आखिरी लगन में बस सात-आठ दिन बाँचल रहे। गाँव के लोग देखत रहे कि पोखन चउधरी का दुआर प जवन बरतुहार बिहने अइले ऊ साँझि होत-होत लवटि गइले आ जे राति खानी ठहरल से बिहने अलोप हो गइल। बुझनिहारन का बूझे में कोर-कसर ना रहल। बाकी नारद-मोह में परल पोखन चउधरी का एह में खटका जनाउ त कइसे ? अपना मेहरारू का सवालन के जवाब ऊ अङुरी उठा-उठा के देसु, पर 'बड़को' मानसु ना। देखन्हरुन के भगावल उनुका भावत ना रहे। सभन के बेलाइ दिआई त लइका का माथे मउरि चढ़ी कइसे उनुकर कहनाम रहे। 'असो ना चढ़ी आगा साल चढ़ी' सुनत-सुनत उनुका बड़हीं अनस बरे। एक दिन कहि बइठली जे अइसना लछन से लइका हमार कुँआरे रहि जाई। सभ चीज के बेरा-समे होला। समे बिता के कवनो काम ना करे के चाहीं। का चाहल जाता हमरा बुझाते नइखे। मोंछि अइंठत पोखन चउधरी के जबाब रहे, 'बुझा जाई, अकुतइलू काहें ? हमरा सउँसे गाँव के देखा देवे के बा, जनलू लोग ?'

ओही दिन 'छोट जाना' के बइठा के बड़को कुछ सवाल कइली। देवर के अक-बक ना खुलत रहे बाकी भउजाई का आगा हेरि देर ले जहुआइल ना रहे पवले। नीक त उनुको ना लागत रहे पर करसु त का ? ऊ मस्त-मौला जीव ठहरले, नव-छव ना जानसु। भइया का सवखे बा त पुरा लेवे दिआउ, उनुकर कहनाम रहे। बाकी आजुए एगो बात उनुका कान में केहू डलले रहे। आँखि मूँदि के आपन राह धइले जात आदमी के जइसे उढ़ुक लागे ओइसहीं उनुका ओह बात का खटका से ठमके के परल। 'बसावन बावा बाजा ना बाजे दीहें' के काने परल मंतर उनुका भुलात ना रहे। लेहाज का जाब में परल मुँह भाई का सोझा त पसरित ना, भउजाई के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
सह पाके ललू के हिआव बढ़ल। अपना मन के हुटहुट ऊ बड़को से जना दिहले।

"ई बात बा ?" बड़को खिहइली। "तब त हमनी के महटिआवल ठीक ना होई। गाँव के देखावे के का बा ए बबुआ, गाँव त नीके तरे देखत आ रहल बा जे फलाना चउधरी के कारबार कइसे चलता। हमरा काने का कुटनी ना लागल रही स ? 'तोहरा के बा खनिहार ?' 'तिरिथ-बरत करत रहे के चाहीं' के सलाह देनिहार का कम रहल ? बाकी हमरा प कवनो जानी के चोंच ना लागल। अपना फुलवारी में हमरा चारो धाम भेंटाइल रहेला। जाये द ई सभ। आछा, ई त बतावऽ, कहँवां के बरतुहार तोहरा जाने में नीमन बुझातारे ?"

ओठ जँतले छन भर का बाद लोचन चउधरी के मूड़ी डोलल। का कहसु, नीके तरे जाने-सुने के मोको त ना मिले पावल हा बसावन पंडित का वे हँकले दू घानी अधिका चलला का मारे। देखनहरुअन आ भइया का बीचे सोझा भा अलोना जे कुछ बतिआवत रहले हा ऊहे। बड़हन ताम-झाम वाला जे एक बेर आइल से दोहरावल ना। हँ, एगो बूढ़ आदमी के लेके ओह टोला के जलेसर लाल त पान-छव बेर आइल-गइल बाड़े। जलेसरे लाल जवरे ऊहो कतो मास्टर रहले हा बुझला। लेन-देन में ओह आदमी के हिसाब आन लोगन से बहुते हलुक जनात रहल हा। का कहाउ ? बसावन बाबा त भर मुँह बतिआवहूँ ना देत रहले हा भइया जवरे उनुका के।

कतो के मास्टर के आइल सुनि के बड़को मने-मन मुसुकइली। ऊ अपने पढ़ल ना रही सही के, बाकी पढ़निहार बेटी-पतोहि उनुका बड़हीं सोहात रही स। ओह टोला के लोगन का खेत-बारी कमो रहे त का, सफिआना लूरि-ढंग, नीमन-नीमन सवख-साध ओनियें लउके। ई कुल्हि रहे लइका-लइकिनि के पढ़ाई-लिखाई का चलते। चउधरी लोग का बारह घर के गोतिहारोवाला एह टोला के नाँव 'चगड़वा टोला' अनेरे ना धरा गइल रहे। लाठी-गोजी के भँजनिहार नवहा आ भँइसी का पीठी आसन जमवनिहार लइकन के दिन-राति अइसहीं-तइसहीं बीतत रहेला। अधबूढ़ो लोगन का देस-दुनियाँ से कवनो मतलब ना बुझा। अइसना जमाति में रजेसर के बी. ए. पास कइल पथल प कमल फुलइला लेखा रहे। एह लइका के मोल-तोल सज से होखे के चाहीं एह बात के पोखन चउधरी गिरहि बान्हि लेले रहसु। बसावन बाबा अइसन सलहिया उनुकर गोड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकास में अलगाइए देले रहसु। 'असो होई-होई, ना होई; आगे साल होई' ई पाठ चउधरी के नीक तरे इआद करा देले रहले।

भउजाई का रिगिर कइला से जलेसर लाल का घरे गते लोचन चउधरी का जाहीं के परल। मास्टर साहेब का जरिये जवन देखनहरू उनुका दुआर प आवत-जात रहले उनुका बारे में पूछ-पेख होखल। ओह आदमी का लगे तिलक का बजार में उतरे जोग तोड़ा नइखे। हँ, लइकी उनुकर हजार लइकिनि में एगो होई। मैट्रिक के इम्तिहान दे देले बिआ। पढ़े में लइका लोगन के कान काटेले। पास त जरूरे क जाई। सिआई-पुराई, रसोई-पानी सभ ऊदम में सेसर। आगे पढ़ावे के बउसाव नखहिन बेचारू के। लइकिनि के ढेर पढ़ावलो त जीव के जवाले हो गइल बा। जोड़-जुगुत घर-वर जोहे में आदमी के छरपट छूटि जाता जलेसर लाल के कहनाम रहे।

बड़को का सँइकी-सँइकी हाल मालूम हो गइल। मन में जे अब ले ना गुतले रही सेही सूझि गइल उनुका अचके। निठाह मरदाहि के बात हो जाई। लोग देखी कि जे अब ले ना भइल रहल हा से होखे लागल। आन केहू का हाथे ना, हमरे घर का होतें से। पगरी ऊँच रहत आइल होखे अनकर भलहीं कवनो बात में अब ले, बाकी ई धरम के धाजा उठा लेला से चउधरी के बाँहि पुजाई, बाँहि। ओह मास्टर से तिलक मत माङल जाउ। हमार लइका बिकाई ना।

भउजाई के हँ-में-हँ मेरा त दिहले लोचन चउधरी बाकी 'भइया मनिहें ?' के उचार करत उनुकर तारू सूखे लागल।

"भइया मनिहें ? आ रे ईहे त अबकी देखे के आ देखा देबे के बा" बड़को कहली। "आजु ले हमरा खातिर का कइले बाड़े ? भर मुँह बोलले ना होइहें। एगो खर्हो हम मङले होखबि कबो उनुका से ? हँ, हाइ-हाइ कइल हमरा ना सोहाइल। मूठी बान्हे ना आइल हमरा। उनुकर चलल रहित त बेकतिन के सुबहित खाहूँ-पहिरे ना दिहिते। हमरा ई ना बुझा जे जेकरा के दइब खाये-खरचे भर देलहीं बाड़े सेहू पइसा खातिर हफन काहें धूनेला। ऊ पइसा कवना काम के जे ना अपने हबेख होखे आ ना अ ने केहू का काजे-सुकाजे कामे आवे ?" बड़को के आहस फाटि चुकल रहे। घुघुट हटा के जइसे काछा बान्हि लेले होखसु।

भइल चाहे जइसे होखो, गाँव का एह कोन से ओह कोन ले ई बात छपल ना रहल जे चउधरिआइन का अठान-कुठान परला से ई बाजा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाजता। पोखन चउधरी त भागल जात रहले तले केहू सुना दीहल जे बड़को अङना में कुँइआँ का दाँती प बइठि के दूनो गोड़ नीचे लटका देले बाड़ी। तब से बड़कू भींजल बिलारि हो गइल बाड़े। सभ कार छोट जाना सम्हारि लेले। किसिम-किसिम के लोग, किसिम-किसिम के बतकही। केहू कुछ कहे, केहू कुछ। कतने जने चाटी लगवले जे चउधरी तिलक में खिअइहें ना। बरिआती ना ले जइहें। बाकी भइल कुछ दोसरे। किरिन बूड़त-बूड़त सउँसे गाँव में अगेआ-बीजे साथे-साथ घूमल। हँ. सरबत-पानी ना चले पावल। लगन पहरे भर राति ले रहे।

बसावन पंडित कुबेरा खानी अइले। दू दिन से अनते गइल रहले। सबद काने परते कपार ककुलावे लगले। कइसे का हो गइल बुझाहिन त कइसे? जाने भर में त कुछुओ उठा ना रखने रहले। हो ना हो जलेसर लालावा के करसाजी ह। ओकरे जबरे अ.इल बरतुहार से बतिआवल कंवनो जरूरी ना जनाइल रहे।

बसावन बाबा का सोचाहट में ढेर गलती ना रहे। जलेसर लाल जबरे भगते से आवत बरतुहार कीहाँ से तिलक चढ़े आइल रहे सही के, बाकी कारसाजी एह में ना अपना गाँव के केहू के रहे आ ना आने ठहर के, ई बात पंडित का बुझा गइल। हो ना हो एह में कवनो भितरिआ चाल बा। खीसी जरि के भूत भइल रहले बाकी लोकाचार निबाहे खातिर तिलक का बोलाहटा में गइल जरूरी बुझलहिन। पोखन चउधरी का चउतरा प ओह घरी कवनो चहल-पहल ना लउकल। बाजा-गाजा कुछुओ ना। दलानी का ओरिआनी में टङाइल एगो ललटेन जरत रहे। डेवढ़ी लाँघत अङना में पहुँचले। तिलक चढ़त रहे। भँजुरी ओड़ले रजेसर का आगा एगो फुलहा थरिया आ ओह में एगो लोटा आ एगो गिलास लउकल। पतल प एगो पिअरी धोती आ एक जोड़ा जनेव। नगद रोपेआ के दरस ना भेंटाइल।

गीतगवनिनि के चुप करावल गइल। आङन में ठकचल लोग कान पाटल। हरदी छिरिकल कागज हाथ में लेले केहू उठल आ गेस बत्ती का अँजोरा जोर-जोर से उचारे लागल—

सोसती सिरी सरब उपमा जोग बड़का समधी जी का चरन में हमार हथजोरी। हम कवनो तरे अपने सभे का जोग ना रहलीं हाँ। एक से एक बिदवान, गुनवान, समाज-सुधारक नेता कहवनिहार लोगन का चउकठ प नकदरिया कइलीं बाकी सगरे ठोकरे लागल। साँच पूछीं त रउरा भिरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त हमरा कवनो उमेदि ना रहे। कई बेर अइलीं-गइलीं। अपने सभे के अवकाति देखि के मुँह ना पसरे। बाकी दयगर के बाँहि लमहर होले। बड़की समधिनजी के उपकार हमरा परिवार के रोंआँ-रोंआँ मानता। हजार-बजार का बीचे एह पान फूल के अपनवली, ऊहो अपना मन से, हमरा के बोलवा के। उहाँ का कतहत बात कहलीं जे बेटा आ बेटी दू ना ह। जेकरा सावङ होखे ऊ बेटो का बिआह में खुद खरच करो, बेटिहा प भार जनि डालो। मन माफिक वे ति खातिर खरच कइल पानी में गइल मत मानो। अतहत हिआव के मरद भा मेह रू एह धरती प कतो नइखन लउकत। मेंहीं चाल-ढाल के, पढ़निहार लोगन के चिन्हार हमरा हो गइल। मोट आ निपढ़ कहवनिहार आदमिन में अबहीं दाबा-मायः बा जवना से ई धरती आबाद बड़ी आ हामा-सूमः अस सकेता परल आदमी साँस लेवे के न्वेंवत पावता।

हम सेवा में डेरात-डेरात हाजिर भइलीं हाँ। अपने सभे हमरा से मङलीं ना सही के, बाकी हम माङ तानीं। हमहीं ना, हमार सउसे परिवार कर जोरि के एगो अरज करता। जवन गिन्नी तिलक में चढ़ावल जाता ओकरा से कमे कीमत के एगो मङ्गीका बनवा लिआई। हमरा लइकी खातिर आउर कवनो गहना कपड़ा ले आवे के तूल जनि कइल जाई। अपने सभे के आसिरबाद भर चाहीं। लइकी के असली गहना त होखे के चाहीं लइका आ लइका के तिलक खुद लइकी।

अपने सभे के चरन पखारे खातिर आतुर

—राम सेवक

गाँव का नवहन का मुँह से वाह-वाह कहा गइल। कवनो दो 'बड़की माई जिन्दाबाद' के नरो लगा देलस।

कुछ लोगन का ठकुआ मरले रहे। बसावन पंडित के त करेजे अइंठात रहे। 'ओ-हो-हो' उनुका मुँह से गते निकसल। जवन गुतले रहसु तवन त नाहियें भइल, उलुटे ऊपरी मन से जवन कहत आइल रहसु तवने हो गइल। पोखन चउधरी के नाँव गाँव ऊपर कढ़ा गइल रहे।

तिलकहरुन का जवरहीं गाँवों का भयचक के बीजे भइल। 'सउँसे गाँव के देखा देवे के बा' पोखन चउधरी के कवो के सोचाहट रहे। बिना तिलक-दहेज के मोल-तोल कइले, अइसना सवख से अगते केहू बेटा ना बिअहले रहे ई गाँव देखि लीहल। बड़को का चलते जवार में उनुका नाँव के डागा बाजि गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूड़ी गड़ाइले रहीं

पूरे पनहर वरिस प प्रोफेसर साहेव अपना गांव का रेलवे-स्टेशन प उतरल बाड़े। अयकी अकेले। ६२ का वड़ा दिन में परिवारो आइल रहे। का करसु, काम के वोझा एह कान्ह से ओह कान्ह प राखत दमे ना लेवे पावसु। महानगर कलकत्ता के धावाधूपी जे देखले होई सेही बूझी। एगो के कहो जहँवाँ दू-दूगो जिलन का वरोवर लोग ठकचल वा, आदमी प आदमी चलता-फिरता वोझा अस गँजाइल-लदाइल रहता, तहँवाँ साँझि-विहान, दूपहर-आधाराति एके समान लउकेला—दल-फल, हलचल से भरल। प्राइवेट वस अस ऊ धावत्ते रहेले। भोरे पाँच वजे से राति के वारह वजे ले खटेले। पुरान आदमी ठहरले, दू-दू जगहा के नोकरी सम्हारे के परेलहिन। एगो कालेज में दिन के डिउटी रहेलहिन त दोसरा में राति के। भोरे तीन गो टिउसन करेले, साँझि खा दूगो। रोपेया कमाये खातिर विजली के घोड़ा अस फुरती देहे राखे के परेला।

पछिला वेर सात साल प गाँवे आइल रहले। सवखे ना, पेचे। सरकारी सरवे के काम जवार में जारी रहे। मेहरारू का उचिलवला, उदवेगला से टकसल रहले। अपना हिसदारी, पटिदारी के हिसाव वूझे खातिर। पनरह दिन के छुट्टी तमाम भइला प मन मसोसि के दस दिन आउरो वढ़ावे के परल रहे। तव से एह साल ओह साल प गांव के जतरा टारत-टारत एक दिन उजवुजाइले उठले आ वेगर कवनो सर-सलाह भा तर-तेयारी के चल दिहले एगो जवरिहा नोकरिहा जवरे सियालदह स्टेशन का ओर।

गाँव स्टेशन से वेसी ना पवने दुइये कोस वा। अवकी दू-चार गो ऊँचो टमटम लउकतारे स। लोग एक्का-पड़ाव का ओर धावल जा रहल वा, टमटम प सीट पावे खातिर। कान्हे कम्मर आ हाथे चमड़ा के सूटकेस टङले गुमटी प ठाढ़ होतारे। केहू हांक पारता, "मास्टर साहेव! हेने आईं, हेने।" काने परल टनक आवाज परिचित जनाता। मुनीर मियाँ वुझातारे। आगे आ के 'सलाम सरकार' कहत अटैची ले लेतारे। अगिला सीट प वइठा के चाह-पानी क लेवे के सलाह देतारे। अगते एगो टुटही पलानी में तेलहा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिठाई के दोकानि रहे। अब त लकड़ी का गुमटी में सात-सात गो लउकतारी स। पान के, चाह के, मिठाई के। एगो दोकानि प अंग्रेजी दवाइयो के साइन वोर्ड टङाइल वा। वाह, अब त वहुते सुधार हो गइल। अगते अस कुँइयाँ प लोंहड़ा-डोलची के जोह नइखे। रोड के दूनो ओर एक-एक गो चंपाकल से पानी हराहर झरता।

चाह के नाँव सुनते मन अगरा गइल। माटी का पियाली में ना, सीसा का गिलास में चाह धरा जाता दोकानि के नोकर टमटमे प। "हँ-हँ रहे दिहल जा" कहत मुनीर मियाँ चाह के पइसा नइखन देवे देत।

एकवान लेले सात आदमी टमटम प वइठल वाड़े। आगा हँकाइल एक्कन के टकदुम-टकदुम चाल के दुतुकारत-फटकारत ई खट-खट-खट खट करत आगा निकल आइल। वगइचन में वोझा गँजाइल वाड़े स। खरिहान लिपा रहल वा। कहूँ दँवरिओ हँकाता। धान के वालि कतना वड़-वड़ वा। आन वेर त अइसन ना होत रहे। कतेक साल मोआरियो छिला।

"ई सव वोरिंग के एकवाल ह। जनाता जे अपने ढेर दिन प एह वहे आइल जाना" कहनिहार के मुँह देखला से त कुछुओ थाह नइखे चलत। परिचे पूछे के हिम्मत नइखे होत।

घुरहूचक निअरा चलल। गाँव का वहरी पोखरा प केहू उतरता। कुछ आहस, कुछ अगरहट, कुछ ललक, कुछ संकोच लेले प्रोफेसर साहेव का तनी फयलाँव मिलल। उनुका त वजार में उतरे के वा। ढेर दिन प गांवे आवतारे। मन में किसिम-किसिम के भाव उठता। सड़क प उतरते "हई देखीं" के जवाव "पाव लागीला" देत डेग उठता, गिरता। अनेकन आँखि टक-टक लागल वाड़ी स उनुका ओर। आगा वढ़ला प "परनाम मास्टर साहेव! चलले आवतानीं?" सु ाता। ई त तपेसर हवे। मोंछि कते-कते हो गइल वड़हिन? आजु वाज र के दिन ना ह। फँफराह वा। गली-गली पार करत 'ढेर दिन प" के जवाव मूड़ी नवाइ के देत-देत आपन दुआर आ गइल। चउतरा प लटू जमवले लइका चिहातारे स। काका नइखन लउकत? ठाढ़ कइल पटिहाट विछावत-विछावत केवाड़ का फँफरा में फुसुर-फुसुर होखे लागल। निहुरल-निहुरल केहू चउकठ हेलता। काकिये हई। चरन छूअत चिन्हारो होता—"अरे लइके, ची हत नइखऽ स? तोहनी के वड़का वावूजी नूं हवे कालकाता वालू।" चकचिहाइल लइकन के हाथ-मुँह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
जोराता, खुलता। दलानि के जंजीर उतारल जाता। एगो लइका लोटा-गिलास धइलस हा। हाथ धोवे का पहिले काने जनेव चढ़ल। तनी पिछूती से हो आइल जाउ। कुकुरवन्हा के जंगल में गोड़ धइल मोसकिल वा। देवाल के ईंटो खोंढ़ हो गइल वाड़न स। थाका के थाका नोनी झरल वा। ओरिआनिओं भसहीं भसे बोलतिया। बुझाता जे ढेर दिन से खपड़ा नइखे फेराइल।

तोसक-तकिया लागि गइल वा। केहू कमरो सरिआइ के सिरहाना ध देले बा। एक वाँहि के कुर्मी प अटैची विराजतारी। अहा-हा, मेथी के त सवादे भुला गइल रहल हा। मुँह पोंछत खा खोरी में खट-खट सुनाता। चटर-चटर खड़ाऊँ प उपरोहित जी आ रहल बानीं। लोटा में जल लेले। सिवाला में जातानी बुझला। खड़-खड़ "पावलागीं" "चिरंजीव" होता। हाथे ऊखि लेले ककौ आ गइले। चमरुआ जूता में धुरिआइल गोड़। माथ नवावत-खा दूगो वून ढरकि गइल। छन भर खातिर अन्हार छा लेलसि। "खुस रहऽ" सुनि के आँखि खूलल।

- गझिन कुहेस फारत जइसे घाम उगल होखे। धुआँ भरल घोनसारि में के ठाढ़ आदमी जइसे खोरी में आ गइल होखे। दम नइखे फूलत। मलिया में करुआ तेल धरा गइल। एक जोड़ी काठ के चटियो। कुरता-बंडी उतारल जाउ। इनार प गगरो-बाल्टी भराता। कोड़ार में आलू नीमन लागल बा। कोबियो। बाल्टी में से लोटा-दू-लोटा पानी डालत-डालत "ठहरीं, ढेर दिन प आइल बानीं, नीके तरे नेहाईं" कहि के महङू उठतारे आ भ-भ-भ-भ भरलो गगरा माथ प उझिल दिहले। महङू एह दुआर के हरवाह रहले जब घरहीं खेती होत रहे। इनार के गगरा भरल जल से भरपेट नेहान भइल। रोंआँ निहाल हो गइल। कल प के नेहान ओछवाहे रहत रहल हा।

पूस का घाम से आङन उजिआर बा। दूनो पीढ़ा का लगे लोटा-गिलास धराता। बइठत कहीं कि दालि-भात से भरल उलटी बारि के दूगो थरिया रखा गइल। छिपुली में साग बुझाता। दालि अतना मीठ? बूँट का जबरे वथुआ कमाल कइले बा। एह में के मधडा मरिचा बड़हीं चोख बा। एँ, कटोरा में का आवता? ई त दही ह। तामा का रंग के ललछँहू छाल्ही परल। गलती हो गइल। जाँतल भात के अँटकर ना लागल। जुठिआवे का पहिले आधा निकालि देवे के चाहत रहल हा। "का खनिहार नखहू?" काकी के कहनाम के का जवाब दिआउ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊपरी त्रेरा कतेक आदमी भेंटातारे। वधारिये चलल ठीक होई। नदी में अब पानी कहाँ से ? रघुनाथ के बड़का बेटा आगा-आगा लोटा उठावता। सुनील नवँव हइस। नउवाँ में पढ़त रहल हा। बेचारा फेल हो गइल असो। 'बड़का बाबूजी' का सवालन के जवाब लजाइले सँकाइल "हँ"—"ना" में देत कालीमाई भिरी चलत रेहट से लोटा भरि ले आइल। बूँट-गहुम का हरिअरी प सरिसो के पिअरई। आँखि बिछिलाता। रहरि में के रेंड़ फेंड़ के मोकाबिला कइले बाड़े स। धरती सचहूँ बसुन्धरा हई। सुतार भइला प सोना उगिलेली। लइका से भला लोटा मलवावल जाउ ? भतिजवा खातिर आउर ना त गंजिओ गमछी लेले आइल चाहत रहल हा !

किरिन बूड़त-बूड़त इहवाँ ठार गिरे लागल। कउड़ लहका दिहले स लइका सभ। गते-गते आदमी बटुरा गइले। रनुकर कमे, बेसी हाल कलकत्ते के पुछनिहार। घरी भर राति जात-जात सन सनाटा। कतो कवनो आवाज ना। हर-हर-पट-पट के नाँव ना। एकदम दुनिएँ दोसर। ट्राम-बस के टन-टन-हरँ-हरँ से भरल कान खातिर अविभो। आँखिओ के आराम। मरकरी के अभाव अखड़त नइखे। लालटेनियेँ काफी बा। अहा-हा, पुअरा का गलइचा के सुख कतना दिन प भेंटाइल बा। सोफा में अतना पसारा कहाँ ? तिलवा का बाद चाहो ? कवनो हरज ना। बहरवाँसू खातिर अतना खेयाल बा। जाड़ जानि के खायेक दलानियेँ में आ गइल। मकुनी के सोन्हाई अगतहीं मन भर देलसि। असली घी' नू ह। तरकारी सङ् चोखो ? बैंङन के अइसन सवाद अनते दूलम रहेला।

एक दिन, दू दिन, आजु ई तिसरका दिन ह। काका जवरे काल्हु वधारि घूमल गइल। दू दिन आ राति में घर के सइँकी-सइँकी हाल काकी सुना दिहली। इहवाँ के दिन-दसा उहवाँ भइले ना लउकत रहे। आँखि प छोपनी एक प एक ना परल रहे। बाबू के त चेहरो ना मन परे। मतारिओ का गइला पचीस वरिस भइल। जब ले रहली, गाँव ना छूटल। लगहीं का हाई स्कूल के नोकरी रहे। साइकल से आना-जाना। प्राइवेट एम० ए० तक ओहिजे से कइल गइल। ममहर का लोगन के कमाई देखि के कलकाता धराइल। ओने चमक के चकचन्ही, एने घर का कलकान के खबर। मेहरारू-लइका पछलगुआ बनले। ज पोंछि जनात रहे सेही सूंढ़ बनल आ लपकल कइल एह डाढ़ि से ओह डाढि के पुलुई खातिर। ठाकुरजी का छोह से तीन काठा के गड़हा गजरा का मोले मिलल। भरहीं में जे लागल से लागल ना त हामा-सूमाँ से मकान बनित महानगर में ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महानगर कलकाता के मकान। घुरहूचक के घर। दूनो दू छोर प। सभ तरे। काँच सूत के तुनुक तार भर के नाता। ई जोरल कवनो जोरल ना ह। काका कवनो अग्रामति उठा ना रखले रहले। बुढ़ारी में माई के मतिये मरा गइल त का कइल जाइत? चूल्हा दू जगे जोरवावे का बेरा के विरोध ना कइल आजु पितिआ-भतीजा में अतहत फाँक डालि देले बा। चचेरा छोट भाई के मलेटरी का कमाई से कुछ उजिआइल नइखे बुझात। लइका बहेङवा भइल जातारे स। के देखो? राम भरोसे दिन-राति कवनो तरे कटल जाता। बखरा वाला तीनों घरन के ताला मुरुचा गइल रहन स। बड़ही मोसकिल से खोलल गइल। मुसकोइल से केंवारी के जाम हटते ना रहे।

ई त भीतर के बात ह। के का जानता? दलनियाँ बाकी एके बा। इजमाली ईजति। एकर लभजान छान्हि देखि के राह चलनिहार मोहात होई। पुरनका आदमी दू गो आसिरवादो सुनावत होइहें। काका के? ना, कलकतिहा कमासुत के। रोंआँ गनगना जाता। ई अखरखन ह। बेबी के मतारी का कहिहें? दिन में तीन बेरि घर पोंछवावेली। जूता बरमदे में रहेला। ड्राइंग रूम का कारपेट प चले खातिर चपला अलगे बाड़ी स। एहिजा बेटी-पतोहि का राति-बिराति बहरा निकले के परता, उघारे गोड़। सेप्टिक पयखाना बनवावल बहुते जरूरी बा। गाँव में हजार-बजार खरच होता बिआह-सादी में, बाकी मेहरारुन के एह जरूरत का ओर काहें दो लोगन के आंखिये मुंदाइल रहता। असल में केहू बतवनिहार नइखे। आगा चलि के राह देखवनिहार नइखे। जहाँ एक आदमी बनवावल कि देखादेखी सभे एह तरीका के अपना लीही रीनो करज लेके।

ना, कुछुओ होखो, दलानि भसे ना दिआई। समिलात अड़ान ढहे ना दिआई। बीस हजार ईंटा में फरिआ जाई। पयखनो-बाथ रूम समेत। आइल-गइल, हीते-नाता सभ केहू बाह-वाह करी।

बन में मोर नचवे कइल त का? अलगाउझ वाला कलाकाता के मकान अपना जगे रहो। जवर के चीन्हा घुरहूचक के दुआर छोड़ल ठीक नइखे। बेबी का बिआह में दू बरिस के देरी बा। दस-बारह हजार घसकवला से कुछ बने-बिगरे के नइखे। उनुका मतारी के समुझावल जाई। एनो-ओने करिहें त ईहे नूं जे दू बरिस खातिर ऊ कुछ टिउसन आउर उठा लिआई। बाप रे बाप, ई भार जब ले ना उठी मूड़ी गड़ाइले रही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवख बुता गइल

एके दाँत के काटल रोटी खनिहार अमर आ गोपाल एके टहर रहले, एक लगहिंगें एगारह वरिस। दुनो आदमी दु ओर से आइल रहलन एह नगर में। गोपाल लइकाहगें से पेटजरू वाकी पितमरू रहले। अमरो का घरे कोठिला में कवो पेहान नाहियें परल होई उनुका होस भर में। दूनों जने कमाहीं का उदेसे अपना गाँव से बहरा निकसल रहमु। हँ, जहाँ गोपाल दूगो लरिकन के बाप बनि चुकल रहले तहाँ अमर का बिआह के सालो ना लागल रहे ओह बेरा ले।

ओह दिन अमर जतरा देखि के चलल रहले घर से। दुपहरिया खराइल रहे। बदरी के कनो नाँव-निसान ना। माथे मोटकी तउली धइले आ हाथे झोरा लटकवले अपना गाँव से रेलवे के डेढ़ कोना राह एक सुरिये नापि देले रहले। गाड़ी आवे में आधा घंटा के देरी रहे। टिकठ कटवला का बाद कुँइयाँ प पानी पीये पहुँचत-पहुँचत टन-टन-टनन-टनन-टन घंटी सुनाइल। ओने इंजिन का धुँआँ का पाछा भँड़ार कोना से उठल अन्हड़ो लउकल। गाड़ी आवे-आवे तले आन्ही-पानी के हड़-हड़ पट-पट-स्टेसन प पहुँचि गइल रहे। हँ-हँ कहत-कहत में प्लेटफारम के पसिंजर पिटाये लगलन। बपार से गोड़ ले सरबोर भइल लोग केहू-केहू तरे गाड़ी में पइसार पवले रहे। अमर अंडरविअर-गंजी पहिरले धोती आ हाफकमीज गारि के पसरले आइल रहले एक स्टेसन पहिले से। पटना जंक्सन पहुँचत-पहुँचत अन्हार हो गइल। स्टेसन का बरसाती में भर ठेहुन पानी लागल रहे। जतने गरजे, ततने चमके। बूनी बन होखे के नाँवें ना ले। एको रेक्सा ना लउके। कइसे का होखो ?

ओही घरी गया लाइन के गाड़ी आइलि रहे बुझला। एक बेर फेरु गेट चरचराइल। रेला के रेला एह पार आवे लागल। कान्ह प केहू हाथ धइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त अमर के धेयान टूटल। पाछा ठाढ़ शर्मा जी हँसत रहले। साहेब-सलाम का बाद का कइल जाउ सोचाये लागल। अमर के नोकरी लगला तीने-चार महीना भइल रहे एह से अवहीं ऊ असालतन डेरा-डंडा का फेरा में ना रहले। हर सनीचर के गाँवें जाये-आवे के परे एह से साल-दू-साल होटले में बिता देवे के बिचार रहलहिन। अपना गाँवें का लग के एगो कचहरी के कर्मचारी का साथे ऊ बाकरगंज का होटल में एगो चउकी दखलिअवले रहले।

तरेङना का भिरी के रामवचन शर्मा। आगे जैन कालेज के चीन्हा-परिचे कें। अमर के सरहनिहार। सुचिताह घर के। दूर-दिल-अजीज आदमी। सेक्रे-टेरिएट में कुछ दिन रहि के वेचारू हटि गइल रहसु। एम० ए० का डिग्री के भँजावे खातिर अपना अस आउरो कुछ लोगन का जमाति में जमल रहसु। स्टेसन का लगहीं मीठापुर महल्ला में उनुकर लौज रहे। एह घरी अमर के डेढ़ माइल दूर गइल शर्मा जी का ठीक ना बुझाइल। उनुका के अपना जवरहीं लिअवले अइले ओह राति-खा। लौज का सँघतिअन से अमर के परिचे करावत बतवले रहसु 'ई हमनी के कौलेज के 'जेवेल' हवे। पढ़हू में आ बोलहू में। हालहीं सेक्रेटेरिएट ज्वायन कइले हा।"

आपन तारीफ अमर के कटावन लागल रहे। जब केहू उनुका पढ़ाई-लिखाई का तेजी के बखान करे लागे त ऊ सइ मूठी के एक मूठी हो जासु। गरीबी का दाब से उनुका मन में महत्त्वाकांक्षा के कवनो बीआ अँकु-रहीं ना पावल, उजिआये-लहलहाये के के कहो। बहुते नीके तरे बी० ए० पास कइला का बाद पी० सी० एस० खातिर उनुको मन कबो लुवलुआइल रहे बाकी लगातार तीन बरिस ले कवनो ना कवनो बर-बेमारी के अङेजत उनुकर हिआव ना पसरत रहे। बिहने चाह-पानी का बाद शर्माजी सलाह देले जे सेक्रेटेरिएट का नोकरिहा खातिर नीमन मोका रहेला कमीसन का इम्ति-हान में बइठे के। अमर के एक बेर चांस अजमावे के चाहीं। बलुक ऊ आ जासु एही लौज में।

शर्मा जी से बिदा होके रेलवे गुमटी प आके अमर बाकरगंज खातिर रेक्सा धइले। पीच रोड प हराहर बढ़ल जात रेक्सा के पैडिल का ओर टक-टकी लगावते उनुका मन के चरखा चालू हो गइल। अपना से कहाँ गलती भइल बा एकरे गुनावन में ऊ डूबे-उतराये लगले। का भाउर लइकन लेखा उनुकर मन कबो ना होत रहे नीमन-नीमन नोकरी खातिर ? दू बेरि इम्तिहानो आ इंटरभिऊ दे चुकल रहले। एगो में त रिजल्टे ना निकसल रहे। देहात में ठीक से पतो त ना नू चले जे कब कहँवाँ अप्लाई करे के बा। दोसरे, अइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो हीतो-नाता ना रहलन जे उनुकर जोह-फिकिर करितन आ कवनो सटीका बइठा के नीमन जगहा धरा दिहितन। ई त सरकारी नोकरी खातिर 'एज' बचावे के बात रहल हा जेह से लोअर डिवीजन वाला इम्तिहान में उनुका बइठे के परल। एही से राजधानी में उनुका गोड़ धरे के अड़ान भेंटाइल बा। जवन भइल तवन भइल, अब चूके के काम नइखे। शर्माजी के सग-साथ ध लेवे के ह। होटल का खटर-पटर में पढ़ाई ना चलि सके। मीठापुर लौज में चलि आवे के काम बा जहँवाँ एक से एक तेज आदमी रहतारे। जादे लोग नोकरिहे बा जेह में अधिका आदमी कमीसन चाहे प्राइवेट एम० ए० के तैयारी करता।

मीठापुर लौज में एगो सीटो खाली रहे। एह से महीना लागे का तीन दिन अगतहीं अमर बाकरगंज के होटल छोड़ि दिहले। दू चउकी वाला कोठरी में उनुका जगह मिलल। ओह में एक जने अगते से रहत रहले। चेहरा-मोहड़ा से अमर का उनुका में कवनो खूबी ना जनाइल। नाट-खूँट आदमी आ ऊहो थोवराह जेकरा से भरसक बोलहूँ के मुँह ना पसरल उनुकर। बाकी ई का? ऊहे आदमी अगते आपन बतीसी झलकावत अमर के आवभगत करे लागल। विहँसत चेहरा से दिल के सफाई जनात रहे। दस-पनरह मिनट का बतकही में अमर के बिचार पलटे लागल।

शर्माजी के सीट बगलवाली कोठरी में रहे। कोठरी रहहिन त छोटहने बाकी बहुते चुनमुनियाँ देवाल में बनल रैकन पर करीना से किताब आ पत्र-पत्रिका सरिआवल रहे। छोटहन टेबुल आ ओकरा दूनो ओर दू गो कुर्सी दुआरिये प से लउके। चारू पउअन का नीचे दू-दू गो ईंटा धइ के ऊँच कइल चउकी प गुलगुल बिछवना, धप-धप ऊजर चद्दरि, तकिआ। गोड़तारी एगो लकड़ी का रैक पर दू जोड़ी जूता आ बूट पालिस के डीबा आ बुरुस। देवाल में गाड़ल कॉंटी से लटकत बिना तसवीर के बड़-बड़ अङरेजी अछर-अंक वाला एगो कलेण्डर। लौज के आउर कोठरी बड़-बड़ रहीसन, कवनोंमें दू सीट कवनो में तीनि-तीनि गो। दुइये-चार दिन में लौज का भीतर-बाहर के अन्दाज अमर का मिलि गइल। मेन रोड से थोरहीं दूर हटि के एक-डेढ़ बिगहा के हाता का निकसारे प एगो चाह के आ दू गो पान के दोकानि रहे। भीतर गइला प एक ओर गाइ-भँइस के खटाल लउके आ दोसरा ओर पुरान दुमहला मकान जे 'गुलजार' लौज कहाय। सेक्रेटेरिएट, जी० पी० ओ० आ डिफेंस एकाउण्ट आफिस का बाबू लोगन के ई इजमाली अड़ान रहे जहँवाँ कमे खरच में निकहन निबाह हो जा। बाहर से चिहुलगर नाहिंयों जनात रहे त का, एह मकान का भीतर आउर कुछ होखो भा ना, जिन्दादिली के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कभी ना रहे। फजिर होत-होत दतुअन मुँह में लेले अपना-अपना कोठरी से भाई लोग निकसे एक दोसरा के हुदुकावत। पानी का कल भिरी दू ईंट दतुअन से वेसी बातन के कूँचन होखे। अखबार अइला भर के देरी रहे. फेरु तसेह हाँद-हाँव होखे कि का वहे के। देस-विदेस के सर-समाचार प पंच आपन आपन एडिटोरिअल झारे। जलखई के सुधि ना रहे। टावर के घंटा जब नव हाली टनके तब जाके जवराइल लोग छितराय। केहू हाउ-हाऊ जीभी फारे, केहू एक बेरि आउर पेट साफ करे खातिर लोटा उठावे आ केहू हाली-हाली लुंगी-गमछा सम्हारत बाल्टी-लोटा लेले कल प धावे। दस-सवा दस होत -होत गुलजार लौज का कोठरिन में ताला लटकि जा जे फेरु साढ़ पाँच-छव बजे साँझिये-खा हटे।

लौज का मेस में खाली भोजने बने दूनो टाइम के। जलखई के इंतजाम आपन-आपन रहे। केहू भुजुना भसकावे त केहू चिउरा चबावे। ढेर लोग बाहरे से चाह-पान सँपरवले आवे। राति का भोजन मधे भात-रोटी, दाल-तरकारी का साथे भुँजिआ भा चोखा जरूर रहे। नेपाली नोकर 'बहादुर' साँझि के रसोई सेकराही बना दे काहे कि ओकरा एक जगे राति-खा पहरो देवे के डिउटी रहे। एके पंघति में एगारहो जने पा लेसु। खइला का बाद केहू पान खाये खातिर, केहू सिगरेट फूँके खातिर दस डेग टहरिओ लेउ। आठे-साढ़े आठ बजे कवनो नीनि के बेरा रहे? जेकरा पढ़े-लिखे के रहे तेकर त बाते दोसर रहे बाकी आउर लोग कवना दूखे अबहियें से कैद होखो? केकरो रूम में बइठकी जमिये त जाय। चरचा खातिर मुद्दा के कमी ना रहे। १९६७ वाला आम चुनाव का बाद बिहार में सविद सरकार बनि चुकल रहे। एगारह-एगारह बजे राति ले भाई लोग बहस का हँउजार से गुलजार लौज के अलगवले रहे। नीनि भगावे चाहे मन फेरवन खातिर कवो परिक्षार्थिओ लोग पाटा-पाटी का कवनो ना कवनो मँच में पोजीसन ध लेत रहन।

अमर के रूममेट के नाँव गोपाल प्रसाद गुप्ता रहे। गोपाल बाबू कमे, अधिका गुप्ते जी कहासु। अमर के पूरा नाँव कवो अमर बहादुर वर्मा रहे। नाँव का पाछा जाति सूचक टाइटिल ऊ जानि के हटवा दिहले रहले मैट्रिक के फारम भरे का बेरा। कालेज में पहुँचला प अपना काँपी-किताव प से बहादुरो उड़ा देले। अभाव में जामल-बाढ़ल दूबर-पातर देहि के नाँवो खातिर बहादुर कहाइल लाज के बात जनाइल रहे उनुका। बिना सींघि-पोंछि के 'अमर' रहि के कम से कम कालेज में कुछ लइकन के सरधा-सहानुभूति त पावत आइल रहले। अतने उनुका खातिर बहुत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुप्ता जी दू-तीन बरिस बड़ होइहें उमिरि में अमर से। दुनियाँदारी का हिसाब से ऊ काफी देखले रहले। अमर देखले कम सुनले ढेरि रहसु। कोर्स का बाद बाहरी किताबन मधे आन लोग अस उपन्यास-कहानी भा फिल्मी पत्रिका ऊ ना उलाटसु। ऊ पढ़सु खाली जीवनी, संस्मरण आ देसादेसी के जतरा-बरनन। सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आ नेताजी सुभास चन्द्र बोस के जीवन-चरित होत-होत महात्मा गाँधी आ डा० राजेन्द्र प्रसाद के मोटहन आत्मकथा पढ़ि गइला का बाद उनुका हाथे लागल रहे महापंडित राहुल सांकृत्यायन के लिखल लेनिन के जीवनी। एकरा के ऊ बेरि-बेरि पढ़सु तबो मन ना अघाहिन। फेरु राहुल जी के लिखल कतेक किताबन के ऊ खोजि-खोजि के पढ़त गइले। रूस के बरनन उनुका चित से ना उतरे।

पढ़े-लिखे में गुप्तोजी अमर से ओनइस ना रहले। जी०पी०ओ० में उनुकर बहाली नंबरे देखि के भइल रहे। एने कावर कुछ दिन से देरी-देरी से लवटत रहले लौज में। बहादुर उनुकर खाना रूमे में तोपि जा। कबो-कबो बाहरो से खाके आवसु। अमर का पुछला प एक दिन साफ-साफ बता दिहले जे कहाँ जाले। फेरु त अमरो के अपना घुमंतू रोटीन में सझिया बना लिहले। अमर पतिआये लगले जे जिनिगी के साध पुराई। अब ले असली ज्ञान ना भेंटाइल रहे। किताबे पढ़ि लेला से ना नू होखे! निगुरा रहि के उनुका असली ज्ञान के सुख नाहियें भेंटात रहे। अब ऊ आनन्द-सागर का लगे पहुँचि गइल रहले। कल्पना में के समुद्र आ साँचो के समुद्र के अंतर डिठार होत रहहिन। गुप्ता जी जबरे अइसन-अइसन विधायक लोगन का बीच उनुको उठल-बइठल होखे लागल जे बहुते प्रगतिशील कहासु। ई लोग लेनिन आ माओत्सेतुंग का धाजा के बाँस रहे। आजु एहिजा बइठक बा त काल्हु ओहिजा मीटिंग। रोज-रोज के चस्का अमर का मुँह के सवाद फेरि देले रहे। एगो विधायक कीहाँ से ले आइल रजनी पामदत के 'इंडिया टुडे' आ मैक्सिम गोर्की के 'मदर' का साथे-साथ किसान, मजदूर आन्दोलनन के अनेकन कर-किताब में का खोराकन से उनुकर पेट भरल चलल जा रहे। अब सरभिस कमीसन का तेयारी खातिर भूखिये ना रहहिन। लाज पचावे भर खातिर एम०ए० क घाले के सोचले। एकरो फारम भरे के त भरले बाकी इम्तिहान दीहल उनुका बस के बात ना रहि गइल। राजनीति का सोहबत में उनुका आउर कतो रसे ना लउके। हहरल हिया के खखन मेटल करहिन गुप-चुप के बइठकन में, साथी लोगन के बोली-बचन सुनि-सुनि के। हर महीने मनरूचा पत्र-पत्रिकन आ किताबन के कीने भा संबन्ध वाला दल के चंदा देवे में कोताही ना करसु। हँ, पति सनीचर के पचास माइल दूर, रेल से घंटा-डेढ़ घंटा का राह प

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना गाँवें आइल-गइल बन क देवे के परलहिन । सनीचर के साँझी-खा आ एतवार के दिन-दिन भर गुप्ता जी जवरे कवनो ना कवनो प्रोग्राम में डाँरिआइल रहे के होखहिन ।

आदमी का जिनिगी में सर-सँघतिया के मोल वहुत ह । ओहू में मनभीत के का पूछे के ? जवन बात अपना मेहरारुओ-मरद का वीचे ना कहल जा सके ऊ जिगरी दोस्त से कहला बिना ना रहा । ओकरा से दुराव ना रखा। खोदि-खोदि के, सइँकी-सइँकी बिरतान्त इआरी में सुनि लीहल जाला आ सुना दीहल जाला । दिन जात देरी ना लागल । गुप्ता जी आ अमर के दू देहि रहे सही के बाकी दिमाग एके होत गइल । गुप्ता जी के हर बात, हर काम अमर का नजरी सभ से सेसर लउके । उनुकर आँखि मूँदि के समर्थन करत देखि के अब केहू ना केहू बोलिओ बोलि दे । धर्म, राष्ट्र, निजी संपत्ति, सरकारी कर्मचारिन में भ्रष्टाचार, मँहगाई-मंदी, ओभर टाइम, हड़ताल, रूस-अमेरिका-चीन कवनो ना कवनो सवाल के जबाब जब गुप्ता जी दे लेसु त एक जने के कुटुकी छोड़त-छोड़त कि का अमर बाबू, राउर का कहनाम बा दोसर केहू ठठा के हँसि दे आ कहे 'एहू में पूछे के बा ? इहाँ का का कवनो दोसर थोरे कहबि ?' का जाने अमर कइसे ओह विषय के प्रतिपादन भा खंडन करिते ई जाने के जरूरत ना रहे केकरो । गुलजार लौज में गुप्ता जी आ अमर के लोग रेल के दूनो पटरी अस एक दोसरा के समानान्तर समुझे लागल ।

एह परिवर्तन के शर्मा जी अँखिग्रान कइले । वेकार के गलदोदई उनुका ना सोहाय । बगल वाली कोठरी में वइठल उनुका हो-हल्ला से अनस त बरव करे बाकी सोच उनुका दोसरे होखे लागल । ऊ केरिअर बनवावे खातिर अमर के गुलजार लौज में आ जाये के सलाह देले रहले, उनुका के बरबाद करे खातिर ना । गुप्ता के कवन, आगा नाथ ना पाछा पगहा, ना एज बाँचल रहहिन आ ना दोसर कवनो तर-तरक्की के उमेदे रहे । यूनियनबाजी के चस्का वाला आदमी का पाछा-पाछा डोलला से सीधा-सच्चा आदमी के का फायदा ई बात ऊ दू-तीनि बेरि अमर के समुझावल चहले । बाद में होनी उलुटा भाँपि के चुप लगा गइले । गते-गते दूनो पुरान परिचित आदमिन में बोलिओ-बतकही कमतलासे होखे लागल । अमर मुँह फेरि के चलि देसु, आँखि उलाटि के तकवो ना करसु शर्मा जी का कोठरी का ओर । गुप्ता जी से नाता अइसन लागल जे अगते के आपन नगीची आदमी दुराहुत हो गइले ।

डाक कर्मचारी संघ का चुनाव में गुप्ता जी कवनो-कवनो तरे जीति गइले । अमर के हुलास धइले ना धरात रहे । गुप्ता जी खातिर पोस्टर लिखे से लेके कतने आउर-आउर कार उनुका करे के परल रहे । ओह दिन ऊ अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओर से मँउसे लौज का लोगन के मिठाई खिअवले। वहादुरो के सिनेमा देखे खातिर रोपेया देले। लोग का ई जाने से वाकी न रहल जे ऊहो ओही दल के कर्मठ सदस्य हो गइल बाड़े जवना में गुप्ता जी अस एगो नवहा नेता निकसल हा। फून-माला से लदाइल गर लेले ठाढ़ गुप्ता जी का बगल में कान्हे सफरी झोरा लटकवले अमर के फोटो सोभनउक उतरल रहे।

वाकी गुप्ता जी का जवरे अब खाली अमरे ना रहले। उनुका दहिने-बाँवें नया-नया चेहरा लउके लागल। यूनियन का कार्यकारिनी के सदस्यन का साथे उनुकर उठ-बइठ बढ़ल जरूरिये रहे अब। एह में अमरो दू-चार बेरि गइल रहले। बाद में उनुका बुझा गइल जे दिने-राति यूनियने का काम में बाझल रहला से गुप्ताजी अस आदमी के ज्ञान आ कर्मठता से समाज के पुरहर लाभ नइखे हो सकत। एह खातिर जब-जब ऊ तनी बतिआवल चाहसु, गुप्ताजी हँमि के टारि देसु। दूनो आदमिन के साझ कोठरी यूनियन के छोटहन आफिस बनत गइल। पान-पत्ता चले लागल। एगो निकहन टेबुल आ चारि गो कुर्सी का साथे एगो आलमारी आ चाहदानी जवरे कप-प्लेट कतो से आ गइल। अब गुप्ताजी बाहर के आदमिन से जतना बोलसु-बतिआवसु ओतना अमर से ना। बाद में अपना मने अमर से हालोचाल पूछे के उनुका इआद ना परे। अइसना छोट बात के कुछ दिन ले अमर खेयाले ना कइले। एक दिन लौज में राज-नीतिये प अइसन बहस नधाइल जवना में गुप्ताजी का पक्ष में ना बोलि के आन लोगन का ओर से अमरो का बोलला बिना ना रहाइल। आखिरस गुप्ताजी का चुपाहीं के परल। राती-खा सूते का बेरा एकर उटकेर ऊ कइये घलले। 'जवन बात ना बुझा तवना में दखल ना देवे के। तोहरा जाने के चाहीं जे कब का बोले के होला।' 'साफ-साफ बात में बूझे के का रहल हा ?' अमर के कहनाम रहे। वाकी गुप्ताजी का जवन बुझात रहे तवन उनुका के कइसे बुझा देसु ? ई कवनो मुँह से बतावे जोग बात थोरे रहे।

एही-एही तरे दिन, हफ्ता, महीना बीतत-बीतत साल लागल। एके कोठरी के रहनिहार, भाव-विचार में एक, सहोदर से अधिका लउकनिहार दू गो चेतनउक नवहन के आपुस के दूरी बढ़त गइल। बाहर के लोगन का साथे जवन गुप्ताजी अपनइती देखावसु, ओह लोग से बोले-बतिआवे में जिनिका रस मिले, उनुकरे अपना, संघतिया अमर जवरे सूखल, खरकटल बेवहार होखे लागल। गुप्ताजी अब डाके कर्मचारी संघ के नेता ना रहि गइल रहसु। नगर के फुटपाथ विक्रेता संघ से होत-होत खुदरा विक्रेता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंडल तक के लोग उनुकर मुँह जोहे लागल। उनुकर मोल-महातम अमर का ओतना ना बुझात रहे एह से गुप्ताजी के बड़हीं कउँच बरे। जहँवाँ राति-राति भर जागि के सर्वहारा के उद्धारवाला साहित्य एक जने पढ़सु त दोसर जने सूनसु आ बीच-बीच में टोका-टोकी क के गूढ़ बात फरिआवल जात रहे तहँवाँ अब तुरत मुँह फेरि के करवट बदलाये लागल। प्रगतिशीलता आ जनवाद एह कोठरी में बहारन लेखा भइल जात रहे। अमर लइकाइयें से अपना गोतिया-देयाद, टोल-परोस से फिरंट रहत आइल रहसु। जाति के नाँव प त उनुकर देहिये जरि जाय। आपन कहायेवाला लोगन का लल्लो-चप्पो में परेवाला ऊ कबो ना रहले। कतो केहू का दुख होखे त लागहिन जइसे उनुके देहि में सुई गड़ावल जाता। अपना से अधिका फिकिर उनुका आने केहू के रहे। असल में दुखियन मधे आन उनुका खातिर केहू रहबे ना कइल। राहे-बाटे अनेरिया कुकुरो प जो कवनो अबाटी लइका ढेला चलावे लागे त 'हँ-हँ' कहि के ओकरा के ऊ रोकि देसु। एक दिन रोड प बइठनिहार एगो बूढ़ मोची के आठ-नव बरिस के लइका के अपना पाले से इस्लेट-किताब कीनि दिहले।

फाइनल मैच कारन ओह दिन सेक्रेटेरिएट में लेकराहे छुट्टी हो गइल रहे। अकसरे एने-ओने कतो जाये के रहहिन ना, एह से अमर सोझे डेरे प चलि अइले। बहादुर के बोला के भुजुना कीनि ले आवे खातिर अठन्नी थम्हवले। पुरान अखबार प अपना खातिर उझिलि के ठोंगा बहादुर का हाथे धरावत कहले 'लो, तुम भी खाओ।' निमक के पुड़िया खोलते रहसु कि बहादुर बोलल 'गुप्ता बाबू कब जा रहे हैं?' 'जा रहे हैं? कहाँ जी?' अमर चिहइले। 'आप नहीं जानते हैं?' 'नहीं तो, किसने कहा है?' अमर का जबाब में जवन सवाल रहे ओकर जबाब आखिर उनुका बहादुरे से मिलल। गुप्ताजी बुझावन साहु का कटरा में एगो फेमिली क्वाटर लेले हा।

राति खा मेस में खाये का बेरा केकरो उटकेरला प गुप्ताजी का मुँह से कढ़ावल एही एतवार के गुलजार लौज छोड़ि देबे के बात अमरो का काने परल। बस अतने भर ले। एकरा आगे कवनो बतकही दूनो आदमिन में ना भइल। अमर का कपार प कुफुत के खीसि चढ़ल रहे। कोठरी में अइला प ना ऊ कुछ बेसी जानल चहले ना गुप्ताजी अपना मने जनावल। हँ, ई भइल जे एह सनीचर के गाँवें गइल जरूरी रहहिन तबो अमर ना गइले। गुप्ताजी के बिदाई का बेरा रसम निबाहे के रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतवार के सवेरहीं आगा-आगा हाथ ठेला आ तेकरा पाछा दू गो आदमी आ के कोठरी का लगे ठाढ़ भइल। एगो त बुझावने साहु का घर के सवाङ बुझाइल।

'अमर जी, हम त शिफ्ट कर रहल बानीं, आजुए। अगिला एतवार ले फेमिलिआ ले आवे के ह। हम त कहबि जे रउओ एगो डेरा ले लिहितीं।'

गुप्ताजी का मुँहें 'अमर जी', आ 'रउआ' सुनि के अमर के काठ मार देलसि। 'तू' आ 'तोहार' छोड़ि के एगारह बरिस का भीतर दोसर कवनो संबोधन उनुका सँघतिया का मुँह से ना निकसल होई उनुका खातिर। आजु ई आदर सूचक उचार से उनुकर बाँचलो-खुँचल अपनइती के धागा जइसे केहू झट दे तूरि फेंकले होखे।

पहिले चउकी, तब आलमारी आ टेबुल-कुर्सी कोठरी से बहरावल गइल। गुप्ताजी देवाल में गाड़ल खूँटिओ ना छोड़ले आन का हवेख खातिर। बुझला उनुका बिसवास रहे जे अमर उनुकर सलाह मानि लीहें आ आजुए से दोसरा जगे चलि जइहें। ठेला प सामान लदाइल त गुप्ताजी घूमि-घूमि के लौज का सभ आदमिन से भेंट करे लगले। बगल के कोठरी वालू शर्माजी का आगा बढ़ुने हँसि-हँसि के मूड़ी डोलावत दूनो हाथ जोरले। अमर का मन में छन-भर खातिर ममता उमड़ल। दहिना हाथ उठे-उठे भइले रहहिन कि गुप्ताजी के महुराइल मुसुकी जबरे कढ़ावल 'अच्छा त' सुनि के 'लाल सलाम' करे के उनुकर लालसा दरे प तँवा गइल।

ठेला का पाछा जात आजु ओह आदमी के पीठि रहे जेकर मुँह अमर एगारह बरिस ले जोहले। उनुका आँखिका आगा अन्हार हो गइल। कुछ सूझो त कइसे? गुप्ताजी के साहु लोगन का इलाका में बोलावल जाता एकर भरनक अमर का काने केहू डलले रहे सही के, बाकी ऊ पतिआसु ना। आखिर आजु साँच होइए गइल। उनुका थोरे कवनो 'प्रसाद भा सहाय कौलोनी' में निवाह होखे के बा? पुजाये के साध उनुका रहबे ना कइल हा कबो। आ अब त पुजहूँ के सवख बुता गइलहिन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरुता

"के हं ए हमार बाबू ! तनो हई हमरा कन्हियां पर धइ द।" दूनो हाथ पसरले बुढ़िया रहि-रहि के बोलि उठे जब ओकरा काने केकरो आहट के आवाज परे। बुझला बड़ी देर से बरहम बाबा का चउतरा तर ऊ बइठलि रहे।

पूस-माघ के साँझि, किरिनि डूबलि ना कि मुन्हार भइल। बगइचा का पतइनि में छपकल अन्हार गते से उतरि के धरती पर पाँव रोपे लागल। देखते-देखत सँउसे बधारि के हरिअरी सँवरा गइलि। बिहने पहर के पसारल जगमग मोतिन के पथार अगतहियें उठा लीहल गइल रहे। रहि गइल रहे अब सरेहि का देहे ओढ़ावल एगो पातर-झीतर मइलछहूँ चदरि जे गोंयेड़ा के धुँआँ उतारि फेंकले रहे। टापा-टोईं आदिमी-जन चलतो रहे त जइसे मुँह बान्हि के। केनिओं कवनो हलचल ना सुनात रहे। अचके में बकुलन के कों-कों आ कउअन के काँव-काँव से पजरे के पाकड़ि अलगि उठलि। बुढ़िया के लागल जे अब बइठला मे काम ना चली। बाँवाँ हाथे भूँइ धइले आ दहिना हाथे आपन डँटुली सम्हारत उठले चाहति रहे कि "काहे बहिनीं, अबहीं ले एहिजे बइठल बाड़ ?" कहत सोमरिया आके आगा ठाढ़ हो गइलि। ऊ कतहूँ लमहरा से पेठवनियाँ से लवटति रहे।

लकड़ी-काठी समेटत छोटहन गेठरी सोमरिया का दउरा में धराइल। सङ लागल बुढ़िओ के गोड़ गते-गते गाँव का ओर बढ़ल। दिन भर के पटाइल पछेआ सिसकारी छोड़े लागल। गोड़ तर के धुरिओ कठुआए लागलि। बुढ़िया के वाती-ब्राती भइल लूगा बेयारि जार लड़त-खा कागज के ढाल-तरुआर निअन वेकार रहे। तवनो पर हाथ के डँटुली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु हाली-हाली उठति-गिरति रहे। जिनिगी के बोझा हलुकाइल बुझात रहे रोज-रोज के रेंगला-घिसिअवला से तनी फँफराह भेंटाइल रहे। सोमरिया सचहूँ बड़ नेकी कइलसि।

आजु से बीस बरिस अगते का ईहे देहि रहे सुरुता पारत खा बुढ़िया का बुझाइल जे बरिसन बीतल बात काल्हुए के होखे। काल्हुए त केहू कहले रहे जे जाये दे फुअवा आजु से एहिजे रहु। खाँड़ा-टूका खात हमरे कीहाँ परल रहु।

ओकरो बुझाइल रहे जे आपन घर-दुआर छोड़ि के दोसरा जगहा पर अउरी कुछ होखो भा ना, माटी के तरनि ना होखी। आ एहिजा त घिसिआइओ के केहू दरिआव में डालि दीही। हे मन, गाङ के तिरवाहीं छोड़ि के कतहूँ जाये के काम नइखे। एक कवर दे दीहनस, परल रहवि। हमरा ढेरि चहवे का करी ?

"हाथावा धइ ना ले बहिनी", कहत सोमरिया बुढ़िया के धेयान तुरलसि। मोतियाबीन के आँखि के पपनी दिनो-खा आहे पर उठत-गिरत रहेले, हाथ के अलम धइला पर त जइसे गिरे-उठे से ओकरा फुरसते मिलि गइल। सुरुता के तसवीरि फिनु झलके लगली स। सोमरिया का पेठवनियाँ करी ? ई त बेगर दूनो ओरि के भारा लेले माथे दउरी उठइबे ना करे। आजु-काल्हु हवो गाड़ी से जातिआ। एह में पेठवनियाँ के कवन बड़वारगी बा ? एगो हम रहीं कि नव कोस जाईं त दतुअन करीं। सङ के बहँगिवाह त कोसे भर पर पाछा छूटि जा स। दूनों हाथ भाँजत दुलुकी चलीं, दुलुकी। तुरहिनि-तुरहा हमरा आगा ना ठटत रहन स। माथ पर बड़का-गो दउरा आ ओह में किसिम-किसिम के करनी। लगन का दिन में आँटा, चाउर, लूगा धोती बन्हावरि, भर नादा दही आ काँटी में घीव चाहे भरल अँचार, तवना पर से जतन से धइल बड़हन गो अभरुनुआँ कोंहड़ो। जाड़ा में एक ओरि से दारा, दही, बजड़ा के तिलवा त दोसरा ओरि से नवका चाउर-चिउरा, गूर के भेली, मेंथी-सोंठि। दउरा उतरला पर बान्हल जिनिस के पुरुजा पढ़ि के केहू गने-सहेजे चले त बेटी-पतोहि 'हँ-हँ' कहि के रोकि द सन। "फुआ का माथ पर के बोझा भरके-खरके ना" सुनत कहीं कि हमरो मुँह से रंग-बिरंग के कुटुकी छूटे लागे। फिनु त 'फूआ अइली, फूआ अइली" कहत घर भरके लइके-सेयाने अवंज कइ दीहन। केकरा हितई-नतई हम ना पहुँचलीं ? बेटी-पतोहि के कवन सनेस गिरहि बान्हि के ओकरा महतारी चाहे सँवाङ कीहाँ ना ले अइलीं ले गइलीं ? नइहर-सासुर भले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुलाऊ, बाकी हम ना। खोदि-खोदि के करनी भेंजे खातिर अकुतदले रहत रहीं। तवे नूं डिठार के के कहो, चोरिको इनाम हमरा अस पेठवनियाँ के मिलत रहे।

"तनी सम्हारि के। एहिजा उतरे-चढ़े के वा।" नारा पर पहुँचि के सोमरिया बोललि। बुढ़िया का बुझाइल जे ई का एह सुखले जगहा धिरावतिआ। भादो-भदवारी में त हम कवो त्रिछिली-पाँक देखि के थथम्हत्रे ना कइलीं। ठेंहुना पर बइठल बीठा सरिआवत माथे भरल दउरा चढ़ा के झम् सेनी उठीं आ छाती भर पानी के सर् से पार क जाईं। का हमरा कवनो डूबे-उतराये के डर-फिकिर रहे? पँवरे त जनमते से जानत रहीं। भरलो अरार पर से 'जै गङिया माई' कहि के वुड् की मारत, झोंटा सम्हारत, आँखि-मुँह पोंछत हम, मङरी, बुधिया, गङजली, मरछिया आ रमरतिया घाट पर वान्हल नाइनि के आगा-पाछा लुकात. वेटा-वेटी खेलीं जा। डूबि के दम साधीं त कहऽ स जे बाप रे बाप, बसमतिया बूड़लि बुझला, बुजबुजिओ नइखे छोड़ति। गते मूड़ी ऊपर करीं त उन्हनी का छक्के के परे। पँवरे में का धइल रहे? ऊ त जनला विना अँजुरी में पानी ले के भँवरा पिअले रहीं। साँचो कतो पिलुआ पिअला से पँवरे आवेला?

"अव आ गइलीं जा वड़का इनार पर" सोमरिया वतवलसि। हँ, ईहे नूं बड़का इनरा ह। पाका के वान्हल वड़हन इनार। जगत माथ भर ऊँच। साँझे-विहने जहँवां मेला लागे, मेला। लोंहड़ा-डोरि के झाका-झूमरि आ पहिले के घींची के हारा-हूँसी। केहू घध तनले त केहू हँसि-हँसि के वतिआवत। दुखरा-धान्हा से जँताइल जीव तनिका एहिजे फँफराह पावे। सखी-सलेहरि के झुराइल मन छन भर खातिर इहँवें हरिअर होखे। मरद -मानुस ना रहला पर त सुतारे रहे: केहू टनकारे आपन दिन-चरचा सुनावे लागे। "आगा साल बासोमती के गवना कइ देवे के होई" बड़की भउजी एक दिन जव मुसुकी छोड़त कहि बइठलि त हम लजा के काठ हो गइल रहीं। हमरा आपन भाई-भउजाई ना रहे। ओह टोला के चाचा कीहाँ से बड़हीं घराहि रहे। चचेरी भउजाई जहिआ डोला में से उतरलि हमरा जवरे सखी धरवलसि। दू एक दिन पर कवनो ना कवनो वहाना से ओहिजा एक फेरा जरूरे लगा आईं। हमरा माई का आँखि से कम सूझत रहे। बड़की भउजी ढील हेरि दे, माथ वान्हि दे, आ कतनो नाकुर-नूकुर करीं वे चिटुकी कइले घरे आवहीं ना दे। खात-खा पहुँचला पर हाथ धइ के एके में बइठाले। कुल्हिए कहऽ स कि इन्हनी के दू देहि बा सही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के. परान एके हइन स के। ओह टोला आवत-जात बीच में मंगर साहु के घर भेंटा। दीअर-दानर के गाँव में ओह घरी ऊहे एगो दोकानि रहे। खइनी-तमाकू से लेके लूगा-फाटा तक बिका। घटला-बढ़ला गाँव भर के ईजति सम्हारे खातिर मंगर साहु के नाँव रहे। कहा कि ऊ ठगसु ना, लइका जाय चाहे सेयान। देखीं जा कि रोज अनगुतहीं गाङ नेहासु आ महादेव जी के जल ढारसु। उनुका आपन बेटा-बेटी ना रहे। एगो बउराह छोट भाई रहहिन जवना के मेहरारू मरि गइलि रहे बुझला। भतीज रमदेनियाँ साहु आ सहुआइनि के अपनो जमला से बढ़ि के रहे। काहे ना होखो, ऊहे जे आँखि में के एगो लकड़ी रहे ओह लोगन के। ओकर अइसन-तइसन दुलार रहे! लइकाइयें से रोख राखत-राखत ऊ लोग नाक प के फोरा बना देले रहे ओकरा के। अब त ऊ पूरा सोख हो गइल रहे। पाम्ही अवत-आवत ओकर मन बिगदे लागल। बेर-बागर दोकानिओं प ऊहे बइठे। जुलुफी राखे आ मुसुका-मुसुका के बतिआवे। देखि के जर चढ़ि जा। लाल-लाल आँखि लेले पान चभुरावे। सँझिली पहर जब घूमे निकसे त कइसन-कइसन दो गीति गावे। इनरा भिरी ताकि-ताकि कबो कनखी चलावे, कबो बँसुरी बजावे। ओह दिन मरछिया के बात सुनि के हमनी के मन करे कि ओकरा देहि में दिआसलाई धरा दीहीं। करिखाहा उलुटे हाला कइलसि कि ओकरा बक्सा में त रोपेया कढ़ले जात रहलि हा।

"तनी बिलमि जो बहिनी!" अपना दुआरी प पहुँचि के सोमरिया केहू के चाल करत-खा बोललि। केकरो हाथ में कुछ धरा के बुढ़िया के पहुँचावे चललि। सँझवति के बेरा बीति गइल रहे। खांरी का कगरी बइठल लोग-बाग कउड़ा पर हाथ सेंकत रहे। घूरा प बइठल कूकुर भाँउँ-भाँउँ करे लागल। दुर-दुर करत केहू ओकरा के भगावल बाकी कूकुर भगलो प भूँकल ना छोड़लसि। कुकुरन के बानियें ईहे ह। कूकुर लगला के बात बुढ़िया का अबहुँओं भुलाइल नइखे। माई का खटिया भिरी बइठल कबो-कबो रतिजागा करे के परे। ना सुबहित खाये के ठेकान ना पीये के। चीजो-बतुस जेने के तेने छितराइल-बिग इल रहत रहे। ओह राति कूकुर बड़ लागऽ स। दन-फिकिर के मारल देहि तनी भर माई के खटिया का गोड़तारी सोझ भइल रहे कि आँखि लागि गइल। बड़ डेरावन सपना रहे। अचक्के में नीनि टूटल त बुझाइल जे केहू हाथ धइ के झोरता। 'चोर-चोर' कहत उठलीं आ धरहीं-धरहीं तले मुदइया छेदवाली छड़पि के खोरि धइ लिहलसि। अन्हरिया राति, जनी जाति से अकसरे बहरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा के गाँव-घर के जगावल ना सँपरल। बड़ी देर ले कूकुर लागले रहि गइल। बिहने पहर केवारी खोलते का देखतानीं कि हमरा दुआरी प दरगाह लागल बा। लइके-सेयाने बटुराइल रहे, बाकी सभे चुप। "का कहीं ए भइया लोग, राति आङन में चोर ढूकल रहे" कहहीं कहे तले मरछिया के माई मेहना मरलसि—"हें-हें, काहें ना कहब? परिकल चोर आजु पकड़ाइल हा तब नूं बात बतिआवतारू। तनी चलऽ त भीतर, देखीं 'जा का-का गइल बड़ह?" कहत दस-पाँच गो लउठन के लेले ऊ ढूकि परलि अङना में। घर में हमरा ताला त कबो बन होत ना रहे कि केकरो ढेरि जाँचि-बूझे के परे। बरतन-बासन जवन रहे तवन ठीके लउकल। तले कवनो टप-दे हाथ में एगो जूता उठा के ले आइल। पहिलहीं से छनकल सभ केहू देखि-देखि के मूड़ी डोलावल। चोरवा के एक पवाई जूता बुझला भागत-खा अङने में छूटि गइल रहे। बाकी ओने त मरछिया के माई लोग—बाग के कान अगतहीं से अँइठले रहे। सान बुझावत लोगन के बहरा ले गइलि। फिनु त अइसन-तइसन छिटिका लगवल स? रमदेनियाँ जोरे मरछिया के धइला के खीसि रहहिसि। इनरा-कुँइयाँ जहाँ सूनीं तहाँ एके रमचरचा—"बाबा रे बाबा, सोझिये बाछी लूगा चबावेली। ओह घरी कहाउ कि दोसर करा दिआता त ढँढ़नच पसारसु। बड़ जाति निअन रँड़ापा खेपे नइहर अगोरली। पूजा-पाठ करेली, हुँः। आजु सती सतवंती के चिन्हार भइल नूं?" कहि-कहि के एने-ओने से करेज खोभऽसन हम खून के घोंट घोंटि घललीं। माइओ ना बाँचलि। महिनवन ले फेंकरत रहीं। केहू पँजरा ना ठेके। बड़की भउजी बुझला ना रहे। ओकरो नइहर में त आफतिये परल रहे। ओह फँसिली में जवान भाई-भउजाई उठि गइल रहहिस। बेचारी टूअर-टापर भतीजा-भतीजी के पोसे खातिर बूढ़ बाप का बोलवला पर नइहर चलि गइलि रहे। ....अन-दाना छूटलो पर ई पापी परान ना छूटल। कहँवाँ जाईं, कहवाँ रहीं। डूबि-धसि मरीं त नव-गो नाँव परे। कहलीं हे मन, उठऽ, अपना जाङर के आस करऽ।.........दुखरा-धान्हा कइला से दिन बीते लागल। माई-बहिनी के कुटिया-पिसिया करीं। पेठवनियाँ जाईं। एगो चोला, दने-फिकिर कतना? गते-गते दूगो ढेबुआ पास में रहे लागल।

"लऽ, आ गइलू" कहि के सोमरिया बुढ़िया के आङन का आगा ठाढ़ भइलि। चाँचर ओठँघावल रहे, टारि के दूनो आदमी भीतर भइल। "राम हो!" कहत बुढ़िया थसकरि के बइठि गइलि। सोमरिया पुछलसि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि कहुं त बहिनी किछु आनि दीहीं त बुढ़िया बतवनसि जे दिने के रीन्हल असहीं परले नूं होई, छोड़ि दऽ। सोमरिओ थाकल-खेदाइलि रहे, दउरी खलिहाइ के अपना घरे गइलि। खेते बधारी के बीनल जरवना बुढ़िया का आगा रहे, माङल अन-दानी के गेठरी ओकरा मूड़ी तर। अब ऊ अपना मड़ई में पहुंचि गइलि रहे। एहिजा से कतो ना जाई। ईहे बात ओहूं दिन कहले रहे .....हाय रे दुनियाँ, लुटाइलो घर लोग लूटेला।... सिउआ के देखते बड़की भउजी के सूरति इयादि परि गइल रहे। बड़की भउजी सरग गइलि हम नरक भोगतानीं। देवता रहे, देवता। बांस का जरी बांसे नूं जामेला, जनलीं कि सांचे कहता। पारा-काबू थाकला पर के कामें आई? जब रिगिर कइले बा त चलीं ओकरे कीहाँ रहीं। जाते दूनो बाँहि के बाजू सिउआ-बो के उतारि के दे घललीं। पर-पेठवनियां से जे कुछु मिले ओकरे हाथे धराईं। जे दू कवर आगा आवे ओमें ओकरा छँवड़ो के बइठा लीहीं। जनमतुअवा के अबटीं-चोवटीं, बड़का के पिठइयाँ-कान्हा चढ़ा के घुमाईं। टिकिया-तमाकू अपने ना छूवे के परे, केनिओं से अइला प नरिअर चढ़ले मिले। आपन बेटा-पतोहि का अतना करी। माया-मोह बढ़े लागल। हाली दे उठा लेवे खातिर रामावां के अब ना गोहराईं। आराम भेंटइला पर बुढ़ारी के देहि अउरी आराम खोजे लागेला। थोरहूं खटीं त थकइनी बढ़ि जा। होत-होत उठहूं में असकति लागे लागल। बाद में दूनों ठेहुना में सरदबाई के कारन ढूकल। आंखी से राती-खा लउकबो ना करे। थउआ बने के ठेकान लागल। बाहर-भीतर निकसल पइसल दूलम। दुखरा-धान्हा कहाँ ले होखो? पइसा-रोपेया अब दीहीं त कहाँ से? गते-गते खायेको-खोराक में कुसारी होखे लागल। बुझनीं जे आंटते ना होवहिन स के। बाकी बाते-बाते भेद खुले लागल। हमरा के बइठा के खिआवल उन्हनी के डाँड़ बुझात रहे। एक दिन गते सिउआ-बो से कहलीं कि हमार मोन्हावां त दीहे एने। बोललि जे का जाने केनो दो होई। लइका-फइका घिसिआवत फिरेलन स। हम कहलीं जे ले आउ, हमरा कुछ काम बा, तले त सांचो बड़का टेल्हावा घिसिआवत लेइये त आइल। ओह में ताला ना लागल देखि के हमार मिजाज तर-ऊपर होखे लागल। हाऊ-हाऊ खोललीं त कपड़ा के काटन-कूटन था टुटलकी कइँचिये भेंटाइलि। आहि दादा, अब का करीं? धइलिया का भइलि? अब त होसे उड़ि गइल। बाकी बताओ के? सूतल अदिमी नूं जागेला, जागि के महटिआवे वाला थोरे? "फेंकि-फाँकि देले होइहन स ईहे कुलछना सभ खेलवाड़ में केनिओं। का रहल हा ओ में?" "का रहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हा पुछले बाड़ू ? सइ॑की-सइ॑की मूइ-जी के बटोरल दस-गो पइसा रहल हा; ओकरे बल प त तोहनी लोग का दुआरी गिरल रहलीं हाँ। अब का करीं ए दइवा !" कहत हम छछने लगलीं। तीनि दिन ले अन ना गरहलीं। सिउआ का ओर ताकला पर साफे बुझा कि हतेया लागल हइस, बाकी सिउआ-बो चढ़बाँकिनि रहे। कहाँ ले लजाई-डेराई, उनुटे अउरी इरही-बिरही बोले लागलि। थोरहीं दिन का बाद बुझाये लागल जे हम इन्हनी का कपारे पलंजर हो गइल बानीं। अब बे खदी–बदी के सइ गिजना बात बोले। झूर जवरे झगरा बेसाहे। कुरकुर-करकर होत-होत एक दिन झोंटा धइ के निकाल बाहर करे के धिरवलसि। पँजरे ठाढ़ सिउआ तमासा देखत रहे। बूझे खातिर हमरा कुछुओ बाकी ना रहे। कलपि के रहि गइलीं। राती-खा उपासे सूतलीं त केहू पूछहू ना आइल। लइकन के त पहिलहीं से पँजरा ठेके से बरिजि देल रहे। दोसरा दिने जब हम आपन लुगरी-फटरी उठा के चले लगलीं त सिउआ का मुँह से अतने बकार निकसल "चललू कहाँ ?" "भिखइनि ई ना जाने ए बाबू !" कहत ओकरा घर से बाहर भइलीं। बुझाइल ना कि साँचो कहाँ जाईं। आँखी का आगा अन्हार रहे। गरमजरुआ मलिकान जमीनि प के बपहर वाला एह खँड़हर में एगो-दूगो लइका हाथ धरा के पहुँचा गइलन स बस अतने इयादि बा।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झगरू भाई

कहाला कि नाँव के असर होला। त झगरू भाई काहे अतना संझिया भइले? कहाउति का मोताबिक त उनुका झूरो से झगरा बेसाहे के चाहीं। बाकी उनुका करम में त मुँह लुकावल आ दाँत चिआरल छोड़िके आन बात जइसे लिखाइले नइखे। बड़ जेठ के के कहो उनुका छोट-छोट लइको से हेठ होखे के होला। बेटिओ-पतोहि से बात सुने के परेला। "जो रे करमजरुआ तोरा अतनो अकिल ना भइल!" कहत काकी उनुका के भरपेट झंपिलवला का बाद जब दुआरी का चउकठ पर कपारे हाथ धइके बइठली त पंच के ई बूझे में देरी ना लागे कि आजु फिनु पिरिता वो से झगरू भाई वा चलते घर में टकठेंन भइल हा। छोटकी पतोहि से बड़ बेटा कारन कुछुओ बोलल काकी खातिर पछ घींचल कहाला।

झगरू भाई पिरित भइया से बड़ हवे। बाकी बिआह झगरू के ना कइके पिरित के काहें भइल एह बात के जबाब-सवाल उनुका आ काकी का बीचे जब कबो सुरू होला त टोला-परोसा के लागलो केवार धड़ाधड़ खुले लागेला। हाऊ-हाऊ झरोखो के झांप उघरे लागेला। खीखी-खीखी आ हाहा-हीही सुने के होखे त ओह घरी वे बदले पंच बनि जाईं आ कर में कर मेराश्त कबो काकी का ओरि त कबो झगरू भाई का ओरि होइके दूनो पाही सोहत वे पइसे के तमासा देखीं ना। सांझ से वे बात के बात उभारत आ अनचलावल दालि चलावत जब "सात सतहवा उांग गइल, तिनडँड़िअवा गइलि बड़ि दूरि" के हाल हो जाई तबे जाके काकी के मुँह से निकसी "जो रे करमजरुआ, तोरा अतनो अकिल ना भइल! उठु, चलु। आखिर हमरो के जीये देवे के मन बड़हू कि ना?" भोनू भाव ना जानसु, पेट भरला से काम। मन में कथिओ के अमनख राखे झगरू भाई का अइबे ना कइल। सइ गिजना बात सुनतो प

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छाड़ि के ढेकारत आ "बम संकर, गांजा ना कांकड़" कहत जब दलानी में सूते जाये लागेले त कबो काल्ह एगो अधजरल बीड़ी भुकभुकावे के सवख जागेलहिन। करीमन साहु का दोकानि में ललटेनि जरत देखिके डगारे बढ़ल चहले तले गोड़ परलहिन खउराही पिलिया का पोंछि पर। ऊ कांइ-कांइ कइके उनुका के आसिरबाद देत भागलि। 'धन् तेरे के' कहत साहु का दलानि प पहुँचलन। "कहितीं त तनी ललटेनियाँ से एगो बीड़ी धरइतीं" कहि के बेगर साहु के हुकुम खातिर ठहरले ललटेनि बांयाँ हाथे टङले आ दहिना हाथे सीसा अलगा के बीड़ी जसहीं बरनर का कगरी पहुँचवले तले फटाक् से ललटनिके सीसा बइठि गइल आ उनुका अधजरल बीड़ी के डांड़े टूटि गइल। आधा उनुका मुँह में आ आधा ललटेनि के भीतरे रहि गइल। ऊहो अधवार के निकाले का कारसिस में नतीजा भइल जे साहु के ललटेनि भकभकाइ के बुता गइलि। जले साहु का मुँह से "बड़ बउराह हईं रउआ" निकसे तले झगरू भाई पोंछि सटकावल सिआर लेखा सर से निकलि गइले।

कतनो सम्हारि के काम करसु, झगरू भाई से कवनो ना कवनो गलती वे भइले माने ना। कहेलन जे हमरा उलुटा-सोझ ना बुझा। चउपाल में बइठिहें त उनुका थुकथुकां का मारे आन केहू के ठहरल दूलम हो जाई। मगर ऊ करसु त का? कवन खइनिहा थूकसु ना? के अपना पेटे में घोंटि घालेला? बाकी ना, लोग का ना जाने उनुका से कवना बात के जार बा। जहाँ कहीं दूगो आदमी का बीचे वेचारू ठाढ़ भइले ना कि लोग का छी मानुख होखे लागेला। कउड़ा कीहाँ बइठते खुड़बेरल सुरू करेलन त कवन वेजाइँ करेलन? उनुका बुझाला जे उटुकेरले से बोताइलो आगि लुतुकी फेंके लागेले। तवहूँ ना मालूम काहें लइके-सेयाने 'हँ-हँ' करत कहे लागी 'बड़ बउराह बाड़ऽ'। का करजु, केकर-केकर मुँह जाबसु? एगो दूगा लोग होखे तब नूं फरिआवसु। छोड़ि देले, लोग का जं मन में आवे कहो। केकरो बनवला से थोरे केहू बउराह होला?

उनुकर अपना घरे भा गोतिहारो का दर-दलानि पर बइठल त छूटिये गइल रहे, थोरे दिन में वेचारू के ई हाल हो गइल कि आपन टोल-महाल छोड़ि देवे के परि गइल। गाँव तनी बड़हन रहे। दोसरा टोला के लोग झगरू भाई के गुन-गरोह ना जानत रहे। एकाध दिन ओहिजा बड़ा खातिर-बात भइलहिन। सोचले जे अब एही टोला रहला में गुजर बा। ओहिजा उनुका कवनो अनटी ना भेंटाइल त बड़ भाग मनले। हिलि-मिलि के ओह टोला के लोगन का साथे दिन-दिन भर रहसु। घर से खाली खाहीं भर के नाता रहहिन। बेर-बागर उन्हनिओं लोग कीहाँ चलहिन। एक घरे बेटा के तिलक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के परोजन सम्हारे के रहे। झगरू भाई के पितमरू जानि के लोग महङ जिनिस चीनी चलावे के दीहल। गोड़ में धराऊँ जूता पहिरले जब मूठा के मूटा चीनी टप-टप चलावे सुरू कइले तले बंटिहा के बाबाजी "भरठ कइलस" कहत खिसिआइ के उठि गइले। दही के रूखर छाल्ही उनुका कंठ तर नाहियें जाये पावल। "का बात ह ?" कहत जब झगरू भाई लोगन का ओरि चिहाइ के तकले तवहूँ ना बुझलहिन जे का बात ह।

बरिआति चले का बेरा कहले जे हम त घर के सवाङ दाखिल बानीं, हमरा के आन ठहर लिआ जाके का करबि सभे, हम एहिजे रहिके दुआर अगोरबि। लोग बहुत खुस भइल। बरिआति गइलि रहे जवारे में। जब दुआरे लागे का बेरि बाजा बजला के भरनक झगरू भाई का काने परल त भला ठटाउ ? चउकड़ी फानत पहुँचिये त गइले गुरहथी होत खा मड़वा में पुछ इल कि केकरा पर घर सउँपि के अइलीं हां तब मन परलहिन जे दुआर प साँचो केहू ना रहल हा आ दलानि के जँजरिआ त लगइबे ना कइलीं। काहें के खासु-पीअसु, उहाँ से घुरिआइले गोड़े आरि-डँड़ार छड़पत एहिजा आके देखसु त खूँटा प बान्हल दूनो बरध नदारद। करेज कूदे लागलहिन आ बुझलहिन जे उनुका छाती के बाता-बाता टूटे चाहता। खैर अतने रहे कि गोरू चोरवनिहारन के नजरि दलानि का ओर ना गइल। बरिआति लवटे का अगतहीं झगरुओ भाई गते गाँव छोड़ि दिहले। एने-ओने के दुर्-दुर् बिल्-बिल् से त जान बाँची।

राती खा माई भिरी आके दू कवर अलोते कसहूँ खा के बधारि ध लेसु। कान में जो कवनो बात के भरनक परे त बुझाहिन जे लोग कहता कि झगरू वड़ बउराह हवे, निठाह चगड हवे। बुरवक आ बउराह के उचार उनका घर-घर से, कोना-कोना से सुनाऐ लागल। बगइचा में बइठल टूकू-टूकू ताकत खा जो केनिओं से कोइलरि का कुहूके आवाज आवे त बूझसु जे बिरावतीआ। राही-बटोहीं इनका ओरि जो ताकसु त जानसु जे बुझला हमरा के चीन्हतारे स। का बूढ़-जवान, का लइका मेहरारू, सभे उनुकर नाँवें 'वड़ बउराह' धइ देले रहे। मन में कहसु जे इन्हनी कें इचिको लाज-लेहाज नइखे तबे नूँ हमारा जरी लागल बाड़न स।

एक दिन ना जाने काहें दो बहुते हरिअर लउवले। मने-मन मुसुकात काकी से आके सुनवले, माई, थोरे रोपेया के इंतजाम कइ दीते त हमहूँ बाहारा कमाये जइतीं। काकी के मन दीने-राति का कुफुति से अँउजाइले रहते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे, सोचली जे बउराही अब छुटलहिसि बुझला । पहिलें त नाकुर-नुकुर कइली बाकी जब दू चारि दिन झगरू भाई के सुरिआइल देखली त एक दिन सुतली राति खा उनुका के झोला के गते आपन मोन्हा खोलली । पाँच गो दस-टकिया झगरू भाई धोती का खूँट में लपेटले । अब का, मोंछि प ताव देत खूब भोरं कलकाता जाये का तेयारी में लगले । पहर भर रातिये उठि के फर-फराकित होके सोचले जे भोलानाथ के तनी जलो ढारिलीं । पोखरा में से झट-पट नेहाइ के अइला प इयाद परलहिन जे पाँचों दसटकिअवा त चेटे में रहे । 'आहि दादा' कहत लोटा फेंकत ऊ फिनु कूदि परले । बाकी सँउसे पोखरा के पाँको हिड़ला प कइसनो कागज ना भेंटाइल । खीसि में आके जवन लोटवा फेंकले रहले तवनो ना जाने केने दो उतिआ गइल । बुझला ऊहे पानी में बइठल उनुका अकुताई के इम्तिहान लेत रहे । दूनों धोतिओ भींजि गइल रही स । पाले के पइसा लुटा गइल रहे । अब गाँवें लवटसु त कवन मुँह लेके ? सभे त बे बेजाइँए पहिन्हीं से 'बड़ बउराह' उनकर नाँवें धइ देले वा ।

बड़ी देर ले नाक धुनला का बाद सोचले जे कलकाता त बे पइसा के गइल पार लागी ना, हे मन, चलऽ गाङ हेलि चलीं । ओहीं पार कवनों दुखरा-धान्हा कइके दू पइसा कमाइबि । ओहिजा हमरा के के चीन्हता कि बड़ बउराह हईं ? बस, ईहे मन में गूतत ऊ सरपट दरिआव के डहरि धइले । संजोग नीमन बुझले । घट प नाव बान्हल रहे । गाँव-घर के केहू जनि देखे पावे ई सोचि के झगरू भाई गते-गते जाके एकोरा सटकि के बइठले ।

अजोता केकरो नजरि उनुका प ना परलि । किरिनि फुटते मलाह नाइ खोले चलल । नाइ के खुलत देखि के झगरू भाई के जीव में जीव परल । झट से दोबा में से निकसि के एगो ऊँच जगह ताकि के बइठिये त गइले । ओहिजा भइले चारू ओरि नजरि घुमाइ के नाइ में के बइठल एक-एक आदमी के नीके तरे निहरले । बड़हन खुमी भलहिन ई जानि के जे उनका गाँव के केहू नइखे ।

"बड़ बउराह बाड़ऽ भाई, ईहे तोहरा बइठे के कुटकुर जगह भेंटाइल हा ? ना नीचे उतरब ?" घटवार ललुअवलसि । बाकी झगरू भाई का अपना आँखि प पूरा भरोसा रहे । बधारी में कतनो दूरि के गाइ-भइँसि के चाले से चीन्हि लेत रहसु कि कवन गरू केकर ह, आ आजु एहिजा नाइ में के बइठल आदमी उनुका से ना चिन्हाइल हा । ऊ फिनु एक बेरि आपन आँखि दउराइ के सहेजले, बाकी केहू उनुका गाँव के ना भेंटाइल । तब मलाह के हाथ जोरत कहले, "ए घटवार भाई, साँचे साँच बतावऽ, तोहरा से के कहलहा जे हम 'बड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउराह' हईं। हमार ई गाँव त गाँव के लउठंन के धइल ह। उन्हनियें का उदबेगला से ईं सोचलीं हाँ जे गाङ हेलि के ओह पार के कवनो गाँव में चलि के रहीं जहवाँ के लोग हमार बउराह नाँव ना जानत होखे। बाकी हमरा ईहे नइखे बुझात कि वे बतवले तू हु कइसे जानि गइलऽ कि हम बड़ बउराह कहाईला।"

"बुरबक के कवनो सींधि-पोंछि ना होला ए महराज! राउर चलुइए चिचिआइ के कहतिआ जे रउआ बड़ बउराह हईं" घटवार बतवलसि।

"आछा त हम एही पार रहबि" कहत झगरू भाई छप से छाती भर पानी में छउकि परले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूँछ छोह

गुमानगाँव साँचो के गुमान गाँव रहे कबो, आजु लेखा नाँवें भर के ना। का त एकरा अस धन-जन नगिचा-पास का कवनो गाँव में ना रहे। दरिआव का तरिआनी में ना जाने कब पुरुखा लोग खूँई गाड़ल। करइल आ दोमट दिअरहा माटी गहुम-बूँट-सरिसो का रूप में सोना उगिले। खूँटे-खूँटे लगहरि पगुरी करे। इहाँ के मरद आ बरध के बखान होखे। जहाँ पंडिताई खातिर एकर पाँव पुजाय तहाँ पहलवानी खातिर बाँहि। जगि-उपनेति, काथा-वारता कतहूँ होखे, पंडित गुमाने गाँव के जोहासु। आन ठहर के जोमाह उखमज इहँवें के जवान झारसु। तबल-तपल रहे अगते एह गाँव के। जवार भर के पर-पंचाइति इहँवें के बाबू साहेब का दरबारे पहुंचे। तब घर-घर में अलगाव ना रहे, जाति-परजाति में अपनइती के भाव रहे।

कहनी अस लागेला बूढ़-पुरनियाँ का मुँहें सुनल तब के बात। अब त जनाता जइसे उलटन हो गइल होखे। अकिलि-गेआन चोरिए-बयमानी ले समेटाइल रहल। गुन-गरोह ओरात गइल। सनमति के नाँव ना रहल। परनसक आ देखजरू बढ़े लगले। आन खातिर जान देनिहार ना रहि गइले। सभे आप अपनी के मरत-जीअत बा। देहिचोर, इमनखोर अब गेठ-पुरधान बनले। ठहरे-ठहर घूर-गनउर के टाल लउकता। फरिछ बात-बेवहार के सवखे ना रहल एह गाँव में केकरो। बेलूरा मरदे-मेहरारू गरुओ से गइल निकलले।

कहाला कि बीआ कथिओ के ना मराय। कबो के पवरुख वाला एगो खनदानी घर अब खँड़हर हो चलल रहे जवना के अगोरिआ के भार अपना करमजरू बेटा आ चलबीधर नाति के छपले एगो बूढ़ी ढोवत रहली। आजी का मुँहें अपना बाबा-दादा के बखान कवनो कहनी-कथा से अधिका नीक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रा गो हीराजी का। [illegible] घर के बरहुरत नाटी के देवाल आ परोसिआ के पाका देखिके लइकाइएँ से उनुका मन में कोठा-अलरेज वाला ईंटा के मकान उठ वे के साध जागे। कीनल माठा जवंरे वासी भात खा के लोअर इसकूले गइले आ कमतलासे कांपी-किताब से काम चलावत गाँव का बड़का इसकूल का लइकन में साले साल नांव करत अइले। मैट्रिक में फस्ट डिवीजन अइलहिंन सही के, बाकी कमे नंबर से छूटल स्कालरसिप के समाचार सुनिके मन थोर हो गइल रहहिन। अधभेसर पढ़ाई प फस्ट डिवीजन मिलि गइल अतने ढेरि रहे। गरीबी का दव से जेंताइल-संकाइल जीव के हूवे कतना ?

जवन परिवार सहतिओ का समे सुबहित ठाढ़ ना रहि पावत रहे ओकरा भहराए के ठेकान लागि गइल 'वार' के चील्हि झपट्टा मारिअस महँगी से। फस्ट डिवीजन में मैट्रिक पास सतरह बरिस के आल्हर लइका का काम्हे कमाए के जुआठि धरे के बात हीराजी के बाबूजी का ना सोहाइल-सहाइल। कसहूँ बबुआ कचलेज में पहुँचि जइते इहे खखन रहे। घर में चोरी भइला का बाद बाँचल-खूँचल गहना-गुरिआ के झारन-झूरन त परिवार के प्रतिपालहीं में ओरा गइल रहे, बाँचि गइल रहे सात साल अगते साहु कीहाँ रेहन धराइल अनगराहित खेत जेह प कुछ आउरो रोपेआ उगाहल जा सकत रहे। बड़-बड़ मोसकिल से महाजन मांहइले। दरेहन से भेंटाइल थोरिके रोपेआ अलम बनल रहे हीराजी का मद्दर में कौलेज का पढ़ाई खातिर।

सन ४३ के हाल कइसे कहल जाउ। भोरे-भोरे कलकाता-पटना के अखबारन के देखला से रोंआं ठाढ़ हो जा। ईमान कांपि जा। अपना जिनिगी प धिरिक बरे। अखबार का पहिले पाना प फोटो निकले कलकाता का फुटपाथन प होटल से फेंकात जूठ-काँठ, छाड़न-छूड़न प कूकुर लेखा टटत नरकंकाल बनल कंगालन के। बगाल के अकाल मुँह बन्हाइल गुलाम देस का पेटे प ना, ओकरा अतमो प निठाह लात रहे। कौलेज का कामनरूम में अकाल फड के डिब्बा राखल रहे। अपना नास्ता में से काटि के हीराजी रोजे दुअन्नी डालल करसु। चरचा इहे रहे ज 'चरचिल' भूखे राखि के हिन्दुस्तान के थउसा रहल बा। कहाय कि सँउसे बगाल के अनाज कीनि के सरकार पलटन खातिर बरिसन के खोराक कलकाता में जामा कइ घलले बा जहँवाँ रोजे एक-एक जहाज आँटा-चाउर सरि के हुगली में फेंकाता। आस-पास के गरीब-गुजरा लोग गाँव छोड़ि के भर पेट भात खातिर कलकाता का ओर धावल जहँवाँ छछात नरक मुँह बवले रहे। हजारन अबर-दूबर बूढ़-ठूढ़ लइका-गदेल खइला-खइला बिना मरत जात रहन। ई कुल्हि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़ि-सुनि के हीराजी के बड़हीं खीसि बरे। देस कारन गोरन से लड़निहार जेहल में रहलन। कवलेजिहा लइकन में ओह घरी आजु वाला बात-विचार ना रहे। आ कवलेजे क गा रहे ? बहुत भइल त जिला भर में एगो। ओह साल सउँसे बिहार खातिर मैट्रिक के कोसचेन पेपरन का नीचे छव हजार के अंक छपल रहे। एह में मोसकिल से हजार-डेढ़ हजार लोग कवलेज के मुँह देखले होइहन। तब मैट्रिक पास खातिर नोकरी के टान थोरे रहे ?

सुभास बोस का अवाई के आसरा लागल-लागल 'वार' के खबर पढ़ाय। राजनीति के बात अठारह-ओनइस बरिस के देहात से आइल लइकन का का बुझाउ ? उन्हनीका त ईहे मनावत रहन स जे अंगरेज हारि जाउ जेह से हिन्दुस्तान के आजादी भेंटाउ। जरमनी-जापान से अधिका खीसि हिन्दुस्तान का मन में इंगलैंड से रहे। एकरा हरले में हिन्दुस्तान के जीति समुझल जाय। ओह घरी गीत बनल रहे—

'अरजुन के अवतार हिटलर कलजुग में धूम मचवले बा'।

आई० ए० के इम्तिहान खतम भइल। दुइए-तीनि दिन भइल रहे कि गाँव का हाई स्कूल के सेक्रेट्री साहेब रांड प लउकले। आगा बढ़ि के हीराजी हाथ हठवले। "बइठि के का करवऽ ?" कहत सेक्रेट्री साहेब उनुका के स्कूल में आ जाये के कहले जहाँ एगो आई० ए० के जगह खाली रहे। हीराजी 'आछा" कहि कें चुपा गइल रहसु। सेक्रेट्री साहब के कहनाम रहे 'रिजल्ट निकसत रही, 'पे' तहरा के आई० ए० ही वाला दिआई।"

डेरा प आके हीराजी अपना चउकी प चिताने परि गइल रहले। डीठि बँड़ेरी प गड़वले अंठ काटसु आ मूड़ी हिलावसु-डोलावसु। कवलेज के जेही एगो-दूगो उनुकर दरदवाह सँघतिया-इयार रहे लोग उनुकर साथ छूटल चाहत रहे। डेढ़-दू साल अउरी सहर में राखे के बेंवत उनुका बाबूजी का ना रहे। तबो अपना बरोबरी का उमिरि वाला लइकन के मास्टर बनल, जेह में कतने सादिओ-सुदा भा एक-दू लइका के बापो होइहन स, उनुका कइसन दो लागे। बाकी जे लइकाइएँ से निहँसते आइल रहे, ओकरा मन में सेक्रेट्री साहेब के सलाह ना माने के कवनो सवाले ना उठल। ठीक बा, प्राइवेटो बी० ए० के इम्तिहान दिआ सकेला सोचत उनुका लउकल जे मास्टर लोगन मधे कतने जाना प्राइवेटे आई० ए०, बी० ए० क घलले रहलन।

हाला-हाली सिआइल नएनकिलाट के पैजामा-कमीज पहिरले हीराजी गुमान गाँव हाई इसकूल का हाता में डेग डलले। मास्टर लोगन में ढेर जाना त उनुकर गुरुवे रहलन, नयको चेहरन प निकहने भाव लउकलहिन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेजी के सोर रहहिन एह से देहिहूवर रहलो प कवनो किसिम के बेकदरी ना जनलहिन। पहिलहीं दिन जवना उमंग से क्लास में कंठ खुललहिन आ ब्लैक बोर्ड प हाथ चललहिन तवन दिनो-दिन बढ़ते गइल। पढ़ावे का आगा उनुका आन कुछ ना सोहा। जतने पढ़ावसु ततने 'टास्क' देसु। चारि बजे का बादो ले इसकूल में रहि के लइकन के सवाल सुनसु आ जबाब बतावसु, कॉपी 'करेक्सन' करसु। थोरहीं दिन में नाँव गवाए लगलहिन।

मास्टरी से हीराजी के उजरत छान्हि पलटा गइल आ कुकुर-लँघान मकान के खन्हरत देवालो में लेवार लागि गइल। पाका के मकान खातिर ईंटा परवावे भर खेमाता अबहीं ना होखल रहहिन। गाँव में चलसु त 'इहाँ का फलाना बाबू के नाति, परनति हईं" कहि के आन टोला के लोग जब उनुकर चिन्हार करावे लागे त बाहर से उनुका भलहीं नीक लागे, भितरे ऊ अइंठा के रहि जासु। कहाए के 'बड़का घर' के आ अवकाति में छोटको से हीन। अगते के बखान सुनले कतनो होखसु बाकी आपन खेत रहला के सुख उनुका ना भेंटाइल रहे कबो। मन में ठानि लेले जे घर-खरची का बाद जे बाँची से रेहन धइल खेत छोड़ावे खातिर रही। बागो-बगइचा का नाँव प जसे-तस रहि गइल रहहिन—अनका अहरा वा पीड़ी प दूगो अबग आ छव-सात गो साझ आम के फेंड़। ओह घरी रोपेआ के तीनि साढ़े तीनि सेर चाउर त कवनो ना कवनो तरे किना जाय, बाकी सात-सात, आठ-आठ रोपए लूगा-धोती कीने के सावङ केहुए-केहू का रहे। जोड़ा धोती कुरता सुचिताहे का लगे लउके। डाँड़े गमछी लपेटि के ढेरि आदमी धोती झुरावसु। नेहाए में गरीब-गुजरा जनी-जाति के हाल सोचल जा सकेला। अइसने बेरा 'कोटा' आ 'कटरउल' के नया नाँव गाँव में सुनाइल जेकरा सभे का जबान प चढ़त देरी ना लागल। कपड़ा आ चीनी सहता दर प बेंचे खातिर सरकारी दोकानि खुलली स। जाँच करे खातिर सप्लाई आ मार्केटिंग इंस्पेक्टर बहाल भइलन। एक दू बेरि बड़के-बड़के लोग का नाँव प थान के थान कपड़ा आ बोरा के बोरा चीनी चढ़ि गइल। हो-हाला भइला प गाँव का बटोर में कहाइल जे मुँहदेखी ना होखे के चाहीं। बड़ छोट सभका कुछ ना कुछ भेंटाए के चाहीं। बेकति का हिसाब से कपड़ा आ चीनी गाँव भर में बाँटि दिआउ। एकरा खातिर अगते के सेवा समइती लेखा एगो कमेटी बने के बात आइल। अपना-अपना टोला के लोग नाँव दीहल। 'मलिकार' कहवनिहार बड़का घरन में से त केहू एह बटोर में रहे ना। सवाल उठल जे उहाँ सभन में से केकरा के राखल जाउ। एह बटोर में हाई स्कूल के ढेर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जने मास्टर किरानी बाबू आ चपरासिओ आइल रहलन। "मलिकार टोला खातिर हीराजी बड़ले बानीं" केहू कड़ावल त आउर लोग "हँ-हँ" कहल।

हीराजी कमेटी का मेम्बरन मधे सभ से अधिका दउरले-धुपले। घरे-घर जाके गाँव भर के मरदे-मेहरारू आ लइकन के गनती कइले। जनसंख्या का आधार प एगो रजिस्टर बनवले जवन से महीने-महीने आवत सरकारी कपड़ा आ चीनी के बँटवारा घर पाछा करे खातिर पकिआ इंतजाम भइल। तीने चार महीना में गाँव भर में उनुकर नाँव हो गइल। सभ के एके नजरी देखल ठाठा ना रहे। हीराजी कइले अतने जे देहन मेहनति करनिहार परिवारन खातिर लाठा-मारकीन भा साधारन धोती-लूगा अधिका राखसु आ आदमी प द् गिरह चारि गिरह का हिसाब से परिवार पाछा एक गज सवा गज 'पापलिन' भा 'सुपरफाइन' धोती-साड़ी के चीरा-फारी ना कइके अइसन कपड़ा बड़के आ महीन कहवनिहार लोगन का बीचे बाँटि देसु। जवन मास्टर लोग आन गाँव के रहे ओह लोग के अकेलहूँ मोटामोटी पाँच बेकति के एगो परिवार के बरोबर मानि लिआइल। सादी-बिआह भा सराध खातिर कोटा आवते कुछ अंस फरका राखि दिआत रहे। एह तरे सभका कुछ न कुछ भेंटाए लागल रहे। आन-आन गाँवन में कोटा के बँटवारा खातिर महाभारत मचे के ठेकान लागि जा, गुमानगाँव में ना।

बाकिर ई ढेरि दिन ले ना चले पावल। छूटि के 'बलाएक' कइल बन भइला से कोटा के दोकनदार अइँठाए लगलन। सप्लाई आ मारकेटिंग इंस्पेक्टरन के अड़ान दुइए जगहा रहे—चाहे त बलबीर बाबू कीहाँ चाहे दुरजोधन बाबू कीहाँ। पहिले एह दूनो बड़का आदमिन का हवेली में फाइन-सुपरफाइन कपड़ा आ झोरा के झोरा चीनी गते से पहुँचि जाय तब गाँव में कोटा अइला के खबर होखे। सभका बरोबरी हीसा-बखरा से एह लोगन के पेट ना भरे के रहे। एक राति दोकनदार बलबीर बाबू का दुअरे गोहारि लगवलन स—'छोटकन के बरोबर बड़को लोग के बना के हीराजी आगि लगावल चाहतानीं। अपने सभ के ईजति ना रही। हमनिओं का पेट बान्हि के कोटा ना उठाइबि जा। ऊपर से नीचे ले बे थम्हवले कंटरउल के दोकानि ना चलि सके। जो अइसने कमइटी रहल त लएसंस लवटा दीहल जाई।" बलबीर बाबू का दोकनदारन के कहनाम सही बुझाइल। "ना-ना, लाइसेंस काहें लवटाइब जा, हम उपाइ क देतानी नू" कहि के अभयदान दिहले।

फगुआ का मोका प कोटा के कपड़ा आवत-आवत ऊपर से नवका कमेटी के नीवों आ गइल। समे नाँव नये रहे। बलबीर बाबू प्रेसिडेन्ट बनावल गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहले। अधिका मेम्बर उनुकर असामिए आ हाली-मोहाली रहलन। कपड़ा के दोकानि कब खुले आ बन होखे केहू देखे केहू ना। तीनिए दिन में सजी माल साफ हो गइल। ना केकरो सुबहित धोती मिले पावल ना साड़ी। थान के थान नएनकिलाट आ लाठा का जाने कहवाँ चलि गइल। ताहि साल फगुआ में नाया बस्तर केहुए केहू का देहे चढ़ल। गाँव के लोग, खास क के गरीब-गुजरा आपुस में खाल-ऊँच बोलि-बतिआ के सबुर कइले। हीराजी के लोग जतना आसिरबाद देले रहे ओकरा हिसाब से बलबीर बाबू के गरिआवल कमे। एस-डी-ओ आफिस से कमेटी बदलवावे में ढेरि लोग सप्लाई इन्सपेक्टर के चाल बूझल।

अगते हैजा से गाँव के गाँव बरबाद हो जात रहे। एह बेमारी के नाँवें रहे फँसिली। जेकरा दस्त-कइ होखे लागे ओह आदमी खातिर फांसी के हुकुम आ गइल मानल जाय। कवनो-कवनो घर से जोड़ा मुरदा निकसे। लोग माछी अस मूए। हीराजी का चलते ताहि साल गुमानगाँव में हैजा ना होखे पावल। अपने घूमि-घूमि के हरिजन टोली से लेके बड़को टोल का इनरा-कुआँ ब्लीचिंग पाउडर डलववले आ बेकती-बेकती से कलरा के सुई लेवे खातिर निहोरा कइले। कुछ लइकन के लेले हाथे खरहरा उठवले त सभे अपना-अपना आगा के गली-खोरि रोजे बहारल करे लागल।

हाई इसकूल के लइका हर साल दसहरा में नाटक खेलिहन स। अब ले पौरानिके-ऐतिहासिक नाटक होत आइल रहे। अबकी कुछ दोसरो होखे के चाहीं मास्टर लोग कहल। हीराजी खुदे एगो ग्राम-सुधार वाला नाटक लिखि देले जे दू-दू राति खेलल गइल। एकरा में के भोजपुरी गीत ढेर लोगन का जबान प चढ़ल रहन स।

गाँव में रहत कुछ पढ़ल-लिखल लोगन से सर-सलाह कइ के हीराजी 'ग्राम सेवा पुस्तकालय' खोलवा दिहले। बीच गाँव के एगो भल आदमी आपन दलानि आ दरी दे दिहले। बेहरी कइके एगो काठ के आलमारी आ ललटेनि किनाइल। कुछ लोग आपन-आपन किताब दीहल। एगो अखबार मँगावल जरूरी जनाइल। बनारस के दैनिक 'आज' आ पटना के साप्ताहिक 'योगी' का साथे मासिक 'विश्वमित्र' आ 'कल्याण' आवे लागल। पाँच रोपेआ महीना प लोअर इसकूल के मास्टर साहेब साँझि के साँझि पुस्तकालय में बइठे लगले। अन्हार होत-होत हीराजी पुस्तकालय में जुमि जासु। राहे चलत केहू पूछे त अखबार के हाल सुनावसु। पुस्तकालय का किताबन मधे पंडित सुन्दरलाल के 'भारत में अंग्रेजी राज' आ महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बाइसवीं सदी' कतो से आ गइल रहे। हीराजी के ई दूनो किताब बहुते नीक लागे। 'बाइसवीं सदी' के बखान अदि-बदि के करसु। कहसु जे अइसने एक दिन हो जाई अपनो इहाँ, खाली अँगरेजन का हटला के देरी बा। आपन राज होते एहिजो सभे सुखी हो जाई। देस के सजी दुख अगरेजने का चलते बा। चीजन के महङी घटी। 'ब्लैक' भला रहे पाई? मर-मोकदिमा करे केहू का कोर्ट-कचहरी ना जाए के परी। गाँवे में पर-पंचाइति से कइसनो ममिला फरिआ जाई। आजादी मिली त बरिआरी ना नू चली। आ आजादी मिले में अब ढेरि देरिओ ना बुझात रहे। नेता लोगन जवरे बिरटिस सरकार के बतकही चले लागल रहे।

कहाला जे बीस-एकइस के उमिरि गदह-पचीसी का भीतर के होले। हो सकेला एही से हीराजी के सोच-फिकिर अपना सुख-सवारथ से अधिका अनके उपकार खातिर होखल करे। ना त, बलबीर बाबूका घरे सेन्हि फुटला का बाद पारी बान्हि के गाँव में पहरा देवे खातिर नवहन के गोल ऊ काहें बन्हिते? अपना आ आन टोला के छोट कहात जाति के लोगन से हीराजी का अनघा आदर-मान मिले। ऊ अपना जाति का बड़का लोगन भिरी हालाहाली ना जासु-आवसु।

एक दिन ओह टोला के राजाराम-बो के अपना चउकठ लगे बइठल देखले। उनुकर आजी एक कटोरा आँटा लेले अङना से अइली। राजाराम के उत्बास हीराजी सुनले रहले बाकी कइसे का-का भइल ई ना जानत रहले। महाजन के तगादा आ एक के डेढ़ा-दोबरी करजा कारन अपना घरे डिग्री आ लीलाम के हाल ऊ सुनत आइल रहले—जब से होस परेलन्हि। कहाए खातिर कबो के बड़का घर के, बाकी उनुका बाबूजी लेखा बेहाली गुमान-गाँव में केकरो ना रहे। खरची ओरइला प एह घर के आदमी कुदारी-छइँटी उठावे जोग ना रहले। गहना ओरइला प सात पुसुत से सँचल बरतनो-बासन बन्हकी धं-धं के काम चलल रहे। बरिआरा का हाथे सकेता परल एगो-दूगो घरन के हाल देखि के हीराजी के करेजा अइँठा जाइल करे। बनि-मजूरी करन्हिहारन के ऊ अपने अस जानसु-मानसु। अइसने लोगन में से रहले राजाराम-हाथ-गोड़ के टाँठ, अपना पाहुँच का जोर से दू पइसा के आदमी। कुदरवाही-हरवाही में उनुकर नाँव रहे। सन्तर निअरइलो प निहुरल ना रहले। बाल-बाचा रहहिन ना, मरदे-मेहरारू बस दुइए परानी खातिर कवनो हरज ना रहे। आजु भिखइनि बनल राजाराम-बो सजी हाल सुना दिहली। पिछुआरा के बरिआरा दुरजोधन बाबू उनुका घर आ घर से सटले पाँच फेंड़ आम आ एगो जामुनि प कहिए से डीठि गड़वले रहले। दुरजोधन बाबू का खेते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खरिहानी काम करे खातिर जोह होखे त राजाराम महटिआ देसु बाकी उनुका से हर तरे बीस बलवीर बाबू का कार लागे त मनगरे धावसु। दुरजोधन बाबू रहले पिलपिलाह आ गारिए का मुँहें बाते ना करसु, पारा चढ़हिन त दहिन-बाँव ना देखसु, हाथो छोड़ि देसु। राजाराम के सर करे के कवनों गव ना जइठत रहहिन। एक दिन गाँव के खतिआन उलाटत खा राजाराम के मकान आ फेंड़न वाला पलाट प उनुका मुअला बड़ भाई मनराखन के नाँव लउकल-हिन। फेरु त सोचे के अतने रहे जे कइसहूँ मनराखन के बेटी से रजिस्ट्री करा लेवे के चाहीं। एह तरे के कार में उनुकर सलहिआ रहसु जीउत बाबा। ऊहे राजाराम के भतीजी सनीचरी का ससुरा जा-जा के ओकरा काने लगले। थोरिके रोपेआ में छव काठा जमीनि प ठाढ़ खपड़पोस मकान मय फेंड़-रूख के बइ लिखवा दिहले दुरजोधन बाबू का नांवें। बाले-वाले दाखिलोखारिज हो गइल। छव महीना ले दम धइला का बाद जिउते बाबा राजाराम बो के ई खबर जना के तोख-बोध दे गइल रहले—"तोहन लोग के भरि जिनिगी घर में रहे देवे में दुरजोधन बाबू का कवनो उजुर नइखे। उनुका सहन का आगा के जमीनि प आन केहू का आ गइला से दीकत होख-तहिन एह से अगताहे लिखा पढ़ी करा के सचित हो गइले हा। तोहनी लोग का परले-हरले ऊहे कामे अइहें। हँ, दुरजोधन बाबू कीहाँ कवनो काम ना रही तबे राजाराम अनकर बनि-मजूर गछिहें अब से।"

साँझि-खा घरे अइला प मेहरारू का मुँहे राजाराम के एको करम बाकी ना रहे। चूल्हा ना जोराइल। उपासे राति काटि के भोरे-भोर दूनों बेकति बड़का दुआर प पहुँचल। दुरजोधन बाबू हवेली में रहले। पिआदा से खबर पा के बहरा अइले। राजाराम का मुँह से त बकारे ना निकसल बाकी 'सांचो हमार घर लिखवा लेनीं हाँ?" उनुका मेहरारू के सवाल भइल। आपन हाथ-माथ हिलावत दुरजोधन बाबू ओह लोगन के कवनो किसिम के सोच-फिकिर करे से मना कइले। बता दिहले जे जर-जमीनि जेकरा नाँव से रहेला ओकरे दसखत से हेरा-फेरी हो सकेला। तोहनी लोग का बाद मकान आ जमीनि के हवेख केकरा होइत, तोहनिएँ लोग कहऽ ना। जो आन केहू का हाथे चलि जाइत त हमार नाके नूँ कटि जाइत। भा, तोहन लोग का जिनिगिए में जो आन केहू सनीचरी से लिखवा घालित त तोहन लोग के इहाँ से बिदाई हो जाइत। ई त कहऽ लोग कि कवनो-कवनो तरे हम गाँव-घर का बे जनले छव महीना अगवे सभ काम पकिआ करा लेलीं हाँ।

राजाराम के घर-दुआर दुरजोधन बाबू का लिखा गइल बा ई खबर टोल-परोस से छपल ना रहल। जीउत बाबा के इनार बन्हात खा जमोटि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खातिर जकड़ी कर्ने के ना परल रहे। अपना जामुनि के मोटकी ढाढ़ि कटता खा राजाराम का करेजा प टाङ्गा चलल रहे। थहराइल रहवे वइले, साल लागत-लागत थउसि गइले। मेहरारूओ के रतवन्हीं हो गइलहिन। रोपनी का वेरा दुरजोधन बाबू का खेतें बीआ कबारे ना गइला खातिर उनुकर दिआदा जवरे काड़ा-कड़ी हो गलहिन। साँझी खा मलिकार के हँकार आइल रहे, गारी-फजिहति करत-करत दुरजोधन बाबू सट-सट दू-तीनि बबुली जमाइओ दिहले रहन राजाराम का पीठी प। बस, होत पराते दूनो बेकति के गोड़ उखड़ि गइल अपना पुस्तइनी धरती से। ताहिओ राति जीउत बाबा आइल रहले। उनुके चलते राजाराम का अड़ान मिलल बलबीर बबू का एगो पुरान-धुरान घर में। दुरजोधन बाबू का बदला बलबीर बाबू के परजा बनल राजाराम दूनो बेकति का प न परल। बलबीर बाबू गाँव के सभ से बड़का आदमी रहलन, जिला-जवार में नाँव वाला। दुरजोधन बाबू उनुका से खार खासु। ऍंड़ी अलगाइ के उनुका से ऊँच हं खे में आपन बड़वारगी मानसु। जं उत बाबा दुरजोधन बाबू आ बलबीर बाबू दूनों का दुअरा उठसु-बइठसु। दूनों मलिकारन के बर-बनवस्ती, ममिला-मोकदिमा में सलाहिआ रहसु। फिनु बाहर से ठाढ़ भलहीं लउकसु दूनो पाटी खातिर, ओरमसु बलबीरे बाबू का ओर भीतर से।

गाँव में राजाराम के गोतिया-देआद ना रहे। अपना जाति के ऊ अकेले रहले। उनुका खातिर केहू कुछ ना बोलसे रहे ई जानि के हीराजी अविभो में परले। का कहला-सुनला से दुरजोधन बाबू मनिते ना? बहुरमनि के बात छोड़िओ दिआउ त अभागतिन जवरे अइसन जुलुम ना होखे के चाहीं। अइसन बरिआरी होत रही त गली-खोरि के सफाई, रोग-बिआधि के दवाई आ देस-बिदेस के जानकारी खातिर अखबार-किताब के पढ़ाई, चोरहो रोके खातिर राति-खा गाँव चउगेठल भा आउर-आउर सुधार के सोचाहट इहँवाँ अनेर बा। राजाराम के फेरु से अपना घर में लवटावल जाइत एकरा उपाइ का बारे में अपना आठ-दस हेली-मेली से हीराजी बतिअवले त सभे एके बात कहल। जब कागज में राजाराम के नाँव नइखे त कुछ ना हो सके। "कुछ ना हो सके" सुनल उनुका सोहात ना रहे। मुअला बड़ भाई का नाँवे धन रहला से छोट के हक काहें मरा जाई, ऊहो तब जब कि दूनो भाई एके में रहलन लोग आ छोट के कवनो आन ठहर-ठेकान नइखे। एह में सनिचरिओ के महा लोभी मनले। "अइसन होखे के ना चाहीं, ई अनेति ह, अतहतह ह", जहें-तहें कहत चलले। सोचले कि दुरजोधन बाबू का करनी प गाँव भर में थुई-थुई हो जाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरनका लोग भलहीं उनुका 'हँ' में 'हँ' मेरा दीहल बाकी नवका लोग रामो-किसुन ना कढ़ावल। एँ, ई का हो गइल ? हीराजी से रहाइल नाहिएँ। राजाराम के उदवास के सवाल प सोचाहट खातिर गाँव भर के बटोर कइल चहले। दुरजोधन बाबू लगे दस आदमी चलित आ उनुका से अरज करित कि राजाराम दूनो बेकतिन के भरि जिनिगी उनुका मवरूसी घर में रहे देसु। ओह लोग के जिनिगिए अब कतना दिन के बा। आजु ले एहिजा के केहू भीखि ना मँगले रहल हा। एगो बूढ़ा-बूढ़ी के भोजन-बसतर के इन्तजाम ना हो सके ? अतहत गाँव बा, जो मुठिओ निकालि के भा बेहरी कइ के दूनो परानी के निवाह ना कइल जाई त गुमानगाँव के नाँव डूबि जाई।

हीराजी का हफन धुनला से कवनो-कवनो तरे ठकुरबारी में गाँव के कुछ लोग जवराइल। राजाराम दूनो बेकतिन के परवरिस के भार उठा लीहल लोगन का जबुर ना जनाइल बाकी दुरजोधन बाबू का आगा मुँह के खोली एह प जबजबी लागि गइल। देस-बिदेस के हाल सुना के, क्रांतिकारी सहीदन के जीवनी आ साम्यवाद के पाठ पढ़ा-पढ़ा के जिनि-जिनि जाना के हीराजी आपन असली सँघतिया बनवले रहने ऊहो लोग पोंछि सटका लीहल। केहू गते सुनावल जे दुरजोधन बाबू से घर दे देवे खातिर कहल कउँचउअल होई। एह से राजाराम का कुछ फायदा ना होई। उलटे नव नतीजा हो जबहिन। उनुका मदत मोख्तारी में जे केहू जाई आंकरा से दुरजोधन बाबू अदावत मनिहें।

'अदावत काहें मनिहें ? एहमें उनुकर का जाता ?" हीराजी के रोझ सवाल का जबाब में एगो टेढ़ आदमी दलल देलसि जे दुरजोधन बाबू जब अपना नाँवें लिखवा लेले त अब घर राजाराम के कवना हक पद से दिअवाइबि सभे। लिखतंग का आगा बकतंग चली ? रहि गइल बात दोआ के। त जब बलबीर बाबू कीहाँ पनाह मिलिए गइल बा तब एगो बरिआरा जबरे ठकठेनि बेसहला में आपन-आपन घटी-नाफा सोचि लीहीं सभे।

एह पर केहू कुछ ना बोलल। 'घटी-नाफा' से अधिका अनस हीराजी का 'आपन-आपन' सुनि के बरल। गाँव से 'हमरा का ?' त ना आइल रहे अब ले उनुका मन में। गाँव का अइलत-जहालत के, रोग-बिआधि के, गाढ़-सकेत के ऊ अपना कपार के भार मानत आइल रहले। पढ़लको-लिखलको आदमी खास कइ के ऊहो आदमी जे खुदे अनघा दुख-सितम अङेजले होखे, जो एही तरे कहे लागी त कइसे काम चली ? ऊ त गुतले इहाँ ले रहसु जे दुरजोधन बाबू जो कहला-सुनला से ना मनिहें त ममिला कोटो-कचहरी ले पहुँचावल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाई। कठघरा प ठाढ़ होके गाँव भर एक मुँह होके कहीं कि मकान आ जमीनि प असल हक राजाराम के होला नाँव भलहीं उनुका मुअला बड़ भाई के चढ़ि गइल होखे खतिआन में। भाई-भाई का बीचे त कवनो बाते ना, एही गाँव में गलती से जो आनो केहू के नाँव केकरो जर-जमीनि प चढ़ि गइल बा त ओकरा प अइसन लोभ-लालच दोसर केहू नइखे करत जइसन सनीचरी कइलसि हा। ओकरा से करवावल गइल हा। ससुरा में सनीचरी का खेतो-बधारि बा आ सवाङो नोकरिहा बड़हिसि।

तरहथी प गाल ध के छन भर बइठला का बाद बुझलहिन जे कइल जरुरिए रहल हा। साँचो जो आन केहू उनुका आगा के जमीनि प दुरजोधन बाबू के आपन चउहद्दी सोझ आ जाइत त उनुका कुछ दिक्कदारी होखइ करित। दोसरे, ऊ रोपेओ गनले बाड़े। सनीचरी अस अघोल नइखन लेले। हीराजी निहँसि के रहि गइले। अतना परेसान भइल अनेर हो गलहिन। आखिर एह लरिकभभू से का उजिआइल? केकरा के का कहसु? जनइलहिन जे सजी कसूर उनुके होखे। अनका दुख प मोहाइए के का कइले? उलुटे छूँछ छोह के हवेया लागि गइलहिन।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरगट

चलत नइखीं, दउरि रहल बानीं। धधाइल धा रहल बानीं। घर का आराम से उबिआइ के सबखे बहरवाँसू बनल बानीं। सचिवालय का चरमहला से सुवर्नरेखा परियोजना का अङनई में उतरल बानीं। पटना से टाटा अइला चार महीना होता। कलकारखाना का चलते इहाँ अनघा धुआँ-धुकुर के अन्दाज लगवले रहीं, बाकी अनेरे। धूरि-गरदा, घूर-कतवार कतो नइखे लउकत। अड़गुड़ाह गली भा वजवजात नली आजु ले ना भेंटाइल। कवनो कॉलोनी में जातानीं धरती-अकास फरिछे लखाता। क्वाटरन के गलीज तोपले तोपल ढरकाहूँ जमीन का एकोरा बनल नाला मेंहें झरझरात अउलाह पानी जवरे हरहरात बहल जा रहल बा—टेढ़-सोझ राह धइले नदी का ओर। चमचमात पीच रोड पर मिनी बस आन्ही अस सर्र-से भागल जातारी स। छव बजे भोर से नव बजे राति ले बस भा टेम्पो के चाल मधिमात नइखे। रोसनी के का पुछले बानीं, सुइयो गिरे त उठा लीहीं। हवा-पानी त अइसन जे दमाह-पिलपिलाह इहेंवाँ ढूँढ़े के परी।

हमारा गोड़ जइसे चकर होखे, अहथिर बइठि ना सकीं। घूमे-फिरे, बोले-बतिआवे का साधे छिछिआइल फिरीला। मोह के ई हाल जे हीत-मीत आदमी त आदमी, ओकरा गाँवो-नगर, खेतो-बधारि का दरस खातिर तरसत रहीला।

पूरुब में कलकाता का उछाड़ भोजपुरिहा लोग टटे में बटुराइल बा। केकरा गाँव-घर भा लर-जर के दस संवाङ इहाँ ना होइहें। हमरा गाँव अस बड़ गाँव आ ओकरा जवार के आदमी त गनले गनात नइखन। जमसेदपुर के कैलास खड़ंगाझार होखे चाहे टाटा का पिछुआरी बसल सुघर सोनारी, जहाँ ले जातानीं, अपनइती के पसार पावतानीं। हँ, आवा-जाही में एके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात के चेत राखे के परेला। जिनिका इहाँ जाये के वा उनुकर डिउटी का पा। कारखाना में छव से दू, दू से दस आ दस से छव बजे ले भाँज से काम चलत रहेला चउबीसो घंटा। जब रउरा फुरसत त उनुका ना आ उनुका जब बइठारू त राउर डिउटी। ई बात कुछ लोग जवरे ना होखे जिनिकर जेनरल डिउटी रहेला—हरमेसे दिने में आठ से चार बजे ले।

नेहे-नाता का चलते अपना डिउटी का लगहीं मिलत संकू साहीं में सरकारी क्वाटर के मोह ना भइल। अपना हीते-नते का भरल परिवार में रहत बानीं। परम सुख वा, तबे त बारीडीह से डिमनारोड के अठारह कीलोमीटर के धवहट अखड़त नइखे। हमरा घर का निअरे हमरा गाँवो के कुछ लोगन के घर बा—बस पाँचे मिनिट के राहता। छव बजिया डिउटी करेवाला आदमी का चलते हमरो सिरहाना टेबुल पर चाह के कप धरा जाला भोरे साढ़े पाँच बजे। बासी मुँहे चाह —'बेड टी'— के एहिजा जवन लत लागल कि छूटे का मान के नइखे। चाह चुसुकला का बाद चउकी छूटि जाता। चटपट पैंट-कमीज चढ़ा के निकलि परतानी टहरे।

आजु कालहु शर्मोजी आइल बानीं। पछिला चालिस बारिस से उहाँ जवरे बइठे-उठे, घूमे-फिरे के मनसायन मोका मिलत रहल वा। उहाँ के हम आपन 'फ्रेण्ड, फिलासफर' आ 'गाइड' मानीला। शर्माजी हमरा गाँव के गौरव हईं। दस बरिस होना उहाँ के कारखाना का सरभिस से रिटायर कइला। अपना भाई-गोतियन का बीचे उहों के एगो निकहन मकान बनवा देले बानीं इहवाँ, जवना में उहाँके छोट लइका रहेलन। बड़ जाना का कम्पनी के क्वाटर मिलल बा। अपना जेहन आ लगन से शर्माजी लेखा मिडिल पास आदमी इंजीनियरिंग के डिग्री लेके आगा बढ़त कंपनी में बहुते बड़ ओहदा पर पहुँचल, अनघा आदर-मान पावल। अपना बाप-महतारी, भाई-भतीजा के बराबर खेयाल राखल। गाँव-घर से नाता ना तूरल।

आदमी के आदमी अस जाने के चाहीं 'टू ट्रीट मैन ऐज मैन' उहेंका मुँहें सुनल हमार पहिल सामाजिक सबक रहे। उहाँका बतवले रहीं जे गरमी में जो कवनो बड़का आदमी आवसु त उनुकर सरबत से सतकार होखवे करे, बाकी जो कवनो भिखारियो-दुखारि दुआर पर आ जाउ त अउर ना त एगो गूर के भेलियो दे के आ ढुरुके ना त चुरुओ से ओकर कंठ-जुड़ाँव करा देवे के चाहीं। ओह घरी बड़का आदमी आ गरीब-गुजरा के जरूरत एके रहला—पियास। सँपरे त आदमी के पियास दूर करे के चाहीं। शर्मा जी एक से एक बात बताईला—कुछ त अइसन जे किताबन में मिली बाकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढेरि अइसने जे उहाँका अपना अनुभव से पवले वानीं। खोदि-खोदि के उहाँका मुँह से एक से एक अनमोल कथ उपरावल हमरा नीक लागेला आ हराहर बोलल उहाँ का। पैदल चले भा टहरे में शर्मा जी के बरोबरी केहुए केहू करी। साँझ-विहने के जो हिसाब लगावल जाउ त सात कोस से कम कहियो ना होई। दस-पनरह दिन से उहाँ का साथे हमरो सवेरे के टहरल हो रहल वा।

आजु एतवार ह। शर्माजी काल्हुए कहि गइल रहीं—काल्हु हमरा एक-दू जगे जाये के बा, मन होखे त रउओ चलि सकीला। नेकियो आ पूछि-पूछि ? हम त उहाँ जवरे डोरिआइल चलल चाहीला। तइ भइल जे मुँह-हाथ धोइये के घर छोड़ल जाउ। हलुके जलखई का बाद शर्माजी कीहाँ पहुँचलीं। चाह पी के दूनो आदमी डेग आगा बढ़ावल। शर्माजी के बात के चरखा चालू हो गइल। उहाँका जमसेदपुर में वितावल अपना बावन साल का हाल में से एक से एक बात सुनाईला जे कहनी अस लागेला। विहार के कहातो आदि-वासी इलाका के जमसेदपुर सँउसे हिन्दुस्तान का देहि-दिमाग से बनल वा। पारसी, बंगाली, उड़िया, मदरासी, तेलगी, केरली, महाराष्ट्री, पंजाबी, गुजराती, मारवाड़ी, पेसावरी, छतिसगढ़िया, के नइखे इहँवाँ ? 'टिस्को' का पाछा खुलल अंगरेजी कंपनी 'टिनप्लेट'। एह दूनो कारखाना में पसेना वहवनिहार दूर-दराज के लोग एक दोसरा का नगीच आइल। एक दोसरा के रहनि-चाल, खान-पान आ बात-बेवहार पर एक दोसरा के असर परल। कम पढ़ल-लिखल अगते का आदमिन में आदमीयत रहे। आपन-आन के चिन्हार ना रखनिहार गँवार लोग सँउसे संसार के परिवार मानसु।

शर्माजी नाँव लेत जातानीं। मदन महाराज के, कालिका लाल के, बिसुनाथ दास के। आन गाँव के बाबाजी, आन गाँव के लालाजी आ दूरि दराज के उड़िया उहाँ के कतना जानल-मानल। गोलमुरी का एगो कोठरी में अड़ान मिलल रहे आरे जिला का एगो मिडिल पास सतरह-अठारह साल के रघुबर के जे टिनप्लेट फैक्ट्री में बिजली डिपाट में हेल्पर बहाल भइल रहले। अंगरेजी के जानकारी वढ़ि गइला से ग्रेड बढ़ित ना त लेवरे रहि जइते। सह भेंटाइल कंपनी में काम करत कुछ बंगाली लोगन के। ऊ लोग ट्रांसलेसन बनवावे लागल। एही तरे आगे के हिसावो पढ़ल जरूरी जनाइल। नाइट स्कूल में नांव लिखववले। दिन में नौकरी आ साँझि खानी बड़ी दूर बिस्टूपुर का लगे पढ़े जाये के। एह भार के हलुक कइल जवरे रहनिहार तीनो रोटिहा लोग। रघुबर के कवनो कार ना अढ़ावल जा। केहू इनिकर लालटेन जरा दे, केहू खटिया उड़ासि भा डसाइ दे। रसोई त ऊहे लोग बनावल करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबो-कबो अइसनो हो जा जे तीनों लंग-लाढ़िला लोगन का आपुस में बोलो-चाल बन। तबो एक दोसरा के हरज ना होखे दिआय। "हाँड़ी में खिचड़ी आ ढकना में चोखा धरा हुआ है, जिसको खाना हो खा लेगा" आकासबानी लेखा अन्य पुरुष में संबोधन करत केहू आपन डिउटी सम्हारे चले। शर्माजी कहत जातानीं आ हमार कंठ भरल आवता। आँखि छलछला जातारी स। रामायन में के घटवार, कोल-भील के के कहो बानरो-भालु-गीध अस पर निन के कहनी साँच बुझाये लागता। रामजी एह लोगन का अपना जानो से अधिका भावत रहल होइहन तबे त उनुका खातिर कुछुओ ना उठा राखल ई लोग। कारखाना में जवरे जाऊर चलवनिहार गैर लोग शर्माजी के आपन जानल। एह धरती पर सचहूँ राम-सीता चलल होइहें, हनुमान धावल होइहें, गीधराज राछछ रावन के रथ से भुँइयाँ भहरवले होइहें आ सेवरी चीखि-चीखि के मीठ बइरि धइले होइहें साध-सरधा से।

एने-ओने ताकत शर्माजी के गोड़ आगे वढ़ि के थथमे लागता। वनर्जी वावू के क्वाटर ईहे ह भर सक। एगो लइका के हाँक पारल जाता। "यही है" सुनि के ओठ पर मुसुकी लेले हमरा से आईं-आईं कहतानीं। हाता में आ के कॉल बेल दिआता। 'ओहो, आप हैं, आइये-आइये' कहत एगो अधेड़ आदमी केवाड़ खोलि के ड्राइंग-रूम में बइठावतारन। इहे वनर्जी वावू हवन। कहाँ उटाउं, कहाँ बइठाउँ। अजब अगरहट जनातरहिन शर्माजी के देखि के उनुका। हालचाल होखे लागल। "कब आये देस से, लड़कों का समाचार कहिये"। "बड़का तो आपके साथ ही काम करता है, छोटका प्रोमोसन पा गया, पोते का भी ट्रेनिंग खतम हो गया है" शर्माजी बता दिहलीं। वनर्जी वावू 'वेस' कहतारन। "आपकी लड़की की सादी में आ नहीं सका" कहत शर्माजी "सब आछा से हो गया न ?"— पुछलीं।

वनर्जी वावू अपना घर के बात, राई-रत्ती सभे वतावे लगलन। उनुकरो नोकरी बस एही महीना भर बा। चारो लइकिनि के पार लगा दिहलन, दूनो लइकनो के पढ़ाई निअराइये चलल बा। कलकाता में 'खोखन' जवरे रहेलन स। खोखन वनर्जी वावू के छोट भाई हवे, राम के भरत अइसन। दादा के छोट पगार आ लमहर परिवार के ऊ अस खेयाल रखले जे आपन बिआह के विचारे ना मन में आवे देले। भउजाइये उनुका के पोसले रही। वड़ भाई के बाप लेखा मानेले। एही लोग का लइकन के सम्हारे-सँवारे में अपना देहज मतलब के बिसारि दिहले। बैंक के नीमन नोकरिहा का आगा बिआह खातिर एक से एक प्रस्ताव आइल बाकी खोखन हाथ जोरि दिहले— लइके-फइके खातिर नू बिआह-सादी कइल जाला, से हमरा बड़ले बा कहिके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाह पान का बाद बनर्जी बाबू से विदा मँगाइल। शर्माजी के रामास्वामी कीहाँ जाये के रहे, एगो जरूरत बस। पनरह मिनिट वाला तिरिछा राह धराइल। बीच में उघारे देहे सँउसे लिलारे, कंठ में आ बाँहि पर अनघा चनन के लेप चढ़वले एक आदमी 'नमस्ते' कइल। ई रहले मेनन—शर्माजी के एगो मातहत। सत्तर निअराइल होवहिन बाकी आजुओ साँवर बरन देहि-धाजा लमछर गोजी अस लउकता। सिवाला से आवत रहले। टाइप का साथे अंगरेजी में बहुते चरच संनन का पीठी केहू धूरि ना लगा सकत रहे।··· तीसन वरिस पुरान घटनन के चरचा शर्माजी एह तरे करीला जइसे काल्हुए के बात होखे। दोहराँव भा तेहराँव होला सही के, का मजाल जे एको हरफ एने-ओने होखे।

बड़ भाइये ना, अपना बहिनिओ खातिर कुछ उठा ना रखेवाला बाड़े एहिजा कहत शर्माजी खुद रामास्वामी के बखान करे लगलीं। रामास्वामी उनुके कपनी के पुरान आदमी हवे जे लेबर से फोरमैन भइल बाड़े। आपन जायेल-पोयेल कम ना रहहिन तबो बहिनि के मुसमात भइला पर अपना इहाँ उठा ले अइले आ ओकरो बेटा-बेटिनि के अपना लइकन अस पढ़वले-लिखवले आ बिअहले। 'वाह, कइसन-कइसन कहनी सुने के मिलता' हमरा मुँह से निकसल। इहाँ एक से एक आदमी से भेंट कराइवि कहि के शर्माजी एगो पंजाबी के उदारता बतवले जे अपना परोस में रहत तेलंगी के मार गइला पर अपने खरचे-बरचे ओकरा बेटी के विआह करा देलसि।

रामास्वामी से भेंट ना भइल। लवटल जाउ। सड़क धराता। 'राम-राम' कहत केहू शर्माजी का आगा ठाढ़ होता। शर्माजी हँसि-हँसि के बतिआवे लागतानीं। ई हवे धरमेन्दर सिंह पच्छिमी यू. पी. के। हालचाल ठीके बड़हिन। गोतिहारो में के पुरनियाँ चाचा-चाची का केहू कतो ना रहलहिन हाँ। दूनो बेकति के ले आके अपने इहाँ रखले बाड़े तीनि बरिस से। असो बुढ़ऊ के आँखिओ बनववले हा।

बारह बजहीं वाला रहे। खाये के बेरा होखे जात रहे। घरे बाट जोहात होई। राहे चलत अपना परिचित आदमिन के छनो भर बोले-बतिआवे के सुख दीहल शर्माजी के बानि ह। चलल-ठहरल-चलल अतने उहाँका जानीला। केहू रिगिर करत रहो बाकी बतरस खातिर बिलमल उहाँका ना सोहा। साइते-संजोगे कबो-काल घंटा भर बइठल उहाँके देखले होखबि हम।

"प्रणाम चाचाजी !" केहू ओहटा भइले कहता। शर्माजी 'प्रणाम-प्रणाम' कहत आगा बढ़ल चाहतानीं। 'आईं-आईं' के टनकार आवाज आवता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बाबुओ जी आइल रहले ह।" सुनिके उहाँके गोड़ क्वाटर के गेट का ओर घूमता। बोलवनिहार शर्माजी के सँघतिया गुप्ताजी के लइका हवे, मोहन जी। अपना कंपनी के चलता-पुरजा आदमी। लेबर आ मनेजमेंट दूनो से सरोकार रखनिहार। अपनइतीं में शर्माजी बतावत जा रहल बानीं जे मोहन जी के बाबूजी रिटायर भइले त बड़का क्वाटर पर कइसे-कइसे इनिके नांव चढ़ल। छोटो भाई एहिजे काम करेलहिन, दोसरा कारखाना में आ आपन परिवार लेके अनका क्वाटर में भाड़ेदार बाड़न।

हमनी के बइठते मातर मोहनजी के पचरा सुरू भइल। अपना बाबूजी का बारे में बतावे लगले। "का पूछले बानीं, बुढ़इला पर सुभाव लइका के हो गइल बड़हिन। बूढ़-पुरनियां का कइसे रहे के चाहीं बाबूजी का बुझाते नइखे। बच्चा लेखा लागतारे जीदि करे। कहां ले लइकन-फइकन के सांझे-बिहने लगे पंजरा बइठा के पढ़इते-लिखइते, उलुटा एकोरा परल रहेले। तनी घूमि-फिरि के तरो-तरकारी ले आ दीहल करिते त तन्दुरुस्ती ठीक रहनहिन कम से कम।"

एही बीचे एगो लइकी स्टेनलेस के जग में पानी आ दूगो गिलास हमनी का सोझा धइलसि। तेकरा बाद गरमा-गरम हलुआ भरल दूगो प्लेट आ आइल। "ई का?" शर्माजी के सवाल मोहनजी ना सुनले। कहले "टाइम त भोजनो के भइल बा, कम से कम तनी मुँह जुठिआ लीहल जाउ। कवना दो भाग से त राउर चरन आइल बा।" अपना बाप के सँघतिया शर्माजी खातिर मोहन जी अतना सरधा-भाव रखले बाड़े ई देखि के हम निहाल बानीं। शर्माजी के मीठा मना ह ई जानतो हम जोर लगवलीं, "थोरिको लीहल जाउ। इहां के मन राखि दिआउ।" शर्माजी के प्लेट अधिआवल गइल। दूनो आदमी नास्ता करे लगलीं जा। ओने मोहनोजी आपन झँखनी नधले। बाबूजी हई करिते, बाबूजी हऊ करिते। "मोतिहारी वाला मकान ढहत-ढिमिलात बा। रउआ त जानते बानीं चाचाजी, हामासूमां से आइल-गइल पार लागे के नइखे। बाबूजी के नू चाहीं जे ओकर नीके तरे मर-मरम्मत कराके दू पइसा निकलिते। दउरिये-दोकानि करिते। ना होइन त कम से कम आटा के मीले बइठा लिहिते। नाका पर के जगह बा। हम मुड़ी डोलावतानीं। ठीके त कहतारे मोहनजी। शर्माजी टोकले—"गुप्ताजी हवे त हमरे हमउमिरिया बाकी बवासीर से देहि भीतरे-भीतर खन्हरला लेखा हो गइल बड़हिन। उनुका परहेजी खोराक भेंटाये के चाहीं। पैंतालिस-पचास बरिस टाटा में बितवनिहार के मोतिहारी सूट करी? इहँवां के हवा-पानी ना उहँवां के दूध-घीव। अब जमसेदपुर में रहि के राम-राम करसु। तोहनी लोग के उनुका पर तन्देही राखे के चाहीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हमरे नूं करे के परेशा चाचाजी" मोहनजी सुनावतारे। "जब अइहें त हमरे कीहाँ, सोहन भिरी ना टिटिके पावसु। देखीं ना, अबकिए आइल रहले हा त रजाई बनवा देलीं हाँ, बेयालिस रोपेया के एगो धोती खरीद देलीं हाँ, गाड़ी भाड़ा दे देलीं हाँ।"

"हें नूं ? ई सब नोट कर लेवे के चाहीं।"

आयँ, अइसन सलाह शर्माजी देतानीं ? ऊ शर्माजी जे अपना बाबू-माई आ भाई भिरी पगार मिलते रोपेया पेठाईं ? पहिली से दोसरी तारीख ना होखे दीहीं घरे मनीआडर करे में। ऊहे अब ठकुर सोहाती करतानीं कि कूटि, उहाँ के मुँह का भाव से लखात नइखे। चाह आइल बाकी "हम नइखीं पीअत आजु काल्हु" कहिके शर्माजी ठाढ़ हो जातानीं। हलुआ पर चाय हमरो से गराहल नइखे जात बाकी हाली-हाली घोंटि घालतानी। मोहनजी का लगे एको छन ठहरल अब जहर जनाये लागल। दण्ड-परनाम के रसम का बाद रोड धराता। अब कतो अझुराइल ठीक नइखे। "घरे चलल जाउ" हम शर्माजी से कहतानीं।

"बाकी एगो बात बताईं। मोहनजी से उनुका बाबूजी खातिर धोती-कपड़ा वगैरह पर कइल खरचा के नोट करे के बात रउआ अस आदमी का कहे के चाहत रहल हा ?"

"मारीं ससुरा के," शर्माजी बोलले। "मोहना के बात सुनिके त हमरा चोखार चढ़ि गइल हा। एकर बाप इन्हनियें खातिर तप कइलसि। चढ़ती जवानी में जेकर मेहरारू मरि गइलि ओह सस्ती का समे सइ रोपेया महीना कमनिहार मरद खातिर दोसर विआह दूलम ना रहे। अउर त अउर, खुद उनुकर ससुरे अपना दोसरकी बेटी मे सेनुरबन्ध खातिर हुमचले आ बूढ़ि महतारियो अठान-कठान परलहिनि बाकी गुप्ता बेचारू टस से मस ना भइले। लोग बंसे खातिर नूं विआह करेला कहत दू-दू गो बेटा अछइत उनुका दोहरावन ना सोहाइल रहे। जले माई जिअलहिन तले त कुछ ना बुझलहिन बाकी माई का मुअने अकसरुआ आदमी के अपना लइकन के गोती बन्हे के परल। गोलमुरी में खपड़पोस किराया का मकान में पनरह बरिस ले चूल्हा सुनुगवला का बाद टिनप्लेट के क्वाटर भेंटलहिन। ओहदा बढ़लहिन त एगो नेपाली नोकर रखले जे चउका पानी कर आ रसोइयो बना दे। दूनो इसकूलिहा लइकन के जून पर खाना-नास्ता में टूटी ना होखे दिहले। दूनो के विआह-गवन कइले आ नोकरियो धरवले। मोहन के विआह बड़ घर में धूमधाम से कइले। पहिल फफक में कुछ उठा ना रखले। पढ़े में छोटका बेटा बड़का के दाव मानत गइल आ कवनो-कवनो तरे मैट्रिक कइके वेल्डर ट्रेड में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अप्रेंटिस भइल। अइसें त बाप खातिर दूनो बेटा आँखिये रहन बाकी बड़ जाना से बेसी उमेदि रहे गुप्ताजी के। एने अपना होती से ना उजिअलहिन त बापो के सजी फंड हथिआइ घलले ईहे बाबू साहेब। छोटको का कम, ई पर हाथ फेरल चहलें रहसु बाकी चोंच ना लागे पवलहिन। ऊ अलगा रहे लागल आ अब दू पइसा के आदमी बा। बाप के ऊ त राखल चाहेला बाकी गुप्ताजी के कहनाम ह कि जे हमार धन लीहल सेही हमरा के करो। आजु बाप के रजाई बनवा दीहल, धोती कीनि दीहल आ गाड़ी के टिकट कटा दीहल अतहत परोपकार हो गइल जे पथल पर टँकाये के चाहीं। नेमकहराम कहीं के। बाप का कइला के बदला दिआई? बेटो लोग अपना बाबूजी के अङुरी धरा के चले के सिखाई, इस्कूल-कालेज में नाँव लिखवाये खातिर परेसान होखी आ उनुका माथे मउरि चढ़े का बेरा धरती-आसमान एक करी? हुँ:।"

हमरा जीव में जीव परता। शर्माजी ठीके कहतानीं। उहेंका नू ओह दिन साकची जात खा तीन नम्बर का गोल चक्कर भिरी ऊ मकान देखवले रहीं जेहमें कवनो बिस्वास बाबू अपना चउरंगी लइका के बाइस बरिस ले इष्टदेव लेखा सेवा कइले रहलें। भोरे-भोरे उठिके ओकरा के पर पयखाना फिरवावे, मुँह धोवावे, नेहवावें से लेके भोजन करवला का बाद फिनु भूखि लगला पर खाये खातिर ओकरा लगे नस्तो राखि के डिउटी जाये के चेत राखसु।

ओकाए-ओकाए मन होखे लागता। बुझला चाहवा ना पीए के चाहत रहल हा। ओह! हलुआ के नास्ता गरगट हो गइल मोहन बाबू किहाँ के।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाव-विचार से भरपूर, अनुभूतिपरक, भोजपुरी भाषा-साहित्य का सृजन, संपादन, संकलन, प्रकाशन आ प्रचार-प्रसार में तीस साल से जीवे जाने लागल

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

के

कृति-क्रम

१. जय बंगला (लघु काव्य)
२. कौशिकायन (प्रबंध काव्य)
३. बेटा के नइहर (ललित निबंध)
४. सुदिन (प्रगतिशील गीत-संग्रह)
५. सेवकायन (प्रबंध काव्य)
६. पँखुरी भइल हजार (बरवै-संग्रह)
७. लीला ई श्री राम-श्याम के (गीत रूपक)
८. भोजपुरी भूँइ (कविता-संग्रह)
९. अनसाइल राग (कविता-संग्रह)
१०. पतिआत ना केहू (गजल-संग्रह)
११. गाँव बारहो मास में (गीत-संग्रह)
१२. घर के गूर (निबंध-संग्रह)
१३. डागा बाजि गइल (कहानी-संग्रह)
१४. स्वर मत दो (हिन्दी कविता-संग्रह)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.